हक़ प्रकाश
बजवाब
सत्यार्थ प्रकाश

लेखक

शैखुल इस्लाम मौलाना सनाउल्लाह अम

प्रकाशक

अल किताब इन्टर नेशनल

जामिया नगर नई दिल्ली–25

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

नाम पुस्तक	:	हक़ प्रकाश
लेखक	:	अल्लामा सनाउल्लाह अमृतसरी
प्रकाशन	:	2008
ज़ेरे निगरानी	:	सैयद शौकत सलीम
संख्या	:	1000
पुष्ठ	:	232
मूल्य	:	150

मिलने के पते:

1- मक्तबा तरजुमान उर्दू बाज़ार दिल्ली-6
2- हकीम सिद्दीक़ मेमोरियल ट्रस्ट जोधपुर राजस्थान
3- दारुल कुतुबुस्सलफ़िया मटिया महल दिल्ली-6
4- मक्तबा मुस्लिम बरबरशाह श्रीनगर कशमीर

विषय सूची

1- प्रकाशक की ओर से	4
2- हक़ प्रकाश पर एक समीक्षा	7
3- कुछ पुस्तक के बारे में	11
4- भूमिका	14
5- हक़ प्रकाश ब जवाब सत्यार्थ प्रकाश	20
6- कुरआन के बारे में स्वामी जी की राय	326
7- आपत्ति कर्त्ता के मुक़ाबले में जवाब देने वाले की राय	327
8- निष्पक्ष और भले लोंगों के लिए यही गवाही काफ़ी है	330

प्रकाशक की ओर से

सत्य और असत्य की जंग और आपसी कटुता का इतिहास बडा ही प्राचीन है बल्कि यह कहना सही होगा कि जब से इस्लाम का जन्म हुआ है उसी समय से इस पर आरोप प्रत्यारोप और तोहमतों का कार्य हो रहा है। सत्य धर्म की शिक्षाओं को अज्ञानता, टेढी सोच, स्वार्थ, दुर्भावना और दुश्मनी व नफ़रत की बुनियाद पर लान तान का निशाना बनाया गया।

नफ़्स के गुलामों ने अपनी हठ धर्मी के नशे में इस्लाम के तथ्यों को दुनिया के सामने संदिग्ध बना कर प्रस्तुत करने की बार बार नाकाम कोशिशें कीं। लेकिन अल्लाह के क़ानून के अनुसार यथा आवश्यक्ता हर युग में ऐसे इस्लाम के बहादुर और सूरमा पैदा होते रहे जिन्होंने अपने ज्ञानात्मक, लेखों और वक्तव्यों की योग्यताओं को काम में लाकर इस्लाम और मुसलमानों पर होने वाली असत्य आपत्तियों का भरपूर जवाब दिया है जिन्होंने हर प्रकार की साज़िशों को उखाड़ फेंका। उनकी जबान व क़लम से निकले हुए शब्द क़ुरआन व हदीस से शक्ति ग्रहण करके इस्लाम विरोधियों के विरोध और उनके नास्तिक एवं अधर्मवाद के झांपड़े पर कड़क दार बिजली बन कर गिरे और उसे जलाकर भस्म कर दिया। इसी क्रम की एक अहम कड़ी का हिस्सा यह किताब "हक़ प्रकाश" भी है जो आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की किताब सत्यार्थ प्रकाश के अध्याय 14 का जवाब है जो ज़बान व क़लम के प्रख्यात मनाज़िरे इस्लाम अल्लामा अबुल वफ़ा सनाउल्लाह

अमृतसरी की प्रसिद्ध किताब है।

अल्लामा सनाउल्लाह अमृतसरी निश्चय ही इस दौर के लिए बहुत ही शक्तिशाली सत्य की आवाज़ साबित हुए। जिस समय इस्लाम के विरुद्ध हर ओर से भ्रम एंव संदेहों की तेज़ आंधियां चल रही थी और नबी करीम सल्ल0 के व्यक्तित्व और आपकी पाक ज़ात को रंगीला रसूल लिखकर दाग़दार बनाने की कोशिशें की जा रही थी। अब्दुल ग़फ़ूर की किताब "तर्के इस्लाम" का सहारा लेकर इस्लाम पर कीचड़ उछालने की नापाक कोशिशें हो रही थीं। ऐसे समय में ज़रूरत थी एक सतर्क व दृढ ज़बान व क़लम की और ज्ञान एवं उच्च कोटि के विद्वान की जिसके द्वारा नित नए फ़ितनों का सर कुचला जा सके और इस्लाम दुश्मन विचारों एवं दृष्टिकोणों का निवारण हो सके और इस्लाम की सुरक्षा की जा सके।

अल्लामा अबुल वफ़ा सनाउल्लाह अमृतसरी अपने दौर के महान मुजाहिद थे। वे इस्लाम दुश्मनों के लिए नंगी तलवार साबित हुए। उन्होंने समय समय पर उठने वाले फ़ित्नों का हर मौके पर ज्ञानात्मक मुक़ाबला किया। ईसाइयों की आपत्तियों के जवाब, इस्लाम व मसीहियत, तक़ाबुल सलासा और इसी प्रकार की दूसरी किताबें अल्लामा के ज़िन्दा कारनामे हैं। आप इस्लाम विरोधियों से दो दो हाथ करने में कभी पीछे नहीं रहे। और इस्लाम विरोधियों से मनाज़िरे करके सत्य का बोल बाला किया।

आज फिर इसी प्रकार के फ़ितने सर उठा रहे हैं। इस्लाम दुश्मन तत्वों का इस्लाम के विरुद्ध हमला बड़ी तेज़ी के साथ शुरू हो गया है। नास्तिकों और आपत्ति करने वालों की ओर से इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा का स्वरूप बिगाड़ने और उसके बारे में प्रोपगंडे और ग़लत फ़हमियों को बढ़ावा देने की सारी कार्रवाइयां चल रही हैं और

मीडिया व समाचार पत्रों ने इस्लाम के विरुद्ध ग़लत विचारों व दृष्टिकोणों का प्रचार एवं प्रसार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। ऐसे हालात में अल्लामा सनाउल्लाह साहब की तर्क पूर्ण, शाहकार और इल्मी किताबों के प्रकाशन का महत्व बढ़ गया है। यही कारण है कि हमने इस महत्वपूर्ण किताब को हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने का क़दम उठाया है।

हमारा उद्देश्य यही है कि मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम भाई इस किताब का अध्ययन करके सत्य और असत्य का फ़र्क़ जान सकें और इस्लाम व पैग़म्बरे इस्लाम पर निराधार लगाए गए आरोपों का सतर्क जवाब पढ़ सकें।

प्रकाशक

"हक़ प्रकाश" पर एक समीक्षा

शैखुल इस्लाम सनाउल्लाह अमृतसरी निस्सन्देह एक हक़ परस्त विद्वान थे। अल्लाह ने आपको वह सोच एवं ज्ञान प्रदान किया था कि वे एक ही समय में समस्त इस्लाम दुश्मन संगठनों से मुक़ाबला करते रहे। क़ादियानियत, ईसाइयत, आर्यसमाजी, सनातन धर्मी, बहाई अर्थात वे सारे तत्व जो इस्लाम को चुनौती देने का साहस करते थे। शैखुल इस्लाम ने सब का सतर्क जवाब दिया। दोस्तों ने ही नहीं स्वयं दुश्मनों ने भी इस बात को स्वीकारा। इस मैदान में कोई उनका मुक़ाबला नहीं हो सकता। आज भी देखिए तो हैरत होती है कि एक व्यक्ति बिल्कुल अकेले किस तरह ऐसा चौमुखी हमला कर सकता था। उनका समाचार पत्र "अहले हदीस" अपने समय का महत्वपूर्ण पर्चा था और ग़ैर मुस्लिमों में भी वह उतना ही लोक प्रिय था जितना मुसलमानों में।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म में सुधार का बीड़ा उठाया। वे हिन्दू धर्म में मूर्ति पूजा को नहीं मानते थे न अवतार वाद में विश्वास रखते थे इस प्रकार उन्होंने हिन्दू धर्म को उसके मूल की ओर लौटाने का प्रयत्न किया ताकि वह करोड़ों देवी देवताओं के अक़ीदे से निकल कर एकेश्वरवाद की ओर आए जो सारे धर्मों की असल बुनियाद है। स्वामी जी ने एक पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश लिखी जो आर्य समाज की बाइबिल बन गयी। उन्होंने इस किताब में हिन्दू धर्म के उसूल, रीति रिवाज और अक़ीदों पर बहस की और हिन्दू समाज में फैले हुए ग़लत अक़ीदों का सुधार करने का यत्न किया।

साफ़ सी बात है कि इससे किसी को मतभेद नहीं हो सकता था बल्कि यह एक बड़ी अच्छी कोशिश थी लेकिन इसी किताब में उन्होंने अन्य धर्मों पर भी आपत्ति व्यक्त की और उनको बुरा और ग़लत बताने की कोशिश की।

सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें अध्याय में उन्होंने इस्लाम पर तीर चलाए और कुरआनी शिक्षा को निशाना बनाया। चूंकि स्वामी जी अरबी जानते नहीं थे इस लिए व्याकरण संबंधी नियम एवं इन भाषाओं, मुहावरों और भाषा से अनभिज्ञता के कारण शब्दों का सही अर्थ व भाव समझने से विवश रहे इसके बावजूद उन्होंने इस्लाम पर आपत्तियां व्यक्त कीं और उनको अपनी पुस्तक में शामिल किया। इस प्रकार अपनी क़ौम को उन्होंने अपने ज्ञान एवं जानकारी से प्रभावित करने की कोशिश की लेकिन मुसलमानों को उनकी इस कार्रवाई से तकलीफ़ पहुंची। विरोध एवं रोष भी व्यक्त किया। पहले यह पुस्तक देवनागरी लिपि में प्रकाशित हुई थी इसलिए ग़ैर हिन्दी हलक़ों में यह परिचित नहीं हो पायी, हां शैखुल इस्लाम जैसे विद्वान ने जो उस दौर में भी देवनागरी से भली प्रकार परिचित थे इसका नोटिस लिया और इसका जवाब लिखने का इरादा किया। इसी बीच स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश का उर्दू अनुवाद भी प्रकाशित कर दिया और किताब सारे हलक़ों में पहुंच गयी और फिर हर ओर से इस पर आपत्तियां होने लगीं।

शैखुल इस्लाम साहब अल्लामा अमृतसरी "हक़ प्रकाश" की भूमिका में लिखते हैः- 'जब तक किताब देवनागरी में थी इसकी आम शोहरत न थी हमने देवनागरी में भी इसका अध्ययन किया था उसी समय से हमारा विचार था कि जितना कुरआन से इसका हिस्सा संबंधित है उसका जवाब उर्दू में दिया जाए। उस समय

इसका जवाब देने में यह परेशानी थी कि देवनागरी से उर्दू में अनुवाद भी हमें ही करना पड़ता। अल्लाह की शान कि यह काम चूंकि उसे हम से ही कराना मन्ज़ूर था अतः इसका सबब भी अल्लाह ने आर्यो ही को बनाया कि उन्होंने इस किताब का अनुवाद देश की लोकप्रिय और जन सामान्य भाषा उर्दू में करके हज़ारों प्रतियां प्रकाशित कर डालीं। इस बात को कहना कोई ज़रूरी नहीं कि स्वामी के सवालात आम तौर पर ग़लत फ़हमियों पर टिके हुए हैं इसलिए कि सत्य को स्वीकार करने से बहुधा ग़लत फ़हमी ही रोक बनती है। (पृष्ट 4-5)

शैख़ुल इस्लाम अमृतसरी ने किताब में मुहक़्क़िक़ और मुदक़्क़िक़ के शीर्षक लगा कर स्वामी जी की आपत्तियों को प्रस्तुत करके उनका सतर्क जवाब दिया है और साबित किया है कि स्वामी जी की आपत्तियां अरबी भाषा के उसूल व नियम से उनकी अनभिज्ञता और ग़लत फ़हमी की वजह से सामने आयी हैं इसी के साथ शैखुल इस्लाम ने हिन्दुओं की किताब से हवाले नक़ल करके अपनी बात स्पष्ट कर दी है, इससे शैखुल इस्लाम की दूरदर्शिता और सूझ बूझ और अन्य धर्मों की धार्मिक पुस्तकों से उनकी गहरी जानकारी का अन्दाज़ा होता है।

हक़ प्रकाश के प्रकाशन से मुसलमानों में वह बेचैनी और परेशानी दूर हो गयी जो स्वामी के निराधार और बेतुकी आपत्तियों के कारण पैदा हो गयी थी क्योंकि यह बात स्पष्ट हो गयी कि स्वामी जी की आपत्तियां उनकी अज्ञानता और जानकारी न होने का नतीजा हैं। आर्यो की ओर से शैखुल इस्लाम की किताब के अनेक जवाब लिखे गये जैसा कि भूमिका से स्पष्ट है। दयानन्द तमर भास्कर, सत्यार्थ भास्कर, दयानन्द सभा व प्रकाश आदि।

लेकिन असल बात यह है कि वे शैखुल इस्लाम की आपत्तियों का सतर्क जवाब नहीं दे सके यह इसलिए कि शैखुल इस्लाम की पहुंच उनकी धार्मिक पुस्तकों तक थी वे संस्क्रत और देव नागरी भाषाएं भली प्रकार जानते थे और चूंकि सारे धर्मों के धार्मिक ग्रंथों पर गहरी नज़र थी इसलिए ऐसे ऐसे नुक्ते प्रस्तुत करते थे कि उनका जवाब आसान नहीं होता था। इस प्रकार शैखुल इस्लाम अमृतसरी ने इस्लाम के बचाव में बहु मूल्य साहित्य उपलब्ध किया और उस दौर में जो मुनाज़िरों का दौर था इस साहित्य का बड़ा महत्व था। आज के बदले हुए हालात में जबकि बहु संख्यक कें राजनीतिक प्रभाव व सत्ता के कारण दूसरे धर्मों के लोग (अल्प संख्यक) बचाव करने की स्थिति में आ गए हैं। इस लिट्रेचर के महत्व व क़द्र और अधिक बढ़ गयी है ताकि मुस्लिम समुदाय की नयी नस्ल जो तेज़ी से प्रभावित हो जाने का शिकार रही है हक़ीक़त से अवगत हो सके और किसी प्रकार के प्रभाव में आने के वातावरण से बाहर आए।

(इब्ने अहमद नक़वी)
पाक्षिक तर्जुमान दिल्ली
16– 31 मई से साभार

कुछ पुस्तक के बारे में

1– हक़ प्रकाश ब जवाब सत्य प्रकाश एकेडमी की ओर से प्रस्तुत की जाने वाली आठवीं पुस्तक है। हक़ प्रकाश मौलाना मरहूम की एक शाहकार किताब कहलायी जाने की हक़दार है और यूं भी उनकी किताबों में इस को एक प्रमुख और महत्वपूर्ण दर्जा हासिल है। चूंकि मौलाना मरहूम को अल्लाह ने इस्लाम के विरोधियों से ज्ञानात्मक और लेखों व वक्तव्यों की सतह पर मुक़ाबला करने और तब्लीग़ के लिए भेजा था इसलिए मुनाज़रा से असाधारण दिलचस्पी एक स्वभाविक बात थी. यह किताब हक़ प्रकाश जो कि स्वामी दयानन्द सरस्वती संस्थापक आर्य समाज की किताब सत्य प्रकाश के अध्याय 14 का मुसलमानों की ओर से सतर्क जवाब है। किताब के अध्ययन से आर्य समाज और हिन्दू धर्म से संबंधित पर्याप्त जानकारी हासिल की जा सकती हैं।

2– कुछ लोगों को आज के दौर में इस प्रकार के विषय संबंधी चीज़ें पसन्द नहीं हैं बल्कि इस्लाम का मात्र परिचय या सकारात्मक अन्दाज़ के लिट्रेचर के प्रकाशन के पक्ष में हैं यद्यपि गहरी नज़र से देखा जाए तो दोनों प्रकार के लिट्रेचर की सदैव ज़रूरत रही है और रहेगी। इसका अनुमान उन लोगों को हो सकता है जो ग़ैर मुस्लिमों में इस्लाम के प्रचार का काम करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि आज. मुनाज़रों का दौर नहीं है लेकिन इस्लाम के प्रचार के बारे में हक़ प्रकाश, मुक़द्दस रसूल, ईसाइयों को जवाब, तर्के इस्लाम, तकाबुल सलासा, इस्लाम और मसीहियत और तफ़सीर सनाई जैसी किताबों से ग़ैर मुस्लिमों के भ्रम एवं सन्देहों को दूर करने के लिए बहुत सा

मैटर उपलब्ध हो जाता है कि आज के दौर की लिखी हुई सैंकड़ों किताबों में ऐसा मैटर नहीं मिल सकेगा, सनाई लिट्रेचर का अध्ययन ग़ैर मुस्लिमों में तब्लीग़ करने वाले लोगों के लिए अत्यन्त ज़रूरी है।

3- और वैसे भी आज जबकि सरकारी मदरसों में शिक्षा प्रणाली सैक्यूलर है लेकिन फिर भी पाठ्यक्रम में बहु संख्यक समुदाय की सभ्यता एवं संस्कृति, विचारों एवं दृष्टिकोणों की गहरी छाप है जबकि हमारी नयी नस्ल इस्लाम धर्म और इस्लामी सभ्यता एवं संस्क्रीत से अनभिज्ञ है और इस अनभिज्ञता ने उनको हीन भावना का शिकार बना दिया है अतएव इस्लाम के विरोधियों को इस कमज़ोरी के कारण बेजा लाभ उठाने का सुनहरा अवसर जुटा दिया है।

शुद्धि संगठन किसी न किसी रूप में आज भी जीवित है। इस्लाम के ख़िलाफ़ लिट्रेचर विशेष रूप से आर्य समाज की ओर से खुल्लम खुल्ला प्रकाशित हो रहा है यहां तक कि आज़ादी से पूर्व की प्रतिबन्धित पुस्तकें, जाली नामों और पतों के साथ प्रकाशित की जा रही हैं इसका जीवान्त उदाहरण बदनाम जमाना किताब "रंगीला रसूल" है जो हिन्दी भाषा में प्रकाशित करके चोरी छुपे बेची जा रही है और सरकार की सी आई डी या खुफ़िया विभाग इस पर ध्यान नहीं दे रहा है।

जहां तक सत्यार्थ प्रकाश का संबंध है इसका चौदहवां अध्याय मुसलमानों के लिए सबसे अत्यधिक दिल को चोट पहुंचाने वाला है। इसका अनुमान हक़ प्रकाश में दिए गए मैटर से लगाया जा सकता है। इतने अपमान, तिरस्कार और तुच्छ वाक्य और घटिया शैली दुनिया की किसी किताब की नहीं हो सकती जो कि सत्यार्थ प्रकाश की है। आज़ादी से पूर्व सिन्ध में इस पर पूरी तरह पाबन्दी लग चुकी थी और उसी दौर में पंजाब में इस प्रकार का आन्दोलन

चल रहा था।

आश्चर्य की बात है कि हिन्दुस्तान के मुस्लिम रहनुमा और इस्लाम का दर्द रखने वाली संस्थाएं और स्वयं सरकार का ज़िम्मेदार स्टाफ़ आज तक क्यों खामोश हैं? यह उल्लेखनीय और विचारणीय बात है कि इस किताब में न केवल मुसलमानों के विरुद्ध मैटर है बल्कि सिखों और दूसरे हिन्दू समुदायों के अलावा इस किताब के खंडन भाग में ईसाई धर्म का खंडन और अपमानजनक बातों पर आधारित तेरहवां अध्याय भी है क्या ही अच्छा होता कि अल्प संख्यक आयोग इस समस्या पर भी ध्यान दे क्योंकि सत्यार्थ प्रकाश में अल्प संख्यकों के धर्मों के विरुद्ध अध्यायों का अलग अलग पुस्तिकाओं के रूप में भी विभिन्न भाषाओं में छाप कर गांव देहात और शहरों में बांटा जा रहा है।

यह भी एक अटल हक़ीक़त है कि देश वासियों को इसी वजह से इस्लाम के बारे में भ्रम पैदा हो रहा है और इस प्रकार का विषैला लिट्रेचर देश की प्रगति एवं निर्माण व उसकी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाने का एक स्थाई ज़रिया बना हुआ है। हिन्दू मुस्लिम एकता के आवाहक महात्मा गांधी ने अपने समाचार पत्र "यंग इन्डिया" में इस पुस्तक को निराशा जनक किताब कहा और इसके लेखों पर अपनी नापसन्दीदगी व्यक्त की थी।

4- सत्यार्थ प्रकाश की शताब्दी (सौ साला उत्वस) 22 से 25 मार्च तक दिल्ली के राम लीला ग्राउंड में बड़ी धूम धाम से मनाया गया। देश विदेश से भारी संख्या में आए हुए लोग शरीक हुए। इस अवसर पर इस "हक प्रकाश" पुस्तक का प्रकाशन सराहनीय और एक अच्छा कदम है।

वस्सलाम

अबु राशिद बिन हाजी मुहम्मद सुलैमान

10 मार्च 1979 ई0

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदहु व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम0

भूमिका

पहले मुझे देखिए

स्वामी[1] दयानन्द जी ने एक किताब "सत्यार्थ प्रकाश" देव नागरी में लिखी थी जिसमें सारे धर्मो[2] प्रचलित का खंडन और अपनी मामूली समस्याओं को बयान किया था। किताब के चौदह अध्याय हैं। इनमें से चौदहवें अध्याय में कुरआन पर आपत्ति की है। जब तक यह किताब देवनागरी में थी जन सामान्य की भाषा न होने के कारण प्रसिद्ध न थी। हमने इसका हिन्दी में भी अध्ययन किया था। उसी समय से हमारा विचार था कि जितना कुरआन से इसका भाग संबंधित है उसका जवाब उर्दू में दिया जाए, उस समय इसका जवाब देने में यह परेशानी थी कि नागरी का अनुवाद भी हमें ही करना पड़ता।

अल्लाह की शान! चूंकि यह काम अल्लाह को हम से कराना

1– स्वामी बड़ा सम्मानित शब्द है। आर्य समाज हमारे पैगम्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 का नाम केवल मुहम्मद लिखते और एक वचन के कलिमे से बयान करते हैं जैसे लिखते हैं "मुहम्मद पैदा हुआ, मुहम्मद कहता था" यह एक सामान्य दर्जे के लोगों के लिए है मगर हम उनके गुरु को इज्जत ही से याद करेंगे क्योंकि इस्लाम का यही आदेश है।

लेखक

2– हिन्दुओं ने अपने लेख के बारे में इस किताब के अनेक जवाब दिए है अतएव कुछ के नाम ये है। दयानन्द तमर भास्कर, सत्यार्थ भास्कर, दयानन्द सुभावे प्रकाश, ईसाइयों के जवाब का नाम है सत्यार्थ प्रकाश।

मन्ज़ूर था इसका ज़रिया भी उसने आर्यों को ही बनाया कि उन्होंने इस किताब का अनुवाद उर्दू में करके हज़ारों प्रतियां प्रकाशित कीं। फिर क्या था एक हमारी स्वंय की राय, दूसरे दोस्तों ने भी जो इस नाचीज़ को इस काम के लिए योग्य समझते थे। इसका जवाब देने के लिए ज़ोर डाला जाने लगा अतएव अल्लाह का नाम लेकर मैंने इस काम को आरंभ कर दिया और फिर अल्लाह ने इस काम को पूरा भी करा दिया।

इस बात को बताना कुछ ज़रूरी नहीं कि स्वामी जी के सवाल पूरी तरह ग़लत फ़हमी पर आधारित हैं इसलिए कि सत्य को स्वीकार करने से सदैव ग़लत फ़हमी ही रोक बना करती है वर्ना सत्य की समझ भली प्रकार मन मास्तिष्क में आ जाए तो फिर किसी सत्य को चाहने वाले के दिल से विरोध नहीं हुआ करता। हां, इस बात का दुख अवश्य है कि इस जवाब से पहले स्वामी जी की तेज़ ज़बानी और अल्पज्ञान के मुक़ाबले हिन्दुओं की शिकायतें सुनकर हम उनको धार्मिक पक्षपात और अकारण की दुश्मनी पर आधारित और अतिश्योक्ति वाला समझा करते थे मगर जब हम पर बीती तो हमें बड़ा भारी दुख हुआ कि हमारी यह पुरानी राय ग़लत साबित हुई जिससे भविष्य में हम हिन्दुओं की शिकायत को वाजिबी मानने को मजबूर हैं।

स्वामी जी ने कुरआन शरीफ़ का उर्दू अनुवाद नागरी में कराकर बिना सोचे समझे आगे पीछे देखे बिना जो कुछ दिल में आया लिख मारा। यद्यपि उन्होंने अनुवाद का नाम नहीं बताया मगर अन्दाज़े से मालूम होता है कि जिस अनुवाद पर स्वामी जी ने बुनियाद रखी है वह शाह रफ़ीउद्दीन साहब का शाब्दिक अनुवाद है जो उर्दू भाषा के क़ायदे व व्याकरण, मुहावरे व अरबी भाषा के स्पष्ट अर्थ पर

आधारित नहीं है। इसके अलावा स्वामी जी इसमें अपनी ईजाद (अविष्कार) से भी बाज़ न रहे अतएव पाठक जगह जगह इसे प्रतीत करेंगे।

स्वामी जी ने सवालों पर नम्बर भी लगाए हैं कुल नम्बर 159 हैं मगर हम इनके लिए उनकी वकालत में एक नम्बर और ज़्यादा करके पूरे 160 कर देंगे। यदि हमारे समाजी दोस्त कहते तो ऐसे नम्बरों की संख्या हम हज़ारों तक उनको पहुंचा देते। काश स्वामी जी बजाए 159 नम्बर के केवल 59 बल्कि इनमें से भी 9 के अंक को उड़ा कर केवल 5 सवाल ही ऐसे करते जिनको विद्वान उचित सवालों का नाम दे सकते।

चलिए जो कुछ स्वामी जी से हुआ वह यही 159 या हमारी वकालत की मदद से 160 नम्बर हैं जिनको हम ज्यों का त्यों उन्हीं के वाक्यों में पूरा पूरा नक़ल करके जवाब देंगे।

स्वामी जी ने जैसा कि हमारे पाठक देखेंगे यह तरीक़ा रखा है कि पहले क़ुरआन शरीफ़ का शाब्दिक अनुवाद लिखते हैं फिर अपना नाम आपत्ति कर्त्ता लिखकर उस पर आपत्ति करते हैं। इसी लिए हमने जवाब देते हुए "आपत्ति का जवाब" शीर्षक लगाकर जवाब दिया है।

चूंकि स्वामी के अधिकांश सवाल ऐसे भी हैं जो वैदिक धर्म या आर्य समाज के सम्पूर्ण धर्म के भी विरुद्ध है इसलिए सामान्यता हमने उनकी आपत्तियों का जवाब देकर बाद में भी शोधपूर्ण जवाब दिए हैं।

स्पष्ट रहे कि हमारे हवालों में सत्यार्थ प्रकाश से तात्पर्य प्रमाणिक उर्दू अनुवाद प्रकाशित प्रतिधार्मिक सभा पंजाब है। चूंकि यह अनुवाद अनेक बार छपा है और आर्यों ने किसी विशेष लाभ के

लिए प्रथम एडीशन के पृष्ठों की समानता नहीं रखी। इसलिए पाठक गणों की आसानी के लिए अध्याय नम्बर सहित भी लिखेंगे और ऋग वेद आदि भाषा भूमिका का केवल भूमिका से तात्पर्य अनुवादक बाबू निहाल सिंह आर्य निवासी कर्नाल हैं अतः जिस सज्जन को हमारे हवालों या वेद के अनुवाद में संदेह हो वह प्रत्यक्ष में हम से जवाबी कार्ड भेजकर मालूम करें हम उनको स्वामी जी की किताब से ही वे हवाले दिखा देंगे।

और यह भी स्पष्ट रहे कि हमने इस जवाब में किसी समाजी लेखक को सम्बोध नहीं किया क्योंकि हम जानते हैं कि जितनी इस्लाम से दूरी हुई है इसलिए उनके चेले वही कहें तो उनका दोष नहीं।

पहले एडीशन में यह किताब ईशवरीय किताब के साथ इसलिए लगायी गयी थी कि इसमें आर्यों से वाद विवाद था मगर दूसरे एडीशन से दोस्तों की इच्छा के अनुसार उसको अलग कर दिया गया और उसका नाम भी इसी के हिसाब से "हक़ प्रकाश" ब जवाब सत्यार्थ प्रकाश" प्रस्तावित हुआ।

पहले एडीशन पर आर्यों में एक असाधारण जोश पैदा हुआ। इसके जवाब देने का विज्ञापन भी निकला, बल्कि रिसाला आर्या मुसाफ़िर में थोड़ा बहुत जवाब भी निकला। लेकिन अन्त में वही बात सामने आयी —कि—

हबाब बहर को देखो यह कैसा सर उठाता है
तकब्बुर वह बुरी शै है कि फ़ौरन टूट जाता है

हम इन्तिज़ार में थे कि पूरा जवाब सामने आए तो दूसरे एडीशन में इस ओर भी कृपा हो जाए मगर अफ़सोस कुछ नम्बरों में जो अभी आरंभ ही हुए थे कि उत्तरदायी आलोप हो गए। सितम्बर 1902 ई

तक जवाबुल जवाब की भनक तक न आयी बल्कि पांचवे एडीशन (जुलाई 1924 ई0) तक भी उनकी आवाज़ न आयी।

दिल की दिल ही में रही बात न होने पायी
हैफ़ सर हैफ़ मुलाक़ात न होने पायी

जितना लेख आर्य मुसाफ़िर रिसाला में छपा था उसका जवाब उन्हीं दिनों में रिसाला अनवारुल इस्लाम सियालकोट में तुरन्त निकल गया था फिर भी कुछ बातों का जवाब जो इस नाचीज़ से खास संबंध रखती हैं समय समय पर दिया जाएगा। जवाबुल जवाब के वाक्य से पहले मोअय्यद (मददगार) का शब्द होगा। जैसे कि स्वामी के वाक्य के सिरे पर शब्द मुहक़्क़िक़ आपत्ति का शब्द मिलेगा। मोअय्यद (मददगार) ने जवाब की भूमिका में मुझ पर आरोप लगाया है कि सत्यार्थ प्रकाश लिखे हुए 26 साल हो गए, अब तुम्हें जवाब सूझा। मगर अफ़सोस कि उन्होंने यह नहीं समझा कि 26 साल यदि गुज़रे हैं तो नागरी ही में गुज़रे हैं लेकिन जब देश की सामान्य भाषा उर्दू में आप लोगों ने इसका जलवा दिखाया तो जवाब की ज़रूरत भी महसूस हुई फिर तुरन्त क़र्ज़ उतारा गया।

इसके अलावा यह आरोप तो स्वामी जी पर भी है कि क़ुरआन को उतरे हुए तेरह सौ साल हुए और अब स्वामी से बड़ी मुश्किल से यह बन पड़ा जो आगे आता है। यदि यह कहा जाए कि स्वामी जी तो पैदा ही अब हुए हैं वे तेरह सौ साल पहले किस प्रकार क़ुरआन पर आपत्ति व्यक्त करते तो निवेदन यह है कि यह नाचीज़ भी तो स्वामी जी के ज़माने के बाद ही व्यस्क और ज्ञान की प्राप्ती तक पहुंचा है। यदि मुझे उनसे मुलाक़ात का अवसर मिलता तो शायद उनको सत्यार्थ प्रकाश लिखते हुए चौदहवां अध्याय लिखने की ज़रूरत न पड़ती।

इस जवाब के "हक़ प्रकाश" की सूरत में प्रकाशित होने के बाद स्वामी दर्शना नन्द[1] को जवाब का ध्यान आया अतएव उन्होंने अपनी मासिक पत्रिका मुबाहसा के एक दो नम्बरों में जवाब देना आरंभ किया। उसे देखकर हम लम्बे समय तक इन्तिज़ार करते रहे कि स्वामी जी ख़त्म करें तो इसके जवाब का फ़ैसला तीसरे एडीशन में कर दें मगर अफ़सोस कि स्वामी दर्शना नन्द भी एक दो क़दम चलकर ऐसे गिरे कि दुनिया सिधारे जाने तक इधर का रुख़ न किया।

प्रिय पाठको! आर्यों के मिशन में जितनी धार्मिक पुस्तकें होती हैं व्यक्त करने की ज़रूरत नहीं मगर हक़ प्रकाश के जवाब पर साहस न जुटा पाना क्या कारण रखता है? यही उनका ज्ञान भी इसी बात का फ़ैसला करता है कि स्वामी दयानन्द जी की आपत्तियां कुछ ख़ास महत्व नहीं रखतीं।

भवदीय
लेखक अमृतसर

1- आह! आज ये बुजुर्ग हम से सदैव के लिए बिछड़ गए हैं। आर्यों में बड़ी खूबी के आदमी थे देवरया जिला गोरखपूर के बाद विवाद में यही सज्जन हमारे मुकाबले में थे। कड़वी कसीली बात करना, दिल दुखाना जो दूसरे बहुत से आर्यों की आदत है इनमें न थी। लेखक

हक़ प्रकाश ब जवाब सत्यार्थ प्रकाश

1– सूरह फ़ातिहा—— आरंभ अल्लाह के नाम के साथ क्षमा करने वाले कृपालु के (पहली आयत)

आपत्ति

मुसलमान लोग ऐसा कहते हैं कि यह क़ुरआन अल्लाह का कलाम है लेकिन इस कथन से मालूम होता है कि इसका बनाने वाला कोई दूसरा है क्योंकि यदि ख़ुदा का बनाया हुआ होता तो "आरंभ अल्लाह के नाम के साथ ऐसा न कहता बल्कि "आरंभ वास्ते हिदायत मनुष्यों के" ऐसा कहता।

यदि मनुष्यों को नसीहत करता है कि तुम कहो तब भी ठीक नहीं क्योंकि उससे गुनाह का शुरारंभ भी अल्लाह के नाम से होना सादिक़ आएगा और उसका नाम भी बदनाम हो जाएगा यदि वह क्षमा और दया करने वाला है तो उसने अपने प्राणियों में मनुष्यों के आराम के लिए दूसरे जानदारों को मारकर कठोर यातना देकर और ज़बह कराकर गोश्त खाने की (मनुष्य को) इजाज़त क्यों दी?

क्या ये जानदार, बे गुनाह और ईश्वर के बनाए हुए नहीं हैं? ओर यह भी कहना था कि "ईश्वर के नाम पर अच्छी बातों का शुरारंभ" ख़राब बातों का नहीं। ये शब्द उलझे हुए हैं। क्या चोरी, व्याभिचार, झूठ बोलना अधर्म कामों का शुरारंभ भी ईश्वर के नाम पर किया जाए? इसी कारण देख लो कि क़साब आदि मुसलमान गाय आदि की गर्दन काटने में भी "बिस्मिल्लाह" पढ़ते हैं (अर्थात ईश्वर का नाम लेते हैं) जब इसका यही मतलब है तो बुराइयों को भी

मुसलमान ईश्वर के नाम पर करते हैं और मुसलमानों का ईश्वर दयावान भी साबित नहीं होता क्योंकि उसकी दया उन जानवरों व जान दारों के लिए नहीं है और यदि मुसलमान इसका मतलब नहीं जानते तो इस कलाम का उतारा जाना बेकार है। यदि मुसलमान इसका अर्थ और करते हैं तो फिर इसका असल अर्थ क्या है?

आपत्ति का जवाब

1– स्वामी जी यदि त्रृग वेद मंत्र (1) को देख लेते तो यह वेजा आपत्ति न कर पाते।

समाजियो! तनिक ध्यान से सुनो! हम लोग इस अग्नि की प्रशंसा करते हैं जो कि हमारा पूरा हित करने वाली, यज्ञों का हवन करने वाली, रौशन मौसमों को बदलने वाली, समस्त तत्वों को पैदा करने वाली है।" ("त्रृग मंत्र")

बताओ! यदि अग्नि से (आप के कथना नुसार) ईश्वर ही तात्पर्य है और वेद भी अल्लाह का कलाम है तो उस कलाम को मानने वाला कौन है? इसके अलावा यजुरवेद अध्याय 21 मन्त्र 18, और त्रृग वेद अष्टक 6, अध्याय–1– वरग मन्त्र 6 न0 5, और यजुर वेद अध्याय 32 मन्त्र न0 14, और यजुर वेद अध्याय 20, मन्त्र न0 50, और अथर वेद कांड 6, अनुवादक 10 वरग 68 मन्त्र न0 1 और यजुर वेद अध्याय 15 मन्त्र नम्बर 54 आदि को भी देख लीजिए। अब इसका शोधपूर्ण जवाब सुनिए।

ईश्वरीय किताबों का मुहावरा और कलाम की शैली कई प्रकार की होती है कभी तो ईश्वर स्वयं बात कहने के रूप में अपना आदेश स्पष्ट करता है और कभी ग़ायब से और कभी कोई ऐसा मतलब जो दुआ या निवेदन के रूप में बन्दों को सिखाना अपेक्षित हो उसे बन्दों की ज़बान से व्यक्त कराया जाता है।

सूरह फ़ातिहा भी इसी आखिरी क़िस्म से है जिस पर स्वामी जी ने अनभिज्ञता के कारण ईश्वरीय ग्रन्थ पर आपत्ति कर दी हां, यह भली कही कि गुनाह का शुरारंभ भी ईश्वर के नाम से होगा जिसका जवाब यही काफ़ी है। कि

"नाच न जाने आंगन टेढ़ा।"

न जाने आपको इतनी जल्दी क्या थी कि क़ुरआन शरीफ़ और अन्य ईश्वरीय किताबों का रद्द करने बैठ गए। पहले किसी अरबी मदरसा में रहकर क़ुरआन को समझ लेते मगर वाह री सच्चाई कि अपना विचार व्यक्त किए बिना नहीं रह सकती, स्वामी जी वाक्य न0 73 में लिखते हैं।

> "जो धर्म दूसरे धर्मों को कि जिनके हज़ारों करोड़ों आदमी श्रद्धालु हों झूठा बता दे और अपने को सच्चा स्पष्ट करे। इस से बढ़कर झूठा धर्म और कौन हो सकता है।" (सत्यार्थ प्रकाश, अध्याय 14 न0 72)

अतः स्वामी जी महाराज और उनके चेलों के लिए तो इतना ही काफ़ी है कि क़ुरआन शरीफ़ के मानने वाले करोड़ों लोग हैं फिर जो तुम उसकी शिक्षा को झूठा और ग़लत कहो तो तुम से अधिक ...... कौन है?

समाजियो! मुंह न छुपाओ। हुआ क्या? यदि चेले बनने का इक़रार करो तो हम तुम्हें एक जवाब सिखाते हैं। सुनो! साफ़ कह दो स्वामी जी कोई ईश्वरीय न.थे कि उनकी सारी बातें मानने योग्य हों बल्कि वे समाज के एक सदस्य थे जिनसे ग़लती भी संभव थी। इस कथन में भी वे ग़लत चाल चले कि अधिसंख्यक वाली राय को हक़ीक़त के विरुद्ध समझा तो यदि तुम यह कह दोगे तो तुम मुक्त हो जाओगे लेकिन चूंकि हम इस समय स्वामी जी के मुक़ाबिल हैं।

उनके जवाब देने को उनके कथनों को नक़ल करना काफ़ी होगा।

मतलब आयत का साफ़ है कि हम ईश्वर की प्रशंसा को जो आगे कलाम में आती है ईश्वर के नाम से आरंभ करते हैं, हां यदि कोई काम भी नेक या वैध हो और ईश्वर के नाम से आरंभ हो जाए तो यह अच्छी ही बात है और पुन का कारण। हराम काम को बिस्मिल्लाह (ईश्वर के नाम से) से आरंभ करना या हराम चीज़ बिस्मिल्लाह पढ़ कर खाने से आदमी काफ़िर हो जाता है, हां जानवरों के ज़बह की ओर भी मौक़ा पर इशारा किया है।

स्वामी जी! निश्चय ही यह बड़ी दया की बात है कि बे ज़बान जानवरों को ज़बह करके उनकी क़ैद के दिन पूरे कराए जाएं जिससे दो लाभ अपेक्षित हैं। एक तो वे आत्माएं जो (आपके कथनानुसार) बुरे कर्मों से उन हैवानी शरीरों में आकर फंस रही हैं (देखो उपदेश मंजरी पृष्ठ–60) क़ैद से छुटकारा पाएं। दूसरे यदि वे मनुष्य की भान्ति बीमार रह कर अपनी मौत मरें तो कितने कष्टों के बाद उनकी आत्मा निकले। स्वामी जी के हमें कहीं दर्शन हो जाएं तो हम उनसे पूछें मौत की सख़्ती कितनी कठिन काम है अतः इस सख़्ती के मुक़ाबले में ज़बह की सख़्ती कोई चीज़ नहीं। मनुष्य को बीमारी और आत्मा के निकलने से जो तकलीफ़ होती है स्वामी जी उसका अनुमान लगाते तो यह आपत्ति कभी अपनी ज़बान पर न लाते बल्कि समाज का पहला उसूल यही ठहराते कि सुबह उठकर हर समाजी का कर्तव्य है कि बन्दूक़ लेकर दस पांच चिड़यों को या मक्खियों ही को मारा करे यद्यपि मनुष्य अपनी तकलीफ़ों को स्वयं ही व्यक्त कर सकता है और हकीमों के मशवरों से उन तकलीफ़ों में कभी कभी कमी भी संभव है मगर बेचारे बे ज़बान जानवर क्या कहें और किस को कहें?

हां कोई साहब यह सवाल करें कि इसी तरह मनुष्य को भी ज़बह करके मौत की सख़्ती से बचा लेना चाहिए तो हम कहेंगे–– "नहीं" इसलिए कि मनुष्य सारे प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ है इस लिए हर ज़माना में हर हुकूमत मनुष्य की हत्या करने पर दंड देती है इसके अलावा मनुष्य के सगे संबंधी और दोस्त कभी इस बात की इजाज़त नहीं दे सकते क्योंकि उसके मरते दम तक उनको ज़िन्दा रहने की उम्मीद होती है जिससे उनकी बहुत सी आशाएं व मनोकानमाएं जुड़ी होती हैं अतः इन कारणों से मनुष्य को मारने में दंगा फ़साद का ख़तरा है इस लिए न किसी समय के शासक ने न किसी धर्म शास्त्र ने इसकी अनुमति दी, हां हैवानात के ज़बह में चूंकि कोई फ़साद नहीं इसलिए सामान्य विश्वसनीय धर्मों में जानवरों के ज़बह की अनुमति पायी जाती है यहां तक कि हिन्दू धर्म शास्त्र (मनु स्मृति आदि) में भी।

स्वामी जी! विश्व व्यवस्था से बढ़कर कोई सद कर्म नहीं। यह व्यवस्था हमें शिक्षा दे रही है कि इस संसार में ईश्वर ने अपने प्राणियों को दो ही प्रकार पर पैदा किया है। बरतने वाली और इस्तेमाल योग्य। कुछ सन्देह नहीं कि मनुष्य सब चीज़ों को बरतने वाला है और सारी वस्तुएं उसके बरतने योग्य हों। स्वामी जी! क्या यह ईश्वर की दया नहीं कि उसने हमारी सवारी के लिए हाथी, ऊंट, घोड़ा आदि और हल चलाने को बैल, भैंस आदि पैदा किए। क्या उससे अधिक भी कोई व्यक्ति दया खाकर अपनी सवारी पर दस कोस चलकर दो कोस के लिए उसे अपने ऊपर बिठाना चाहे तो सारे विद्वान और मूर्ख लोग उसे मूर्ख न समझेंगे यद्यपि आपकी समझ के अनुसार यह क्या दया है कि एक जानदार दूसरी जानदार वस्तु को अकारण इतना दबाए कि सारा दिन रात उस पर सवारी करे। आप एक क़दम न चलें और वह बेचारा उसको उठाए फिरे

और सवार दया न करे।

समाजियो! कायनात की व्यवस्था से शिक्षा ग्रहण करो जो सब गुरुओं का गुरू है। बनावटी गुरुओं से ग़लती संभव है इसमें कण भर ग़लती न पाओगे।

इसके अलावा यदि हम इन हैवानों को ज़बह न करें तो क्या करें। रखने से हमें लाभ ही क्या। कुछ हैवान तो दूध आदि भी दें मगर कुछ ऐसे हैं कि दूध नहीं देते और दूध देने वाले भी एक आयु को पहुंच कर नहीं देते यद्यपि हम उनको खाना दें। रक्षा भी करें जैसे मुर्गी मुर्गा आदि। यदि इनके अंडे खाएं तो आप इसकी भी अनुमति नहीं देते और यदि अंडों से बच्चे निकलवाएं तो फिर क्या यही प्रमाण देंगे। अतः या तो स्वामी जी ऐसे जानवरों के खाने की इजाज़त दें जिनसे मानव जाति को कुछ लाभ न हो या कोशिश करके उनसे कोई लाभ दिलवाएं। मगर याद रहे कि प्रकृति का मुक़ाबला करके लाभ तो दिलवा नहीं सकते, हां यदि दबी ज़बान से खाने पीने की अनुमति दें तो वही सवाल पैदा होगा कि वे जानदार और ये गुनाह ईश्वर के बनाए हुए नहीं? और यदि यह भी न करें और जानवरों को मनुष्यों के बराबर ही अधिकार दिलाना चाहें तो कृपा करके पहले दूसरी प्रकार के अधिकारों में समानता कराएं फिर उसका नाम लें।

हमारे पास वेद मंत्रों के हवाले भी हैं जिनसे साबित होता है कि पहले ज़माने में हवन में गाय घोड़े आदि ज़बह किए जाते थे मगर चूंकि वह अनुवाद स्वामी जी का किया हुआ नहीं बल्कि यूरोपीन विद्वानों का किया हुआ है। ख़तरा है कि हमारे समाजी दोस्त जो स्वामी जी के श्रद्धालू हैं उस अनुवाद से इन्कारी हो जाएं। इसलिए बजाए उन मंत्रों के स्वामी जी के कलाम का हवाला देना भी बेहतर है।

आप इस किताब के चोदहवें अध्याय में लिखते हैं......कि......

"जो धर्म दूसरे धर्मों को कि जिनके हज़ारों करोड़ों आदमी श्रद्धालु हों झूठा बता दे और अपने को सच्चा ज़ाहिर करे उससे बढ़कर झूठा और धर्म कौन हो सकता है?" (सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ–697)

अतः समाजियो! बताओ, मांसाहारियों की संख्या गिन सकते हो? गिनते हुए पहले अपनी मांस[1]पार्टी से आरंभ करना।

स्वामी जी के मददगार

मौलवी साहब! आपने स्वामी जी की आपत्ति को क्या समझा जिसका जवाब दिया। स्वामी जी ने जो आपत्ति की थी वह यह थी कि कुरआन चूंकि मुहम्मद के कथनानुसार ईश्वरीय कलाम होने से सर्वकालिक और अनादिकालिक है अतः उसका आरंभ नहीं हो सकता फिर आरंभ करने का कलिमा निरर्थक है।

2– अल्लाह का यह कलाम ईश्वर के नाम पर आरंभ करना और भी आश्चर्य जनक है क्योंकि इसकी ज़रूरत अल्लाह को नहीं बल्कि मनुष्य को है और मनुष्य के लिए ईश्वर का कलाम मार्ग दशर्क के रूप में होता है अतः मार्गदर्शन मनुष्यों के लिए होना चाहिए था।

3– मौलवी साहब आपने शायद यह समझा कि स्वामी जी ने उसके स्वयं संबोध करने न करने पर आपत्ति की है कदापि नहीं उनकी आपत्ति थी कि अल्लाह को यह कलाम अपने नाम से आरंभ करने की क्या ज़रूरत थी। अल्लाह के नाम से तो मनुष्य आरंभ किया करते हैं। (आर्य मुसाफ़िर– मार्च 1902 ई0)

1– आर्यों की दो पार्टियां है। एक मांस खाते है उनको मांस पार्टी एक नहीं खाते उनको घास पार्टी कहते हैं उनकी आपसी लड़ाई अख़बार आर्य गज़ट और प्रकाश से अच्छी तरह स्पष्ट हो सकती है।

आपत्ति का जवाब

अब ऐसे ज्ञान पर कोई कैसे न कुरबान हो जाए। पूरा मतलब तो इस वाक्य का इन मददगार साहब ही ने समझा होगा हमने तो कुछ आर्यो को भी यह वाक्य दिखाया मगर वे भी कानों पर हाथ रख गए। मतलब यह कि कुछ भी हो स्वामी जी के असल सवाल पर किसी व्याख्या या समीक्षा करने की आवश्यकता नहीं अतएव वे स्वयं ही लिखते हैं।

"क्योंकि यदि ईश्वर का बनाया होता तो आरंभ साथ अल्लाह के न कहता बल्कि आरंभ वास्ते हिदायत मनुष्यों के ऐसा कहता।"

देखिए स्वामी जी को "आरंभ" के शब्द पर कोई आपत्ति नहीं क्योंकि यदि "आरंभ" के शब्द पर कोई आपत्ति होती तो अपनी इस्लाह में आरंभ का शब्द क्यों लाते जिससे यह साफ़ समझा जाता है कि आपकी पुष्टि या समर्थन का नम्बर अव्वल अर्थात अनादिकालिक होने की वजह से आरंभ न होना बिल्कुल बे समझी की पुष्टि है।

मददगार साहब के समर्थन का नम्बर (2) भी हैरत से ख़ाली नहीं है इसका मतलब भी वे स्वयं ही समझे होंगे। ख़ैर कुछ भी हो मतलब वही है जो हम बतला आए हैं कि बन्दों के प्रदर्शन के लिए ऐसा किया गया। हां स्वामी जी की यह आपत्ति कि गुनाह का आरंभ भी अल्लाह के नाम से अवश्य आएगा इसका जवाब भी हो चुका कि यहां सब कामों का आरंभ करना तात्पर्य नहीं बल्कि उसी काम का जो बिस्मिल्लाह के आगे है अर्थात अलहम्दु लिल्लाह या कोई और इसी प्रकार का भला काम।

मददगार साहब ने यह भी आपत्ति की है कि यह बिस्मिल्लाह पारसियों के कलाम से लिया गया है अर्थात बनाम बखशाइन्दा दाद गर" अफ़सोस है कि उन लोगों को आपत्ति करने की राल क्यों ऐसी टपका करती है कि दूसरे कलाम के अर्थ समझने से पहले ही अनेक आपत्तियां जमा देते हैं यद्यपि स्वामी जी भूमिका सत्यार्थ प्रकाश में बड़ी ताकीद से लिखते हैं कि।

"हर कलाम का मतलब कहने वाले की मन्शा पर होना चाहिए।"

यदि यह बात मान भी ली जाए कि बिस्मिल्लाह पारसियों के कलाम का अनुवाद है तो मुसलमानों के धर्म के अनुसार इसके ईश्वरीय होने पर क्या आपत्ति? हमारा तो यह धर्म नहीं कि ईश्वरीय कलाम वह होता है जिससे पहले न तो वह और न उसका अनुवाद दुनिया में कहीं हुआ हो न हो। देखिए कुरआन मजीद स्पष्ट शब्दों में इस्लाम से पूर्व की ईश्वरीय किताबों की तसदीक़ करता है और स्पष्ट शब्दों में कहता है।

"तुम मुसलमानों को और तुम से पहले किताब वालों को यही आदेश दिया गया था कि ईश्वर का भय दिल में रखो।"

चूंकि आर्यों की ग़लती का मौलिक पत्थर यही ना समझी है कि ईश्वरीय कलाम का गुज़रा हुआ न होना उनके निकट शर्त है अर्थात यह क़हते हैं कि ईश्वरीय वाणी वही है जो दुनिया के आरंभ में उसके बाद कोई ईश्वरीय वाणी नहीं इसी लिए तौरेत और इंजील और कुरआन आदि को ईश्वरीय नहीं मानते। अतः हम चाहते हैं कि उनकी इस ग़लती का सुधार इसी जगह कर दें।

यद्यपि यह दावा उनका वेद[1] के ईश्वरीय होने पर भी मुश्किल पैदा करता है क्योंकि वेद में भी लिखा है कि जिस प्रकार प्राचीन काल के विद्वान तुम्हारे पूर्वज समस्त विद्याओं के माहिर गुज़र चुके हैं मुझ क़ादिर मुतलक़ ईशवर के आदेश का पालन करते रहे हैं तुम भी उसी धर्म के पाबन्द रहो ताकि वेद में बताए हुए धर्म का तुम को निस्संदेह ज्ञान हो जाए।" (ऋग वेद अशटक– 8 अध्याय 8)

इस वाक्य से साफ़ समझ में आता है कि वेद किसी ऐसे युग में बना है कि उस दौर में दुनिया की आबादी इतनी अधिक हो चुकी थी कि उस समय के मौजूदा लोगों को बुजुर्गों के हाल से शिक्षा गृहण करने की या यूं कहिए कि वेद के लेखकों को आवश्यकता पड़ती थी और वे उनका उदाहरण लोगों को बताते थे यदि कहे कि दुनिया का सिलसिला चूंकि हमारे (आर्यों के) निकट प्राचीन काल से है तो इस दुनिया के आरंभ ही में उस समय के वर्त्तमान लोगों को पहले लोगों की जो पहली दुनिया में गुज़र चुके थे चाल अपनाने की प्रेरणा दी गयी है तो इसका जवाब यह है कि ऐसा कलाम जैसा कि वेद का उपरोक्त आदेश है इस अवसर पर बोला जाया करता है जहां सम्बोधित लोगों को पहले बुजुर्गों का ज्ञान और जान कारी हो यद्यपि इस दुनिया के पैदा हुए लोगों को पहले बुजुर्गों की कोई ख़बर नहीं थी किसी को यदि हो तो बताइए।

इसके अलावा बड़ी परेशानी यह है कि आर्यों के धर्म में वेद में वेद ईश्वर के ज्ञान का नाम है तो जब से ईश्वर है तब से वेद है यद्यपि वेद के शब्द वर्तमान संसार के नष्ट होने से नष्ट हो जाते हैं मगर उसके मायना ईश्वर के ज्ञान में मौजूद रहते हैं इस दुनिया से पहली दुनिया में भी होगा बल्कि जब से ईश्वार है तब से होगा यद्यपि

1– इस मसला का विवरण हमारे रिसाला हदूस वेद में मिलता है।

ईश्वर से पहले कोई ज़माना नहीं जिसमें वे बुजुर्ग गुज़र चुके हैं। जिनकी चाल अपनाने का उन मौजूद लोगों या हमें आदेश होता।[1] मगर मुसलमानों और ईसाइयों का धर्म यह नहीं कि ईश्वरीय संकेत दुनिया के आरंभ ही में होगा तो सही वर्ना ग़लत। बल्कि असल यह है कि ईश्वर की ओर से एक विचार का बिना कुछ किए दिल में डाला जाना ईश्वरीय संकेत है। किसी लेखक के दिल में किसी का आ जाना भी यद्यपि एक मायना से इलहाम है मगर यहां पर जिस ईश्वरीय संकेत से बहस है वह यह नहीं। बल्कि वह तात्पर्य है जो किसी अभ्यास या सोच या चिंतन का नतीजा न हो बल्कि मात्र अल्लाह की ओर से इलक़ा (हिदायत) हो चाहे वह विचार इस इलहाम से पहले तमाम लोगों को मालूम हो या न हो चाहे दुनिया के आरंभ में हो या मध्य में या अन्त में हो।

क्योंकि इस बात से कोई दलील बाधा नहीं कि एक किताब या एक विषय जो पहले किसी नबी को इलहाम हुआ था उसके बाद भी किसी नबी को इलहाम हो जाए। इसका उदाहरण ऐसा समझो कि किसी व्यक्ति को परीक्षा पास होने की ख़बर किसी ज़रिए से बिना सरकारी गुज़ट के पहुंच गयी मगर इसके बाद उसी सरकारी गज़ट में भी ख़बर आ गयी, ठीक इसी तरह नबियों को किसी पूर्व नबी के ईश्वरीय संकेत द्वारा कोई बात मालूम हो जाया करती है लेकिन नए सिरे से भी वही विचार ईश्वरीय संकेत के रूप में मिल जाता है।

ठीक यही समस्त पूर्व किताबों और कुरआन शरीफ़ की मिसाल है। मुसलमानों में जो यह मशहूर है कि तौरात और इंजील कुरआन से निरस्त है इसके भी यह अर्थ हैं कि कुरआन द्वारा वे विचार पूरी तरह पहुंच कर मानो रजिस्टर्ड पत्र की तरह सुरक्षित हो चुके हैं ऐसे

1– इसका विवरण हमारे रिसाला 'हदूस वेद' में है।

कि इससे पहले न थे क्योंकि बाद में इन किताबों में बहुत कुछ मिला लिया गया था मगर जो जो बातें, पथ प्रदर्शन कुरआनी ईश्वरीय संकेत द्वारा पहुंची तो उसके बारे में यह संदेह बिल्कुल दूर हो गया। और यही अर्थ है कुरआन शरीफ़ की आयतों का।

> "कुरआन पहली किताबों की पुष्टि करता है और उनपर निगहबान भी है तो तुम लोगों के बीच उसके अनुसार फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है।"
>
> (सूरह माइदह– 48)

तो बिस्मिल्लाह से पहले बिस्मिल्लाह का अनुवाद दुनिया में मौजूद होना उसके ईश्वरीय होने के ख़िलाफ़ नहीं। मगर जब पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल0) को यह पथ प्रदर्शन ईश्वर की ओर से मिल गयी तो ईश्वरीय हो गयी। शुक्र है कि जो वेद मन्त्र हमने आरंभ में जवाब में नक़्ल किए थे उनके बारे में मददगार साहब ने भी कुछ न कहा और ख़ामोश होकर पास से गुज़र गए और ख़ामोशी मान लेना सहमत होने के दर्जे में है।

मददगार साहब ने मांसाहारी पर एक और आपत्ति भी की है कि अच्छे से अच्छा जानवर तो खा लेते और भयानक दरिन्दों (शेर, चीता आदि) को हराम समझते हो। यह सवाल मददगार साहब का उस समय उचित था जब वे मांसाहारी को वैध मान लेते और उसके विवरण पर उनको आपत्ति होती लेकिन जिस सूरत में वे पूरी तरह मांसाहारी के इन्कारी हैं तो फिर उसे विस्तार में जाकर प्रस्तुत करने का उनको क्या हक़ है? क्या यदि हम एक प्रकार के जानवरों को खा लिया करें तो आर्य लोग हम से सहमत हो जाएंगे? कदापि नहीं।

चूंकि लाला साहब और उनके अन्य साथियों के क़लम से यह सवाल हमेशा निकला करता है इसलिए मुनासिब है कि इसका

जवाब भी दे दिया जाए। गाय का सम्मान क्यों न हो। लाला साहब! यदि चिकित्सा संबंधी और मेडिकल उसूलों को अपने समक्ष रखते तो कभी यह आपत्ति न करते। चिकित्सा संबंधी विषय पर छोटी छोटी किताबों में यह बात मिलती है कि जो आहार मनुष्य खाता है वह शरीर का अंश बन कर अपना प्रभाव दिखाता है। इस तिब्बी तहक़ीक़ से बढ़कर शरअी तहक़ीक़ है क्योंकि तिब्ब तो केवल शरीर की रक्षक है मगर शरीअत शरीर और आत्मा दोनों की रक्षक है लेकिन इन दोनों में आत्मा की रक्षा सर्वोपरि है जिसकी रक्षा का अर्थ तो सब जानते हैं कि बाहरी कष्ट व तकलीफ़ से रक्षा की जाए। आत्मा की रक्षा का अर्थ यह है कि उसे बुराइयों से बचाया जाए जो उसके लिए दूसरे जीवन में तबाही का कारण होती है।

अतः जो चीज़ें या जानवर शरीअत ने हराम किए हैं वे उसी उसूल की दृष्टि से किए हैं। इन दरिन्दे जानवरों को तो आप भी खूंख़्वार मानते है। जिनके खाने से निश्चय ही आदमी पूरा नहीं तो आधा खूंख़्वार हो जाएगा। क्या आप बता सकते हैं कि चोरी के माल से पूरी कचौरी या भाजी ख़रीदना क्यों हराम है प्रत्यक्ष में शारीरिक हानि तो उसमें कोई नज़र नहीं आती मगर चूंकि दूसरे जीवन में इसकी हानि सामने आ जाएगी इसलिए हराम है अतः इसी तरह सारे कामों को समझ लीजिए जो शरीअत में हराम हैं कि जो चीज़ मनुष्य के दूसरे जीवन या उसी जीवन में उसके आचरण पर बुरा प्रभाव डालती हो उसे शरीअत ने हराम ठहराया है।

आप लोग नैतिक प्रभाव के विवरण से परिचित न होंगे। नैतिक प्रभाव कभी तो यह होता है कि उसके काम के करते समय आदमी कोई अनुचित हरकत कर गुज़रता है जैसे शराब की मसती में नाजायज़ हरकतें करता है। एक नैतिक प्रभाव यह होता है कि उस

काम के करने से या उस चीज़ के खाने से भविष्य में उसकी आत्मा को हानि पहुंचती है उस पर बुरा प्रभाव पड़ता हे और नतीजा यह निकलता है कि उसकी नेक कामों में तबियत नहीं लगती।

फिर यदि वह इसका जल्दी इलाज न करे तो धीरे धीरे उसकी नौबत यहां तक पहुंच जाती है कि वह बिल्कुल मूर्ख या पागल की तरह ला इलाज हो जाता है फिर उसे किसी नेक काम को करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता क़ुरआन से इस दावे का सबूत चाहो तो हर सूरह व आयत से मिल सकता है। एक आयत सुनो।

"जब वे लोग टेढ़े हुए तो अल्लाह ने उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया।" (सूरह सफ़्फ़ – 5)

यदि अपने स्वामी जी के कलाम से सनद चाहो तो सुनो– स्वामी जी बौद्धों के बारे में क्या लिखते हैं–

"उन्होंने (बौद्ध धर्म वालों ने) किस दर्जा अपनी अज्ञानता में प्रगति की है जिसका उदाहरण उनके सिवा दूसरा नहीं हो सकता। विश्वास तो यही है कि वेद और ईश्वर का विरोध करने का उन्हें यही नतीजा मिला।" (सत्यार्थ प्रकाश 541– अध्याय 12 न0 17)

इस वाक्य से साफ़ मालूम हुआ कि एक गुनाह दूसरे गुनाह का कारण बन जाता है अतः जिस दर्जा में कोई आहार रूहानी तौर पर बुरा प्रभाव करने वाला होता है उसी अन्दाज़ से शरीअत में मनाही होती है यही कारण है कि शरीअत इस्लाम में कुछ चीज़ें सख़्त हराम हैं और कुछ किसी दर्जा कम जिनको मकरूह कहते हैं।

दरिन्दे जानवरों की हुरमत भी इसी उसूल पर आश्रित हैं मतलब यह है कि एक उसूल है कि समस्त काम इसी नियम के मोहताज हैं। हां इस बात का पता लगाना कि कौन सी चीज़ या काम अनैतिक है और वह आध्यात्मिक जीवन में बुरा प्रभाव डालने वाली है और कौन

ऐसी नहीं है यह हरेक के बस का काम नहीं बल्कि उनका काम है जिनको ईश्वरीय संकेत मिला करता है जिससे आपको भी इन्कार न होगा क्योंकि ईश्वरीय संकेत की ज़रूरत तो आप लोग भी मानते है बल्कि आप स्वयं अपने आपको किताब वालों के रूप में जानते हैं। इसी उसूल से नुबुवत की ज़रूरत मालूम होती है। आगे चलिए।

(2) सारी प्रशंसा वास्ते अल्लाह के जो सारे जगत का पालनहार क्षमा करने वाला कृपालू है (आयत **2**–)

आपत्ति

यदि कुरआन का अल्लाह दुनिया का पालनहार होता और सब पर दया और क्षमा किया करता तो दूसरे धर्म वालों और हैवानात आदि को भी मुसलमानों के हाथ से क़त्ल का आदेश न देता। यदि क्षमा करने वाला है तो क्या पापियों पर भी दया करेगा? और यदि करेगा तो आगे ज़िक्र आएगा कि "काफ़िरों को क़त्ल करो" अर्थात जो कुरआन और पैग़म्बर को न मानें वही काफ़िर है। ऐसा क्यों कहता? इसलिए कुरआन अल्लाह का कलाम साबित नहीं होता।

आपत्ति का जवाब

इस वाक्य में आपत्ति कर्त्ता स्वामी जी ने जिहाद की ओर इशारा किया है और अपनी आदत के अनुसार आगे भी कई एक अवसर पर इशारा करेंगे इसलिए उचित मालूम होता है कि जिहाद की हक़ीक़त वेद और कुरआन से इसी जगह स्पष्ट कर दी जाए और आगे आने वाले अवसरों पर इसी जगह के हवालों से काम लिया जाए। स्पष्ट रहे कि वेद और वेद के अलावा मनु स्मृति आदि में जिनको स्वामी जी प्रमाणिक और विश्वसनीय मानते हैं जिहाद के बारे में विभिन्न प्रकार के निर्देश मिलते हैं।'

वेद की पहली हिदायत जंग में काम आने वाले हथियारों को

ठीक करने के बारे में है जो ऋग वेद मंडल प्रथम सोकत 26 मन्त्र 2 में लिखा है।

"ऐ आज्ञा पालक लोगों! तुम्हारे हथियार अग्नि आदि तोप व भाले, तीर व तलवार आदि शास्त्र विरोधियों को पराजित करने और उनको रोकने के लिए प्रशंसनीय और सदृढ़ हों। तुम्हारी सेना सतर्क व होशियार हो ताकि तुम सदैव विजयी होते रहो।"

एक और स्थान दुआ यूं लिखी हुई है।

"मैं उसका रक्षक कायनात के स्वामी मान एवं प्रताप वाले अत्यन्त बलवान और विजयी सारी कायनात के राजा सर्व शक्तिमान और सबको शक्ति प्रदान करने वाले परमेश्वर को जिसके आगे समस्त ज़बरदस्त बहादुर आज्ञा पालक सर झुकाते हैं और जो न्याय से प्राणियों की रक्षा करने वाला इन्द्र है।"

"हर जंग में विजय पाने के लिए आमन्त्रित करता हूं और शरण लेता हूं।" (यजुरवेद अध्याय, 2,मंत्र 50)

एक जगह परमेश्वर दुआ देता है।

" ऐ मनुष्यो! तुम्हारे हथियार अर्थात तोप बन्दूक़[1] आदि अग्नि धावक शस्त्र और तीर व कमान तलवार आदि हथियार मेरी कृपा से शक्ति शाली और साहस वर्धक कार्य वाले हो तुम दुश्मनों की सेना को पराजित करके उन्हें पछाड़ो। तुम्हारी सेना विश्व व्यायी हुकूमत इस धरती पर स्थापित हो और तुम्हारा शुत्र (ऐसी घ्रणात्मक खतरनाक तलवार म्यान वाली) पराजित हो और नीचा देखे। (जैसा ग़ाज़ी महमूद गज़नवी महहूम और मुहम्मद ग़ौरी ने नीचा देखा?)

(ऋग वेद अशटक प्रथम अध्याय 3 परग 18 मन्त्र 2)

1- तोप बन्दूक़ स्वामी जी के शब्द है हम इनके ज़िम्मेदार नहीं। (लेखक)

एक स्थान पर लिखा है।

"ऐ दुश्मनों के मारने वाले जंग के नियमों में माहिर निडर, साहसी, प्रिय, प्रतापी और जवां मर्द तू सब प्रजा को प्रसन्न रखो। परमेश्वर के आदेश पर चलो और घ्रणित शुत्र को (हे महाराज इतनी नाराज़ी) पराजित करने के लिए लड़ाई का कार्य पूरा करो। तुमने पहले मैदानों में शत्रुओं की सेना को पछाड़ा है। तुमने इन्द्रियों को पराजित और धरती को विजयी किया है। तुम शक्तिशाली बाज़ू वाले हो। अपनी बाज़ू की ताक़त से दुशनों को समाप्त करो ताकि तुम्हारे बाज़ू का ज़ोर और ईश्वर की दया व कृपा से हमारी विजय हो।"

(अथर वेद कांड 6, अनुवादक वरग 95 मन्त्र 3)

मनु जी का आदेश यह है।

"जब जनता प्रेमी राजा कोई अपने से छोटा चाहे बराबर चाहे बड़ा जंग के लिए बुलाए तो क्षत्रियों के धर्म को याद करके जंग के मैदान में जाने से अपने आपको न रोके, बल्कि बड़ी होशियारी के साथ उनसे जंग करे जिससे अपनी विजय हो।"

(7, 87 सत्यार्थ प्रकाश अध्याय 6 न0 29)

एक स्थान पर आदेश है।

"किसी समय उचित समझे, दुश्मन को चारों ओर से घेर कर रोक रखे और उसके देश को तकलीफ़ पहुंचा कर चारा,[1] खूराक पानी और अन्य सामान को नष्ट और खराब कर दे।"

(धिक्कार है समाजियो! यह दया कैसी?) देखो मनु महाराज जी) 195 सत्यार्थ प्रकाश अध्याय 6 न0 53)

एक जगह आदेश है।

1– महाराज! गऊ माता क्या खाएगी?

"अपने मतलब की पूर्ति के लिए उचित या अनुचित समय में दुश्मन के साथ जो अपने किसी दोस्त की ग़लती करने वाला हो लड़ना, अर्थात इसी दो प्रकार के आधार पर जंग करना चाहिए।"

(मनु जी 7.64 सत्यार्थ प्रकाश पृ0 205 अध्याय 6 न0 46)

क्या इतने हवालों के बाद भी आपत्ति कर्त्ता और उनके चेले जिहाद को मुंह पर लाएंगे और कहेंगे कि "यदि कुरआन का ईश्वर संसार का पालनहार होता और सब पर क्षमा और दया किया करता तो दूसरे धर्म वालों और जानवरों आदि को मुसलमानों के हाथ से क़त्ल कराने का आदेश न देता।

पाठक जनो! यह है स्वामी जी का न्याय और यह है उनकी ईमानदारी और फिर क़ौम का लीडर।

अल्लाह रे ऐसे हुस्न पे ये हैं तेरी बे नियाज़ियां
बन्दा नवाज़ आप किसी के ख़ुदा नहीं

हमारे इन वैदिक हवालों से जहां जिहाद का मसला हल हो गया। वेद की प्राचीनता और दुनिया का आदिकाल से होना भी असत्य हुआ। पाठक गण तनिक ध्यान से देखें।

अब इस आपत्ति का जवाब सुनिये: कुरआन में कहीं लिखा कि काफ़िरों को उनके कुफ़्र के कारण मारो और क़त्ल करो, बल्कि साफ़ इर्शाद है।

"जो तुम से लड़े तुम उनसे लड़ो और लड़ने में अत्याचार न करो, निस्सन्देह अल्लाह अन्याय करने वालों से मुहब्बत नहीं करता।" (सूरह बक़रा– 19)

स्वामी जी। यदि काफ़िरों को कुफ़्र के कारण मारने का आदेश होता तो काफ़िरों को जनता के रूप में क्यों रखा जाता। यह मसला हमारी किताबों में अनेक अवसरों पर आया है। आगे भी स्वामी जी

को जिन जिन आयतों में संदेह होगा दूर किया जाएगा इन्शा अल्लाह।

पाठाको! आपत्ति करने वालों का न्याय देखिए कि यह आयत (पूरी सूरह फ़ातिहा अन्त तक) ऐसी पाकीज़ा शिक्षा से भरी हुई है मगर आपत्ति कर्त्ता को भलाई भी हलक से नहीं उतरी, क्यों न हो मुसलमानों के हाथ से छूत है।

मददगार साहब से यह तो न हो सका कि इन वेदिक हवालों से इन्कार करते या हमारे शोधपूर्ण जवाब ही को देखते। झट से लिख मारा कि।

"आपने जितने भी मन्त्र प्रस्तुत किए हैं उनमें से किसी एक में भी यह निर्देश नहीं कि तुम स्वयं अपना धर्म फैलाने के लिए दूसरों से लड़ो या उनको क़त्ल करो वहां तो मदनी राजनीति के बारे में न्याय पर आधारित है रंग व क़ौम, धर्म व समुदाय भेद भाव के बिना समस्त मानव जाति के लिए समान विश्व व्यापी निर्देश हैं जिनका किसी विशेष क़ौम या धर्म से तनिक भर भी संबंध नहीं, हां यही[1] विषय क़ुरआन में मौजूद है जिस पर हमारी आपत्ति है और तुम्हारा चूं चरा करना ग़लती है।" (आर्य मुसाफ़िर सितम्बर 1902 ई0)

मददगार साहब यदि न्याय के साथ हमारे शोध पूर्ण जवाब को देखते तो यह बातें मुंह पर न लाते कि क़ुरआन में धर्म फैलाने के लिए जिहाद है और वेद में देशों पर क़ब्ज़ा करने व राजनीति के लिए। हम प्रतीक्षा में थे कि लाला साहब क़ुरआन से दावा का सबूत देंगे। मगर प्रतीक्षा ही प्रतीक्षा रही। मददगार साहब लीजिए! हम और भी स्पष्ट शब्दों में बताते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ ईमान लाने को किन शब्दों में ना पसन्द करता है। ध्यान से सुनिए......

1– इसमें यही के इशारे को हम नहीं समझे कि इशारा किधर को है।

"क्या तू ऐ रसूल लोगों को मजबूर करेगा कि वे मुसलमान हो जाएं।" (सूरह यूनुस–100)

(अर्थात ऐसा करना किसी तरह जायज़ नहीं) इसके अलावा यह भी ग़लत है कि वेद के मन्त्र धार्मिक लड़ाई के लिए नहीं बल्कि मदनी राजनीति के लिए हैं क्योंकि इन मन्त्रों में जिन लोगों को सम्बोध किया है अर्थात जिन लोगों की हुकूमत दुनिया पर स्थापित करने की इच्छा व्यक्त गयी है वे कौन लोग हैं या तो वे जो वेदिक धर्म के पाबन्द होंगे या कोई भी हो जो उस समय दुनिया में शासक थे चाहे मूर्ति पूजक हों या सलीब पूजने वाले, मुसलमान हों या यहूदी लेकिन ईश्वरीय और धार्मिक किताबों से यह मतलब कोसों दूर बल्कि असंभव है कि ऐसे आदेश उन्हीं लोगों के लिए होते हैं जो इस किताब के पाबन्द होते हैं। अतः इन मायना को ध्यान में रखकर वेदिक मंत्रों को ध्यान से देखें कि कैसे वेदिक धर्म का साम्राज्य अन्य सारे देशों में करने के निर्देश है।

भला यदि दो देशों जैसे पंजाब और बंगाल में वेदिक धर्म के अनुयायी रहते हैं और उनमें यदि किसी बात पर बिगाड़ हो जाए तो दोनों क़ौम इन मन्त्रों को पढ़ पढ़कर एक दूसरे पर आक्रमण करेंगी और मददगार साहब की व्याख्या प्रस्तुत करेंगी? कि यह मन्त्र राज्य की राजनीति से संबंधित है। बंगाली कहेंगे कि पंजाबी हमारे विरुद्ध दंगा फ़साद भड़काने की कोशिश करते हैं और पंजाबी कहेंगे कि बंगाली ऐसा करते हैं जिस तरह हो सके हम उनको नष्ट किए बिना न रहेंगे क्योंकि वेद पवित्र में ईश्वर ने हमारी हुकूमत को संसार में स्थापित किया है।

कुछ सन्देह नहीं कि ऐसे अवसर के लिए न तो मददगार साहब और न स्वामी जी इन मन्त्रों का ताल्लुक़ बताएंगे। फिर बताइए ये

मन्त्र धार्मिक लड़ाई से संबंधित न हुए तो किस से हुए. हां एक बात में कुरआन शरीफ़ की वास्तव में ग़लती है कि उसने इसके विपरीत तमाम क़ौमों और हुकूमतों को दुनिया में शान्ति व सुख से रहने का एक निराला प्रस्ताव बताया है।

सारी क़ौमों और हुकूमतों में यह दस्तूर है कि जब तक मुक़ाबले वाला पक्ष अपना सर न झुका दे अर्थात अधीन न हो जाए लड़ाई बन्द नहीं करते चाहे वे एक ही क़ौम व धर्म के ही क्यों न हों। अंग्रेज़ों और बोइरों, जर्मनी व फ्रांस आदि की लड़ाइयां उदाहरण स्वरूप मौजूद हैं। इस्लाम और कुरआन ने यह प्रस्ताव तो स्वीकार किया कि ......

"यदि काफ़िर समझौता (सुलह) चाहें तो तुम भी सुलह पसन्द करो और अल्लाह पर भरोसा करो।" (सूरह अन्फ़ाल–61)

इसके अलावा दूसरा रास्ता भी बताया जिसका हम इस अवसर पर उल्लेख करते हैं जिससे अधिकांश विरोधियों को भ्रम पैदा हुआ है वह यह कि यदि विरोधी मुसलमान हो जाएं तो जंग को समाप्त कर दिया जाए। ध्यान से सुनो।

"यदि काफ़िर मुसलमान हो जाएं और इस्लामी आदेशों के पाबन्द हो जाएं तो उनका मार्ग छोड़ दो।" (सूरह तौबा)

यही आयत है जिससे बे समझे बूझे विरोधियों को सन्देह होता है कि इस्लामी जंगें लोगों को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने के लिए थीं। मगर वास्तविकता ऐसी नहीं है। यह तो कुरआन शरीफ़ का महान उपकार और एक आधुनिक तरीक़ा है सुलह सफ़ाई का जो आज तक किसी सभ्य क़ौम को प्रदान नहीं हुआ कि मुक़ाबले वाले पक्ष का एक ही धर्म का हो जाने पर जंग समाप्त कर दी जाए। क्या 1900 ई0 की अंग्रेज़ों और बोइरों की जंग को दुनिया भूल गयी है

कि जब तक अंग्रेज़ों ने देश को अपने अधीन नहीं कर लिया, नहीं छोड़ा चाहे वे हज़ार बार मसीह और सलीब को सज्दा करते रहे।

हां कुरआन पर यह आरोप इस सूरत में लग सकता था कि केवल यही एक तरीक़ा सुलह सफ़ाई का होता लेकिन जिस सूरत में इस तरीक़े के अलावा दूसरा तरीक़ा भी मौजूद है कि मुक़ाबले वाले बेशक अपने धर्म बल्कि मूर्ति पूजा पर जमे रहें मगर सन्धि की प्रार्थना करें (यह भी शर्त नहीं कि वे इस्लामी ख़लीफ़ा को बादशाह मानें तो तुरन्त जंग बन्द कर दी जाएगी जिसका सबूत ऊपर आ चुका है। अब उस पक्ष को अख़्तियार है कि वह जिस में अपना लाभ समझे अख़्तियार करे लेकिन इस्लाम और इस्लामी ख़लीफ़ा की ओर से उसपर ज़ोर जबर दस्ती न होगी कि वे मुसलमान ही हों तो जंग समाप्त होगी, ऐसा नहीं है बल्कि प्रार्थना पत्र देकर वे स्वतंत्र रूप से जनता (ज़िम्मी) बनकर भी सुलह कर सकते हैं मगर शर व फ़साद से नहीं। ज़रा ध्यान से पढ़िए।

"लड़ो उन से जब तक फ़ितना न ख़त्म हो जाए।"

(सूरह बक़रा– 193)

सारांश यह कि सभी क़ौमों में सुलह सफ़ाई का एक ही तरीक़ा है मगर कुरआन मजीद में दो तरीक़े हैं और यही कुरआन की बड़ी श्रेष्ठता है। इसलिए कुरआन अपने बारे में यह कहता है।

मुझ में एक ऐब बड़ा है कि वफ़ादार हूं मैं
उनमें दो वस्फ़ हैं बदखू भी हैं खुद काम भी हैं

आगे चलिए।

(3) खुदावन्द दिन न्याय का तेरी ही उपासना करते हैं हम और तुझी से मदद चाहते हैं हम, दिखा हमें राह सीधी (आयत–4–5)

आपत्ति

क्या ईश्वर सदैव न्याय नहीं करता। किसी विशेष दिन न्याय करता है तो अंधेर की बात है। उसी की उपासना करना और उसी से मदद चाहना यह तो ठीक है लेकिन क्या बुरी बात में मदद का चाहना ठीक है और सीधा रास्ता क्या केवल मुसलमानों ही का है? या दूसरों का भी। सीधे रास्ते को मुसलमान कुबूल क्यों नहीं [1] करते? क्या सीधा रास्ता बुराई की तरफ़ का तो नहीं चाहते? यदि अच्छी बातें सब की सब समान हैं तो फिर मुसलमानों में कुछ विशेषता न रही और यदि दूसरों की अच्छी बातें नहीं मानते तो पक्षपाती हैं।

आपत्ति का जवाब

ईश्वर सदैव न्याय करता है। कुरआन को पढ़ो तो मालूम हो [2] कुरआन का स्पष्ट इर्शाद है। जो तुम्हें मुसीबत पहुंचती हैं तुम्हारे अपने कर्मों के कारण" (शूरा–30) उसे न्याय का दिन इसलिए कहा कि उस दिन का न्याय सब लोग अपनी आंखों से स्वयं देखेंगे और कोई झूठा उसे झुठला न सकेगा। फ़ ब स रू कल यवमा हदीदुन [3] (सूरह क़ाफ़– 22) इसे बड़े ध्यान से पढ़ो।

बुरे कामों में ईश्वर से मदद मांगने का उल्लेख नहीं। यह तो आपकी समझ का फेर है बल्कि भले कामों में ईश्वर से मदद मांगी गयी है, अतएव इस जगह उपासना का सलीक़ा भी मौजूद है, हां स्वामी जी वेद भगवान की तरह चाहते होंगे कि शारीरिक इच्छाओं के (वे भी ऐसी कि असंभव सी हों) पूरा होने की दुआ क्यों नहीं सिखायी।

1– महाराज बड़े ही पापी हैं।

2– जो कुछ तुम को मुसीबत पहुंचती है तुम्हारी करतूतों ही के कारण।

3– अपराधियों की ज्योति (आंख की रोशनी) उस समय तेज होगी।

सुनिए! वेद मन्त्र......

"ऐ भगवान! आपकी कृपा से हमारी समस्त मनोकामनाएं सच्ची या पूरी हों अर्थात हमारा संसार को वशीभूत करने और मान व प्रताप हासिल होने की इच्छा पूरी हो प्रभावहीन न हो।"

(यजुर्वेद, अध्याय 2— मन्त्र 10)

और सुनिए......

"ऐ विराट सर्व शक्तिमान ईश्वर, अपनी कृपा से मुझ तुच्छ प्राणी की मुक्ति की इच्छा पूरी करा मुझे सारे सुख या सारे संसार की हुकूमत प्रदान कर।" [1]

आपत्ति कर्त्ता जी! यदि सारे संसार के लोग यही दुआ मांगे कि मुझे दुनिया की हुकूमत प्रदान कर तो सब की कुबूल हो गयी तो क्या होगा। क्या यह सोचा है?

स्वामी जी! निस्सन्देह इस्लाम ही सीधी और सही राह है। क्या वेदिक मत के सिवा दूसरा कोई धर्म सीधा नहीं जो सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 347 पर लिख आए हैं कि "वेद का इन्कारी नास्तिक और अधर्मी है" सच्चाई का रास्ता सदैव एक ही होता है। हम सब धर्मो की अच्छी बातें मानते हैं। किसी धर्म की अच्छी बातों से इन्कार नहीं। मगर आप को मालूम नहीं कि धर्म किस चीज का नाम है शेष मामूली आचरण तो हर धर्म में बराबर मिलते हैं। यदि अपने ही धर्म को सही समझना पक्षपात है तो आप अव्वल दर्जा पक्षपाती हैं जो लिखते हैं।

"यदि कोई कहे कि तुम्हारा अक़ीदा क्या है तो यही जवाब देना चाहिए कि हमारा विश्वास वेद है अर्थात जो कुछ वेदों में बयान किया गया है हम उसको मानते हैं।" (सत्यार्थ प्रकाश अध्याय न0 7)

1– यह मुंह और मसूर की दाल। (अध्याय 10 नव 2

आगे चहिए।

(4) राह उन लोगों की कि नेमत की है तूने ऊपर उनके सिवा उनके जो क्रोध किया गया है ऊपर उनके और न पथ भ्रष्टों के रास्ते हम को दिखा।-

आपत्ति

जब मुसलमान लोग आवा गमन और पहले किए हुए गुनाह और सवाब को नहीं मानते तो कुछ लोगों पर दयालुता करने और कुछ पर न करने से ईश्वर पक्षपाती ठहरता है क्योंकि गुनाह व सवाब के बिना दुख व कष्ट का देना केवल अन्याय की बात है और अकारण किसी पर दया और किसी पर प्रकोप की नज़र करना भी उसकी प्रकृति से सुदूर है। अकारण वह दया या प्रकोप नहीं कर सकता और जब उनके पूर्व संक्षिप्त गुनाह व सवाब ही नहीं तो किसी पर दया और किसी पर प्रकोप करना यह बात ही नही बन सकती और इस सूरह की श्राअ (धर्म शास्त्र) में ये शब्द – यह सूरह ईश्वर ने मनुष्यों के मुंह से कहलवाई कि हमेशा इस तरह से कहा करें।" अंकित हैं। यदि यह बात सही है तो वह "अ ब" अक्षर भी अल्लाह ही ने पढ़ाए होंगे। यदि कहो कि बिना अक्षर जाने इस सूरह को कैसे पढ़ सकते तो सवाल यह है कि क्या हलक़ ही से बुलाए और बोलते गए। यदि यह बात सही है तो सारा क़ुरआन ही ज़बानी पढ़ाया होगा। यह समझना चाहिए कि जिस किताब में पक्षपात की बातें पायी जाएं वह किताब ईश्वर की बनाई हुई नहीं हो सकती जैसे अरबी भाषा में उतारने से अरब वालों को इसका पढ़ना आसान और दूसरी भाषा बोलने वालों को मुश्किल हो जाता है इससे ईश्वर पक्षपाती ठहरता है और जिस तरह की ईश्वर ने सारे दुनिया में रहने वालों लोगों पर न्याय की नज़र से सारे देशों की भाषाओं से निराली

भाषा संस्कृत में जो कि सारे देशों के लिए समान मेहनत से हासिल होती है वेदों को उतारा है ऐसी ही भाषा में यदि क़ुरआन उतरता तो यह आपत्ति या ख़राबी पैदा न होती।

आपत्ति का जवाब

क्या ही नयी लौजिक है आपत्ति कर्त्ता जी! क्या पहले कर्मों की वजह ही से दया और इनाम हो सकता है। इस जन्म के कर्मों का कोई मूल्य नहीं। सुनिए और ध्यान से सुनिए! इस जन्म के सदकर्म उनके लिए इनाम का कारण बने थे। दूसरी आयत इस बात की व्याख्या करती है जहां अल्लाह ने उन इनाम पाने वालों को ईश्वर को स्वयं बताकर आपके बेकार के सवाल को हल कर दिया है। ज़रा सोच विचार करके पढ़िए।

"जिन पर अल्लाह ने इनाम किया वे नबी और बड़े सच्चे और नेक लोग हैं।" (सूरह निसा– 69)

हां यह भली सूझी कि अल्लाह ने अक्षर पढ़ाए होंगे। आपत्ति कर्त्ता जी के भोले भाले बच्चों के से सवाल सुनकर आप से आप हंसी आती है फिर जब ऐसे व्यक्ति को एक क़ौम का लीडर सुनते हैं तो तुरन्त ज़बान से निकलता है।

"बुत भी खुदाई करते हैं क़ुदरत खुदा की है"

स्वामी जी! जिस तरह वेद आपके ऋषियों को बता गए थे उसी तरह क़ुरआन भी मुसलमानों को सिखाया गया है। तनिक उपरोक्त मंत्र पर ध्यान दीजिए।

"निस्सन्देह जिस किताब में पक्षपात की बातें हो रही हों वह खुदा की नहीं होती। मगर यह तो बताइए कि शूद्र के घर का पका हुआ खाने से जो आप मना कराते हैं चाहे कैसा ही भला मानस क्यों न हो" (सत्यार्थ प्रकाश अध्याय न0 10) यह किस किताब का हुक्म है

और यह आप की तरफ़दारी तो नहीं?

आपत्ति कर्त्ता जी! अरबी भाषा में कुरआन के उतरने का कारण तो कुरआन ने स्वयं ही बता दिया है। सुनो ईश्वर कहता है।

"यदि हम कुरआन को अरबी (भाषा) के सिवा किसी और भाषा में उतारते तो अरबी लोग कहते कि इसके आदेशों को स्पष्ट क्यों नहीं किया। कलामग़ैर अरबी और सम्बोधित अरबी।" (हामीम सज्दा – 44)

चूंकि कुरआन के प्रथम मुख़ातिब उसके अरब के लोग थे इसलिए इस भाषा में उतारा गया। उन्होंने इसे समझ कर दूसरे लोगों को समझा दिया यही एक मात्र न्याय है अन्तर केवल आपकी समझ का है।

(5) सूरह बक़रा।

यह किताब जिसमें शक नहीं परहेज़गारी (संयम) की राह दिखाती है जो कि ईमान लाते हैं साथ परोक्ष के और स्थापित करते हैं नमाज़ को और उस चीज़ को जो कि हमने दी ख़र्च करते हैं। वे लोग जो इस किताब पर ईमान लाते हैं जो रखते हैं[1]। तेरी ओर या तुझसे पहले उतारी गयी और विश्वास क़ियामत पर रखते हैं। ये लोग अपने पालन हार के निर्देश पर हैं और यही हैं छुटकारा पाने वाले। निस्संदेह जो लोग काफ़िर हुए और उनको तेरा डराना न डराना बराबर है। वही ईमान न लाएंगे। मुहर की अल्लाह ने ऊपर दिलों के उनके और ऊपर कानों उनके और उनकी आंखों पर पर्दा है और उनके वास्ते बड़ी यातना है। (आयत –2 – 7)

आपत्ति

क्या अपने ही मुंह से अपनी किताब की प्रशंसा करना ईश्वर के

1– प्रिय पाठको! आपत्ति कर्त्ता जी का अनुवाद गौर से पढ़िए जो टिटीरा और डेरा बसती की तरह है।

धब्बे की बात नहीं। जो परहेज़गार संयमी लोग हैं वे तो स्वयं सीधी राह पर हैं और जो झूठी राह पर हैं उनको यह कुरआन राह ही नहीं दिखा सकता तो फिर किस काम का रहा? क्या पाप और पुन और मेहनत के बिना ईश्वर अपने ही ख़ज़ाने से ख़र्च करने देता है? यदि देता है तो सब को क्यों नहीं देता है? और मुसलमान लोग मेहनत क्यों करते हैं? यदि बाइबिल, इन्जील आदि पर विश्वास रखना अनिवार्य है तो मुसलमान इन्जील आदि पर ईमान कुरआन की तरह क्यों नहीं लाते? और यदि लाते हैं तो फिर कुरआन उतरना किस लिए?

यदि कहें कि कुरआन में अधिक बातें हैं तो क्या पहली किताब में अल्लाह लिखना भूल गया था और यदि नहीं भूला था तो कुरआन का बनाना बेकार है। हम देखते हैं कि बाइबिल और कुरआन की कुछ बातें आपस में नहीं मिलतीं और बहुत सी मिलती हैं। एक ही सम्पूर्ण किताब जैसी कि वेद है क्यों न उतारी? क्या क़ियामत ही पर विश्वास रखना चाहिए और किसी चीज़ पर नहीं, क्या ईसाई और मुसलमान ही अल्लाह के निर्देशों पर चलने वाले हैं और इनमें कोई गुनाहगार नहीं है? क्या वे ईसाई और मुसलमान जो दीनदार नही वे मुक्ति प्राप्त कर पाएंगे और दूसरे जो दीनदार हैं वे नहीं?

क्या यह बड़ी भारी ना इन्साफ़ी और अंधेर की बात नहीं है? क्या जो लोग मुसलमानी धर्म को नहीं मानते उनको काफ़िर कहना एक तरफ़ा डिग्री नहीं है? यदि ईश्वर ही ने उनके दिल में और कानों में डाट लगाई और इसी कारण वे गुनाह करते हैं तो उनका कुछ भी दोष नही है यह दोष ईश्वर ही का है। ऐसी हालत में उनको सुख या दुख या गुनाह व सवाब नहीं हो सकता। फिर ईश्वर उनको बदला व दंड क्यों देता है? क्योंकि उन्होंने गुनाह या सवाब अपने अधिकार मे

नहीं किया।

आपत्ति का जवाब

अफ़सोस! इस भोले पन पर जो हर घड़ी अपमान का कारण बने। स्वामी जी को इतना भी मालूम नहीं कि वेद स्वयं अपनी प्रशंसा इससे कई दर्जा बढ़कर करते हैं। सुनो।

"पवित्र करने वाले कर्मो को खोलने वाला जिसमें प्रशंसा योग्य ज्ञान का गुण है ऐसे उच्च ज्ञानों को देने वाला जो वेद का कलाम है वह समस्त कलाओं के स्वरूप से हम को सूचित करता है।'

(तृग वेद अंकित आर्ग मुसाफ़िर पृष्ठ 18 सितम्बर 1899 ई0)

और सुनिए।

"ग़लती से मुक्त सम्पूर्ण ज्ञानों का स्त्रोत जो वेद शास्त्र है अपार शक्ति से परमेश्वर ने ज़ाहिर किया।"

(महा यज्ञ दोही पृ0 11 लेखक स्वामी जी)

स्वामी जी मुत्तक़ियों (डरने वालों) के लिए पथ प्रदर्शन होने का वह मतलब है जिस मतलब से आप सत्यार्थ प्रकाश अध्याय न0 10 में लिखते हैं कि ज़िद्दी और अन्यायी को जवाब न देना चाहिए। सुनिए, क़ुरआन स्वयं अपनी टीका करता है। ईश्वर कहता है।

"हम (ख़ुदा) क़ुरआन को सब लोगों की बीमारियों के लिए शिफ़ा और ईमानदारों के लिए दयालुता बनाकर उतारते हैं और ज़ालिमों (इन्कारियों) को हानि उठाने के कोई फ़ायदा नहीं देता।"

(सूरह इसरा – 82)

स्वामी जी! यदि कोई रोगी हकीम के नुसखे और बताए हुए परहेज़ पर अमल न करे तो दोष किसका है?"

सब को वह अपने ख़ज़ाने से मात्र अपनी मेहरबानी से देता है बन्दों का उस पर कोई हक़ नहीं। वह हकीम भी है जितना उचित

समझता है देता है। सुनो।

"क्या इन्कारी नहीं सोचते कि ईश्वर जिसे चाहता है आजीविका को बढ़ा देता है और जिसको चाहता है तंग कर देता है निः सन्देह इसमें बहुत सी क़ुदरत की निशानियां हैं।" (सूरह रूम – 37)

क़ुरआन को यदि आपने किसी पाठशाला (मदरसा) में पढ़ा होता तो बाइबिल का सवाल न करते। सुनिए।

"क़ुरआन मानता है कि पहले ईश्वरीय किताबें आयी हैं मगर इसी के साथ यह भी कहता है कि टेढ़ करने वालों ने इसमें टेढ़ मिला दी जो बात क़ुरआन सही बता दे उसे सही समझो और जो ग़लत कहे उसे ग़लत जानो।"

अल्लाह फ़रमाता है।

"हम (ईश्वर) ने तेरी तरफ़ (ऐ नबी) क़ुरआन उतारा है जो अपने से पहली किताबों की पुष्टि करता है और उनपर रक्षक भी है। अर्थात ग़लत को सही से अलग करता है।

क़ियामत पर ईमान का ज़िक्र इसलिए किया है कि जिसे आगे की सज़ा व इनाम का विश्वास होता है वही सद कर्म करता है और व्यभिचार से बचता है। जो निडर हो उसे क्या ग़रज़ पड़ी है कि अपने सर बला दे। ईसाई पथ प्रदर्शन पर नहीं हैं। बल्कि केवल मुसलमान वह भी भला मुसलमान जिनका इस आयत में बयान है वही हिदायत पर है। क्या जो वेद को नहीं मानते उनको नास्तिक और अधर्मी कहना न्याय है?

(6) उनके दिलों में बीमारी है। अल्लाह ने उन की बीमारी बढ़ा दी। (आयत – 10)

आपत्ति

भला बिना ग़लती अल्लाह ने उनकी बीमारी बढ़ा दी। दया न

आयी, उन बीमारों को कितनी बड़ी तकलीफ़ हुई होगी। क्या यह शैतान से बढ़कर शैतानियत का काम नहीं है किसी के दिल पर ठप्पा लगाना किसी की बीमारी को बढ़ाना खुदा का काम नहीं हो सकता। क्योंकि बीमारी का बढ़ना अपने गुनाहों का नतीजा है।

आपत्ति का जवाब

अल्लाह किसी के दिल पर अकारण ठप्पा नहीं लगाता। सुनिए इस कलाम के वही मायना हैं जो अपने सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 541 पर वेदों की बेदीनी और गुमराहों के बारे में लिख चुके हैं।

"उन्होंने किस दर्जा अपनी जिहालत की तरक़्क़ी की है जिसका उदाहरण इसके सिवा दूसरा नहीं हो सकता। विश्वास तो यही है कि वेद और ईश्वर से विरोध करने का उनको यही नतीजा मिला है।"

(अध्याय 12 न0 27)

और जिस को यजुरवेद अध्याय 25 मन्त्र 13 में यूं बयान किया है।

"जो परमेश्वर ज्ञान आदि प्रदान करने वाला और जिसकी छत्र छाया से व कृपा से वंचित होना ही मौत अर्थात निरंतर जीने मरने के चक्कर में पड़ना है।"

कुरआन ने तो अपनी टीका दूसरी आयत में स्वयं कर दी है। सुनिए।

"अल्लाह घमंड करने वालों की गर्दन कशों के दिलों पर मुहुर लगा देता है।" (कुरआन)

बल्कि इसी आयत में एक शब्द ऐसा भी है जिसको आप ध्यान से देखते तो यद्यपि आपको आपत्ति करने का शौक़ है फिर भी यह शौक़ किसी और जगह पूरा करते। सुनिए......

इन्नल्लज़ी न क फ़ रू सवाउन अलैहिम अ अन्ज़र तहुम अम

लम तुन्ज़िर हुम0 सूरह बक़रा–6 इसी का अनुवाद आपने नक़ल किया है। इसमें "सवा उन अलैहिम" सिला से बदल है यदि ज्ञान है तो समझो या किसी अरबी पाठशाला में पढ़ो अतः आयत का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है कि अल्लाह के हुक्मों से गर्दन कशी करने का नतीजा यह होता है बाक़ी जवाब वाक्य 5 में आ गया। स्वामी जी को अधिक नम्बर लेने का शौक़ है इसी जवाब में शैतानी बातों का जवाब भी मिलेगा।

आपत्ति कर्त्ता जी! ऋग वेद अशटक। अध्याय 3 वरग 18 मंत्र 2 को ध्यान से देखिए जो इसके अर्थ हैं वही इस आयत के हैं यदि आप को या आपके चेलों को देखने का अवसर न मिले तो सुनिए हम बतलाए देते हैं ध्यान से सुनिए। परमेश्वर कहता है।

"मैं बदकार, ज़ालिमों को कभी आशीर्वाद (भली दुआ) नहीं देता" (अर्थात उनको पथ प्रदर्शन। या अनुकम्पा नहीं करता)

(7) जिसने तुम्हारे वास्ते ज़मीन को बिछौना और आसमान की छत बनायी। (आयत – 22)

आपत्ति

भला आसमान छत किसी की हो सकती है? यह अज्ञानता की बात है आसमान को छत की भान्ति मानना उपहास की बात है यदि किसी और ग्रह की धरती का आसमान मानते हों तो उनके घर की बात है।

आपत्ति का जवाब

आसमान नीला छत की भान्ति नज़र आ रहा है अरबी में हर ऊंची वस्तु को जो सर से ऊपर हो सक़्फ़ कहा करते हैं। इसी आधार पर आसमान को सक़्फ़ (छत) कहा गया। स्वामी जी की बला को क्या पड़ी थी कि ऐसी तहक़ीक़ करते और उनको अपने

मामूली मसखरे पन से समय भी नहीं था बाक़ी न0 18 में देखो।

(8) जो तुम इस वस्तु से सन्देह में हो जो हमने अपने सन्देष्टा के ऊपर उतारी तो इस जैसी एक सूरह के और अपने मददगारों को पुकारो सिवाए अल्लाह के यदि हो तुम सच्चे और कदापि न करोगे तुम उस आग से डरो कि जिसका ईंधन आदमी हैं और काफ़िरों के लिए पत्थर[1] तैयार किए गए हैं।" (आयत – 24 – 25)

आपत्ति

भला यह कोई बात है कि उसके जैसी कोई सूरह न बने? क्या अकबर बादशाह के ज़माने में मौलवी फ़ैज़ी ने बे बिन्दू (नुक़्ता) का कुरआन नहीं तैयार किया था। वह कौन से जहन्नम की आग है? क्या इस दुनिया की आग से न डरना चाहिए। इस आग में भी जो कुछ पड़े वह उसका ईंधन है जैसे कुरआन में लिखा है कि काफ़िरों के लिए पत्थर तैयार किए गए हैं वैसे पुरानों में लिखा है कि मलीछों के लिए घोर नरक बना है। अब कहिए किस की सच्ची मानें? अपने कथनों से तो दोनों स्वर्ग में जाने वाले हैं और एक दूसरे के धर्म के अनुसार दोनों जहन्नमी होते हैं अतः इन सबका झगड़ा झूठा है हां जो धार्मिक हैं वे सुख और जो पापी हैं वे दुख पाएंगे। यह सारे धर्मों का मानना है।

आपत्ति का जवाब

शोध कर्त्ता व आपत्ति कर्त्ता को यह तो ख़बर नहीं कि बे बिन्दू वाक्य क्या होता है और उत्तम शैली क्या है। उन्होंने सुन लिया कि फ़ैज़ी ने बिना बिन्दू (नुक़्ता) की टीका लिखी थी तो वे समझे कुरआन का मुक़ाबला हो गया। भला स्वामी जी! यदि फ़ैज़ी की

[1]– समाजियो इस आयत का यह अनुवाद कहीं किसी ने किया हो तो हमें दिखाओ और इनाम लो।

टीका कुरआन की भान्ति बे मिसाल होती तो पहले फ़ैज़ी ही को क्यों कुरआन के बारे में सन्देह न होता और वह क्यों इस घमंड में इस्लाम से विमुख न होता कि मैंने कुरआन की जैसी किताब लिख डाली है बस आपके जवाब में यही काफ़ी है।

आप मालिक हैं आप इस आग से भी डरें। कौन आप को कहता है कि न डरें। बात तो केवल यह है कि जहन्नम की आग चूंकि बहु देव वादियों और हठ धर्मियों की सज़ा है इसलिए उससे डरने का यह अर्थ है कि ऐसे काम छोड़ दो। यह स्वामी जी की जानकारी है। लिखते हैं कि कुरआन में काफ़िरों के लिए पत्थर तैयार किए गए हैं आगे भी कई जगह स्वामी जी ने अपनी योग्यता का सबूत दिया है ज़रा सोच विचार करो तो यह इस्लाम का चमत्कार है कि आप जैसे ज्ञानी भी ऐसी बहकी बहकी बातें करने लग जाते हैं। यदि कुरआन और पुरान की बातों पर अमल करने वाले अपने अपने कथनों से जन्नती हैं तो आप दोनों के कथनों से जहन्नमी ही होते हैं स्वामी जी! अपनी चिन्ता कीजिए।

"तुझको पराई क्या पड़ी अपनी नबीड़" देखना यह है कि दोनों में से कौन हक़ पर है तो उसकी पहचान कीजिए बाक़ी बातों से क्या लाभ? यह ठीक है कि जो पापी हैं वे सारे धर्मों में दुख ही पाएंगे मगर इससे अधिक पाप क्या होगा?

"जिस धर्म को करोड़ों आदमी मानते हों उसे बुरा कहा जाए।" (तनिक ध्यान से देखो सत्यार्थ प्रकाश पृ0 697, अध्याय 14 न0 73)

(9) "और शुभ सूचना दे उन लोगों को कि ईमान लाए और काम किए अच्छे यह कि वास्ते उनके जन्नत हैं बहती हैं नीचे से नहरें। जब दिए जाएंगे उसमें से मेवों से अजीविका खांएगे। यह वह चीज है जो दिए गए थे हम

पहले उससे और वास्ते उनके पत्नियां हैं सुथरी और सदैव वहां रहने वाली हैं।" (आयत - 26)

आपत्ति

भला इस कुरआन की जन्नत में दुनिया से बढ़कर कौन सी अच्छी वस्तु है? जो वस्तुएं दुनिया में हैं वही मुसलमानों की जन्नत में हैं और इतनी अधिक हैं कि यहां जैसे आदमी मरते हैं और पैदा होते और आते जाते हैं इसी तरह जन्नत में नहीं मगर यहां औरतें सदैव नहीं रहतीं और वहां बीबियां सदैव रहती हैं। जब तक क़यामत की रात[1] न आएगी तब तक उन बेचारियों के दिन किस प्रकार गुज़रते होंगे, हां ईश्वर की उनपर कृपा होती होगी और ईश्वर के सहारे समय गुज़ारती होंगी। यही ठीक हो सकता है मुसलमानों की जन्नत यद्यपि कलिए गोसाइयों के गोलोक मन्दिर की तरह मालूम होती है जहां कि औरतों का आदर सम्मान बहुत अधिक है आदमियों का[2] नहीं। इसी प्रकार ईश्वर के घर में औरतों का महत्व है और उनसे ईश्वर की मुहब्बत भी पुरुषों के मुकाबले अधिक है क्योंकि ईश्वर ने बीवियों को जन्नत में सदैव के लिए रखा है न कि पुरुषों को। वे बीवियां बिना ईश्वर की इच्छा व अनुमति जन्नत में कैसे ठहर सकती हैं? यदि यही बात है तो ईश्वर भी औरतों में उलझा हुआ है।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी! जिस कलाम को आदमी न समझे उस पर आपत्ति करने से नदामत होती है। आप स्वयं भूमिका में ग़ैर धर्म पर सोच विचार अत्यन्त आवश्यक बता आए हैं क्या वह औरों के लिए है आपके

1- यह शब्द नहीं मालूम स्वामी जी को किस ने सिखा दिया है हर जगह यही बोलते हैं।

2- उर्दू जानने वाले सज्जन औरत और आदमी का मुकाबला ध्यान से देखें।

लिए नहीं? हम ने तो जितनी आपत्तियां आपकी देखी हैं उनसे यही साबित होता है कि आप स्वयं इस उसूल का अपवाद हैं। जन्नत में सब कुछ आराम और हर प्रकार के सुख वैभव (परन्तु सभ्य तरीक़े का) के सामान अल्लाह की ओर से होंगे। आप उसे दुनिया का सा समझते है क्या आपने गुरू नानक जी का कथन भी नहीं सुना......" नानक दुखया सब संसार" फिर आम दुनिया को जन्नत की तरह समझें तो इसमें किसकी ग़लती है?

स्वामी जी! दुनिया में कोई व्यक्ति भी किसी हालत में सुखी और ऐशो आराम में नहीं हो सकता। कोई न कोई दुख, कष्ट उसे लगा ही रहता है। माल से हो सन्तान से हो, दोस्तों से हो या शत्रुओं से हो, शारीरिक हो या आध्यात्मिक, मगर जन्नत में पूरी तरह सुख ही सुख होगा। सुनो।

"न जन्नत में कोई तकलीफ़ होगी और न उससे बाहर किए जाएंगे।" (सूरह हिज्र - 48)

उन बेचारियों की चिंता तो जब करते कि कुरआन की किसी आयत से दिखाते कि वे अभी से पैदा भी हो चुकी हैं और पतियों की चाहत में व्याकुल हैं। स्वामी जी! झूठ बोलना हर धर्म में बुरा है। पुरुषों से महिलाओं का कम महत्व कौन सी आयत से आपने समझा है इसी ज्ञान के बल पर आप स्वामी बने हैं कि आपको इतनी भी ख़बर नहीं कि कुरआन में पुल्लिंग का कालिमा आया है अर्थात "ख़ालिदून" जिसका अर्थ है नेक मर्द सदैव जन्नत में रहने वाले होंगे। आपको किसी ने "वाले" का शब्द "वाली" करके सुनाया तो आपके कान में वाली (बाली) पड़ गयी। अफ़सोस आप के सारे धार्मिक ज्ञान की पोल खुल गयी। कुरआन के मुहावरे में औरतें मर्दों के आदेश के तहत होती हैं अर्थात जो आदेश या हुक्म मर्दों को होता

है वह औरतों को भी होता है उसके सिवा जो ख़ास किया जाए।

(10) "आदम को सारे नाम सिखाए फिर फ़रिश्तों के सामने करके कहा। जो तुम सच्चे हो मुझे इनके नाम बताओ। कहा ऐ आदम बता दे उनको नाम उनके। तो जब बता दिए उनके नाम तो ईश्वर ने फ़रिश्तों से कहा कि क्या मैंने तुम से न कहा था कि निस्संदेह मैं धरती और आकाश की छुपी चीज़ें और ज़ाहिर और ग़ायब कर्मों को जानता हूं।" (आयत –32–34)

आपत्ति

भला इस तरह फ़रिश्तों को धोखा देकर अपनी बड़ाई करना ईश्वर का काम हो सकता है? यह तो एक धब्बे की बात है, इसे कोई विद्वान मान नहीं सकता और न ऐसा मज़ाक़ व बकवास कर सकता है। क्या ऐसी बातों से ईश्वर अपनी करामात जमाना चाहता है? हां जंगली लोगों में कोई कैसा ही पाखंड चला ले तो चल सकता है सुशील व सज्जन लोगों में नहीं।

अपत्ति का जवाब

स्वामी जी को असल मतलब से तो कोई लेना देना है नहीं मगर अपने पाठकों को इस आयत का मतलब बताते हैं वह यह है कि ईश्वर ने हज़रत आदम को पैदा करने और दुनिया में खलीफ़ा (अपना नायब) बनाने की फ़रिश्तों को सूचना दी। फ़रिश्तों ने अपनी इच्छा को गुप्त रख कर कुछ विनती की जिसका मतलब यह था कि हम खिलाफ़त के पद के हक़दार हैं क्योंकि हम तेरी उपासना में लगे रहते हैं और दिल में यह बात भी रखी कि हम को सब [1] चीज़ों का ज्ञान भी है जो खिलाफ़त के लिए ज़रूरी भी है चूंकि यह दावा उनका ग़लत न था इसलिए अल्लाह ने उनकी परीक्षा लेने हेतु

1– विस्तार से जानने के लिए तफ़सीर सनाई देखो।

आदम को सारी चीज़ों का ज्ञान (नाम एवं गुण) प्रदान किया (जिस प्रकार अग्नि, वायु, अंगरह, मलहान को वेदों ने बताया) देखो सत्यार्थ प्रकाश अध्याय 7 न0 75। इसके बाद फ़रिश्तों से उनके दावे की पुष्टि कराने को उन सब चीज़ों के नाम पूछे वे न बता सके। अन्त में अपने दोष को स्वीकारे। यह बात पूरी तरह साफ़ है मगर स्वामी जी न समझें तो किस की ग़लती? अफ़सोस स्वामी जी हर बार अपना उसूल भूल जाते हैं।

" जो धर्म दूसरे धर्म को जिसको हज़ारों करोड़ों मानते हों झूठा बताए और अपने को सच्चा कहे उससे बढ़कर झूठा और कौन धर्म हो सकता है।" (वाक्य 73 अध्याय 14)

(11) जब हमने फ़रिश्तों से कहा सज्दा करो आदमी को तो सबने सज्दा किया पर शैतान ने न माना और घमंड किया क्योंकि वह भी एक काफ़िर था।" (आयत – 36)

आपत्ति

इससे साबित हुआ कि ईश्वर सर्वज्ञाता नहीं अर्थात अतीत, वर्तमान और भविष्य की बातें पूरे तौर पर नहीं जानता तो शैतान को पैदा ही क्यों किया? और ईश्वर में कुछ प्रताप व तेज भी नहीं है क्योंकि शैतान ने उसका आदेश ही न माना और ईश्वर उसका कुछ भी न कर सका और देखिए एक काफ़िर शैतान ने ईश्वर के भी छक्के छुड़ा दिए। मुसलमानों की नज़र में जहां करोड़ों काफ़िर है। वहां मुसलमानों के खुदा और मुसलमानों की थोड़ी बहुत चल सकती है? कभी कभी ईश्वर भी किसी की बीमारी बढ़ा देता है और किसी को भटका देता है। ईश्वर ने यह बातें शैतान से सीखी होंगी और शैतान ने ईश्वर से। क्योंकि सिवाए ईश्वर के शैतान का उस्ताद और कोई नहीं, हो सकता।

आपत्ति का जवाब

भोले पंडित जी! किस आयत से मालूम हुआ कि खुदा को पता नहीं। यदि शैतान के पैदा करने से ईश्वर बे इल्म साबित होता है तो परमेश्वर ने जैनियों को क्यों पैदा किया? जो आपके कथनानुसार मूर्ति पूजा को आरंभ करने वाले हुए जिनके बारे में सत्यार्थ प्रकाश में आप, लिखते हैं।

"मूर्ति पूजा का जितना झगड़ा चला है वह सब जैनियों के घर से निकला है और पाखन्डियों की जड़ यही जैन धर्म है।"

(पृष्ठ – 584 अध्याय 12 न0 119)

और सुनिए– ईश्वर ने ग़ाज़ी महमूद को क्यों पैदा किया जिसने आर्य वरत की काया पलट दी? और बताइए ईश्वर ने पुरानों के लेखकों को क्यों पैदा किया जिन्होंने (आपके कथनानुसार) सारे पुरान गप्पों से भरकर आर्य वरत को गुमराह कर दिया। और सुनिए ...... ईश्वर ने मुसलमान क्यों बनाए कि वेदिक धर्म का सारा ताना बाना ही बिखर कर रह गया। जब आप इन सवालों के जवाब देंगे तो हम भी बताएंगे कि शैतान को क्यों पैदा किया?

असल बात यह है कि शैतान किसी की गुमराही के लिए कोई तर्क या कारण नहीं है बल्कि वह केवल एक बुरे सलाहकार की तरह बुरे विचारों और कामों का सुझाव देने वाला और लुभाने वाला है अतएव उसका यह बयान पूरे का पूरा कुरआन में मौजूद है तनिक ध्यान से सुनिए।

"मेरा तुम पर ज़ोर न था मैंने केवल तुमको बुलाया था तुमने कुबूल कर लिया।" (सूरह इबराहीम– 22)

जैसे दुनिया में और बहुत सी बुरी संगतें होती हैं ऐसे ही शैतान भी एक बुरा साथी है इससे अधिक कुछ नहीं। इस बुरी संगत के

प्रभाव से बचने के लिए ईश्वर ने एक इलाज बताया है बड़ा ही शक्ति शाली जो हक़ीक़त में बड़ा प्रभावी है वह है अल्लाह का ज़िक्र (गुण गान करना) अतएव कुरआन में इसका भी उल्लेख है– अर्थात ईश्वर के भले बन्दों पर शैतान का कोई दावं नहीं चल सकता। जो लोग अल्लाह के ज़िक्र में समय गुज़ारते हैं। और बुरे कामों से बचते हैं शैतान उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। हां जो लोग बेहूदा बकवास और बुरी संगत में समय नष्ट करते हैं उन्हीं पर शैतान अपना ज़ोर चला पाता है।

(सूरह हिज्र)

(सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 541 को ज़रा ध्यान से पढ़ें) अतः शैतान का उदाहरण बिल्कुल विष का सा समझो। जैसा कि ईश्वर ने विष पैदा करके उसका इलाज भी बता दिया है। ऐसा ही शैतान पैदा करके उसका प्रभाव बताकर इलाज (तौबा और रसूल का अनुसरण) बता दिया है। शैतान की विस्तार से बहस की जानकारी के लिए तफ़सीर सनाई भाग 1 हाशिया खतमुल्लाह में देखें।

हां याद आया कि दुनिया में इस समय करोड़ों मुसलमान, करोड़ों ईसाई, बौद्ध, यहूदी आदि क़ौमें ईश्वर के ज्ञान (वेद) को नहीं मानते बल्कि उसे मूर्ति का स्त्रोत जानते हैं तो परमेश्वर कैसा विवश हैं कि इनको सीधा नहीं कर सकता। उसके तेज में कोई फ़र्क़ तो है। आखिर किस किस से बिगाड़े और किस किस को पकड़े?

स्वामी जी! जीव आत्मा अपनी इच्छा की मालिक है (देखो सत्यार्थ प्रकाश, अध्याय 7– पृष्ठ 48) धार्मिक मामलों में ईश्वर ने छूट दी हुई है जिसका जी चाहे आज्ञा पालक हो जो चाहे न हो, सुनो! कुरआन मजीद बताता है।

"जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे काफ़िर बने।"

(सूरह कहफ़– 29)

अतः एक शैतान क्या सामान्यता दुनिया के सारे काफ़िर इस समय ख़ुदा की किताब पर मुंह चिढ़ाते हैं मगर वह सब को सुख शान्ति और आराम देता है लेकिन बकरे की मां कब तक ख़ैर मनाएगी ख़ुदा के गुमराह करने और बाकी शैतानी बातों के जवाब न0 6 में देखो।

(12) और कहा हमने ऐ आदम तू और तेरी पत्नी जन्नत में रहकर खाओ तुम आराम से घूमों जहां चाहो और मत निकट जाओ उस पड़े के कि पापी हो जाओगे। शैतान ने उनको गुमराह किया और उनको जन्नत के सुख वैभव से खो दिया। तब हमने कहा कि उतरो तुम में कुछ तुम्हारे दुश्मन हैं और तुम्हारा ठिकाना धरती पर है और एक समय तक फ़ायदा है अतः सीख लीं आदम ने अपने पालनहार से कुछ बातें तो वह धरती पर आ गया (आयत -37 - 39)

आपत्ति

देखिए ख़ुदा का अल्पज्ञान अभी तो जन्नत में रहने की दुआ दी और अभी कहा कि निकलो। यदि आगे की बातों को जानता होता तो दुआ ही क्यों देता? और मालूम होता है कि बहकाने वाले शैतान को सज़ा देने से विवश भी है। वह पेड़ किसके लिए पैदा किया था? क्या अपने लिए या दूसरे के लिए। यदि दूसरों के लिए तो क्यों आदम को रोका? इसलिए ऐसी बातें न अल्लाह की और न उसकी बनाई हुई किताब की हो सकती हैं।

आदम साहब ईश्वर से कितनी बातें सीख कर आए थे? और जब धरती पर आदम साहब आए तो किस तरह से आए, क्या वह जन्नत पहाड़ पर है या आसमान पर? इससे क्यों कर उतरे क्या पक्षी की तरह उड़कर या पत्थर की तरह गिर कर?

यह स्पष्ट होता है कि जब आदम साहब ख़ाक से बनाए गए तो

उनकी जन्नत में ख़ाक होगी और जितने वहां फ़रिश्ते आदि हैं वे भी ख़ाक ही होंगे क्योंकि ख़ाक के शरीर बिना अंगों के नहीं बन सकते और ख़ाकी शरीर होने के कारण मरना भी निश्चित होगा। यदि वहां मौत होती है तो वहां से मौत के बाद कहां जाते हैं? और यदि मौत नहीं होती तो उनका जन्म भी नहीं होना चाहिए। जब जन्म है तो मौत भी ज़रूरी है ऐसी सूरत में क़ुरआन का यह लिखना कि बबीवियां सदैव जन्नत में रहती हैं झूठा हो जाएगा क्योंकि उन्हें मरना भी होगा। जब यह हालत है तो जन्नत में जाने वालों की भी मौत अवश्य होगी।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी! देखिए आपका अल्पज्ञान— कि अनुमति को आप दुआ समझे बैठे हैं। ऐ साहब! जो शब्द क़ुरआन में इस बारे में आया है वह सम्बोधन करने का कलिमा है जिसका अर्थ है रहो जन्नत में फिर इसी के साथ फ़रमा दिया कि उस पेड़ के निकट न जाना वर्ना तुम अवज्ञा कारी हो जाओगे जिससे स्पष्ट रूप से यह नतीजा निकलता है कि यह आदेश वैसा ही है जैसा परमेश्वर की ओर से आपको हुक्म होता है कि मैंने तुमको कर्म जूनी (अमल का घर) मानव ढांचा दिया है इसमें रहना और दुराचार व बदकारी न करना वर्ना तुम बन्दर और सुअर बनाए जाओगे। अतएव बहुत से आर्यों को वह दिन देखना नसीब होता है। कहिए क्या परमेश्वर को ज्ञान नहीं है? जन्नत निस्संदेह किसी समतल मकान पर होगी शायद वहां ही हो जहां पर जीव आत्मा (आप ही के कथना नुसार) मुक्ति के बाद रहती है। देखो सत्यार्थ प्रकाश अध्याय न0 9।

हैरत है आप पूछते हैं कि आदम को कितनी बातें सिखायीं भोले पंडित जी! सारी बातें जिनकी मानव जाति को ज़रूरत है सिखायीं

कुरआन में "कल्हा" का शब्द देखिए। स्वामी जी के टेढ़े सवाल देखिए कि आदम ज़मीन पर किस प्रकार ईश्वर की रक्षा में आए। यदि अधिक कुरेदो तो सुनो।

जिस प्रकार गुब्बारे वाज़ उतर आते हैं इसी तरह भी उतरना संभव है। जज किसी अपराधी को दंड देने से तब विवश हुआ करता है कि उसके दंड का समय आ चुका हो और पकड़ न सके और यदि समय पर नहीं पहुंचा तो समय से पहले विवश कहना आपकी बुद्धि व समझ का दोष है वर्ना बताइए सुलतान महमूद ग़ज़नवी और मुहम्मद ग़ौरी ने इतने कम समय में उन्होंने हिन्दुस्तान की काया पलट दी। परमेश्वर ने उन्हें सज़ा क्यों न दी।

बेशक जो ख़ाकी (मिट्टी की) चीज़ है वह एक दिन नष्ट भी हो सकती है लेकिन यदि ईश्वर की ओर से उसकी कमी की पूर्ति होती रहे [1] और ईश्वर उसकी मौत न चाहे तो कोई ज़रूरी नहीं कि धींगा धेंगी मर ही जाए जबकि हम देखते हैं कि कुछ आदमी एक दिन बल्कि एक सांस का जीवन बिताकर ही चल देते हैं और कुछ सौ साल से ऊपर हो जाते हैं तो यह अन्तर हमें सचेत करता है कि उनकी मौत की तारीख़ परमेश्वर के हाथ में है अतः इसी तरह जन्नतियों की मौत की तारीख़ अल्लाह ने असीम ज़माना पर डाल दी हो या बिल्कुल मौत को उनसे उठा ही दिया हो तो क्या ख़राबी है?

(13) उस दिन से डरों कि जब कोई आत्मा किसी आत्मा पर भरोसा न रखेगी न उसकी सिफ़ारिश कुबूल की जाएगी न उससे बदला लिया जाएगा और न वे मदद पावेंगे। (आयत –48)

1– दैनिक आहार जो खाया जाता है यह आहार मनुष्य के अंगों में मिल कर बदल बनती इसी को कमी की पूर्ति कहते हैं।

आपत्ति

क्या मौजूदा दिनों में न डरें। बुराई करने से सदैव डरना चाहिए जब सिफ़ारिश न मानी जाएगी तो फिर यह बात कि पैग़म्बर (दूत) की गवाही या सिफ़ारिश से ईश्वर जन्नत देगा, किस तरह सच हो सकेगी? क्या ईश्वर जन्नत वालों ही का मददगार है। जहन्नम वालों का नहीं? यदि ऐसा है तो ईश्वर पक्षपाती है।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी! अनादर कर रहा हूं क्षमा करें ...... बुद्धि शायद काम नहीं करती आपकी। "किसी दिन से डरना" और "किसी दिन में डरना" इन दोनों वाक्यों में अन्तर है। आपको कौन कहता है कि उस दिन से मौजूदा दिनों में न डरें। ईश्वर आपको भलाई प्रदान करे क्योंकि बुराई करने से सदैव डरना चाहिए।

पंडित जी! "से" का शब्द जज़ा पर आया है अतएव आपने भी बुराई करने "से" लिखा है चूंकि मुसलमानों के निकट पूर्ण सज़ा व इनाम उस दिन में होगी। इसलिए कहा गया कि उस दिन से डरो। जिसके साफ़ मायना हैं कि बुराई करने से डरो! स्वामी जी! देखा......

"मैं इलज़ाम उनको देता था कुसूर अपना निकल आया"

इसलिए हम बार बार कहते हैं कि कुरआन को भी किसी अरबी पाठशाला में रहकर पढ़ लेते तो तस्वीर का रुख दूसरा होता। सिफ़ारिश चूंकि ईश्वर की अनुमति के बिना नहीं होगी अर्थात किसी नबी, वली का व्यक्तिगत हक़ या लिहाज़ नहीं होगा कि अपराधी की सिफ़ारिश करे। जब तक ईश्वर उसे ख़ास अनुमति न दे। इसलिए यह कहना पूरी तरह मुनासिब है कि किसी की सिफ़ारिश स्वीकार न होगी अर्थात कोई सिफ़ारिशी सिफ़ारिश ही नहीं करेगा।

"खूब कही ...... जहन्नम वालों का हामी नहीं तो तरफ़दार है।"

(सूरह निसा– 38)

स्वामी जी को औरों की तो क्या याद होती ऐसे भोले हैं कि अपनी भी भूल जाते हैं। सुनिए मेरा आशीर्वाद उन्हीं लोगों के लिए है जो सद कर्म और भले हैं न उनके लिए जो जनता के लोगों पर अत्याचार करने वाले हैं। मैं दुराचारी अत्याचारियों को कभी आशीर्वाद नहीं देता। (ऋग वेद, अशटक। अध्याय 3 वरग 18)

समाजियो! बताओ परमेश्वर पक्षपाती है या नहीं?

हाथ ला उस्ताद क्यों कैसी रही

(14) हमने मूसा को किताब और चमत्कार दिए। हमने उनको कहा तुम अपमानित बन्दर हो जाओ, यह एक डर दिखाया जो उनके सामने और पीछे थे उनको और पथ प्रदर्शन ईमानदारों को।" (आयत – 54– 66)

आपत्ति

यदि मूसा को किताब दी थी तो कुरआन का होना बेकार है यह बात जो बाइबिल और कुरआन में लिखी है कि उसे चमत्कार दिखाने की ताक़त दी थी मानने योग्य नहीं क्योंकि यदि ऐसा हुआ था तो अब भी होता। यदि अब नहीं होता तो पहले भी नहीं हुआ था जैसे स्वामी लोग आजकल भी जाहिलों के बीच विद्वान बन जाते हैं इसी तरह उस ज़माने में भी धोखा किया होगा।

क्योंकि ईश्वर और उस की पूजा करने वाले अब भी मौजूद हैं तब भी इस समय ईश्वर चमत्कार दिखाने की ताक़त क्यों नहीं देता? और न वे चमत्कार दिखा सकते हैं। यदि मूसा को किताब दी थी तो दोबारा कुरआन के देने की क्या ज़रूरत थी? क्योंकि यदि भलाई बुराई करने न करने का उपदेश सब जगह समान है तो

दोबारा विभिन्न किताबों के बनाने से पिसे हुए के पीसने का उदाहरण लागू होता है। क्या ईश्वर उस किताब में जो कि मूसा को दी थी कुछ भूल गया था। यदि ईश्वर ने अपमानित बन्दर हो जाना मात्र डराने के लिए कहा तो उसका कहना झूठा हुआ या उसने धोखा दिया या जो ऐसी बातें करता है वह ईश्वर नहीं और जिस किताब में ऐसी बातें मौजूद हों वह ईश्वर की ओर से नहीं हो सकती।

आपत्ति का जवाब

चमत्कारों के बारे में बड़ा अच्छा प्रश्न किया। स्वामी जी! आप ही के कथनानुसार दुनिया के आरंभ में यदि मनुष्य जवान जवान पैदा हुए थे (सत्यार्थ प्रकाश अध्याय 8) तो क्यों जवान जवान पैदा नहीं होते। यदि आप कहें कि वे बच्चे पैदा होते तो उनके लालन पालन के लिए दूसरे मनुष्यों की ज़रूरत पड़ती जिससे आप का मतलब यह है कि अब जवान जवान पैदा होने की ज़रूरत नहीं तो ठीक इसी तरह चूंकि पैग़म्बर कोई नहीं इसलिए चमत्कार दिखाने की ज़रूरत नहीं।

आपने यह सवाल तो किया कि चमत्कार दिखाने की अब ताक़त क्यों नहीं मगर यह न सोचा कि पहले जो ताक़त थी वह किन को थी? आज पंडित जी होते तो हम उनसे पूछते कि बताइए आपके जीवन में तो आर्य समाज को वेदों की टीका लिखने की ताक़त अब क्यों नहीं? क्यों आप ही की लकीर के फ़क़ीर बने हुए हैं क्यों आपके पौने दो वेदों की टीका को पूरे दो भी नहीं कर दिखाते लाला साहब।

इससे अधिक जानकारी के लिए तफ़सीर सनाई तीसरा भाग देखें। बाइबिल के होते कुरआन की ज़रूरत के बारे में हम पहले

वाक्य 0 5 में लिख आए हैं। और सुनिए आप ही के शब्दों में सुनाते हैं।

"ईश्वर का ज्ञान असीम है या नहीं? तो फिर काम के लिए? यदि कहो कि अपने ही लिए ले ली है तो क्या ईश्वर उपकार नहीं करता। तुम यह कहोगे करता है फिर इससे क्या? इससे यह कि ज्ञान अपने लिए होता है और दूसरों के लिए भी क्योंकि इसके यही दो उद्देश्य हैं। यदि ईश्वर उपदेश न देता तो ज्ञान का दूसरा उद्देश्य अपनी मौत मर जाता। इसलिए ईश्वर ने अपने ज्ञान (कुरआन मजीद)[1] के उपदेश से इस दूसरे मतलब को पूरा किया है परमेश्वर बड़ा दयावान है यदि ऐसा न करता तो सदैव अज्ञानता का सिलसिला स्थापित रहता और मनुष्य धर्म, अर्थ काम, मोक्ष की प्राप्ती से वंचित रहकर परम आनन्द न पा सकता।" (ऋग वेद आदि भाषा भूमिका पृष्ठ – 8)

बताइए यदि कुरआन न आता तो अरब जैसे लड़ाकू, वहशी और बहुदेव वाद से लिप्त देश को कौन पथ प्रदर्शन करता। वेद दानव को तो वह रास्ता भी मालूम न था वह ग़ैरों को पथ प्रदर्शित करके अपने में मिलाते थे। न वेद में यह कशिश थी कि ग़ैरों को खींच लेता जिसका पक्का सबूत है कि आपके कथना नुसार 2 अरब साल वेद को बने हो गए आज तक कहीं किसी देश में हिन्दुस्तान के अलावा कोई भी इस का नाम लेने वाला नहीं कोई इतना भी तो नहीं जानता।

अभी इस राह से गुज़रा है कोई
कहे देती है शोख़ी नक़्शे पा की

तौरात, इंजील वालों का हाल यह था कि एकेश्वरवाद की बजाए तसलीस (तीन ईश्वरों का अक़ीदा) में आज तक डुबे हुए हैं। सुनिए

1– स्वामी जी की तहरीर में वेद है।

कुरआन अपने बयान में विवश नहीं है वह अपनी वजह बताता है। वेद की तरह "मुरीदां हमे परानन्द" का मोहताज नहीं। ईश्वर अरबों को सम्बोध करके फ़रमाता है कि।

"अरबी में कुरआन इसलिए उतारा है ताकि तुम न कहने लगो कि हम से पहले लोगों पर किताब उतरी थी और उनकी तालीम से अनभिज्ञ थे।" (अनआम ' 156)

निश्चय ही उनको बन्दर बनाया था झूठ क्यों होता। मगर ऐसे नहीं कि आपको आवागमन की सूझे बल्कि उनके इसी शरीर को जिसमें वे थे बन्दर बना दिया था न कि सामान्य तरीके मां के गर्भ में जाकर जैसे वेदिक मत वाले बनते हैं और कहते हैं। विस्तार से देखो रिसाला बहस तनासुख में।

(15) इस तरह खुदा मुर्दों को जीवित करता है और तुम को अपनी निशानियां दिखाता है ताकि तुम समझो। (आयत – 67)

आपत्ति

यदि मुर्दों को ईश्वर जीवित करता था तो अब क्यों नहीं करता? क्या वह क़यामत की रात तक क़ब्रस्तान में पड़े रहेंगे? क्या आजकल दौरा सुपुर्द है? क्या इतनी ही अल्लाह की निशानियां हैं क्या धरती, सूरज, चांद आदि निशानियां नहीं हैं? क्या कायनात में जो भिन्न भिन्न प्रकार के प्राणी नज़र आते हैं। यह कोई कम निशानियां हैं?

आपत्ति का जवाब

इस आयत का अनुवाद जो आपने लिखा है ग़लत है। सही अनुवाद यह है। "इसी तरह ईश्वर मुर्दों को जीवित करेगा।" अतएव शाह अब्दुल क़ादिर साहब ने अनुवाद यूं किया है। "इसी तरह ईश्वर जिला देगा मुर्दे।" तो आपका हर सवाल सिरे से ग़लत हो गया। जो

बिगाड़ का आधार फैलाने वाला था आज कल दौरे सुपुर्द नहीं बल्कि इनाम व दंड भुगत रहा है आपने कुरआन पढ़ा होता तो आप को मालूम होता। सुनिए।

फ़िरऔन और उसके आज्ञा पालक के पक्ष में फ़रमाया (सुबह व शाम फ़िरऔनियों को आग पर पेश किया जाता है) क़ियामत में ऐसे ही शरीरों के साथ उठेंगे जैसे शरीरों के साथ वे दुनिया में जीते थे वर्ना इनाम व दंड तो मरते ही आरंभ हो जाता है। (यासीन 26–27)

निस्सन्देह सारी कायनात ईश्वर की प्रकृति की निशानियां हैं। देखिए अल्लाह फ़रमाता है। (ज़ारियात–20)

लेकिन स्वामी जी! आयत में किस निशानी का नाम लिया है और किस का इन्कार किया है जो आप यह आपत्ति करने बैठ गए।

(16) वे सदैव के लिए जन्नत में रहने वाले हैं। (आयत – 75)

आपत्ति

चूंकि जीव (आत्मा) असीम गुनाह व सवाब करने की ताक़त नहीं रखते इसलिए सदैव के लिए जन्नत या जहन्नम में नहीं रह सकते और यदि ईश्वर ऐसा करे तो वह अन्याय से अनभिज्ञ और बे ख़बर ठहरे। यदि क़ियामत की रात न्याय होगा तो मनुष्यों के गुनाह व सवाब समान होने चाहिए यदि कर्म असीम ही नहीं हैं तो उनका फल असीम क्यों कर हो सकता है और मुसलमान लोग दुनिया की पैदाइश सात आठ हज़ार साल से भी कम बताते हैं क्या इससे पहले खुदा निकम्मा बैठ रहा था? और क्या क़ियामत के पीछे भी निकम्मा रहेगा। ये बातें लड़कों की बातों की तरह हैं क्योंकि परमेश्वर के काम सदैव होते रहते हैं और जितना किसी के गुनाह व पुन होते हैं उसी के अनुसार उसे फल देता है अतः कुरआन की यह बात सच्ची नहीं है।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी को यदि अदालत मिल जाती तो शायद चोर को इतनी ही मुद्दत क़ैद करते जितनी उसने चोरी करने में खर्च की होती। पंडित जी यदि कर्मों के समय दंड या इनाम है तो कृष्ण जी गीता में क्यों कहते हैं कि आत्मा सदकर्म करके आवागमन के चक्कर से छूट जाती है यद्यपि आप इसे किसी ख़ास कारण से न मानते हों लेकिन कृष्ण जी का फ़रमान आपकी सोच से कहीं बढ़कर है। आप किसी तर्क से बता दें कि कर्मों के समय समान दंड व इनाम का होना ज़रूरी है यद्यपि क़ानून शाही में हम ऐसे अपराध भी देखते हैं कि थोड़े से समय में किए जाते हैं और आजीवन कारावास उनका दंड है। अतएव आप भी बहवाला (मनुजी सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 201 अध्याय 6 न0 42 पर लिखते हैं......

> "सरकारी कर्मचारी को रिश्वत लेने पर जायदाद की ज़ब्ती और सारी उम्र के लिए देश निकाला और झूठी गवाही देने पर ज़बान काट डाली जाए और मरने के बाद सुख वैभव भी नसीब में नहीं।"

बताइए! मुद्दत के बराबर दंड मिला या अधिक। सच पूछो तो अपनी मन गढ़त बातों का यही नतीजा होता है कि आदमी को नदामत के सिवा कुछ नहीं मिलता। हां यह अच्छी भली दलील है जो पंडित जी ने वाक्य 104 में दी है।

> "यदि मीठा ही रोज़ खाया जाए तो थोड़े ही दिनों में ज़हर की तरह मालूम होने लगता है।" (अध्याय 14 न0 104)

भला स्वामी जी आपने मीठे की मिसाल दी तो नमकीन की क्यों न दी। यदि कोई एक मुद्दत तक मीठा खाकर मीठे से घबराता है तो इसलिए कि मीठा उसके जी की मर्ज़ी के अनुसार इतना नहीं होता

जितना नमकीन होता है अतः वह मीठे से नहीं बल्कि ना पसन्दीदा चीज़ों से नफ़रत कर जाता है। क्या ही समझ का फेर है। भला कोई व्यक्ति यदि दुनिया में बहुत समय तक ऐशो आराम में रहे तो किसी समय उसका मन चाहता होगा कि मैं कैदखाने में भी कुछ समय गुज़ारूं?

समाजियो! धर्म से कहना, आठ हज़ार साल दुनिया की उम्र आपने कहीं कुरआन के 31 वें [1] पारे में तो नहीं देखी? किसी आयत या हदीस में यह बात कहीं नहीं मिलती बल्कि मात्र आपका या आप जैसों का ख़्याल है।

हां यह भी ख़ूब कही कि इससे पहले ईश्वर निकम्मा बैठा था। पंडित जी! लीजिए हम आपको बताते हैं यह तो आपकी मामूली बात है कि मुसलमान दुनिया की उम्र आठ हज़ार साल मानते हैं हां इसमें संदेह नहीं कि मुसलमान बड़े पापी हैं कि ये अल्लाह की ज़ात को छोड़ कर इस सारी कायनात को हादिस (समाप्त होने वाली) अवश्य जानते हैं क्योंकि सारी कायनात मिश्रित है और मिश्रित अनादि नहीं हो सकता इस बात के स्पष्टी करण के लिए आप ही के कलाम को प्रस्तुत करना उचित है। आप स्वयं नास्तिकों के जवाब में लिखते हैं।

> "बिना कर्त्ता के कोई भी हरकत या हरकत से पैदा होने वाली वस्तु नहीं बन सकती जो ज़मीन आदि चीज़ों की ख़ास तरकीब से मिल कर बनी हुई नज़र आती हैं अनादि कालिक कभी नहीं हो सकतीं।"
>
> (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 287 अध्याय 8 न0 28)

और पृष्ठ 557 पर लिखते हैं।

1–कुरआन के कुल 30 पारे है।

> "जो मिलाप से पैदा होता है वह अनादिकालिक व सर्वकालिक कभी नहीं हो सकता।"
>
> (सत्यार्थ प्रकाश अध्याय 12)

आप दुनिया की उम्र चाहे कितनी ही लगा लें और कितने ही इसके कल्प (बार बार पैदा होने) कहें मगर इससे तो आप इन्कार नहीं कर सकते कि दुनिया मुरक्कब (मिश्रित) है और जो मिश्रित है वह नवीन है। नतीजा साफ़ है कि दुनिया के वजूद में आने का आरंभ है जिससे पहले वह न थी।

अतएव आप स्वयं लिखते हैं।

> "जो वस्तु मिलाप से बनती है वह मिलाप से पहले नहीं होती और टूट फूट जाने के बाद भी नहीं रहती।"
>
> (पृष्ठ — 288 अध्याय 8 न0 28)

अतः आपके कलाम से भी यह पता चला कि ईश्वर किसी समय निकम्मा बैठा होगा। ऐसा ही किसी समय निकम्मा बैठेगा। यदि आप कहें कि वर्त्तमान दुनिया का आरंभ व अन्त है मगर इसका सिलसिला अनादिकालिक है। एक दुनिया के बाद दूसरी और दूसरी दुनिया के बाद तीसरी। (सत्यार्थ प्रकाश अध्याय 8 न0 43)

तो यह आपके उसूल के खिलाफ़ है क्योंकि अनादि पदार्थ आपने केवल तीन ही गिने हैं। परमेश्वर (खुदा) जीव (आत्मा) प्रकृति, अविभाजित अंश। (सत्यार्थ प्रकाश अध्याय 8)

अतः यदि इन चीज़ों के सिवा दुनिया के सिलसिले को भी आपने प्राचीन और अनादि कालिक माना तो चार चीज़ें क्यों अनादिकालिक मानते हो। जिससे नास्तिकता की बुनियाद पक्की हो। यह बात सही है कि बाहरी पदार्थों को सम्पूर्ण पर प्राथमिकता ज़मानी होती है जिसका साफ़ मतलब यह है कि एक समय अवश्य

ऐसा होता है कि पदार्थ हों मगर कुल (सम्पूर्ण) जो उनसे मिलकर बना है न हो अतएव आप भी मानते हैं कि "जो वस्तु मिलाप से बनती हैं वह मिलाप से पहले नहीं होती। अतः इस उसूल को मानते हुए भी दुनिया के सिलसिले को प्राचीन कहना विरोध करने वालों के साथ होना है जो बुद्धिमानों के लिए उचित नहीं तो फिर नतीजा साफ़ है कि दुनिया का सिलसिला किसी ख़ास समय से चला है कि जिसको ईश्वर ने इसके लिए उचित समझा इससे पहले ईश्वर बेकार हो या काम वाला। हम दोनों के सोचने से बाहर हैं। हमारा तो केवल इतना ही कहना है कि

"अल्लाह ने सब चीज़ों को पैदा किया और हर चीज़ को जानता है।"

जब कुछ न था तब निराकार था
खिलक़त का पैदा करनहार था

(17) और जब ली हमने प्रतीज्ञा तुम्हारी, न डालो तुम रक्त अपने आपस के और न निकाल दो किसी आपस में अपने को घरों अपने से। फिर इक़रार किया तुमने और तुम गवाह हो। फिर तुम वे लोग हो कि मार डालते हो आपस में अपने के और निकाल देते हो। एक सम्प्रदाय को आप में से घरों उनके से। (आयत 84—85)

आपत्ति

भला प्रतीज्ञा करना, कराना कोई अल्पज्ञान और मन बुद्धि वाले लोगों की बात है या ईश्वर की? जब ईश्वर सर्व ज्ञाता है तो ऐसी बेहूदा बातें दुनिया दारों की तरह क्यों करेगा? आपस में रक्त न बहाना और अपने धर्म वालों को घर से न निकालना और दूसरे धर्म वालों का रक्त बहाना और घरों से उनको निकाल देना भला कौन सी अच्छी बात है? यह तो मूर्खता और पक्षपात से भरी व्यर्थ की बात

है। क्या ईश्वर पहले से ही नहीं जानता था कि यह प्रतीज्ञा मेरे ख़िलाफ़ करेंगे? इससे स्पष्ट होता है कि मुसलमानों का खुदा भी ईसाइयों के बहुत से गुण रखता है और यह क़ुरआन दूसरी किताबों का मोहताज है क्योंकि इसकी थोड़ी सी बातों को छोड़कर शेष सब बाइबिल की हैं।

आपत्ति का जवाब

ऐसी निरर्थक आपत्तियां यदि कोई और करता तो उसकी शिकायत भी होती। पंडित जी के स्वभाव में तो ऐसी ही बातें भरी थीं इसलिए वे अपनी आदत स मजबूर हैं। क्या अजीब लाजिक छांटी है कि प्रतीज्ञा कराना भी सीमित व मन बुद्धि वाले लोगों का काम है पंडित जी ईश्वर की प्रतिज्ञा लेने का मतलब आदेश का होना है यदि आदेश देना भी सीमित बुद्धि वालों का काम है तो सारे वेद भगवान की टीका लिखने का कष्ट क्यों उठाया था? आख़िर उसमें भी तो आदेश ही हैं।

बाक़ी मरने मारने का जवाब वाक्य न0 2 में आ चुका है हां यह भली कही कि पहले नहीं जानता था कि ये प्रतीज्ञा के विरुद्ध करेंगे? क्या परमेश्वर नहीं जानता था कि आर्य वरत के आर्यों ने मेरे प्रस्तावित निर्देशों पर तो अमल करना नहीं जिसका बदला उनको दुनिया ही में महमूद ग़जनवी और मुहम्मद ग़ौरी से दिया जाएगा। फिर क्यों हथियारों की सफ़ाई और उनको तैयार रखने का निर्देश देता रहा। (देखो नम्बर 2)

हाथ ला उस्ताद क्यों कैसी कही?

"सच है, बहुत से लोग ऐसे हठ धर्म होते हैं कि बात करने वाले के ख़िलाफ़ असल उद्देश्य की तावील करते हैं उनकी बुद्धि अंधेरे में फंस कर नष्ट हो जाती है।" (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ -7)

(18) ये वे लोग हैं कि मोल लिया सांसारिक जीवन परलोक के बदले। तो न हल्की की जाएगी उनसे यातना और न मदद किए जाऐंगे।" (आयत –86)

आपत्ति

भला ऐसी घृणा व ईर्ष्या की बातें कभी ईश्वर की ओर से हो सकती हैं? जिन लोगों के गुनाह हल्के किए जाएंगे या जिनको मदद दी जाएगी वे कौन हैं? यदि वे पापी हैं और पापों के बिना दंड दिए या हल्के किए जाएंगे तो अन्याय होगा। जो दंड देकर भी हल्के न किए जाएंगे तो जिनका बयान इस आयत में है ये भी दंड भोग कर हल्के हो सकते हैं और दंड देकर भी हल्के न किए जाएंगे तब भी अन्याय होगा। यदि गुनाहों से हल्के किए जाने वालों का मतलब ईश्वर से डरने वालों से है तो उनके गुनाह तो आप ही हल्के हैं ईश्वर क्या करेगा। इससे मालूम हुआ कि यह लिखावट किसी विद्वान की नहीं और वास्तव में धर्मात्माओं को सुख और अधर्मियों को दुख उनके दुष्कर्मों के अनुसार ही सदैव देना चाहिए।

आपत्ति का जवाब

पंडित जी! इतनी घृणा कि "मैं बदकार अत्याचारियों को कभी आशीर्वाद नहीं देता" (ऋग वेद अशटक 1 अध्याय 2 वरग 18 मंन्त्र 2) "अगर मगर" में आपने जितना समय खोया किसी अरबी पाठशाला में जाकर इस आयत का मतलब पूछ लेते कि ये लोग कौन हैं तो इतना कष्ट आपको न होता। न इस्लाम के प्रति भ्रम फैलाने का आपको पाप होता। ये वही लोग हैं जिनको आप भी सत्यार्थ प्रकाश अध्याय 10 में मनु जी के हवाले से कह आए हैं कि......

"जो व्यक्ति वेद की निंदा करता है वही नास्तिक है"

बल्कि यही हैं जिनके बारे में वेद में कहा गया है।

"वे परमेश्वर की मदद और हिमायत से वंचित रहकर सदैव की मौत अर्थात जीने मरने के चक्कर में रहते हैं।"

(यजुर वेद अध्याय 25 मन्त्र 13)

सुनों और बड़े ध्यान से सुनो। असल कुरआनी शब्द ये हैं–

उलाइक ल्लाज़ी नश त र वुल हयातद दुन्या बिल आख़िरति फ़ला मुख़फ़फ़फ़ु अन्हुमुल अज़ाबु वला हुम युन्सरून 0

"उन्हीं लोगों ने दीन के बदले दुनिया को पसन्द किया। अतः उनसे यातना में कमी न होगी और न ही उनको किसी से मदद पहुंचेगी।" (सूरह बकरा– 175)

समाजियो! यदि अरबी लिखने की योग्यता रखते हो तो इन शब्दों पर सोच विचार करो, नहीं तो अनुवाद ही देख लो और अपने स्वामी की आपत्तियों की दाद दो।

(19) "और अलबत्ता बेशक दी हमने मूसा को किताब और पीछे हम पैग़म्बर (दूत) को लाए और दिए हमने ईसा बेटे मरयम को चमत्कार खुले और शक्ति दी हमने पाक रूह के साथ। तो क्या आया जब तुम्हारे पास साथ उस चीज़ के कि नहीं चाहते जी, तुम्हारे घमंड किया तुमने तो एक सम्प्रदाय को झुठलाया तुम ने और एक समप्रदाय को मार डालते हो।" (आयत – 87)

आपत्ति

जब कुरआन में गवाही है कि मूसा को किताब दी तो उसका मानना मुसलमानों के लिए अनिवार्य ठहरा और जो जो इस किताब में कमी व ख़राबी है वे भी मुसलमानों के धर्म में आ गयी और चमत्कार की बातें सब बेकार हैं और सीधे सादे लोगों के बहकाने के

वास्ते गढ़ी गयी हैं क्योंकि कुदरत के कानून और ज्ञान के विपरीत सारी बातें झूठी ही हुआ करती हैं। यदि उस समय चमत्कार थे तो अब क्यों नहीं होते। चूंकि इस समय नहीं होते इसलिए उस समय भी नहीं होते थे। इसमें तनिक भी संदेह नहीं।

आपत्ति का जवाब

बाइबिल के मानने के आरोप का जवाब न0 5 में दे चुका हूं। पंडित जी की आदत है कि सीधे सादे लोगों के बहकाने को नम्बरों की संख्या बढ़ाते हैं। चमत्कारों का जवाब भी न0 14 में आ चुका है।

" (20) और उससे पहले काफ़िरों पर विजय चाहते थे जो कुछ काफ़िरों पर फटकार है अल्लाह की।" (आयत – 89)

आपत्ति

जिस प्रकार तुम ग़ैर धर्म वालों को काफ़िर कहते हो उसी प्रकार क्या वे तुम को काफ़िर नहीं कहते? और वे अपने धर्म के खुदा की ओर से तुम्हें फटकारते हैं फिर कहो कौन सच्चा और कौन झूठा है? जब ध्यान से देखते हैं तो सारे धर्म वालों में झूठ पाया जाता है। और जो सच है वह सब में समान है। ये सारे झगड़े अज्ञानता के हैं।

आपत्ति का जवाब

इस वाक्य में तो स्वामी जी ने फैसला ही कर दिया जिसका मतलब इन शब्दों में समझने से कोई चीज़ बाधक नहीं कि सत्यार्थ प्रकाश जिसमें सारे धर्मों का खंडन है बिल्कुल अज्ञानता से भरी हुई है। हम यदि यह बात कहते तो हमारे समाजी दोस्त हमसे नाराज़ होते और हमें पक्षपाती और कौन कौन सी उपाधियां प्रदान करते मगर शुक्र है कि उनके अपने बयान ने फैसला कर दिया।

हुआ मुद्दई का फैसला अच्छा मेरे हक़ में
ज़ुलैख़ा ने किया ख़ुद पाकदामन माहे किन्आं का

बाक़ी रहा ग़ैर क़ौमों का हमें काफ़िर कहना। हम इससे नाराज़ नहीं। काफ़िर का मायना इन्कार करने के हैं। हम स्वयं कहते हैं।

" हम तुम्हारे दीन का इन्कार करते हैं। धार्मिक कामों में हमारी तुम्हारी मुख़ालिफ़त सदैव के लिए है जब तक तुम अकेले खुदा पर ईमान न लाओ।" (सूरह मुमतहिना –4)

हां स्वामी जी! जिस प्रकार आप वेद के इन्कारियों को अधर्मी और नास्तिक कहते हैं इसी प्रकार ईसाई और हिन्दू आपको इंजील और पुराणों के इन्कार करने की वजह से अधर्मी कहते हैं फिर कहिए तुम में से कौन झूठा और कौन सच्चा है? यहां तो स्वामी जी बड़ी समझौते की पालीसी चले हैं। असल यह है कि पंडित जी के कई रंग हैं। लेकिन– आप स्वयं ही समझ जाइए।

(21) शुभ सूचना ईमान दारों को। अल्लाह, फ़रिश्तों, सन्देष्टाओं जिबरील और मीकाईल का जो दुश्मन है अल्लाह भी ऐसे काफ़िरों का दुश्मन है। (आयत –98)

आपत्ति

जब मुसलमान कहते हैं कि अल्लाह किसी का साझी नहीं है फिर ये फ़ौज की फ़ौज कहां से कर दी? क्या जो औरों का दुश्मन है वह खुदा का भी दुश्मन है? यदि ऐसा है तो ठीक नहीं। क्योंकि खुदा किसी का दुशमन नहीं हो सकता।

आपत्ति का जवाब

इस उपरोक्त अनुवाद को देखने वाले भली प्रकार समझ सकते हैं कि दयानन्द जी को भ्रम में कहां तक आनन्द मिलता है। अनुवाद ऐसा प्रस्तुत किया है जिसका सर है न पावं है क्यों न हो स्वामी का कहना क्या ही सच है......" आगे पीछे न देखने वाले अज्ञानियों को ज्ञान कहां।" (भूमिका पृष्ठ – 52)

मगर ख़ैर हमें तो इनके सवाल का जवाब देना है। समाजी मित्र तो गला फाड़ फाड़ कर परमेश्वर अकेला सर्वशक्ति मान कहते हैं फिर क्या कारण है कि वेद बताता है।

"परमात्मा के इस ख़ज़ानए कुदरत को जिसकी देवता रक्षा करते हैं कौन नहीं जान सकता है।"

(अथर्ववेद कांड 10 प्रफाटक 23 अनुवादक 4 मंत्र 23)

वेद यह भी आज्ञा देता है।

"तैंतीस देवता उस परमात्मा के बांटे गए कर्तव्यों को पूरा कर रहे हैं। वे उसकी कुदरत के आंशिक द्योतक हैं जो लोग इस ब्रहम अर्थात वेद या सब्र ब्रहमांड ईश्वर को पहचानते हैं वेद उन तैंतीस देवताओं को जानते और उनको इसी ब्रहम के सहारे स्थापित मानते हैं। (उपरोक्त हवाला मंत्र 27)

जब परमेश्वर एक बिना किसी साझी के है तो पंडित जी यह फ़ौज (साझी) कहा से आ गयी। यह है स्वामी जी की योग्यता। इतना भी नहीं जानते कि प्राणी का अल्लाह के नाम के साथ मात्र जिक्र आना जाना शिर्क नहीं हुआ करता बल्कि इसी हैसियत से आए जिस हैसियत से ईश्वर का नाम आया है तो शिर्क होता है। भला यदि कोई कहे कि ईश्वर इस पापी को नष्ट करे जिसने दयानन्द जी को विष से मार डाला तो क्या यह भी शिर्क है?

प्रिय पाठको! पंडित जी के इसी वाक्य पर आप चकित न हों। आगे भी बहुत से अवसर[1] आप सुनेंगे कि स्वामी जी शिर्क से ऐसे भागते हैं जैसे मांसाहारी से। अतएव लाइला ह इल्लल्लाहु के साथ मुहम्मदर्रसू लुल्लाह को मिलाना भी शिर्क समझेंगे। क्यों न हो बेचारे सांपों के डसे हुए रस्सियों से डरते हैं। लम्बी अवधि के शिर्क

1- वाक्य 52 व वाक्य 55 आदि।

और मूर्ति पूजा में फंसे हुए मुसलमानों की अपत्तियां सुन सुन कर इस मार्ग पर आए हैं इसलिए थोड़ा बहुत मजबूर भी हैं मगर अफ़सोस।

हां, यह ख़ूब कही कि "ख़ुदा किसी का दुश्मन नहीं हो सकता।" हम पंडित जी की स्म्रण शक्ति की कहां तक शिकायत करें। ईश्वर का आदेश भी सुनिए – और तनिक ध्यान से सुन लीजिए।

"मैं व्यभिचार अत्याचारियों को कभी आशीर्वाद नहीं देता।" (ऋग वेद अशटक 1 वरग 18 मन्त्र 2)

बताइए ये कौन लोग हैं जिनको आशीर्वाद नहीं मिलता, वही है जिन को कुरआन में अल्लाह का दुश्मन या सूरह बक़रा ९८ में। फ़इन्नल्लाह अदुव्वुन लिल काफ़िरीन कहा गया है। स्वामी जी यह समझ बैठे होंगे कि जिस तरह हम अपने दुश्मन को हो सके तो दम भर जीने नहीं देते। ईश्वर भी ऐसे ही करता होगा मगर उनको मालूम नहीं।

(22) और कहो कि माफ़ी मांगते हैं। हम माफ़ करेंगे तुम्हारे गुनाह और अधिक नेकी करने वालों के। (आयत -- 59)

आपत्ति

भला यह ईश्वर का पथ प्रदर्शन सब को गुनहगार बनाने वाला है या नहीं क्योंकि जब गुनाह माफ़ हो जाने का सहारा आदमी को मिलता है तब गुनाहों से कोई भी नहीं डरेगा। इस वास्ते ऐसा कहने वाला ईश्वर और यह ईश्वर की बनाई हुई किताब नहीं हो सकती।वह न्याय धीश (न्याय करने वाला) है। अन्याय कभी नहीं करता और गुनाह माफ़ करने से तो अन्यायी हो जाता है मगर जैसी ग़लती हो वैसी सजा देने से ही न्याय करने वाला हो सकता है।

आपत्ति का जवाब

यह मसला स्वामी का विचार करने योग्य है। इसे पंडित जी ने कई एक अवसरों पर लिखा है सबका मतलब यही है कि तौबा स्वीकार नहीं होती। हम वायदा अनुसार पहले वेद मन्त्र स्वामी जी बयान करके इसकी मन्शा समाजियों से पूछते हैं। मन्त्र से पहले स्वयं पंडित जी भूमिका में एक प्रस्तावना लिखते हैं वह भी विचार योग्य है। आप लिखते हैं।

इस ईश्वर की हिदायत किए हुए धर्म को मानना हर मनुष्य पर फ़र्ज़ है और चूंकि उसकी मदद के बिना सच्चे धर्म का ज्ञान और उसकी पूर्ति सफ़ल नहीं हो सकती। इसलिए हर मनुष्य को ईश्वर से इस तरह मदद मांगनी चाहिए।

"ऐ अग्नि (परमेश्वर) प्रतीज्ञा व सत्य के स्वामी व रक्षक! मैं सच्चे धर्म पर चलूंगा अर्थात उसकी पाबन्दी करूंगा। ऐ परमेश्वर! मुझे सच्चे नेक रास्ते और धर्म पर अमल करने की ताक़त दे। आप मुझे साहस दीजिए कि मेरी सच्चे धर्म की प्रतीज्ञा आप की कृपा से पूरी हो (प्रतीज्ञा यह है) मैं आज से सच्चे धर्म की पाबन्दी और झूठ खोटे चलन और अधर्म से दूरी अपनाता हूं।" (यजुरवेद अध्याय 1 मन्त्र 5)

अब सवाल यह है कि इस प्रतीज्ञा के अनुसार जिसे इस्लामी मुहावरे में तौबा कहते है इस प्रतीज्ञा (तौबा) करने वाले का क्या लाभ। ईश्वर के सामने तो ऐसी विनम्रता से अपनी नेक नीयती को व्यक्त किया और वहां जो जवाब मिला कि तेरे पिछले गुनाह तो बराबर मौजूद है। जिनके नतीजे में तू एक बार पाखाना का करम या जंगल का बन्दर या सुअर बनेगा क्योंकि बिना इसके हमारा उसूल और दया बिगड़ती है हां, आगे को यदि तूने कुछ सदकर्म किए तो तुझे बदला मिलेगा। फिर बताईए ऐसे ईश्वर से तो मामूली

बनिया दुकान दार भी कई गुना अच्छा है या नहीं? जिनके नौकर यदि सच्ची नीयत से तौबा करें और आगे को आज्ञा पालक बनने और नेक काम करने की प्रतीज्ञा करें तो वे भी एक दो बार उनको क्षमा कर ही देते हैं मगर परमेश्वर ऐसा दयालु है कि उसे बन्दे के दिलों का हाल मालूम है इसके बावजूद वह मात्र नेक नीयती के साथ मेरे आगे गिड़ गिड़ाता है फिर भी उसके हाल पर दया खाकर उसकी ग़लतियों को माफ़ नहीं करता। सच पूछो तो परमेश्वर भी सच्चा है। वह (आर्य समाज के कथनानुसार) इसी तरह तौबा करने पर गुनाह माफ़ करता जाए तो उसके देश और शासन में ख़लल आता है क्योंकि उन्हीं बदकारों को तो उसने हैवानी जानवरों के शरीरों में ढाल ढाल कर दुनिया को आबाद रखना है यदि यही बटेरें हाथ से निकल गयीं तो वह लाएगा कहां से?

हैरत तो यह है कि स्वामी जी के मुंह से भी कभी कभी आप से आप सच्ची बात निकल जाती है मगर यद्यपि किसी खाने में निकले। आप स्वयं सत्यार्थ प्रकाश अध्याय 7 न0 13 में मानते हैं कि न्याय व ईश्वरीय दया में आपसी विभेद नहीं अतः हम भी पंडित जी की तक़रीर की व्याख्या करने को उन्हें और उनके चेलों को बताते हैं कि न्याय का अर्थ हरेक वस्तु को ठीक ठीक उसके स्थान पर रखना भलाई का इरादा है या किसी की दुखद हालत पर तरस खाना।" यह "गुण" भलाई का इरादा पंडित जी भी ईश्वर के बारे में मानते हैं (देखो सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 235, अध्याय 7 न0 19) तो आप बताइए कि एक व्यक्ति जो दिल की निष्ठा के साथ ईश्वर के आगे बिना किसी यातना देखने के गिड़गिड़ाता है तौबा करता है तो उसका न्याय (जिसके मायना थे हरेक वस्तु को ठिकाने पर रखना)इस तौबा के लिए भी कोई अवसर प्रस्तावित करेगा और उसका रोना धोना

और बे देखे हाय तौबा भी कोई जरूरत है? बन्दों के हरेक कर्म के लिए जब कोई न कोई कारण हो तो कोई वजह नहीं कि इस काम (तौबा) का कोई औचित्य नहीं है तो बताइए कि क़ुबूल तौबा ठीक ठीक न्याय और दया दोनों है या नहीं? बल्कि तौबा का क़ुबूल न होना और गुनाहों का माफ़ न होना सरासर ज़ुल्म और न्याय के विरुद्ध है क्योंकि यह बात चीज़ों को अपने ठिकाने पर रखने के भी विरुद्ध है।

असल में स्वामी जी को बन्दों के अधिकारों और अल्लाह के अधिकारों के बीच भ्रम हो गया। स्वामी जी की तक़रीर से जो पृष्ठ 350 सत्यार्थ प्रकाश अध्याय 7 पर है यही मालूम होता है कि आप को दोनों में तमीज़ नहीं। तो हम अपने समाजी दोस्तों को बताते हैं कि इनमें बहुत बड़ा फ़र्क़ है और हम भी पहली बार में ही तौबा के क़ाइल नहीं जब तक वह व्यक्ति जिसकी कुछ हानि की हो माफ़ न कर दे क्योंकि इससे विश्व व्यवस्था बिगड़ती है और दूसरी क़िस्म में तौबा के स्वीकार होने को मानते हैं। बशर्ते कि सच्चे दिल से और नेक नीयत से मात्र अल्लाह के अज़ाब से और अपनी बुराइयों के भय से तौबा करे और यह भी शर्त है कि तौबा करते समय आइन्दा (भविष्य) का पक्का ध्यान जी में इस काम के न करने का करे। सुनो।

"अल्लाह के निकट तौबा उन्हीं लोगों की क़ुबूल होती है जो नफ़स के हमले में फंस कर बुरे काम करते हैं फिर झट से तौबा करते हैं।" (सूरह निसा–17)

"माफ़ी उन लोगों के लिए जो गुनाह करके ईश्वर को याद करते हैं और अपने गुनाहों पर क्षमा याचना मांगते हैं और (जानते हैं) कि ईश्वर के सिवा कोई गुनाह बख़्श नहीं

सकता और अपने किए पर जान बूझ कर अड़े नहीं रहते।" (सूरह आले इमरान –135)

स्वामी जी ने इस पर भी ध्यान से काम नहीं लिया कि जितनी उच्च विशेषताएं दुनिया में हैं उन सब का स्त्रोत अल्लाह के गुण ही हैं जैसे दानवीरता एक उत्तम कमाल है तो असल उसी स्त्रोत का एक निशान है। ऐसा ही न्याय, दया, मुहब्बत आदि उत्तम गुण सब के सब उसी स्त्रोत के निशान हैं जिसको अल्लाह, परमेश्वर, गाड और खुदा आदि कहते हैं अतः जब हम दुनिया में बहुत से मुक़दमों में दावा करने वाले, फ़रियाद करने वालों और मोहताजों को माफ़ करते भी देखते हैं और उनकी प्रशंसा करते हैं और कभी कभी इसकी सराहना भी करते हैं।

तो ईश्वर के बारे में कौन सी दलील इस उत्तम गुण के मानने से हमें रोकती है, हां स्वामी जी का यह कहना कि तौबा से गुनाहों का साहस होता है बड़ी विचित्र बात है पंडित जी को यह भी मालूम नहीं कि सांसारिक कारोबार में जिसमें बन्दों को अपने ग़लत कामों की माफ़ी का पता भी हो जाता है माफ़ी से साहस और बहादुरी नहीं होती तो ईश्वरीय माफ़ी में जिसका पता भी दुनिया में कदापि नहीं हो सकता क्यों कर साहस बढ़ेगा? हां, ऐसे लोगों की तौबा इस्लाम में भी स्वीकार्य नहीं जो गुनाह करते हुए यह साहस रखें कि तौबा से गुनाह माफ़ करा लेंगे तो हम अल्लाह का आदेश सुनाकर इस वाक्य को समाप्त करते हैं। ज़रा ध्यान से सुनो।

"तो मेरे गुनाहगार बन्दों को कह दे कि मेरी दयालुता से निराश न हो बेशक अल्लाह (तौबा करने पर) सारे गुनाह माफ़ कर देगा वही है जो अपने बन्दों की तौबा स्वीकार करता है और गुनाह माफ़ करता है।" (सूरा शूरा – 25ह

(23) "जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा। हमने कहा कि अपनी लाठी पत्थर पर मार उसमें से 12 सोतें बह निकले।"

(आयत – 60)

आपत्ति

देखिए इन असंभव बातों के बराबर कोई दूसरा व्यक्ति क्या कहेगा एक पत्थर पर लाठी मारने से 12 सोतों का निकलना बिल्कुल असंभव है, हां उस पत्थर को अन्दर से खोखला करके उसमें पानी भरने और बारह सूराख़ करने से ऐसा संभव है और किसी तरह नहीं।

आपत्ति का जवाब

चमत्कार के संभव और असंभव होने के बारे में हमारी विस्तृत तक़रीर तफ़सीर सनाई भाग तीन हाशिया न0 1 में है सार उसका यह है कि चमत्कार असंभव नहीं है बल्कि उसका नुबुवत के साथ एक विचित्र कैफ़ियत का संबंध है जैसा कि आत्मा और बुद्धि का शरीर के साथ। तो जहां नुबुवत होगी वहां चमत्कार का होना कुदरत का क़ानून है बिना सबूत चमत्कार नहीं। पंडित जी के इस कथन से तो सबसे ज्यादा हैरानी है क्योंकि वाक्य 73 में स्वयं ही फ़रमाते हैं कि।

"जिस धर्म को हज़ारों करोड़ों आदमी मानते हों उसको झूठा कहने वाले से बढ़कर झूठ कौन है।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 697 समलाक 14 न0 73)

लेकिन यहां यह क़ायदा भूल गए और यह ध्यान न फ़रमाया कि चमत्कार को आप की ज़ात या आपके चेलों के (जिनकी गिनती हाथों की उंगलियां पर हो सकती है) सिवा सारे धर्म वाले (मुसलमान, यहूदी, ईसाई, हिन्दू व बौद्ध आदि) मानते हैं और अपने

अपने बुज़ुर्गों के बारे में बहुत से चमत्कार और करामतों का अपने शब्दों में बयान करते हैं आप स्वय ही फ़ैसला दें कि आप जो ऐसी बात को जिसे लग भग सारी दुनिया के लोग मानते हैं। खंडन करते है आप से बढ़ कर ...... कौन है?

चमत्कार की वास्तविकता केवल यह है कि सामान्य प्रचलित तरीक़े के विरुद्ध घटित होता है जिसे सुपर नेचरल (प्रकृति के क़ानून के विरुद्ध) कहते हैं तो इस बात की तहक़ीक़ पर सारा आधार है यदि इसका प्रमाण मिल जाए कि प्रचलित आदत के विपरीत भी घटित हुआ या हो सकता है और कम से कम दोनों पक्षों (मुसलमान और आर्य समाजी) में फ़ैसला हो जाए तो दोनों में किसी का हक़ नहीं कि चमत्कार पर वृद्धि करे तो आइए इसी उसूली मसले की हम तहक़ीक़ करें।

प्रिय पाठको! यह तो आप लोगों को मालूम होगा जिस की गवाही आप दे सकते हैं कि आम प्रचलित नियम यह है कि मनुष्य को जन्म से पहले के हालात मालूम नहीं हैं न भविष्य में अर्थात मौत के बाद की घटना बता सकता है यद्यपि आर्य समाजी वर्त्तमान जीवन से पहले जीवन के मानने वाले हैं लेकिन इतना वे भी मानते हैं कि विगत और भविष्य की घटनाओं का पता किसी को नहीं हो सकता। हम इसके बारे में स्वामी दयानन्द जी के निर्देश सुनाते हैं। आप सवाल व जवाब की सूरत में लिखते हैं।

"यदि जन्म बहुत हैं तो पहले जन्म और मौत की बातें क्यों याद नहीं रहतीं?"

जवाब– जीव सीमित ज्ञान वाला है हर तीसरे ज़माने को निरीक्षण में लाने वाला नहीं इसलिए याद नही रहता और जिस मन के द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है वह भी एक समय में दो ज्ञान हासिल

नहीं कर सकता। भला पहले जन्म की बात तो दूर रहने दीजिए। इस शरीर में जीव जब गर्भ में होता है जहां शरीर तैयार हुआ और फिर पैदा हुआ और पांच वर्ष की आयु से पहले जो जो बातें हुई हैं उनको क्यों याद नहीं कर सकता।

इसी प्रकार ज़माने की हालत में या सपने में बहुत सा कारोबार करके गहरी नींद की हालत में इस जागते हुए ज़माने के कारोबार क्यों याद नहीं कर सकता और तुम से कोई पूछे कि बारह साल से पहले तेरहवें साल के पांचवे महीने में नवें दिन दस बजकर पहले मिनट में तूने क्या किया था। तुम्हारा मुंह, हाथ, कान, आंख और शरीर किस ओर और किस प्रकार का था और मन में क्या सोच थी। जब इस शरीर में यह हाल है तो पिछले जन्म की याद रहने के बारे में भ्रम पैदा करना मात्र लड़कपन की बात है और कोई व्यक्ति पिछले जन्म और अगले जन्म के हालात को जानना चाहे तो जान भी नहीं सकता क्योंकि जीव का ज्ञान और अस्तित्व सीमित है। यह बात ईश्वर के जानने की है न कि जीव की।

(सत्यार्थ प्रकाश समलास 9 न0 31 पृ0 329)

उपरोक्त उल्लिखित मुहावरे से साफ़ साबित है कि पिछले जन्मों का हाल किसी को मालूम नहीं हो सकता बल्कि यह ईश्वरीय गुण है जिसमें कोई भी आत्मा या जीव भाग नहीं ले सकता। बहुत अच्छा ...... आगे चलिए। स्वामी जी की आत्म कथा में उनका कथन यूं नक़ल है।

"पंडित कमल नैन जी का कथन है कि जोधपुर जाते समय स्वामी जी फ़रमाते थे कि शरीर का अब कुछ भरोसा नहीं, न जाने किस समय छूट जाए और मैं इस कार्य (वेदकी टीका) के लिए फिर दोबारा जन्म लूंगा और उस समय जो मेरे विरुद्ध हुए वे सब शान्त

हो जाएंगे। आर्य समाजियों की प्रगति से भी बड़ी भारी मदद मिलेगी। मैं उस समय वेद का अनुवाद पूरा कर दूंगा।

(स्वानेह उमरी कलां पृष्ठ 867)

इस हवाले से दो बातें साबित होती हैं। एक यह कि स्वामी जी की आत्मा को भविष्य वाले शरीर का पता था दूसरे यह कि उस आने वाले समय में आपको पिछले जन्म की जानकारी होगी इसीलिए तो आप अपने अधूरे काम (वेद की टीका) को पूरा करेंगे। ये दोनों विद्याएं कुदरत के आम क़ानून के ख़िलाफ़ हैं। एक और गवाही सुनिए।

पंडित लेख राम मक़तूल आर्य मुसाफ़िर लिखता है।

"प्रिय प्यारे लाल निवासी मोटी ज़िला बरेली जिसका चचा 1857 की बग़ावत में मारा गया। जब कुछ दिन गुज़रे तो उसने तोते का जन्म लिया और यही तरीक़ा अपनाया कि हर शाम को अपने घर आता और एक लोहे का पिंजरा जो उसके घर रखा हुआ था उसमें बसेरा कर लेता और सुबह को उड़ जाता। कुछ दिन यही हाल रहा। फिर एक दिन वह तोता गया वापस न आया। लोगों को उसकी बड़ी चिंता रही। उन दिनों का हाल सुनिए। एक गोसाई की औरत निवासी ग्राम सूंघू अपने काम से किसी गांव में जाती थी। रास्ते में प्यास के कारण अपने किसी जान पहचान वाली के घर आयी। उस का पांच साल का बच्चा पोता राम के घर आया और औरतों से कहा कि फ़लां फ़लां कहां हैं। कहा कि फ़लां मर गए और फ़लां काम से फ़लां जगह गए हैं।

इसके बाद लड़के ने बयान किया कि मेरा पहला नाम प्यारे लाल है और यह घर मेरा है यहां नीम का एक पेड़ था वह कहां गया? उन्होंने कहा कि हम ने काट डाला। फिर उस लड़के ने अपने मारे

जाने और मरकर तोता बनने और उस शिकारी के पंजे में फंस कर मरने और गोसाई में पैदा होने की बात बताई और अपने मां, बाप, नानी, चाची को पहचान कर अपनी टोपी मांगी। उसकी पूर्व मां ने क्षमा याचना की, कि ये चीज़ें तुम्हारे भतीजे के इस्तेमाल में आ गयीं हम तुम्हारे लिए दूसरी दे देंगी। लोगों को इस लड़के की ऐसी बातों पर बड़ा अचरज हुआ। इसके बाद वह अपनी नयी मां के साथ चला गया।" (कुल्लियात आर्यामुसाफिर पृ० 97)

इस हवाले से जो कुछ लेखक ने साबित किया है वही हमारी भी मन्शा है अर्थात प्यारे लाल को तोता बनने की हालत में पहली जानकारी याद रही। फिर पोता राम बनकर तोता की जून बल्कि इससे पहली जून की भी जानकारी हासिल रही यद्यपि आम क़ानून कुदरत यही है कि किसी पिछले जन्म का ज्ञान हो मगर इस तोता राम को हुआ।

इन दोनों शहादतों से साफ़ साबित है कि ये घटनाएं कुदरत के क़ानून के ख़िलाफ़ हैं जिसके बारे में स्वामी दयानन्द ने विचार व्यक्त किए थे कि यह ईश्वरीय गुण है। बस अब आसमान साफ़ है कि जिस प्रकार ये दोनों घटनाएं प्रकृति के क़ानून के ख़िलाफ़ घटी हुई हैं इसी प्रकार अम्बिया के चमत्कार भी प्रत्यक्ष में सामान्य रूप से कुदरत के क़ानून के ख़िलाफ़ होते हैं। असल में उनके लिए भी क़ानून होता है तो इतने ही से चमत्कार की हक़ीक़त समझ में आ सकती है।

समाजी मित्रों!

संभल कर रखियो क़दम दश्ते ख़ार मजनूं
कि इस नवाह में सौदा बरहना पा भी है

(24) और अल्लाह ख़ास करता है जिसको चाहता है साथ अपने

रहम के।" (आयत – 86)

आपत्ति

क्या जो विशेष और दया किए जाने के योग्य नहीं उनको भी ख़ास (रिज़र्व) करता और उस पर दया करता है? यदि ऐसा है तो ईश्वर गड़बड़ मचाने वाला है फिर अच्छा काम कौन करेगा? और बुरे काम कौन छोड़ेगा? क्यों कि ऐसी स्थिति में ईश्वर की रज़ामन्दी पर मनुष्य भरोसा करेंगे और कर्मों के नतीजों पर नहीं। इस गड़बड़ी की वजह से तो सब सदकर्म करने से अलग हो जाएंगे।

आपत्ति का जवाब

पंडित जी! पूछ लेने में क्या हरज था यदि आप एक साल के लिए किसी अरबी पाठशाला में कुरआन पढ़ लेते। मनु जी ने सच कहा है जो वेद (या कुरआन) बिना उस्ताद के पढ़ता है वह चोर है। सुनिए कुरआन ने स्वयं दूसरी आयत में इसकी टीका की है।

"जिस व्यक्ति को ईश्वर अपना दूत बनाता है उस के हाल से भली प्रकार जानकार होता है। (अनआम – 124)

हां आप बताइए कि यजुरवेद के निर्देशानुसार अध्याय 21 मन्त्र 22 जो व्यक्ति यह दुआ करे कि मुझको समस्त सुख सुविधा या सारे जगत का शासन प्रदान कर उसे क्या मिलेगा। कल एक समय में सारे हिन्दुस्तान के रहने वाले सारे जगत की नहीं केवल हिन्दुस्तान की हुकूमत मांगे तो सब को मिलेगी या किसी विशेष को सबको तो भला कैसे मिल सकती है? यदि किसी ख़ास को, तो क्यों? यदि पहले कर्मों का नतीजा है तो इस दुआ का क्या फ़ायदा? इसके अलावा पूर्व कर्मों का नतीजा भला भी अल्लाह की दया का असर है। सोच कर जवाब दीजिए। हमारा तो ईमान है।

जो कुछ हुआ हुआ करम से तेरे
जो होगा वह तेरे करम से होगा

(25) ऐसा न हो कि काफ़िर लोग हसद करके तुमको ईमान से विमुख कर दें क्योंकि उनमें से ईमान वालों के बहुत से दोस्त हैं।

(आयत : 110)

आपत्ति

अब देखिए ईश्वर ही उनको याद दिलाता है कि तुम्हारे ईमान को काफ़िर लोग न गिरा दें। क्या ईश्वर को सब कुछ का ज्ञान नहीं है? ऐसी बातें ईश्वर की नहीं हो सकती हैं।

अपत्ति का जवाब

यह दूसरा स्थान है कि हम ऊंची आवाज़ से कहते हैं कि भोले स्वामी जी को न्याय बल्कि सूझ बूझ से भी कोई मतलब नहीं था। इस वाक्य का अनुवाद मालूम नहीं पंडित जी ने कहां से चुराया है। हमारे अरबी कुरआन में न तो इस अनुवाद की कोई आयत मिलती है और न अनुवादित कुरआन में यह अनुवाद है। हमने समझा था कि पंडित लेख राम ही में यह कमाल है कि अपनी ओर से अनुवाद में "थी"[1] का शब्द बढ़ाकर आवागमन का प्रमाण दिया था मगर सत्यार्थ प्रकाश देखने से मालूम हुआ कि असल में स्वामी जैसे धर्म गुरू लेखराम के गुरु थे। इस चालाकी में भी वे आप ही से लाभान्वित थे।

आपत्ति कर्त्ता के दिल का हाल तो ईश्वर को मालूम है कि इस सवाल से उनका मतलब क्या था। हां जिस आयत का नम्बर लगाया? है वह यह है तनिक ध्यान से सुनो। ईश्वर फ़रमाता है।

"नमाज़ पढ़ते रहो, ज़कात देते रहो। जो कुछ भलाई अपने

* 1- पंडित लेख राम ने "रिसाला तनासुख" में कुरआन से आवागमन का सबूत देते हुए यह आयत भी लिखी है ..... अनु0 जितने जानवर हैं ये भी तुम्हारी तरह सम्प्रदाय हैं चूंकि इतने से पंडित जी का काम न चलता था इसलिए उसने "थी" का शब्द बढाकर यूं अनुवाद किया कि "ये जानवर उम्मतें थीं तुम्हारे जैसी" यहां इसी ओर हमने इशारा किया है

लिए भेजोगे उसे ईश्वर के यहां पाओगे जो कुछ भी तुम करते हो ईश्वर देख रहा है।" (सूरह बकरा –110)

यदि कोई समाजी दोस्त पंडित जी का नक़ल किया हुआ अनुवाद हमें दिखा दे तो एक सौ रूपया उनको भेंट करेंगे।[1]

समाजियो मुंह न छुपाओ सामने आओ। मर्द मैदान बनो। कहां गया तुम्हारा चौथा उसूल कि ......" सच को स्वीकारने और झूठ के छोड़ने में सदैव सतर्क रहना चाहिए।" यदि हाथी के दांत दिखाने के और खाने के और नहीं हैं तो आओ दोनों इसी पर अमल करें।

इससे बढ़कर सत्यार्थ प्रकाश के उन अनुवादकों पर अफ़सोस है जिन्होंने किताब सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद करते हुए कुरआन शरीफ़ के अनुवाद को सामने तो रखा मगर यह न हो सका कि जहां अनुवाद नहीं मिलता उस न0 को काट ही देते और काट देने में दूसरी पार्टी का भय था तो उन्हीं से इस बारे में पत्र व्यवहार करते और यदि वे इस योग्य न थे या अपनी आपसी नफ़रत आदि इस मश्वरे में रोक थी तो जैसे और अनेक अवसरों पर हाशिए (फ़िट नोट) लगाए हैं इन अवसरों पर भी हवाशी (फिट नोट) लगाते और साफ़ कहते कि स्वामी जी से ग़लती हुई है या उनको उर्दू वालों ने ग़लती में डाला। मगर यह करते तो किस तरह करते। इन्हें शोध करने से कोई मतलब नहीं, न्याय से इनका कोई लेना देना नहीं। स्वामी जी के हाथ में बागडोर है जिधर चाहें लिए फिरें जिनका यह दो अक्षरी उसूल है।

फिरे ज़माना फिर आसमां हवा फिर जा
बुतों से हम न फिरें हम से गो खुदा फिर जा

1- आज तक सालों साल गुजर जाने के बावजूद कोई समाजी यह इनाम लेने के लिए सामने नहीं आया।

उनसे न्याय और ऐसा सुधार? यह तो विचार ही में नहीं आया। एक समाजी मित्र ने किताब छपने के बाद बताया कि स्वामी जी से आयत के न0 बताने में ग़लती हुई है मगर इस अनुवाद की आयत कुरआन शरीफ़ में है। आख़िर उसने यह आयत बतायी। (वह उपरोक्त उल्लिखित उसूल से जिस तरह फ़ैसला हुआ उसे तो वही जानता है मगर आम पाठकों की ख़ातिर इस आयत का अनुवाद ही नक़ल करना काफ़ी होगा।

अल्लाह फ़रमाता है।

"बहुत से किताब वाले यहूदी व ईसाई चाहते हैं कि तुम को ईमान लाने के बाद मात्र अपनी ज़िद व ईर्षा से सत्य प्रकट होने के बावजूद काफ़िर बनाएं।" (सूरह बक़रा – 109)

यदि स्वामी जी का तात्पर्य यही आयत है तो बताइए इस आयत से ईश्वर के सर्वज्ञाता होने का पता चलता है या अल्पज्ञान का? समाजियो! चौथे उसूल को याद करके बताना क्या यही तुम्हारा न्याय और सत्यप्रेम है?

(26) "तुम जिधर मुंह करो उधर ही मुंह अल्लाह का है।"

(आयत 166)

आपत्ति

यदि यह बात सच्ची है तो मुसलमान क़िब्ले की ओर मुंह क्यों करते हैं? यदि कहें कि हमको क़िब्ले की ओर मुंह करने का हुक्म है तो यह भी हुक्म है कि चाहे जिस ओर मुंह करें क्या एक बात सच्ची और दूसरी झूठी होगी? और यदि अल्लाह का मुंह तो वह सब तरफ़ हो ही नहीं सकता क्योंकि एक मुंह एक ही तरफ़ को रहेगा सब तरफ़ किस प्रकार हो सकेगा इसीलिए यह बात ठीक नहीं।

आपत्ति का जवाब

आयत का अर्थ पूरी तरह साफ़ है कि जिधर को मुंह करके दुआ करोगे ईश्वर का ध्यान और उसकी स्वीकृति पाओगे। न जाने स्वामी जी को आपत्ति करने की क्यों ऐसी राल टपकती है कि बिना सोचे समझे न0 बढ़ाकर अपनी विद्या का सबूत दिए जाते हैं मतलब आयत का यह है जो हमने बताया नमाज़ के समय में काबे की ओर रुख़ करना अलग हुक्म है इसे इससे उसका कोई ताल्लुक़ नहीं। वह एक विशेष समय है यह आप की दुआ का समय है अधिक जानकारी न0 30 में आएगी। अल्लाह के मुंह से तात्पर्य ध्यान और स्वीकृति है अतएव हमने अनुवाद कर दिया।

(27) "जो आसमान और धरती का पैदा करने वाला है जब वह कुछ करना चाहता है यह नहीं कि उसको करना पड़ता है बल्कि उसे कहता है कि हो जा बस हो जाता है। (आयत – 118)

आपत्ति

भला जब ईश्वर ने हुक्म दिया कि हो जा तो यह हुक्म किसने सुना? और किसको सुनाया गया और कौन बन गया? किस पदार्थ से बनाया गया। जब यह लिखते हैं कि आदि काल के पहले ईश्वर के सिवा कोई भी दूसरी वस्तु न थी तो यह दुनिया कहां से पैदा हुई कारण के बिना अस्तित्व नहीं होता तो इतना बड़ा ब्रहमांड किसी कारण व पदार्थ के बिना कहां से हो गया। यह बात केवल लड़कपन की है।

आपत्ति का जवाब

इस वाक्य में स्वामी ने पदार्थ (एटम) के बारे में सवाल उठाया है अर्थात मुसलमान जो आर्यों की भान्ति एटम को नहीं मानता तो दुनिया किस चीज़ से बनी है। इसलिए हम भी इस वाक्य में थोड़ा

विस्तार से एटम के हालात बता देंगे और जहां तक हो सकेगा विज्ञान के मौलिक उसूल से काम लेंगे और पाठकों को दिखा देंगे कि आर्यो का दावा "जहां विज्ञान की रोशनी पहुंचेगी वहां आर्य धर्म का झंडा सबसे पहले लहराएगा" कहां तक सबूत रखता है। मगर इस स्पष्टी करण से पहले इस आयत का मतलब बयान करते हैं आयत का मतलब यह है कि तुम्हारे निकट जल्दी से जल्दी किसी काम का हो जाना इससे ज़्यादा नहीं हो सकता कि तुम उसकी कल्पना मस्तिष्क में लाते ही उसको होने का हुक्म करो और वह हो जाए जैसे किसी मकान का नक़्शा मास्तिष्क में आया और तुमने उसकी तैयारी का हुक्म दिया यह तुरन्त हो गया। इसी तरह समझो कि ईश्वर के काम जल्दी होते हैं। इनमें से किसी चीज़ की रोक टोक नहीं कोई बाधा नहीं डाल सकता है।

जिस काम को जितने समय में वह करना चाहे उतने ही समय में होता है असंभव है कि देरी हो जाए। यह नहीं कि खुदा उसको 'कुन' कहता है। कुन कहने में तो दो अक्षर बोलने में देरी भी लगती है वहां तो इरादा ही हुआ और कर्म तुरन्त उपस्थित। (देखो तफ़सीर बैज़ावी आदि)

अतः इसके बाद हम स्वामी जी की ओर ध्यान देते और उनसे सवाल करते है कि पंडित जी ने एटम का हाल और उसका रूप जो बताया वह यह है।

> "सब से लतीफ़ अंश जो काटा नहीं जाता उसका नाम परमाणु है। साठ परमाणुओं के मिले हुए का नाम अणु है। दो अणु का एक दोनेक जो गाढ़ी हवा है तीन दोनेक की आग चार दोनेक का पानी पांच दोनेक की मिट्टी।"

(सत्यार्थ प्रकाश 298 समलास 8 न0 50)

स्वामी जी के इस कहने से कि वह काटा नहीं जाता साफ़ समझ में नहीं आता कि वह अपनी योग्यता से नहीं कट सकता या कोई यंत्र उसके काटने के लिए मिल ही नहीं पाता जो उसे काट सके। यद्यपि उसमें स्वयं कटने की योग्यता है। दूसरी सूरत अर्थात वह योग्यता तो कटने की रखता है मगर ऐसा बारीक यंत्र कोई नहीं मिल सकता जिससे उसको काटा जाए। साबित हुआ कि परमाणु अपने आस्तित्व में तो संग्रह है मगर कोई ऐसा यंत्र न मिल पाने से वे पृथक या टुकड़े टुकड़े नहीं हो सकते अतः हम यह कह सकते हैं कि......

> "जो मिलाप से पैदा होता है वह अनादिकालिक सर्वकालिक कभी नहीं हो सकता।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 557 समलास 12 न0 62)

नतीजा यह है कि स्वामी जी जिस ऐटम को प्राचीन कहते हैं वह स्वयं उनके कथनानुसार नवीन बन गया। और यदि पहली स्थिति है अर्थात इन परमाणुओं में जिनको आप दुनिया का ऐटम मानते हैं। विभाजित होने की योग्यता ही नहीं तो हम कह सकते हैं कि ऐसे परमाणुओं का वजूद ही नहीं हो सकता। क्यों? तनिक ध्यान से सुनिए।

रेखगणित की बीसवीं शकल का दावा है कि हर त्रिभुज की दो रेखाएं तीसरे से ज़रूर बड़ी होंगी और सुन्दर शक्ल का दावा है कि 90 डिग्री त्रिकोण के आकार के सामने जो वर्गाकार बनेगा वह दूसरे दोनों के योग के बराबर होगा। अतः इसी नियम को समक्ष रखकर हम ऐटम के दस अंशों की रेखाएं इस तरह बनाकर दूसरी रेखा इस तरह उसके साथ लगाकर तीसरी रेखा इन दोनों पर इस तरह लगाते हैं और इसके बाद इन तीनों रेखाओं पर वर्गाकार इस तरह

बनाकर पूछते हैं कि बताइए सुन्दर शक्ल की रेखाओं अ का वर्गाकार रेखाएं और ज दोनों योग के समान होगा और इसमें तो सन्देह नहीं कि वर्गाकार ब और ज हरेक सौ सौ अंशों का है क्योंकि हर रेखा दस दस अंशों से बनी है और दस दहाई के 100 अतः वर्गाकार की शक्ल दो सौ अंशों की हुई और इसके सही न होने पर दो सौ की हर रेखा में कसर होगी अर्थात बड़ा वर्गाकार के जो मुकाबिल कोण बना था कोई रेखा बिना कसर पूर्ण अंशों से न बनी होगी। अतः जिन अंगों की कसर इनमें होगी वह विभाजित होंगे जिससे शेष अंशों का अविभाजित होना भी साबित हो जाएगा क्योंकि किस्म सबकी एक ही है और विभाजित योग्य का घटित होना तो स्पष्ट बात है जिसे आप भी पृष्ठ 557 पर मान चुके हैं अतः एटम का अस्तित्व इस तर्क से भी साबित हुआ।

और सुनिए! इसमें भी आसान विधि लीजिए। दो परमाणुओं को हम इस प्रकार ⊥ मिला कर रखेंगे। इनसे ऊपर तीसरा परमाणु इस तरह रखकर पूछेंगे कि तीसरा परमाणु दोनों तरफ़ मिलता है या एक तरफ़। एक तरफ़ मिलने से मध्य में न होगा। हमने तो मध्य में रखा है और यदि दोनों ओर मिलता है तो कुछ सन्देह नहीं कि उसकी दो दिशाएं होंगी जिनसे उस ऊपर वाले का विभाजन अनिवार्य होगा। चूंकि क़िस्म सबकी एक है इसलिए सब का विभाजन और क्रम अनिवार्य होगा। सरल शब्दों में सुनिए कि हम तीन परमाणुओं को इस तरह (……) और समाजी दोस्तों से पूछते हैं कि बीच का परमाणु दोनों ओर मिलेगा या नहीं? यदि दो तरफ़ मिलेगा तो विभाजन और तरकीब अनिवार्य हुई और यदि मध्य में होने के बावजूद दो तरफ नहीं मिलता तो मालूम होता है कि इसमें मात्रा नहीं। जब एक में नहीं तो बाक़ी में कहां से आएगी क्योंकि

क़िस्म सबकी एक है अतः बताइए कि शरीरों में (जो परमाणुओं से मिलकर बना है) मात्रा कहां से आयी, क्या अनस्तित्व से अस्तित्व होना असंभव है? सत्यार्थ प्रकाश पृ0 282 समलास 8 न0 17 देखकर जवाब देना।

और सुनिए हम आप से यह भी नहीं पूछते कि आपका ऐटम विभाजन योग्य है या नहीं? कुछ भी हो हमें इससे बहस नहीं। इतना तो आप भी मानते होंगे कि एटम प्राथमिक हालत में भी किसी न किसी रूप से साकार था और यह बात तो बिल्कुल स्पष्ट है कि जिस रूप से भी वह साकार होगा वह रूप वजूद में आएगा क्योंकि यदि अस्तित्व न होता तो नष्ट भी न होता क्योंकि प्राचीन को पतन नहीं। अतएव आप भी मानते हैं। कि……

"जो वस्तु अनादि है वह कभी दूर नहीं हो सकती।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 563 अध्याय7 12)

यद्यपि हम इसका पतन स्पष्ट देख रहे हैं कि तरकीबी हालत में ऐटम की पहली शकल नहीं रहती और इसके बाद भी परिवर्तन होता है अतः जब सारे रूप घटित होना है और यह ज़रूर है कि ऐटम किसी न किसी रूप से साकार हो क्योंकि शक्ल नाम है उस हालत की जो किसी वस्तु को सीमित होने के कारण अस्थायी होती है और यह तो स्पष्ट है कि ऐटम किसी भी हालत में हो जबकि शक्लों में है तो एटम भी मौजूद है क्योंकि ऐटम बिना किसी रूप के हो नहीं सकता और शक्लें तो सब की मौजूद ही हैं क्योंकि पतन गुप्त हैं नतीजा यह है कि एटम के अंश भी जो किसी न किसी रूप के बिना नहीं रह सकते निश्चय ही अस्तित्व में होंगे अतः बताइए कि आपका ऐटम किस ऐटम से पैदा हुआ था?

विज्ञान से पहले झंडा उड़ाने वालो! कहां हो? इन तर्कों को

सोचो और टूटे फूटे नाकारा झंडे की मरम्मत कराओ अतः जब तक आप इन तर्कों का जवाब न दें आपका हक़ नहीं कि सवाल करें कि अल्लाह ने किस चीज़ से पैदा किया? हां उपकार हेतु हम आपको आप ही की किताब से तैयार करके बताते हैः सुनिए।

"परमेश्वर के हाथ नहीं। लेकिन अपनी शक्ति के हाथ से सबको बनाता और क़ाबु में रखता है। पांव नहीं, लेकिन घिरा होने के कारण सब से अधिक सतर्क व जल्द बाज़ है आंख नहीं लेकिन सब को ठीक ठीक देखता है कान नहीं फिर भी सबकी सुनता है। इन्द्रियां नहीं मगर सारी दुनिया को जानता है और उसे हद के साथ जानने वाला कोई भी नहीं है।" (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 244 समलास 7 न0 36)

इससे भी स्पष्ट ईश्वर का आदेश सुनो।

" उस परमेश्वर ने पृथ्वी अर्थात धरती के बनाने के लिए पानी से रस को लेकर मिट्टी बनाया। इसी प्रकार अग्नि के रस से पानी को पैदा किया और आग को हवा से पैदा किया और हवा को आकाश से और आकाश को प्रकृति (एटम) से और प्रकृति (ऐटम) को अपनी कुदरत से पैदा किया।"

(यजुर वेद 31वां अध्याय भूमिका स्वामी दयानन्द बयान जगत की पैदाइश)

अतः जो इस मंत्र का अनुवाद और मतलब है वही हम मुसलमानों का अक़ीदा है। हम मानते हैं। कि आसमान चांद सूरज आदि मनुष्यों की तरह किसी न किसी ऐटम से पैदा हुए मगर आखिर में वह ऐटम ईश्वर ने बिना किसी अस्तित्व के पैदा किया। सच कहा है।

किसी मौजूद से ईजाद करना नाम रखता है
मगर लोहे अदम पर नक़्श करना काम रखता है

अतः हमारा अक़ीदा साफ़ साफ़ यह है।

जब कुछ न था तब निराकार था
खिलक़त को पैदा करनहार था

(28) "जब हमने लोगों के लिए काबा को सवाब की जगह और शान्ति देने वाली बनाया। तुम नमाज़ के लिए इब्राहीम की जगह पकड़ो।" (आयत – 126)

आपत्ति

क्या काबा के पहले पवित्र जगह खुदा ने कोई भी नहीं बनायी थी। यदि बनायी तो काबा के बनाने की कुछ ज़रूरत न थी यदि नहीं बनायी थी तो बेचारे पहले पैदा हुए लोगों को पवित्र जगह से महरूम ही रखा था। पहले खुदा को पवित्र जगह बनाने की याद न रही होगी।

आपत्ति का जवाब

मनुष्य को पूर्ण ज्ञान के लिए इस तरह वाद विवाद नहीं करना चाहिए कि इस मंत्र (या आयत) का मतलब क्या होगा। इस तरह सोचने या ग़ौर करने को ओहा कहते हैं। केवल मंत्र (या आयत) सुनकर या केवल दलील से मंत्रों के अर्थ बयान कर देना काफ़ी नहीं है। बल्कि सदैव उचित संदर्भ के आगे पीछे के संबंधों व सम्पर्कों को देखकर अर्थ निकालना चाहिए। इन मंत्रों (या आयतों) का उन लोगों को जो त्रृषि और साधना करने वाले नहीं है और नापाक जाहिलों को निश्चय ही कोई ज्ञान नही होता।

(भूमिका लेखक स्वामी दयानन्द का उर्दू अनुवाद पृ0 52)

यह भी बिल्कुल सच है।

"बहुत से लोग ऐसे हठ धर्म और पक्के होते हैं कि वे वक्ता के विरुद्ध अपने विचार व्यक्त किया करते हैं मुख्य रूप से धर्मो वाले

लोग क्योंकि धर्म के प्रति उनकी बुद्धि अंधेरों में फंस कर नष्ट हो जाती है।"
(भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7)

अतः अब हम आयत की पृष्ठ भूमि व संदर्भ बताकर स्वामी की निसबत राय लगाना पाठकों पर छोड़ते हैं। हमारे बताने की ज़रूरत भी नहीं। स्वामी जी ने वे शब्द स्वयं ही नक़्ल कर दिए हैं अर्थात वत्तख़िज़ू मिम्मक़ामि इबराहीमा मुसल्ला (बक़रा–125) जिसका मतलब यह है कि "बाद तैयार हो जाने काबा शरीफ़ के अल्लाह ने हुक्म दिया कि जहां इस मस्जिद (काबा) में इबराहीम ने नमाज़ पढ़ी है तुम वहां नमाज़ पढ़ो।"

इससे साफ़ समझ में आता है कि काबा शरीफ़ अरब देश की आबादी के समय बना है और उस समय के लोगों को इबराहीम (अलैहि0) का अनुसरण करने का आदेश हुआ। इसका कोई उल्लेख नहीं है कि इससे पहले कोई पवित्र स्थल था या नहीं। यह तो पंडित जी का साधारण सा इज्तिहाद (नवीन शोध) है जो सराहनीय नहीं है।

और यदि हम इस बात को मानें कि काबा शरीफ़ सारी दुनिया से पहले बना और वहीं से दुनिया की आबादी शुरू हुई और हज़रत इबराहीम अलैहि0 को दूसरे संस्थापक कहें तो मालूम नहीं कि स्वामी जी किस तर्क से हमारी बात झुठला देंगे यद्यपि वे अपने विचार में इस बात के क़ाइल हों कि दुनिया का आरंभ सबसे पहले तिब्बत में हुआ (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 295 समलास 8 न0 45) जिस पर उनके पास कोई दलील नहीं। न ही स्वामी जी ने कोई दलील बतायी। लीजिए हम बताते हैं सुनिए।

"सबसे पहली उपासना स्थली जो दुनिया में लोगों के लिए बनायी गयी वह काबा है जो मक्का में है।" (क़ुरआन)

बस अब तो कोई आपत्ति नहीं।

(29) "वे कौन आदमी हैं कि जो इबराहीम के दीन से फिर जाएं लेकिन जिसने अपनी आत्मा को जाहिल बनाया और बे शक हमने दुनिया में इसको पसन्द किया और हक़ीक़त में आख़िरत में वहीं भले सदाचारी हैं।"
(आयत– 131)

आपत्ति

यह कैसे संभव है कि जो इबराहीम के दीन को नहीं मानते वे सब जाहिल हैं? इबराहीम को ही ईश्वर ने पसन्द किया उसका कारण क्या है? यदि दीनदार होने के पसन्द किया तो दीनदार और भी बहुत हो सकते हैं यदि बिना दीनदार होने के पसन्द किया तो अन्याय हुआ। हां यह तो ठीक है कि जो धर्मात्मा (दीनदार) है वही ईश्वर को प्रिय होता है (अधर्मी नहीं।)

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी की बेबाकी की कोई सीमा है? देखिए तो कैसे उचित सवाल करते हैं। दाद दीजिए, पंडित जी की ओर से शायद किसी ने खूब कहा है।

नाज़ुक कलामियां मेरी तोड़े अदू का दिल
मैं वह बला हूं शीशे से पत्थर को तोड़ दूं

स्वामी जी! यह कैसे संभव है कि।

"वेदों का इन्कारी नास्तिक (अधर्मी) हैं।
(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 347 समलास 10 न0 2)

यह भी भला संभव है।

"यदि कोई पूछे कि तुम्हारा क्या अक़ीदा तो यही जवाब देना चाहिए कि हमारा अक़ीदा वेद है।"
(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 272 समलास 7 न0 81)

इसी तरह "अगर मगर" का शौक़ न हो तो कुरआन अपना विषय बतलाता है क्या इसी आयत में यह शब्द नहीं...... व इन्नहु फ़िल आख़िरत ल मिनस्सालिहीन0 (नहल – 122) अर्थात इबराहीम आखिरत में सदा चारियों में से है। इसी का अनुवाद स्वामी जी ने किसी बुढ़िया से सुनकर यूं कर दिया कि...... और हक़ीक़त में आख़िरत में वही सदाचारी हैं।" एक को बहु वचन में बदल कर अकारण आवागमन का सबूत दिया मगर सच भी क्या ही जादू है कि आखिर किसी न किसी तौर पर मुंह से निकल जाता है।

अतएव आप ही लिखते हैं...... "जो धर्मात्मा है वही ईश्वर को प्रिय है अधर्मी नहीं" बेशक सुनिए ......" बेशक इबराहीम बड़ी सूझ बूझ वाला ईश्वर की ओर पलटने वाला था" (सूरह हूद– 75)

तो यही उसके चुने जाने का कारण है।

(30) "बेशक हम तेरे मुंह को आसमान में फिरता देखते हैं ज़रूर हम तुझे इस क़िब्ले को फेरेंगे पसन्द करे इसको बस मस्जिदुल हराम की ओर फिर जहां कहीं तुम हो अपना मुंह इसकी ओर फेर लो।" (आयत – 145)

आपत्ति

क्या ही छोटी मूर्ति पूजा है? नहीं– नहीं – बड़ी।

आपत्ति का जवाब

"बड़े ही जाहिल और मूर्ख हैं वे लोग जो वाचक के विरुद्ध मन्शा व कलाम के मायना निकालते हैं। मुख्य रूप से हठ धर्मी जिनकी अक़्ल धर्म की जिहालत में फंस कर नष्ट व लुप्त हो जाती है।"

(भूमिका सत्य प्रकाश पृ0 7)

अफ़सोस! हाथी के दांत दिखाने के और खाने के और हैं। पंडित जी! यदि यह उसूल सही है कि हर कलाम का अर्थ वही है जो

वाचक की मुराद है तो सुनिए। हम आपको वाचक की मुराद बताते हैं। दूर क्यों जाते हैं एक ही आयत पर सोच विचार कर लिया होता समाजियो! ग़ौर से सुनो

"इन बहुदेव वादियों को चाहिए कि ईश्वर की उपासना करें जो भूख में उनको खाना देता है और भय में उनको सुख शान्ति प्रदान करता है।" (सूरह कुरैश 3–4)

स्वामी जी! आपको अपने भाई हिन्दुओं से मुक़ाबला करते हुए इतना ख़्याल भी न आया कि वे तो साफ़ और स्पष्ट शब्दों में उन्हीं से जिनके वे बुत सामने रखते हैं दुआएं करें और उन्हीं से अपनी ज़रूरतें मांगें क्या हमारी नमाज़ के शब्दों में भी कोई शब्द आपको ऐसा मिला है जिसका मतलब यह हो कि हम उस काबा से अपनी मुरादें व हाजतें मांगते हैं या उसको सम्बोध करके पुकारते हैं बल्कि यहां तक कि काबा का नाम तक भी सारी नमाज़ के शब्दों में आपको न मिलेगा। कुरआनी मतलब तो बिल्कुल साफ़ है मगर इसका क्या इलाज हो कि......

"नापाक बातिन वाले जाहिलों को निश्चय ही ज्ञान नहीं होता।"

(भूमिका पृ0 52)

विस्तार से देखना हो तो हमारा रिसाला "नामज़ अरबअ" देखे जिसमें मुसलमानों, आर्यो, हिन्दुओं और ईसाइयों की उपासना का मुक़ाबला दिखाया गया है।

(31) "जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे जाते हैं उनके लिए यह मत कहो कि ये मुर्दे बल्कि वे जीवित हैं।' (आयत 155)

आपत्ति

भला अल्लाह के मार्ग में मरने मारने की क्या ज़रूरत है? यह क्यों नहीं कहते हो कि यह बात अपना मतलब पूरा करने के लिए है

अर्थात यह लालच देंगे तो लोग बहुत लड़ेंगे अपनी विजय होगी। मारने से न डरेंगे लूट मार करने से सुख सम्पन्नता हासिल होगी। इसके बाद गुलछर्रे उड़ाऐंगें। अपना मतलब पूरा कराने के लिए इस प्रकार की उल्टी बातें हैं।

आपत्ति का जवाब

आज मालूम हुआ कि पंडित जी दिल में वेद के लेखकों को कुछ और ही समझते हैं। केवल अपना मतलब सीधा करने को उनके इल्हाम (ईश वाणी) के क़ाइल हैं। सुनो......!

परमेश्वर कहता है।

"ऐ मनुष्यों! तुम्हारे अग्नि वाले हथियार और तीर व कमान तलवार आदि हथियार मेरी कृपा से शक्तिशाली और तुम्हें विजय प्राप्त हो। दुराचारी दुश्मनों की पराजय और तुम्हारी विजय हो।"

(ऋग वेद अशटक 1 अध्याय 3 वरग 18 मंत्र 2)

बताइए ऐसी जंग में यदि आर्य मरे तो किसके मार्ग में मरेंगे? आदेश तो परमेश्वर का है फिर मार्ग किसका? क्या यह सच है कि यूं ही वेदों के लेखकों ने गुलछर्रे उड़ाने को परमेश्वर का नाम लिया है वर्ना असल मतलब कुछ और ही है क्यों स्वामी जी है ना?

बद न बोले ज़ेरे गर्द गर कोई मेरी सुने
है यह गुम्बद की सदा जैसी कहे वैसी सुने

(पूरा वाक्य द्वितीय में पृष्ठ 16–17 हक़ प्रकाश में देखो)

(32) "और यह कि अल्लाह कठोर कष्ट देने वाला है। शैतान के पीछे मत चलो। बेशक वह निश्चय ही तुम्हारा शत्रु है इसके सिवा और कुछ नहीं कि बुराई और बेशर्मी की इजाज़त दे और यह कि तुम कहो अल्लाह पर जो नहीं जानते।" (आयत 166–169–170)

आपत्ति

क्या तुम्हारा खुदा बुरों को यातना देने वाला और सदाचारियों पर दया करने वाला है? या मुसलमानों पर दया करने वाला और दूसरों को दंडित करने वाला। (बुरों को दंडित करने की सूरत में) वह खुदा ही हो सकता। यदि ख़ुदा तरफ़दार नहीं है तो जो व्यक्ति जिस जगह धर्म करेगा उसपर खुदा की दया और जो अधर्म करेगा उसको खुदा दंड देगा। ऐसी हालत में मुहम्मद साहब और कुरआन को शफ़ीअ (सिफ़ारिश करने वाला) मानना ज़रूरी न रहा और जो सबको बुराई कराने वाला हरेक मनुष्य का शत्रु शैतान है उसे खुदा ने पैदा ही क्यों किया? क्या वह भविष्य की बात नहीं जानता था? यदि कहो कि जानता था लेकिन आज़माइश के लिए बनाया भी तो सही नहीं क्योंकि आज़माइश करना सीमित बुद्धि का काम है।

परोक्ष ज्ञाता ईश्वर सारी आत्माओं के अच्छे बुरे कर्मों को सदैव से ठीक ठीक जानता है और यदि शैतान सबको बहकाता है तो शैतान को किसने बहकाया? यदि कहो कि शैतान आप से आप बहकाया जाता है तो और भी स्वयं आप से आप बहकाए जा सकते हैं। बीच में शैतान का क्या काम है? और यदि ईश्वर ही ने शैतान को बहकाया तो ईश्वर शैतान का भी शैतान ठहरेगा। ऐसी बात अल्लाह की नहीं हो सकती और जो कोई किसी को बहकाता है बुरी संगत और अन जाने के कारण स्वयं पथ भ्रष्ट हो जाता है।

आपत्ति का जवाब

निः सन्देह मुसलमानों पर बशर्ते कि वे इस्लाम के आदेशों पर अमल करते हों दया करेगा और काफ़िरों पर जो ईश्वर के आदेशों को झुठलाएंगे दुख की मार डालेगा। यदि इसका नाम तरफ़दारी है तो बताइए, कोई व्यक्ति वेद का इन्कारी हो तो परमेश्वर के निकट

क्यों नास्तिक व अधर्मी है। (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 347, समलास 10 नव 2)

देखिए हम पंडित जी चालाकी लिखते हैं।

"जो आदमी जिस जगह धर्म करेगा" भला उसका कौन इन्कारी है। आप हिन्दुस्तान में रहकर मुसलमान हों और इस्लाम के आदेश का पालन करें और एक आदमी मक्का शरीफ़ में हो। दोनों को बराबर पुन मिलेगा। यह बताइए वेद के विरोधी रहकर किसी पुन का हक़दार हैं? (सत्यार्थ प्रकाश[1] पृ0 272, अध्याय 7 न0 81)

इस हवाले को देखकर जवाब दें। कुरआन और नबी करीम सल्ल0 की सिफ़ारिश यही है क्या कम है कि उनके वसीले से बहुत से कट्टर काफ़िर सीधी राह पर आ गए और बहुत से अपनी मौत की बीमारी में तबाह व बर्बाद भी हुए और हो रहे हैं।

स्वामी जी के भोले पन की कहां तक शिकायत करें। भला पंडित जी परमेश्वर को यह भी मालूम था कि ग़ाज़ी महमूद ग़ज़नवी और मुहम्मद गौरी हिन्दुस्तान (आर्य वरत) की पाक धरती को दुष्टों (मुसलमानों) से ख़राब कर देंगे फिर उनको पैदा ही क्यों किया? यदि कहो कि पुनर जन्म (आवा गमन) के मसले से उनको ऐसा ही शरीर और हुकूमत मिलनी ज़रूरी थी तो सवाल यह है कि हुकूमत और बादशाही तो (आपके कथनानुसार) किसी भले काम पर मिलती है जिसका अर्थ यह है कि उनको पहले भले कर्मों का इनाम मिलता है फिर क्या परमेश्वर को मालूम न था कि ये दोनों बादशाह उस इनाम को ऐसी विधि से बरतेंगे कि बहुत से पवित्र आर्यों को और उनकी पवित्र धरती को नष्ट कर देंगे और आर्य वरत में इस्लाम का झंडा गाड़ देंगे। इससे बढ़कर देखिए कि बुद्ध को भी पैदा किया

1- यदि कोई पूछे कि तुम्हारा अक़ीदा क्या है तो यही जवाब देना चाहिए कि हमारा अक़ीदा वेद है।

जिसने करोड़ों आर्यो को नास्तिक बना दिया कहो जी कौन धर्म है?

(देखे सत्यार्थ प्रकाश पृ0 541 अध्याय 12 न0 4)

स्वामी जी! सुनिए अल्लाह ने जो कुछ पैदा किया उसकी हिक्मत तो वही जानता है हां यह ठीक है कि उसने बुद्धि वाले को स्वामी और अपनी मर्ज़ी का मालिक बना दिया है यद्यपि वह भी जानता है कि यह व्यक्ति अपने स्वामित्व को नष्ट करके दंड का भोगी होगा फिर भी वह मात्र अपनी कृपा से उसको बा ख़बर कर देता है फिर जो कुछ उसे करना होता है करता है और अपने कर्मो का नतीजा पाता है। मेरी इस तक़रीर पर आप सत्यार्थ प्रकाश में हस्ताक्षर कर चुके हैं। सुनिए।

"जिस प्रकार जीव स्वयं अपनी मर्ज़ी से काम करता है उसी प्रकार सब कुछ जानने वाला होने से ईश्वर जानता है उसी तरह जीव काम करता है अर्थात ईश्वर अतीतः भविष्य और वर्त्तमान के ज्ञान में और नतीजा देने में स्वयं आप ही मालिक है और जीव थोड़ा बहुत वर्तमान के इल्म और काम करने में अपनी इच्छा का मालिक है। ईश्वर का ज्ञान अनादिकालिक होने के कारण कार्य के ज्ञान की तरह सज़ा देने का ज्ञान भी आनादिकाल से होने के कारण क्रिया के ज्ञान की तरह दंड देने का इल्म भी अनादि काल से उसके ये दोनों इल्म सच्चे हैं क्या क्रिया का इल्म सच्चा और दंड देने का इल्म भी कभी झूठा हो सकता है? अतः इसमें भी कोई ख़राबी नहीं"

(पृ0 253, समलास 7 न0 52)

तो ईश्वर ने शैतान को पैदा किया और वह जानता था कि बन्दों को बहकाएगा। लेकिन उसने मात्र अपनी कृपा से घोषणा कर दी। फ़ मन तबि अक मिन्हुम फ़ इन्न जहन्नम म जज़ाऊ कुम जज़ा अम्मवफ़ूरा0 (बनी इस्राईल–63) इन्न इबादिलै स ल क अलैहिम

सुलतानुन0 (हिज्र– 42)

"ऐ शैतान जो तेरे अधीन होंगे तुम सबका ठिकाना जहन्नम होगा। मेरे सदाचारी बन्दों पर तेरा अधिकार कदापि न होगा।"

याद रहे कि शैतान किसी को हाथ से पकड़ कर गुमराह नहीं करता, बल्कि मात्र बुरा रास्ता सुझा देता है। अतएव वह स्वयं कयामत के दिन गुमराहों को जब वे उसे आरोपित करेंगे जवाब में कहेगा।

"मेरा तुम पर ज़ोर न था मैंने तो तुम को बुलाया था। तुमने मेरी बात स्वीकार की। तो अब मुझे लानत न करो बल्कि अपने आपको करो।" (सूरह इबराहीम–22)

लोग आप से आप बुरा मार्ग अपनाते हैं। हां उसकी शैतानियत को इतना ही दख़ल होता है जितना कि किसी बुरी संगत का प्रभाव हो सकता है जिससे आपके अलावा शायद कोई इन्कारी न हो फिर भी याद रहे कि यह शैतानी अपहरण भी उसी समय होता है जब आदमी ईश्वर से संबंध तोड़ लेता है और अपनी मसती और जिहालत में फंस कर तबाह व बर्बाद हो जाता है। सुनो।

"तुम मुसलमानो! उन लोगों की तरह मत होना जो ईश्वर को भूल गए। ईश्वर ने उनकी जानों की चिंता उनको भुला दी वही दुष्ट और व्यभिचारी हैं।" (सूरह हश्र– 19)

इस लेख पर सत्यार्थ प्रकाश आदि में आप भी हस्ताक्षर कर चुके हैं जहां बौद्धों की गुमराही का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि–

"उन्होंने कितनी अधिक अपनी अविद्या में प्रगति की जिस का उदाहरण उनके सिवा दूसरा हो ही नहीं सकता। विश्वास तो यही होता है कि वेद और ईश्वर का विरोध करने का उनको यही नतीजा मिला। (पृ 541 समलास 12 न0 27)

क्या विषय ...... इन्ना इबादी लै स ल क अलैहिम सुलतानुन0 (हिज्र–42) का मतलब नहीं देता? अतः आपका फ़रमाना कि शैतान को किसने बहका दिया आदि बिल्कुल शैतानी समर्थन है। यह बहस थोड़ी बहुत न0 11 में गुजर चुकी है पन्ना पलटकर अवश्य देखो।

(33) तुम पर मृत, रक्त और मांस सुअर को हराम है और अल्लाह के सिवा जिस पर कुछ पुकारा जाए।" (आयत– 174)

आपत्ति

यहां पर सोचना चाहिए कि कोई जानवर आप से आप मुरदार था किसी के मारने से दोनों हालतों में वह मुरदार है हां इनमें कुछ अन्तर भी हो तो मौत में कुछ अन्तर नहीं और जब केवल सुअर की मनाही है तो क्या मनुष्य का मांस खाना सही है। क्या यह बात अच्छी हो सकती है कि ईश्वर के नाम से दुश्मन आदि को यातना देकर उसकी जान ली जाए? इससे तो ईश्वर के नाम पर धब्बा लगता है। हां ईश्वर ने बिना पूर्व जन्म अर्थात पूर्व जीवन के पापों के मुसलमानों के हाथ से जानदारों को यातना क्यों दिलायी? क्या उनपर दया नहीं करता? उनको सन्तान की भान्ति नहीं जानता? जिस जानदार से अधिक लाभ पहुंचे जैसे गाय[1] आदि उनके मारने की मनाही न करने से ईश्वर दुनिया को हानि पहुंचाने वाला साबित होता है और कष्ट देने के पाप से ईश्वर बदनाम भी होता है। ऐसी बातें ईश्वर और ईश्वर की किताब की कदापि नहीं हो सकतीं।

आपत्ति का जवाब

हमारी समझ में नहीं आता कि मुसलमानों और हिन्दुओं के खाने में क्या अन्तर है? जो आप सत्यार्थ प्रकाश पृ0 356, समलास 10 न0 15 में मांसाहारी कौमों के हाथ का खाने से मना करते हैं बल्कि

1– देखें कुरआन की सूरह बकरा की आयत 10

शुद्रों (हिन्दुओं की नीच कौम) के हाथों का पका हुआ बल्कि उनके बर्तनों में भी खाने से क्यों मना किया गया है। ऐसे अंध विश्वास का क्या कारण है? स्वयं मुर्दा जानवर के अन्दर सारा रक्त बन्द रहता है और ज़बह किए जाने वाले जानवर से निकल जाता है जिससे उसकी हरारत में फ़र्क़ आ जाता है यही कारण काफ़ी है। ऐसा ही सुअर आदि भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है मुख्य रूप से गर्म देशों में, आदमी के मांस की हुरमत दूसरी आयतों और हदीसों से समझ में आती है। शेष लेख का जवाब न0 11 और 2 में आ चुका है। पाठक पन्ने उलट कर ध्यान से देख लें।

(34) रोज़े की रात तुम्हारे वास्ते हलाल की गयी कि संभोग करना अपनी पत्नियों से वे तुम्हारे वास्ते पर्दा है और तुम उनके वास्ते पर्दा हो। अल्लाह ने जाना कि तुम बेइमानी करते हो अतः अल्लाह ने क्षमा किया तुमको बस उन से मिलो और ढूंडो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है अर्थात सन्तान खाओ पियो यहां तक कि स्पष्ट हो जाए तुम्हारे वास्ते काले धागे से सफ़ेद धागा या रात से जब दिन निकले। (आयत 184)

आपत्ति

यह पता चलता है कि जब मुसलमानों का धर्म चल निकला तब या उससे पहले किसी ने किसी पोरानिक से पूछा होगा कि चंद्र रायन ब्रत जो एक महीने भर का होता है उसका तरीक़ा बयान करो, शास्त्र का तरीक़ा यह है कि चांद के घटने बढ़ने के अनुसार लुक़्मों को घटाना बढ़ाना और दोपहर के समय खाना खाना चाहिए। उसको न जान कर पोरानिक ने कहा होगा कि चांद को देखकर खाना खाना चाहिए। इस चद्ररायन ब्रत को मुसलमानों ने इस प्रकार का बना लिया लेकिन ब्रत में संभोग की मनाही है पर एक

उनके खुदा ने बढ़कर कह दी कि तुम रात को संभोग भी किया करो और रात में जितनी बार चाहो खाओ पियो। भला यह रोज़ा कहां हुआ? दिन को न खाया रात को खाते रहे। यह बात प्रकृति के विधान के विरुद्ध है कि दिन में न खाओ और रात में खाओ।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी! झूठ बोलना सारे धर्मों में बुरा है क़ुरआन शरीफ़ में तो इस पर लानत आयी है मगर।

"अफ़सोस हठ धर्मी धर्म के अंधेरे में फंस कर बुद्धि को भ्रष्ट कर देते है।" (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7)

पंडित जी ने यह समझा कि जिस तरह मैं (पंडित) ने हिन्दुओं से सुने सुनाए सत्यार्थ प्रकाश प्रथम एडीशन में श्राद्ध को जायज़ लिखा और जब उसकी ग़लती मालूम हुई तो दूसरे एडीशन में उसका सुधार करके ग़लती कातिब के मुंह पर थोप दी। इसी तरह यह भी होगा क्यों न हो......" आदमी औरों को भी अपने पर क़यास करता है।"

चूंकि आपने इस पर कोई दलील क़ायम नहीं की इसलिए हम भी इसका जवाब नहीं देते। आपको शायद यह भी मालूम नहीं कि पोरानिक हिन्दू तो ग़ाज़ी औरंगज़ेब के ज़माने तक भी समुन्द्र चीर कर अरब का मुंह न देख सकते थे तो इससे सैंकड़ों साल पहले कहां नसीब?

पंडित जी! आप तो प्रकृति के विधान के विरोध के कट्टर इन्कारी थे और सत्यार्थ प्रकाश में क़ुदरत के खिलाफ़ क़ानून को मुश्किल जानते है और लिखते हैं खुदा भी क़ुदरत के क़ानून के ख़िलाफ़ नहीं कर सकता। अब किसी मुसलमान ने नमाज़ पढ़कर दम कर दिया कि आप रोज़े को क़ुदरत के कानून के ख़िलाफ़ कह बैठ हैं।

यदि कुदरत के खिलाफ़ कनून है तो रोज़ेदार रोज़ा रखते कैसे हैं? समाजियो ज़रा सोच कर जवाब देना।

(35) "अल्लाह के मार्ग में लड़ो। उनसे जो तुम से लड़ते हैं मार डालो तुम उनको जहां पाओ, क़त्ल से बुरा कुफ़र है यहां तक उन से लड़ो कि कुफ़र न रहे और हो दीन अल्लाह का उन्होंने जितनी ज़्यादती की तुम पर उतनी ही ज़्यादती तुम उनके साथ करो।"

(आयत 187--189)

आपत्ति

यदि कुरआन में ऐसी बातें न होती तो मुसलमान लोग इतना बड़ा ज़ुल्म जो कि दूसरे धर्म वालों पर किया है न करते। निर्दोष को मारना सख़्त गुनाह है। उनके निकट इस्लाम धर्म का कुबूल न करना कुफ़र है और कुफ़र से क़त्ल को मुसलमान लोग अच्छा मानते हैं अर्थात कहते हैं कि जो हमारे दीन को न मानेगा उसे हम क़त्ल करेंगे। अतएव वे ऐसा ही करते हैं और धर्म के लिए लड़ते लड़ते अपनी हुकूमत आदि खोकर बर्बाद हो गए। उनका धर्म दूसरे धर्म वालों से सख़्त नफ़रत करता है और ज़ुल्म करना सिखाता है।

उनसे पूछना चाहिए कि क्या चोरी का बदला चोरी ही है? जितनी हानि हमारी चोर चोरी से करें क्या हम भी उनकी चोरी करें? यह तो बड़े अन्याय की बात है, क्या कोई जाहिल हमें गालियां दे तो हम भी उसे गालियां दें? यह बात ईश्वर की है न उसके विश्वसनीय विद्वान की और न अल्लाह की किताब की हो सकती है। यह तो केवल स्वार्थी और अज्ञानी आदमी की है।

आपत्ति का जवाब

इस वाक्य ने तो साबित कर दिया कि स्वामी दयानन्द जी का कथन सोने से लिखने के योग्य है।

"हठ धर्मी की बुद्धि अंधेरे में फंस कर नष्ट हो जाती है।"

(भूमिका सत्यार्थ प्रकाश)

स्वामी जी महाराज! इस आयत में ये शब्द भी मौजूद हैं जो आपने भी नक़्ल किए हैं यदि मात्र ज़िद और हठ...... पर सोच विचार नहीं किया तो अब ज़रा ध्यान से सुनिए।

"अल्लाह की राह में लड़ो उन से जो तुमसे लड़ते नहीं।"

फिर भी आप लिखते हैं कि निर्दोष किसी को मारना सख़्त ज़ुल्म है। सच है।

"नापाक स्वभाव वाले जाहिलों को हक़ीक़त में कोई ज्ञान नहीं होता।" (भूमिका पृष्ठ – 52)

(36) और अल्लाह नहीं दोस्त रखता है दंगा फ़साद को। ऐ लोगों कि ईमान लाए हो दाखिल हो बीच इस्लाम के। (आयत – 202–204)

आपत्ति

यदि ईश्वर फ़साद नहीं चाहता तो क्यों आप ही मुसलामनों को फ़साद करने पर आमादा करता है? और फ़सादी मुसलमानों से दोस्ती क्यों करता है? यदि मुसलमानों के धर्म में दाखिल होने से ईश्वर राज़ी होता है तो वह मुसलमानों ही का पक्षपाती है सारी दुनिया का खुदा नहीं। इससे यह स्पष्ट होता है कि कुरआन का बताया न उसमें कहा हुआ सच्चा खुदा हो सकता है।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी को वृद्धि किए गए नम्बरों में बड़ा आनन्द आता है जिससे चेलों को प्रसन्न करना चाहते हैं। मगर हमें तो ज़रूरी नहीं। जवाब न0 2 में देख लो। हां इतना अवश्य बतलाइए कि "वेद का इन्कारी अधर्मी तो नहीं।" (सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ – 347)

(37) "और अल्लाह अजीविका देता है जिसको चाहता है

अनगिनत''।   (आयत – 209)

आपत्ति

क्या बिना गुनाह व पुन के ईश्वर ऐसे ही आजीविका देता है? तो फिर बुराई भलाई का काम करना समान है क्योंकि दुख व आराम की प्राप्ती उसी की इच्छा पर है इसलिए धर्म से विमुख होकर मुसलमान लोग अपनी मन मानी कार्रवाई करते हैं और कई इस कुरआन के नियमों पर विश्वास न रख कर धर्मात्मा भी होते हैं।

आपत्ति का जवाब

आवागमन चूंकि असत्य है इसलिए सांसारिक दुख व राहत किसी सदाचार और दुराचार के बदले में नहीं। भलाई बुराई का असली बदला दूसरे जीवन पर है जिसे आप "परलोक" कहते हैं। हां कभी कभी ऐसा होता है कि जब कोई क़ौम अत्यन्त उदंडता करे और अपने कर्तव्यों को पूरा न करे तो ईश्वर उससे वह नेमत छीन लेता है। तनिक ध्यान से सुनो।

"अल्लाह किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक वह अपने कर्म नही बदलते।" (सूरह राअ़द – 11)

"और सवाल करते हैं तुझ से धर्म मासिक से, कह वह नापाकी है अतः औरतों से अलग रहो बीच धर्म मासिक के और मत निकट जाओ उनके यहां तक कि पाक हों। तो जब नहा लें तो जाओ उनके पास इस जगह से कि आदेश किया तुम को अल्लाह ने, पत्नियां तुम्हारी खेतियां हैं वास्ते तुम्हारे। अतः जाओ खेत अपने में जिस तरह चाहो। तुमको अल्लाह बेकार की क़सम में नहीं पकड़ता।"

(आयत 216–218)

आपत्ति

मासिक धर्म के दिनों में संभोग न करने का आदेश तो अच्छा है

लेकिन औरत को खेत से उपमा देना और यह कहना कि जिस तरह चाहो उनके पास जाओ। मनुष्य की जिंसी वासना भड़काने का कारण है। यदि अल्लाह बेकार की क़सम पर नहीं पकड़ता तो सब झूठ बोलेंगे। क़सम तोड़ेंगे, इससे अल्लाह झूठ का प्रसारित करने वाला हो जाएगा।

अपत्ति का जवाब

कैसा मूर्ख है वह मनुष्य जो अपना घर शीशें का बना कर दूसरों पर पत्थर बरसाता है। समाजियो! स्वामी कैसे पक्षपाती हैं कि जिस क़सम का संकेत वह स्वयं बोलते हैं उसी क़सम का संकेत वाला कलाम यदि कुरआन में उनको दीख जाता है तो तुरन्त बिगड़ जाते हैं। सुनो और ध्यान से सुनो।

"औरत मर्द को ध्यान रखना चाहिए कि वीर्य को बहुमूल्य समझें। जो कोई इस बहुमूल्य वस्तु (वीर्य) को परायी औरत रंडी या बुरे मर्दो की संगत में खोते हैं वे बड़ी बुरी बुद्धि के होते हैं। (अर्थात मूर्ख) क्योंकि किसान या माली, जाहिल होकर भी अपने खेत या बाग़ के सिवा और कहीं बीज नहीं बोते जबकि मामूली बीज और जाहिल का ऐसा नियम है तो जो व्यक्ति सबसे उच्च मानव शरीर के पेड़ के बीज को बुरे खेत में खोता है वह भारी मूर्ख कहा जाता है क्योंकि उसका फल उसे नहीं मिलता।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 156 –समलास 4 न0 142)

बताइए इस वाक्य में खेत किस को कहा है और पेड़ किस को? क्यों जी स्वामी जी सच है ना? "नापाक बातिनों को ज्ञान नहीं होता।"   (भूमिका पृष्ठ – 52)

हां अब याद आया कि स्वामी जी इस वाक्य पर "जाओ अपने खेत में जिस तरह चाहो।" क्यों नाराज़ हैं। पंडित जी ने तो औरत

को खेती इस हद तक कहा था कि यदि मर्द के वीर्य में कमज़ोरी हो तो दूसरे से सन्तान लेकर पति का वारिस बना सकती हैं अतएव आप लिखते हैं।

"जब पति सन्तान पैदा करने के योग्य न हो तब अपनी पत्नी को अनुमति दे कि ऐ भाग्यवान सन्तान की इच्छा करने वाली और तू मुझ से अलावा दूसरे पति की इच्छा कर (समाजियो! अमल करो तो जानें) क्योंकि अब मुझ से सन्तान नहीं हो सकेगी, तब औरत दूसरे के नियोग करके सन्तान पैदा कर ले।" 1

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 154, समल्लास 10 न0 138)

कुरआन शरीफ़ ने बड़ा जुल्म किया कि स्वामी जी की इस तरक्क़ी को रोक कर केवल पतियों को खेतों में जाने की अनुमति प्रदान की है और यही बड़ा गुनाह है।

मुझ में एक ऐब बड़ा है कि वफ़ादार हूं मैं
उनमें दो वस्फ़ हैं बदखू भी बदकाम भी हैं

बेकार क़सम उसे कहते हैं कि किसी पुराने ज़माने के बारे में अपने विचार में घटना क्रम को सही समझ कर क़सम खा ले यद्यपि घटना में वह नहीं आया या बेध्यानी में बोलने से वह ज़बान से निकल जाए जैसे कुछ लोग हर बात में वल्लाह बिल्लाह कहा करते हैं। अतः आयत का मतलब यह है कि ऐसी क़समों पर जो ग़लती से अतीत की घटनाओं पर खाओ या बेध्यानी में तुम्हारे मुंह से निकल जाए उन पर पकड़ नहीं। अर्थात ऐसी क़समों पर वह परायश्चित नहीं जो क़सम के तोड़ने की सूरत में तुम पर है। अर्थात दस मिसकीनों को खाना देना, या तीन दिन के रोज़े रखना या गुलाम

1– वीरज दाना अर्थात नियोगी को पसन्द करने में ताकि मर्द को भी कुछ दखल है या सारा अख्तियार औरत ही को इस बारे में स्वामी जी ने कुछ नहीं लिखा।

आज़ाद करना। बताइए आपको क्या आपत्ति है। हां पंडित जी ने क्या ही सच कहा है।

"बहुत से ऐसे ज़िद्दी व हठ धर्म होते हैं कि वे वाचक की मन्शा के विरुद्ध बहाने बाज़ी किया करते हैं मुख्य रूप से धार्मिक लोग, क्योंकि धर्म के कारण उनकी बुद्धि अंधेरे में फंस कर नष्ट हो जाती है।"

(भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7)

(39) "कौन है जो क़र्ज़ दे अल्लाह को अच्छा। तो दोगाना करे उसे वास्ते उसके।"

(आयत – 239)

आपत्ति

भला अल्लाह को क़र्ज़ लेने से क्या? क्या जिसने सारी सृष्टि को बनाया वह मनुष्य से क़र्ज़ लेता है? कदापि नहीं। ऐसा तो बिना सोचे समझे कहा जा सकता है। क्या उसका ख़ज़ाना ख़ाली हो गया था? क्या उसको हुंडवी पर्चा सौदागरी आदि में व्यस्त होने से घाटा हो गया था जो क़र्ज़ लेने लगा? और एक का दो दो देना कुबूल करता है क्या यह साहूकारों का काम है ऐसा काम तो दिवालियों या बे तहाशा खर्च करने और कम आय वालों को करना पड़ता है अल्लाह को नहीं।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी का कहना बिल्कुल सच है।

मनुष्य को सम्पूर्ण ज्ञान के लिए तर्क देना चाहिए कि इस मंत्र (आयत) का मतलब क्या है? केवल मंत्र (या आयत) सुन कर मात्र तर्क (अपनी अटकल) से मंत्रों (या आयतों) के मायना बयान कर देना काफ़ी नहीं। जब तक मनुष्य अच्छे बुरे या महत्ता या बुद्धि को समझने की योग्यता हासिल न कर ले और मंत्रों (और आयतों) के मायना को अच्छी तरफ़ साफ़ न कर ले और अपने जिन्स वालों में

ज्ञान में माहिर और उच्च कोटि का विद्वान न हो जाए तब तक वह अच्छी तरह सोच विचार के साथ उत्तम दलील से वेद (या कुरआन) के मायना नहीं कर सकता।" (भूमिका पृष्ठ– 52)

यह भी सच है कि।

कुछ हठ धर्म लोग वाचक की मन्शा के विरुद्ध बहाने बाज़ी करते हैं।" (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश – पृ0 7)

अतः यदि वाचक की मन्शा के विरुद्ध आगे पीछे को मिलाकर मायना करना सही हैं तो सुनिए।

कुरआन मजीद बताता है।

" अल्लाह ही जिसे चाहे आजीविका खोलता है और जिसे चाहता है तंग करता है।" (सूरह राअद – 26)

यह आयत बता रही है कि इस उल्लिखित आयत में क़र्ज़ से वह क़र्ज़ तात्पर्य नहीं जो तंगी व ग़रीबी में एक दूसरे से लिया करते हैं बल्कि इससे तात्पर्य यह है कि अल्लाह बन्दों को प्रेरित करता है कि तुम भलाई के कामों में अपने ख़र्चो को नष्ट हो जाना समझो बल्कि यह समझो कि हम अल्लाह को क़र्ज़ देते हैं जो इसका बदला कई दर्जा बढ़ाकर हमें प्रदान करेगा। मेरे इस स्पष्टीकरण पर आप भूमिका में हस्ताक्षर कर चुके हैं जहां लिखते हैं।

"जहां अर्थो में संभावना पाने की आशा न हो वहां संकेत व उपमा का इस्तेमाल होता है जैसे कोई सच्चा विद्वान अर्थात हक़ परस्त किसी से यह कहे कि मचान् (हिरन का चमड़ा) बोलते हैं यहां यह तात्पर्य समझा आएगा कि मचान पर बैठे हुए मनुष्य बोलते हैं।" (पृष्ठ – 10)

अतः जब कुरआन शरीफ़ स्वयं ही बता दिया कि ईश्वर सब का पालन कर्त्ता है वही स्वामी है वही पैदा करने वाला है तो क़र्ज़ के

असली मायना संभव न रहे। फिर आपका उन पर आपत्ति करना अपने ही कथन की पुष्टि नहीं? कि–

"नापाक बातिन वाले जाहिलों को निश्चय ही ज्ञान नहीं होता।" (देखें भूमिका पृ0 – 52)

(40) " उनमें से कोई ईमान लाया और कोई काफ़िर हुआ जो अल्लाह चाहता है न लड़ते जो चाहता है अल्लाह करता है। (आयत – 248)

आपत्ति

क्या जितनी लड़ाइयां होती हैं वे सब अल्लाह की मर्ज़ी से होती हैं। क्या वह अधर्म करना चाहे तो कर सकता है? यदि ऐसी बात है तो वह अल्लाह ही नहीं क्योंकि नेक भले लोगों का यह काम नहीं कि सन्धि तोड़कर लड़ाई करते। इससे पता चलता है कि यह कुरआन अल्लाह का बनाया और न किसी दीनदार विद्वान का बनाया हुआ है।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी! हरेक बात पर सोच विचार करना शर्त है। आपने रज़ा (इच्छा) और इरादा में फ़र्क़ नहीं समझा जो कुछ दुनिया में होता है अल्लाह के इरादा से ही होता है इरादा उसके क़ानून का नाम है। कभी कभी शाही क़ानून पर अमल करने से रज़ा प्राप्त नहीं होती। क्या आज कल पश्चिमी व उत्तरी देशों के मुसलमानों का उर्दू के बचाव में सम्मेलन करना, मेमोरेंडम पर मेमोरेंडम देना शाही क़ानून के अनुसार नहीं? जिस का अर्थ ही यह है कि वह सब पश्चिमी व उत्तरी देशों के गवर्नरों की मन्शा से है अर्थात सरकारी क़ानून के अनुसार हैं मगर जहां तक हमें विश्वस्त सूत्रों से मालूम है उल्लिखित देखों के गवर्नर की मर्ज़ी इसमें नहीं?

यह एक उदाहरण मानव इच्छा व इरादा की है। यह उदाहरण बहुत पुराना है जो पहले एडीशन में दिया गया आज कल का उदाहरण स्वराज की मांग समझो जो कि संवैधानिक तरीक़े से अंग्रेज़ी हुकूमत के क़ानून से है मगर क्या आप कह सकते हैं कि सरकार इस पर तैयार भी है? स्वयं न जानते हों तो किसी राजनीतिज्ञ से पूछकर बताना।

अब सुनिए ईश्वरीय क़ानून, एक ज़ालिम किसी मज़लूम पर हमला करके सारा माल व सामान छीन लेता है कई तरह के अत्याचार करता है कुछ सन्देह नहीं कि ईश्वरीय क़ानून के अनुसार वह कार्य होता है अर्थात ईश्वरीय क़ानून है कि ज़बरदस्त कमज़ोर को दबा सके चाहे वह हक़ पर हो या ना हक़ पर। अतः किसी शक्तिशाली का किसी कमज़ोर पर हमला करके उस पर जुल्म व अत्याचार करना ईश्वरीय क़ानून के अनुसार तो है मगर क्या इसमें ईश्वर की इच्छा व इरादा भी है? समाजियो! अच्छी तरह सोच कर जवाब देना।

अब सुनो! जवान मर्द जवान औरत जब एक दूसरे को देखते हैं तो दोनों के दिल में जो विचार उत्पन्न होते हैं कुछ संदेह नहीं कि वे ईश्वरीय क़ानून के अन्तर्गत होते हैं इसके बाद दोनों पक्षों से जो कुछ घटित हो जाता है जिसे हर धर्म बुरा मानता है वह भी इसी ईश्वरीय क़ानून के अन्तर्गत होता है तो क्या क़ानून का मालिक (परमेश्वर) इन कामों पर राज़ी है? समाजियो! नियोग इससे अपवाद है इसलिए सोच समझकर जवाब देना।

अतः आप इस संक्षिप्त वक्तव्य पर सोच विचार करें और भविष्य में ईश्वरीय इच्छा व इरादा में अन्तर समझा करें मुख्य रूप से इस वाक्य पर ध्यान दें।

"क्या जितनी लड़ाइयां होती हैं अल्लाह ही की मर्ज़ी से होती हैं" यूं सुधार कीजिए। "जितनी लड़ाइयां होती हैं अल्लाह ही की इच्छा (क़ानून) से होती हैं।" जिस का जवाब हम देंगे। "हां" क्योंकि अल्लाह की इच्छा व इरादा के बिना कुछ नहीं हो सकता। वमा तशाऊन इल्ला अंय्यशा अल्लाह (सूरह तकवीर – 29) के भी यही मायना हैं।

कुरआन की इस आयत में भी यशाऊ का शब्द है जिसका मायना यही बनता है कि "जो चाहता है अल्लाह करता है" अल्लाह का जो क़ानून उसके बन्दों के लिए है वह सारे काम उसी के अनुसार करता है जो एक तरह से आपकी पुष्टि थी क्योंकि आप भी सुपर नेचरल (कुदरत के क़ानून के विरुद्ध) को मुश्किल मानते हैं। मगर चूंकि आप आपत्तियों के शौक़ में मस्त हैं इसलिए समर्थन का भी खंडन करने बैठ गए क्योंकि आपके कथनानुसार ...... हठ धर्म लोग अंधेरों में फंस कर बुद्धि भ्रष्ट कर लेते है।।" (भूमिका सत्यार्थ पृ० 7)

(41) "जो कुछ आसामान व ज़मीन में है सब उसके लिए है[1] चाहे उसकी कुर्सी ने आसमान और ज़मीन को समा लिया है।"

(आयत – 250)

आपत्ति

जो आसमान ज़मीन पर चीज़ें हैं वे सब मनुष्यों के लिए अल्लाह ने पैदा की हैं अपने लिए नहीं क्योंकि उसे किसी वस्तु की ज़रूरत नहीं। जब उसकी कुर्सी है तो वह सीमित स्थान वाला हुआ और जो सीमित स्थान हो वह ईश्वर नहीं कहलाता क्योंकि ईश्वर तो सर्व

1- चाहे का शब्द नक्ल करके पंडित जी ने हमारे दावे की पुष्टि कर दी कि आप समझ और ईमानदारी से काम नहीं लेते थे। पाठकों! कुरआन का अनुवाद देखो तो यह चाहे का शब्द उनको बताएगा। फिर हमारी तसदीक़ से हमें बताना।

व्यापक और सर्वव्यापी हैं। 1

आपत्ति का जवाब

धन्य हो महाराज जी धन्य हो, पंडित जी बेचारे भी विवश हैं अरबी से परिचित नही उर्दू फ़ारसी जानते तक नहीं। न जाने इस अल्पज्ञान से आपने क्या क्या धोखे खाए होंगे। भूमिका पृ0 52 का वाक्य हम कई बार नक़ल कर चुके हैं। जिसे आप स्वयं भी स्वीकारते हैं। जब तक किसी विषय में महारत व पूर्ण ज्ञान न हो कलाम के मायना नहीं समझे जा सकते सुनिए ...... उल्लिखित आयत इस तरह है।

लहु मा फ़िस्समावाति वभा फ़िल अर्ज़ि (हज – 64)

अरबी में ल (लाम) सम्पत्ति के लिए आता है अतएव कहा करते हैं कि हाज़ल माल लिज़ैद (यह ज़ैद का माल है) अतः आयत का मतलब साफ़ है" उसी का है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है।' शाह अब्दुल क़ादिर साहब ने ठीक यही अनुवाद किया है।

कुर्सी का अर्थ भी आप नहीं समझे– सुनिए। शाह वलीउल्लाह साहब का फ़ारसी अनुवाद जो है उसका तर्जुमा यह है। "आसमान और ज़मीन पर अल्लाह ही की हुकूमत है।" आज मालूम हुआ कि शाह साहब ने ऐसे स्पष्ट शब्दों में क्यों ऐसा अनुवाद किया, केवल आपको समझाने को।

हां परमेश्वर के सर्वव्यापी होने के मायना तनिक आपके शब्दों में बयान करके थोड़ा सा प्रश्न करने को हमारा भी मन करता है।

आप सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वर के जन्म (पैदाइश) न लेने की दलील लिखते हैं।

"यदि कोई व्यक्ति इस असीम आकाश को कहे कि गर्भ में समा

1– आर्य समाजियां ने पहले एडीशन के बाद इस वाक्य को काट दिया।

गया या मुट्ठी में रख लिया गया तो ऐसा कथन कभी सच नहीं हो सकता क्योंकि आकाश असीम और सर्वव्यापक है इसी लिए आकाश न बाहर आता है और न अन्दर जाता है इसी प्रकार परमेश्वर असीम और सर्व व्यापी होने के कारण उसका आना जाना कभी साबित नहीं हो सकता। किसी का जाना और आना उस जगह हो सकता है जहां वह न हो। क्या परपेश्वर गर्भ में नहीं था जो अन्दर से निकला? ईश्वर के बारे में ऐसी बात ज्ञान से अनभिज्ञ लोगों के सिवा कौन कह सकता है और मान सकता है।

(सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ – 249, समलास 8 न0 45)

इन अर्थो से जो सर्व व्यापी का अनुवाद पंडित जी ने किया है (यदि हमारी समझ ग़लत न हो) तो हम यह समझते है कि स्वामी जी परमेश्वर को ऐसा जानते हैं कि जैसे पानी में खांड होती है जिससे यह नतीजा निकालना कुछ सुदूर नहीं कि उनके विचार में परमेश्वर भी लम्बाई, चौढ़ाई और गहराई वाला है अतः जो चीज़ लम्बाई चौढ़ाई वाली होगी वह समाप्त होने योग्य भी होगी और यह तो पंडित जी भी मानते है कि समाप्त होने योग्य वस्तु एक समय से आरंभ होकर एक समय में अन्तहीन हो जाया करती है।

(इसे विस्तार से न0 16 में देखो)

दूसरा सवाल यह है कि स्वामी जी की इस तक़रीर के अनुसार ईश्वर सीमित व व्यापक विहीन हो जाएगा इसलिए कि सृष्टि चाहे कितनी ही हमारी गिनती में अन गिनत हो फिर भी घटना क्रम में अनगिनत नहीं क्योंकि इसमें सन्देह नही कि वर्तमान संसार का आरंभ तो अवश्य है और पंडित जी भी इसका आरंभ मानते हैं (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 287, समलास 8 न0 28) हम तो इसके सिलसिले के भी न0 16 में आरंभ साबित कर आए हैं अतः आवश्यक

है कि एक समय से इसका शुरारभ हो और यह तो बिल्कुल साफ़ और स्पष्ट है कि परमेश्वर ने प्रारंभ में जो वस्तुएं पैदा की थीं वे भी सीमित थीं। उनपर हर दिन और हर घड़ी सीमित ही बढ़ती चली आयी। सीमित बढ़ने से सीमित ही रहेगी।

आख़िर आज तक वे सब की सब सीमित ही रही। यद्यपि वे ऐसे दर्जे तक पहुंच गयी हों कि बन्दों का हिसाब उस तक न पहुंच सकता हो मगर इससे वास्तव में असीमित और असीम नहीं हो सकती। अतः जब यह पूरी दुनिया एक हद तक सीमित है चाहे इसकी सीमा को हम न जानें। परमेश्वर भी इसकी पाबन्दी से सीमित होगा। कौन नहीं जानता कि पानी जब गिलास में सीमित है तो खांड भी सीमित होगी। अतः या तो आप परमेश्वर को सीमित और छोटा मानें या आप इस दावे को कि "परमेश्वर असीम है "वापस लें।" (सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ – 245, समलास, 7)

विज्ञान से पहले झंडा गाड़ने वाले समाजियो! इन तर्कों को सोच कर जवाब दो या स्वीकार करो।

(42) अल्लाह सूर्य को पूरब से लाता है बस पश्चिम से ले आ। बस काफ़िर हैरान था। बेशक अल्लाह गुनाहगारों को राह नहीं दिखाता।" (आयत – 254)

आपत्ति

देखिए यह ज्ञान की कमी की बात है। सूर्य न पूरब से पश्चिम और न पश्चिम से पूरब कभी आता जाता है। वह अपनी परिधि में गर्दिश करता रहता है। इस से यह हक़ीक़त जानी जाती है कि कुरआन के लेखक को भुगोल और खगोल शास्त्र भी नहीं आता था। यदि गुनाहगारों को राह नहीं बतलाता तो परहेज़गारों के लिए भी मुसलमानों के अल्लाह की जरूरत नहीं क्योंकि धर्मात्मा तो धर्म

की राह में होते ही हैं। जो पथ भ्रष्ट हैं। उनको रास्ता बतलाना चाहिए इसलिए इस कर्तव्य को अदा न करना कुरआन के लेखक की बड़ी ग़लती है।

आपत्ति का जवाब

किसी ने सच कहा है कि कुछ लोग न शोध कर्त्ता होते हैं न बुद्धिमान परन्तु अपने ज्ञान का ढिंडोरा अवश्य पीटते हैं। पूरब और पश्चिम से तात्पर्य उस स्थान का पूरब और पश्चिम है जहां हज़रत इब्राहीम थे जिनका यह कलाम है। यदि कोई दुनिया का किनारा पूरब और पश्चिम नहीं तो आप के भूगौलिक ज्ञान का हम क्या करें। यदि आप धरती की हरकत को मानते हों और सूर्य को अपनी धुरी पर हरकत करने वाला समझें तब भी पूरब व पश्चिम जो देखने में आता है उसके अनुसार हरेक व्यक्ति मुख्य रूप से ऐसे मूर्ख के सामने जो स्वयं ही खुदा बनता हो जैसा हज़रत इबराहीम का सम्बोधित नमरूद था जिसके जवाब में उन्होंने यह वाक्य कहा था ऐसे कहने से दलील लायी जा सकती है।

स्वामी जी को क्या पड़ी है कि आगे पीछे को देखें और सोच विचार करें। उन्हें उल्लिखित वाक्य भूमिका पृष्ठ 52 की पुष्टि स्वीकार है कि "जल्द बाज़ों को ज्ञान नहीं होता।"

स्वामी जी! पथ प्रदर्शन दो प्रकार का है एक पथ प्रदर्शन तो वह है जिसे मार्ग दर्शन कहते हैं यह तो सारे मनुष्यों को बराबर मिलता है। एक पथ प्रदर्शन वह है जिसे भला सौभाग्य कहते हैं। वह ख़ास, भले, सदाचारी लोगों का हिस्सा है। इस लेख को आपने भी सत्यार्थ प्रकाश के कई एक अवसरों में प्रस्तुत किया है एक अवसर के शब्द यह हैं।

जब आत्मा (मन) को और मन इन्द्रियों को किसी महसूस की

जाने वाली वस्तु में लगाता है या जिस क्षण में आत्मा चोरी आदि पर या भले कामों को करना आरांभ करती है तो जीव की इच्छा और ज्ञान आदि चूंकि उस समय इसी इच्छा की हुई वस्तु की ओर झुक जाते हैं इसलिए उस क्षण में जो आत्मा के अन्दर बुरे काम के करने में भय व संकोच और शर्म और अच्छे कामों के करने में निडर, असंकोच, प्रसन्नता और उमंग व हौसला पैदा होता है वह जीव आत्मा की ओर से नहीं बल्कि परमात्मा (ईश्वर) की ओर से है।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 55, समलास 7 न0 11)

और सुनिए।

"जो पाप करने की इच्छा के समय सन्देह और शर्म पैदा होती है वह अन्तरयामी परमात्मा की ओर से है।" (सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 55)

अतः एक समय मनुष्य के दुराचार का वह आता है कि यह सन्देह और भय गुनाहों पर उसको नहीं होता और वह बे खटक पाप करता है बल्कि अपने दुष्ट व बुरे कामों को अच्छा जानता है इसी लेख को आपने भी टूटे फूटे शब्दों में बौद्धों की गुमराही के सबब बयान करते हुए यूं प्रस्तुत किया है।

"उन्होंने (बौद्धों ने) किस दर्जा अज्ञानता में प्रगति की है जिसकी मिसाल उनके सिवा दूसरी हो ही नहीं सकती। विश्वास तो यही होता है कि वेद और ईश्वर से विरोध करने का यही नतीजा मिला है।" (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 541 अध्याय 12 न0 27)

सुनो कुरआन मनुष्य की प्राकृतिक स्थिति को बताता है वाअ़लमू अन्नल्ला ह यहूलु बैनल मर इ व कल्बिही0 (सूरह अन्फ़ाल –24) याद रखो कि एक समय ऐसा भी होता है कि अल्लाह आदमी के दिल में पर्दा हो जाता है (समझने से रोक देता है)

स्वामी जी यही वह सोच है जो आप भूमिका पृ0 52 में (जिसको

हम कई बार नक़ल कर चुके हैं) लिख चुके हैं क्या यह सच है?"

(43) "कहा जानवरों से ले उनकी सूरत पहचान रख फिर हर पहाड़ पर उनमें से एक एक टुकड़ा रख दे। फिर उनको बुला दौड़ते तेरे पास चले आएंगे।" (आयत – 256)

आपत्ति

वाह वाह देखो जी मुसलमानों का अल्लाह शोबदा दिखाने वालों की तरह खेल कर रहा है क्या ऐसी ही बातों से खुदा की खुदाई ज़ाहिर होती है। बुद्धिमान लोग ऐसे खुदा को छोड़कर अलग हो जाएंगे और जाहिल लोग फसेंगे। इससे भलाई का बुराई बदला उसे मिलेगा।

आपत्ति का जवाब

इस आयत के शब्द ये हैं।

फ़ खुज़ अरब अ़ तम्मिनत्तौरि फ़सुरहुन्ना इलैक सुम्मजअ़ल अ़ला कुल्लि ज ब लि म्मिन्हुन्ना जुज़अन0 (बक़रा – 260)

इस आयत का शाब्दिक अनुवाद यह है कि।

"चार जानवर लेकर उनको अपनी ओर बुलाओ। तुम उनमें से हरेक को एक एक पहाड़ पर रखो।"

मतलब यह है कि हज़रत इबराहीम को अल्लाह की ओर से कहा गया था कि तुम चार जानवर लेकर अपने साथ बुलाओ। फिर उनको पहाड़ पर रखकर अपनी ओर बुलाओ। चूंकि वे तुम से मिले होंगे इसलिए तुम्हारे बुलाने पर तुम्हारे पास तुरन्त आएंगे। इससे तुम समझना कि अल्लाह मुर्दो को ज़िन्दा कर सकता है क्योंकि ये वहशी जानवर कुछ दिनों में तुम्हारी निकटता से इतने पहचान वाले हो गए कि तुम्हारे बुलाने पर तुम्हारे पास आएंगे। प्राणी तो सारे अल्लाह से प्राकृतिक रूप से परिचित हैं फिर क्या हैरत कि अल्लाह

के बुलाने पर वे उसके आदेशों का पालन करें बल्कि न करें तो हैरत है।

सारांश यह कि कुरआन शरीफ़ के असली शब्दों के अनुवाद पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती जो होती है वह उन बातों पर होती है जिसको मानने वाले स्वयं ज़िम्मेदार हैं कुरआन ज़िम्मेदार नहीं।

(44) "जिसको चाहे हिम्मत (सूझ बूझ) देता है।" (आयत 346)

आपत्ति

यदि जिसको चाहता है हिम्मत देता है तो जिसको नहीं चाहता नहीं देता होगा। यह खुदा की बात नहीं बल्कि जो तरफ़दारी छोड़ कर सबको हिम्मत की हिदायत करता है वही खुदा और सच्चा उपदेशक हो सकता है दूसरा नहीं।

आपत्ति का जवाब

इस वाक्य का जवाब न 0 26 में और उससे पहले कई बार आ चुका है। पंडित जी को न0 गिनने का शौक़ हो जाता है इसके अलावा मन्शा के मायना न0 40 में हम बता आए हैं।

(45) वह [1] कि जिसे चाहेगा माफ़ करेगा जिसको चाहेगा यातना देगा क्योंकि वह चीज़ों पर समर्थ है।" (आयत– 280)

आपत्ति

क्या माफ़ी के हक़दार को न माफ़ किया जाएगा और जो हक़दार न हो उसे माफ़। यह तो एक बे इन्साफ़ बादशाह का काम है?

यदि खुदा जिसको चाहता है गुनाहगार या धर्मात्मा बनाता है तो आत्मा को गुनाह व सवाब करने वाला न कहना चाहिए। जब अल्लाह ने उसको वैसा ही करना है तो मनुष्य को दुख व सुख भी न

1–पता नहीं यह किस आयत में नक़ल किया है ऐसा बार बार हो रहा है।

होना चाहिए जैसे सेनापति के आदेश से किसी नौकर ने किसी को मारा तो उसका फल (नतीजा) हासिल करने वाला वह नहीं होता वैसे ही वे भी नहीं हैं।

आपत्ति का जवाब

भोले स्वामी! यह शब्द का मतलब है कि हक़दार को अल्लाह माफ़ न करे और जो हक़दार न हो उसे माफ़ करे। मन्शा व इरादा जिसे अरबी में मशीयत कहा गया है धातु के अर्थों में है न0 40 में हम यही बात बता आए हैं। इसके अलावा इससे पहले भी एक अवसर पर इसका उल्लेख आया है। अतः आयत के मायना साफ़ हैं कि जो लोग उसकी माफ़ी के क़ानून के पाबन्द रहे होंगे अर्थात हक़दार होंगे उनको माफ़ करेगा और जो नही रहे होंगे उनको नहीं। मगर।

"ज़िद्दियों को ज्ञान कहां" (भूमिका पृष्ठ 52 देखें)

(46) "सूरह आले इमरान– "इस से अच्छी और क्या परहेज़ गारों को ख़बर दूं कि अल्लाह की ओर से जन्नते हैं जिनमें नहरें चलती हैं उनमें सदैव रहने वाली पाक पत्नियां हैं। अल्लाह की खुशी है अल्लाह उनको देखने वाला है साथ बन्दों के।"

(आयत न0 13)

आपत्ति

भला यह जन्नत है या वैश्यालय? इसको खुदा कहना या स्त्रियों का शौक़ीन। क्या कोई भी बुद्धिमान ऐसी बातें जिसमें में उसे खुदा की बनायी हुई किताब मान सकता है? अल्लाह पक्षपात से काम क्यों लेता है? जो पत्नि जन्नत में सदैव से रहती है क्या वे यहां से पैदा होकर वहां गयी हैं? या वहीं पैदा हुई हैं? यदि यहां से पैदा होकर वहां गयी हैं और क़यामत की रात में सबका न्याय होगा इस वचन को क्यों तोड़ा ? यदि वहीं पैदा हुई हैं तो क़यामत तक वे क्यों और कैसे

गुज़ारा करती हैं? यदि उनके वास्ते आदमी भी हैं। यहां से जन्नत में जाते मुसलमानों को अल्लाह बीवियां कहां से देगा? और जैसे बीवियां जन्नत में सदैव रहने वाली बनायीं वैसे मर्दों को वहां सदैव रहने वाले क्यों नहीं बनाया? इस वास्ते मुसलामनों का अल्लाह भी अन्यायी और बे समझ है।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी का अनुवाद यूं तो पूरा का पूरा नूर होता है मगर इस वाक्य के शब्दों ने तो साबित कर दिया कि स्वामी जी का फ़रमान वास्तव में सोने से लिखने योग्य है कि "हठ धर्मी की बुद्धि पर पत्थर" (भूमिका सत्ययार्थ प्रकाश पृ0 7) अल्लाह अल्लाह! जिस व्यक्ति को इतनी भी ख़बर नहीं कि ख़बर और ख़बर देने वाले में अन्तर कर सके। मामूली उर्दू और उर्दू से नागरी किया हुआ अनुवाद भी साफ़ साफ़ नक़ल नहीं हो सकता तो पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि ऐसे ज्ञान एवं बुद्धि के महात्मा ने कहां तक कुरआन शरीफ़ पर जिसको हज़ारों विद्वान ईश्वरीय किताब मानते हैं और मुक्ति का मार्ग जानते हैं थोड़ा सा भी सोच विचार किया होगा।

हम हर वाक्य पर यह शिकायत करते तो ऐसी शिकायत ही से यह किताब भर जाती। पाठक मुख्य रूप से हमारे समाजी दोस्त अपने चौथे उसूल को याद करके ज़रूर अपने स्वामी का अनुवाद जहां हमने उनपर आपत्ति की है कुरआन के अनुवादों से मुक़ाबला कर लें। वाक्य न0 9 में भी स्वामी जी ने यही आपत्ति की है। पंडित जी को आपत्तियां बढ़ाने का ऐसा शौक़ चर्राया हुआ है कि एक ही आपत्ति को कई एक अवसरों पर करके मूर्खों में अपनी गिनती कराते हैं।

कुरआन शरीफ़ का मतलब किसी विद्वान से पूछ लिया होता। कुरआन में जन्नतियों के लिए बीवियों का होने का निस्संदेह उल्लेख है लेकिन समझ में नहीं आता कि इस पर स्वामी जी को क्या सवाल है? यदि खुदा किसी भले आदमी की नेक बीवी को जन्नत में उसके साथ ही जगह दे तो क्या मुसीबत है? हां जो भले मर्द बिना शादी किए मरेंगे उनका मिलाप उन औरतों से होगा जो वैसी हैं भले कामों में बे निकाह मरेंगी या खुदा उनके लिए जन्नत में उनके मुनासिब औरतें पैदा करेगा। यह भी संभव है कि यदि जन्नती मर्दों को एक औरत से ज़्यादा की इच्छा होगी तो और औरत वहां की पैदाइश से उसको मिल जाएगी। पंडित जी ने चूंकि सारी उम्र कुदरत के क़ानून का उल्लंघन करके ब्रहम्चर्य में गुज़ार दी है इसलिए वे जब सुनते हे कि जन्नतियों को बीवियां मिलेंगी तो हैरान रह जाते हैं कि मैं तो जीवन में संघर्ष करने के बावजूद दुनिया में भाग्य हीन रहा मुसलमान इस लोक के अलावा परलोक (अन्तिम जीवन) में भी सफ़ल हुए जाते हैं। मगर यह दोष किसका?

बाक़ी जवाब न0 9 में देखिए।

(47) "वेशक अल्लाह की ओर से दीन इस्लाम है" (आयत ...5)

आपत्ति

क्या अल्लाह मुसलमानों ही का है औरों का नहीं? क्या तेरह सौ सालों से पहले खुदा का धर्म था ही नहीं? इससे मालूम हुआ कि यह कुरआन खुदा का बनाया हुआ नहीं बल्कि किसी कट्टर पक्षपाती का बनाया हुआ है।

आपत्ति का जवाब

एक व्यक्ति ने एक तोते का लालन पालन किया और उसे "दरीं चेह शक" (इसमें क्या संदेह है) का शब्द ऐसा याद कराया कि हर

बात के जवाब में तोता "दरीं चेह शक" तुरन्त कह देता। आखिर उसका मालिक उसे बेचने के लिए ले गया और ख़रीदार के पूछने पर सौ रूपए मोल किया। ख़रीदार की तकरार पर मालिक ने कहा– कि तोता महाराज से पूछ लो। तोता महाराज झट बोल उठे कि "दरीं चेह शक" ख़रीदार ने समझा कि ऐसा तोता कहां मिलेगा? कि फ़ारसी में हर बात का जवाब देता है। ठीक इसी तरह पंडित जी को इन शब्दों से बड़ा प्रेम है कि "मुसलमानों ही का ख़ुदा है औरों का नहीं।" मगर अपने ऊपर बीतती है तो साफ़ कह जाते है कि "वेद का इन्कारी नास्तिक है" (सत्यार्थ पृ0 247)

और।

"यदि कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा क्या अक़ीदा है तो यही जवाब देना चाहिए कि हमारा वेद है"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 272, समलास 7 न0 81)

(48) "हरेक आत्मा को पूरा दिया जाएगा जो उसने कमाया और वे ज़ुल्म न किए जाएंगे। कहो या अल्लाह तू ही मुल्क का मालिक है जिसे चाहे देता है जिससे चाहे छीनता है जिसे चाहे सम्मान देता है जिसे चाहे अपमानित कर देता है सब कुछ तेरे ही हाथ में है हर चीज़ पर तू ही समर्थ है। रात को दिन में और दिन को रात में बिठाता है और मुर्दा को ज़िन्दा से और ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और जिसे चाहे असीमित आजीविका देता है। मुसलमानों को चाहिए कि काफ़िरों को दोस्त न बनाए सिवाए मुसलमानों के। अतः जो कोई यह करे वह अल्लाह की ओर से नहीं। कह जो तुम चाहते हो अल्लाह का अनुसरण करो और मेरा। अल्लाह चाहेगा तुम को और तुम्हारे गुनाह माफ़ करेगा। बेशक वह माफ़ करने वाला कृपालु है।" (आय॰। 21 – 27)

आपत्ति

जब हर आत्मा को कर्मों का पूरा पूरा फल दिया जाएगा तो गुनाह माफ़ नहीं हो सकेंगे और यदि माफ़ होंगे तो पूरा फल नहीं दिया जाएगा और अन्याय होगा। यदि बिना सद कर्म के हुकूमत देगा तब भी अन्याय ही हो जाएगा। भला ज़िन्दा से मुर्दा और मुर्दा से ज़िन्दा कभी हो सकता है। ईश्वर की व्यवस्था पूर्ण एवं अनादि कालिक है कभी उसमें हेर फेर या परिवर्तन नहीं होता न हो सकता है। अब देखिए पक्षपात की बातें जो इस्लाम दीन में नहीं हैं। उनको काफ़िर कहा गया है ग़ैर धर्म के सदाचारी लोगों से भी दोस्ती न रखना और दुष्ट मुसलमनों से दोस्ती रखने की शिक्षा देना ख़ुदा को शोभा नही देता। इसलिए यह क़ुरआन और क़ुरआन का ख़ुदा और मुसलमान लोग मात्र पक्षपात और अज्ञानता से भरे हैं। और मुसलमान अंधियारे में हैं और देखिए मुहम्मद साहब की लीला कि यदि तुम मेरी तरफ़ होगे तो अल्लाह तुम्हारी तरफ़ होगा। यदि तुम पक्षपात से गुनाह करोगे तो उसे माफ़ भी करेगा इससे साबित होता है कि मुहम्मद साहब की नीयत साफ़ न थी और मुहम्मद साहब ने अपने स्वार्थ के लिए यह क़ुरआन बनाया है।

आपत्ति का जवाब

कैसे हठ धर्मी हैं वे लोग जो धर्म के अंधियारे में फंस कर बुद्धि भ्रष्ट कर बैठे हैं।" (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7) हरेक काम का पूरा बदला वही होता है जो शासक ने निर्धारित किया हो। तो जिन गुनाहगारों के सद कर्म अधिक और दुष्ट कर्म कम होंगे उनका बदला यही है कि वे मुक्ति पाए हों। तनिक ध्यान से सुनो। व अम्मा मन सकुलत मवाज़ीनु हु फ़हुवा फ़ी ईशतिर्राज़ियह0 (सूरह कारियह– 6–7) 1

1– जिनके सदकर्म अधिक होंगे वे मुक्ति पा जाएंगे।

"और जिन के गुनाह नेकियों से बढ़कर होंगे उनकी सजा जहन्नम से सुनो।"

व अम्मा मन ख़फ़फ़त मवाज़ीनुहु फउम्मुहु हाविय़ह0 ~

(सूरह कारिआ – 8–9) [1]

फिर यह क़ानून निर्धारित है कि ऐसे गुनाहगारों में से जो जहन्नम के योग्य होंगे यदि कोई गुनाहगार अल्लाह का बाग़ी अर्थात बहुदेव वादी नहीं तो किसी क़दर सज़ा देकर उनको भी मुक्ति मिल सकेगी। ज़रा ध्यान से पढ़ो।

इन्नल्लाह ला यग़फ़िरू अंय्युशरक बिहि व यग़फ़िरु मा दूना ज़ालि क लिमंय्य शाऊ0 (सूरह निसा– 48) [2]

अतः आपके पहले हिस्से का जवाब आ गया। ज़िन्दों से मुर्दे और मुर्दों से ज़िन्दे हर दिन निकलते हम स्वयं देख रहे हैं। क्या जिन मुर्दों को आग में जलाते हो वे तुम्हारे ज़िन्दों में से नहीं थे? और जो रोज मर्रा पैदा होते हैं। वे पहले मुर्दा (बेज़बान वीर्य) नहीं होते? देखिए कुरआन शरीफ़ अपनी टीका आप करता है। कयफ़ा तकफ़ुरू न बिल्लाहि व कुन्तुम इसका अनुवाद है। "कैसे तुम अल्लाह से मुन्किर होते हो यद्यपि तुम बे जान (वीर्य के रूप में) थे फिर उसने तुमको जीवन बख़्शा।" (सूरह बक़रा – 28)

"पूर्ण ज्ञान के लिए हर बात का उत्तम और हल्का अवसर देखना और सोचना अवश्य है और नापाक बातिन वाले जाहिलों को वास्तव में इल्म नहीं होता। (भूमिका पृ0 5–2)

काफ़िर कहने का जवाब वाक्य न0 20 में आ चुका है आप अपनी आदत से मजबूर हैं तो हम भी महबूर हैं।

1– जिनके सद्‌कर्म कम होंगे वे जहन्नम में जाएँगे

2– बहुदेव वादीयों के सिवा जिसको चाहेगा (थोड़ी) बहुत सज़ा के बाद) माफ कर देगा

ग़ैर धर्म के भले लोगों के मिलने से मना नहीं किया बल्कि उन पापियों दुष्टों से मना किया है जिनका हाल स्वयं अल्लाह ने बताया है। कान खोल कर सुनो।

"मुसलमानों ग़ैर क़ौमों से दोस्ती न करो वे तुम्हे नुक़सान पहुंचाने में कमी नहीं करते। तुम्हारी तकलीफ़ों से खुश होते हैं स्वयं उनके मुंह से शरारतें हो चुकी हैं और जो गुस्सा तुम्हारे हक़ में उनके दिलों में भरा पड़ा है वह बहुत बढ़ कर है हमने तुमको निशानियां बता दी हैं यदि तुम अक़्लमन्द हो।" (आले इमरान– 118)

समाजियो! भूमिका पृ0 52 को जिसके वाक्य हमने कई बार लिखे हैं देखो और कुरआन की रूदाद जो ऐसी हरकतों से कैसे सख़्त शब्दों में मना करता है।

तनिक ध्यान से सुनो।

"क्यों ऐसी बातें कहते हो जिन पर स्वयं अमल नहीं करते। अल्लाह के यहां यह प्रकोप की बात है कि कहे पर अमल न करो।"

(सूरह सफ़्फ़ – 2–3)

हां स्वामी जी! यदि आप ऐसे ही सुलह पसन्द और नर्म स्वभाव थे कि ग़ैर धर्म के लोगों को अपनी तरह जानते हैं तो बेचारे बे ज़बान ब्रहमणों पर क्यों इतने नाराज़ हैं जो लिखते हैं।

"उन्होंने अंग्रेज़, मुसलमान, चंडाल आदि से भी खाने पीने का अन्तर नहीं रखा। उन्होंने यही समझा कि खाने और जात पात का भेद भाव तोड़ने से हम और हमारा देश सुधर जाएगा लेकिन ऐसी बातों से सुधार कहां उल्टा बिगाड़ होता है।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 497, समलास 11 न0 105)

और भी सुनिए! पंडित जी बयान करते हैं।

"अब इदबार वक़्त आर्यों की सुस्ती, लापरवाही और आपसी

कपट के कारण दूसरे देशों में राज करने की तो बात ही क्या है बल्कि स्वयं आर्य वरत (हिन्द) में भी इस समय आर्यो का सम्पूर्ण स्वतंत्रता और स्वायमित्व, निडर राज नहीं, जो कुछ है उसे भी विदेशी रौंद रहे हैं। कुछ थोड़े से राजा खुद मुख्तार[1] हैं। जब बुरे दिन आते हैं तब देश के रहने वालों को कई प्रकार का कष्ट भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे लेकिन जो अपने देश का राज होता है वह सबसे श्रेष्ठ होता है अर्थात विदेशियों का राज पूरा पूरा सुखमय नहीं है।" (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 298, समलास 8 न0 49)

गुरू कुल और आर्य कालेज के समर्थकों! स्वामी जी की इस इबारत से सहमत हो?

पंडित जी! मुसलमान और ईसाई चाहे कितने ही सदाचारी हों उनके साथ खाना उचित नहीं। हां मुझे याद आया, वेद की पाबन्दी के सिवा कोई भला काम कैसे हो सकता है? क्योंकि "वेद का इन्कारी नास्तिक है।" (सत्यार्थ प्रकाश समलास 8)

काफ़िर कहने का जवाब न0 20 में देखो।

स्वामी जी! हैं? ऐसी बे इन्साफ़ी परमेश्वर से कराते हो कि वैदिक मत वालों के सिवा कोई आस्तिक नहीं।

(49) "जिस समय कहा फ़रिश्तों ने कि ऐ मरयम तुझे अल्लाह ने बरगुज़ीदा किया और पाक किया ऊपर दुनिया की औरतों के।"

(आयत– 39)

आपत्ति

भला जब आज कल ईश्वर के फ़रिश्ते और स्वयं ईश्वर किसी से बातें करने को नहीं आते तो पहले क्योंकर आते होंगे? यदि कहो कि पहले के आदमी धार्मिक होते थे आजकल के नहीं होते तो यह बात

[1]–समाजियो! कौन सा राजा खुद मुख्तार है बता सकते हो।

गलत है। जब ईसाई और मुसलमानों का धर्म चला था उस समय इन देशों में जंगली और जाहिल व्यक्ति अधिक थे इसीलिए ऐसे ज्ञान के विरुद्ध धर्म चल गए। अब ज्ञान एवं विद्वान अधिक हैं इस वजह से ऐसा धर्म अब चल नहीं सकता बल्कि जो जो ऐसे रद्दी धर्म हैं वे लुप्त होते जाते हैं उनके प्रगति करने की तो बात ही क्या है।

आपत्ति का जवाब

भला जब आज कल किसी को ईश्वरीय संकेत नहीं होता तो पहले वेद किस प्रकार उतरे होंगे? या आज कल कोई जवान आदमी पैदा नहीं होता तो पहले भी क्यों कर जवान पैदा हुए होंगे? (देखो सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 294, समलास 8 न0 42) यदि कहिए कि उन दिनों आवश्यकता थी तो ठीक इसी तरह चमत्कार की इन दिनों आवश्यकता थी और यह तो साफ़ है कि आवश्यक्ता और आवश्यकता के न होने का पता करना कर्त्ता का काम है। हम कभी कभी बारिश की ज़रूरत समझते हैं लेकिन ईश्वर के निकट नहीं होती इसीलिए बारिश होती भी नहीं।

हां यह भली कही कि जब ईसाई और मुसलमानों का धर्म चला था उस समय अज्ञानता थी ठीक है इसलिए कि उस समय वेद पर उन लोगों का नियम था कि क्योंकि वेद तो आदि काल से मनुष्यों को एक के बाद एक (विरासत में) मिले थे।

समाजियोः तुम्हारी क्या राय है?

(50) "उसको कहता है कि हो बस हो जाता है और चाल चली काफ़िरों ने और चाल चली अल्लाह ने और अल्लाह बड़ी चाल चलने वाला है।" (आयत–44–50)

आपत्ति

जब मुसलमान अल्लाह के सिवा दूसरी कोई वस्तु नहीं मानते तो

अल्लाह ने किससे कहा और उसके कहने से कौन हो गया। इस बात का जवाब मुसलामान लोग सात जन्म में भी नहीं दे सकेंगे। क्योंकि दलील के बिना कोई बात ठीक से फिट नहीं बैठ सकती। बिना दलील बात को साबित करना ऐसा ही है जैसा कोई कहे कि बिना अपने मां बाप के मेरा शरीर बन गया। जो धोखा खाता है या धोखा देता है वह ईश्वर कदापि नहीं हो सकता ईश्वर तो दूर की बात कोई शरीफ़ आदमी भी ऐसी बात नहीं करता।

आपत्ति का जवाब

उपर्युक्त वाक्य में पहला भाग एटम से संबंधित है जिस का जवाब हम वाक्य न0 27 में दे चुके हैं। अलबत्ता "चाल" में पंडित जी ने भी चाल चली है। अतः भूमिका के लेखक स्वयं पृष्ठ 52 पर अमल करते तो उनसे यह ग़लती न होती। अरबी भाषा में जो शब्द मकर है उसके मायना शब्द कोष में खुफ़िया हुक्म या खुफ़िया तदबीर हैं अतः आयत का अर्थ यह हुआ कि काफ़िरों ने हज़रत मसीह अलैहि0 को कष्ट पहुंचाने में खुफ़िया तदबीरें की और अल्लाह ने उनको बचाने का खुफ़िया आदेश जारी कर दिया और ईश्वर की चाल सब पर भारी होती है।

चूंकि अल्लाह के सारे काम लोगों की नज़रों से छुप छुपाकर होते है। वर्ना बता दे कि जान निकलने के समय क्या ईश्वर सामने आकर धपड़ मारता है? नहीं बल्कि ऐसे खुफ़िया सामान होते हैं जो अन्दर ही अन्दर अपना काम कर जाते हैं। इसी लिए कहा गया। "म क रू व म क रुल्लाहु" यही इसका अर्थ भी है।

असल यह है कि कुछ शब्द अरबी के अरबी में इतनी सख़्ती रखते हैं जितनी उर्दू में दिखाते हैं जैसे "जाहिलु" जिसका अनुवाद नादान है या "अहमक़" जिसका अनुवाद भी नादान है अरबी में ठीक

उतना ही वजन रखते है जितना उर्दू में नादान रखता है अर्थात एक "साधारण सा" और उर्दू में, ये दोनों शब्द (जाहिल और अहमक़) कितनी घृणा रखते हैं, भाषा विदों से यह बात छुपी नहीं, यही हाल "मकर" का है। अरबी में खैरुल माकिरीन गिलेड स्टोन और मुस्तफा कमाल पाशा जैसे योग्य राजनीतिज्ञों को कहा जाता है न कि ऐरे ग़ैरे को। मगर हिन्दी भाषा में यह शब्द "मकर" बड़े घृणित अर्थों में बोला जाता है इसलिए आर्यों के गुरू और स्वयं आर्यों को भी बुरा लगता है वर्ना असल में यह ऐसा बुरा नहीं है। इसके अलावा स्वामी जी भी इस बात को मानते हैं।

"जहां असली अर्थ न हो सकें वहां उपमा या मजाज़ तात्पर्य होता है।" (भूमिका पृ0 10)

फिर क्या कारण है कि स्वामी जी ने यहां मजाज़ (वास्तविक) मुराद न लिया क्योंकि धोखा तो कमज़ोर आदमी किया करता है और ईश्वर तो सारे लोगों को पैदा करने वाला, स्वामी व पालनहार है। वह स्वयं कहता है। "ईश्वर सारे मनुष्यों पर छाया हुआ है।"

स्वामी साफ़ अर्थ क्यों करते जबकि अपने कथन की मान्यता मन्जूर थी कि।

"नापाक बातिन वाले जाहिलों को निश्चय ही ज्ञान नहीं होता।"

(भूमिका पृ0 52)

इसे विस्तार से जानने के लिए हमारी किताब तुर्क इस्लाम व जवाब तर्क इस्लाम" मे देखिए।

(51) "क्या यह किफ़ायत न करेगा कि मदद करे तुमको साथ तीन हज़ार फ़रिश्तों के।" (आयत – 18)

आपत्ति

यदि मुसलमानों को तीन हज़ार फ़रिश्तों के साथ मदद देता था

तो अब जबकि उनकी बादशाहत बहुत सी बर्बाद हो गयीं और हो रही है क्यों मदद नहीं देता? इसलिए जाहिलों को लालच देकर फंसाने का ढकोसला है।"

आपत्ति का जवाब

भली कही, मगर स्वामी जी! क्या कारण है कि ईश्वर का वायदा उल्लिखित सुलतान महमूद ग़ज़नवी और मुहम्मद ग़ौरी के मुक़ाबले में स्पष्ट न हुआ बल्कि आज तक भी वैसा ही है। सुनो! ईश्वर आज्ञा (आदेश) देता है।

"तुम्हारे सारे शस्त्र व हथियार और तीर कमान आदि मेरी कृपा से शक्तिशाली और विजय नसीब हो। दुराचारी दुश्मनों की पराजय और तुम्हारी विजय हो। तुम्हारी सेना भारी भरकम और नामी गरामी हो ताकि तुम्हारा विश्व व्यापी शासन इस धरती पर स्थापित हो।"

(कभी हुआ भी?) ऋग वेद अषटक। अध्याय 3 वरग 1 मन्त्र 2 यदि कहीं वेद में भी यह लिखा है कि।

"जब तक लोग धर्म पर चलते रहते हैं जब तक शासन बढ़ता रहता है और जब दुष्कर्म होने लगते हैं तो राज विनष्ट हो जाता है।"

(मंडल–1–सकत 31 मन्त्र 2)

तो इसी के वज़न का कुरआनी आदेश भी सुन लीजिए और तनिक ध्यान से सुनिए।

अन्तुमुल अवलव न इन कुन्तुम मोमिनीन0

"तुम्हीं विजयी रहोगे यदि तुम ईमान में मज़बूत होगे।"

(आले इमरान 139)

पंडित जी! क्या ही आपके बारे में सच है कि।

"हठ धर्मी धर्म के अंधेरे में फंस कर बुद्धि को भ्रष्ट कर लेते हैं"

(भूमिका सत्यार्थ प्रकाश)

(52) "और मदद दे हमें ऊपर काफ़िरों के बल्कि अल्लाह संरक्षक है तुम्हारा और वह बेहतर है मदद करने वाला और यदि मारे जाओ तुम बीच राह अल्लाह के या मर जाओ तुम अलबत्ता क्षमादान है अल्लाह की ओर से।"

आपत्ति

देखिए मुसलमानों की ग़लती कि जो अपने धर्म के नहीं उनके लड़ने के वास्ते ईश्वर से प्रार्थना करते हैं क्या ईश्वर इतना सादा है जो इनकी बात मान लेगा। यदि मुसलमानों का संरक्षक अल्लाह ही है तो फिर मुसलमानों के काम क्यों बर्बाद होते हैं और अल्लाह भी मुसलमानों के साथ झूठी मुहब्बत में फंसा हुआ नज़र आता है। यदि अल्लाह ऐसा पक्षपाती है तो धार्मिक लोगों की उपासना के योग्य नहीं हो सकता।

आपत्ति का जवाब

पंडित जी! "पंडित" का अर्थ तो बुद्धिमान का था आप पंडित होकर ऐसी बातें करें तो दूसरा क्या करेगा?

किए लाखों सितम इस प्यार में भी आपने हम पर
खुदा ना ख़्वास्ता गर खशमगी होते तो क्या करते

कुरआन ने तो काफ़िरों के मुक़ाबले के लिए मदद की प्रार्थना सिखायी है मदद भी कैसी सदैव नहीं बल्कि उनकी शरारतों से बचने की। यह तो केवल आप की अल्पबुद्धि का नतीजा है। हां ईश्वर का आदेश सुनिए।

"मैं उसका रक्षक कायनात का प्रतापीमान सम्मान वाला अत्यन्त बलवान विजयी सारी दुनिया की सारी हुकूमतों का राजा सर्व. शक्तिमान और सबको शक्ति देने वाले परमेश्वर को जिसके आगे सारे बलवान, योद्धा अपना शीश झुकाते है और जो न्याय से मनुष्यों

की रक्षा करने वाला अन्दर से हर जंग में विजय पाने के लिए आमंत्रित करता है और शरण लेता हूं।"

(यजुर वेद अध्याय, 20 मंत्र 50)

यह बात विस्तार से न0 2 में देख लें। मुसलमानों की बर्बादी का जवाब न0 51 में आ चुका है।

(53) "और नहीं है अल्लाह कि सचेत करे तुमको ऊपर परोक्ष के, लेकिन अल्लाह पसन्द करता है ईशदूतों को अपने में से जिसको चाहे। अतः ईमान लाओ साथ अल्लाह के और उसके सन्देष्टाओं के।" (आयत – 173)

आपत्ति

जब मुसलमान लोग सिवाए अल्लाह के किसी पर ईमान नहीं लाते और न किसी को ईश्वर का साझी मानते हैं। तो पैग़म्बर साहब को क्यों ईमान में ईश्वर के साथ साझी किया है? अल्लाह ने रसूल पर ईमान लाना लिखा है इसलिए रसूल भी शरीक हो गया। फिर ला शरीक (नहीं साथ कोई) कहना ठीक न हुआ। यदि इसका मतलब यह समझा जाए कि मुहम्मद साहब के पैग़म्बर (दूत) होने पर ईमान लाना चाहिए तो सवाल पैदा होता है कि मुहम्मद साहब की क्या ज़रूरत है। यदि ईश्वर बिना दूत के अपनी इच्छानुसार काम नहीं कर सकता तो यह तो वह कुदरत (अपनी सर्व शक्ति से) से खाली ही हुआ।

आपत्ति का जवाब

पंडित जी! बहुदेव वादियों की सन्तान, बल्कि स्वयं बहुदेव वादी होकर भी बहुदेव वाद से डरें तो बड़ी प्रसन्नता की बात है। मुसलमानों का तो इसपर भी विश्वास है कि दो दुना चार और पांच दुना दस बल्कि और सुनिए वे इस बात पर भी विश्वास रखते हैं कि

पंडित दयानन्द जी आर्यों के स्वामी महाराज हैं बल्कि और सुनिए! वे यह भी मानते हैं कि स्वामी जी के सवाल बड़े उचित और ज्ञान एवं विद्या से ख़ाली हैं बताइए! आप कितने ईश्वरों को मानने वाले हुए?

आप लिखते हैं कि "यदि मतलब इसका यह समझा जाए।" अगर मगर का क्या अर्थ? कोई और अर्थ भी है? यही तो है कि हज़रत मुहम्मद, मूसा ईसा (अलैहि0) अल्लाह के बन्दे और ईशदूत हैं। हां यह बड़ा कठिन सवाल है कि यदि बिना ईश्वर ईशदूत के अपनी इच्छा के अनुसार काम नहीं कर सकता। पीछे 31 न0 में हम लिख आए हैं कि स्वामी जी दिल में वेदों के इन्कारी थे देखिए और कान लगा कर हमारे दावे की दलील सुनिए।

"उस परमात्मा का ख़ज़ाना 33 देवताओं से सुरक्षित या उनमें स्थापित है परमात्मा के उस खज़ाने को जिसकी देवता रक्षा करते हैं कौन जान सकता है।"

(अथरवेद कांड 10, प्रफाटक 23, अनुवादक4, मंत्र– 23)

और सुनिए।

"33 देवता उस परमात्मा के विभाजित किए हुए कर्तव्यों को पूरा कर रहे हैं। (मंत्र – 27)

और सुनिए।

"अग्नि वायु आदि ईश्वर की ओर से भेजे गए वेद के ईश्वरीय वाणी के होने पर विश्वास करना चाहिए या नहीं? ठीक इसी तरह ईश्वर के सन्देष्टओं मुख्य रूप से सय्यदुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर हमें विश्वास है।

पंडित जी! ईश्वर के काम जितने भी दुनिया में हैं वे इसी प्रकार के हैं कि ईश्वर ने उनके कारण पैदा कर दिए हैं। इसी प्रकार बन्दों के पथ प्रदर्शन के लिए भी उसने यह नियम बनाया हुआ है कि यथा

अवसर व ज़रूरत अपने बन्दों में से जिसे इस उत्तम पद के योग्य समझता है (अग्नि,[1] वायु, ब्रह्मा हों या मूसा, ईसा और मुहम्मद सल्ल0 हों नियुक्त कर देता है।

पाठक गणों! पंडित जी अपने अहं में घिरे हैं। इस अवसर पर एक स्थान का हवाला देना उचित मालूम होता है ताकि आप लोगों को विश्वास हो जाए। सत्यार्थ प्रकाश के तेरहवें अध्याय में पंडित जी ने ईसाइयों से जंग आरंभ कर रखी है इसमें से न0 28 का वाक्य हम ठीक वहीं नक़ल करते हैं ताकि पाठक इस हीरो (क़ौम के नायक) को न्याय की दाद देने के योग्य हो जाएं।

"खुदा बंद मेरा ख़ुदा अवराहाम का खुदा मुबारक है जिसने मेरे पति को अपनी दयालुता और अपनी कृपा से ख़ाली न छोड़ा खुदावन्द ने मुझे मेरे पति के भाइयों के घर की ओर मार्ग दिखाया।" मतलव इस वाक्य का यह है कि हज़रत इबराहीम (अलैहि0) ने अपने एक नौकर को अपने बेटे इसाहक़ की शादी अपनी बिरादरी में करने के लिए भेजा और पता बताया अतएव वह नौकर वहां सफ़ल हुआ और ये शब्द शुक्रिए के लिए कहे। इस पर पंडित जी अपनी समीक्षा करते हैं।

"क्या वह अबराहाम ही का खुदा था? और जिस प्रकार कल बेगारी या मार्गदर्शक मार्ग दर्शन करते हैं वैसा ही ख़ुदा ने भी किया होगा। लेकिन आज कल रास्ता क्यों नहीं दिखाता और आदमियों से बातें क्यों नहीं करता। इसलिए साबित हुआ कि ऐसी बातें ईश्वर की या ईश्वर की किताब की कभी नहीं हो सकतीं बल्कि जंगली आदमियों

1- अग्नि, वायु आदि ईश्वरीय वाणी वाले वेद के बारे में हमें चूंकि कुछ पता नहीं इसलिए सम्भव है कि भले और सदाचारी हों मगर विश्वास से नहीं कह सकते क्योंकि इनके हालात का हमें कुछ पता नहीं। मुजद्दिद अल्फ़ सानी (रह0) का कथन भी यही है।

की हैं।" (न0 28)

"ईसाइयो! कहां हो? देखो खुदा ने सय्यदुल अम्बिया सल्ल0 का तुम से बदला लेने वाला कैसा पैदा किया।

(54) "ऐ ईमान वालो सब्र करो। आपस में रोके रखो और लड़ाई में लगे रहो और अल्लाह से डरो कि तुम छुटकारा पाओ।"

आपत्ति

यह कुरआन का खुदा और रसूल दोनों लड़ाकू थे जो जंग का आदेश देता है वह शान्ति में गड़बड़ी डालता है। क्या थोड़ा बहुत नाम मात्र को अल्लाह से डरने पर रिहाई हो सकती है? या अधर्म की जंग आदि करने के डर से। यदि पहली बात ठीक है तो डरना न डरना बराबर है और यदि दूसरी बात ठीक है तो यही सही।

आपत्ति का जवाब

बड़ा ही पापी है वह मनुष्य जिसका अपना घर शीशे का हो और वह दूसरों पर पत्थर बरसाए मगर क्या करें।?

"हठ धर्मी की अंधेरों में फंस कर बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।"

(भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7)

जिहाद और जंग का विस्तृत उल्लेख न0 2 में आया है। यहां केवल मनु जी का आदेश सुनाते हैं जिसको स्वामी जी ने भी अनुसरण योग्य समझ कर नक़ल किया है। सुन लीजिए।

"जब मालूम हो जाए कि तुरन्त लड़ाई करने से थोड़ी बहुत तकलीफ़ पहुंचेगी और बाद में करने से अपनी सफ़लता और विजय अवश्य होगी तब शत्रु से सन्धि करके उचित समय तक सब्र करे।"

(क्यों न हो मतलब नरी चला है— लेखक)

"जब अपनी सारी जनता या सेना को अत्यन्त दर्जा सम्पन्न, प्रगति शील हो जाने और वैसा ही अपने को भी समझे तब शत्रु से

जंग कर ले।"

और आगे सुनिए।

"जब अपनी सम्पूर्ण शक्ति अर्थात सेना को सम्पन्न और ठीक ठीक देखे और शत्रु की ताक़त इसके विपरीत कमज़ोर हो जाए तब शत्रु की ओर जंग करने के लिए कूच करे।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 206, अध्याय 6 न0 47)

समाजियो मुंह न छुपाओ। साफ़ कह दो कि हुआ क्या? आखिर स्वामी जी और मनु जी आर्य समाज के एक सदस्य थे जिनसे गलती होना संभव है यदि तुम यह जवाब दोगे तो हम से लिखवा लो कि हम तुम को वाक्य नम्बर 2 की ओर कभी ध्यान आकृष्ट नहीं करांएगे। अल्लाह से डरने का यह मतलब है कि उसके आदेशों का पालन किया जाए और बुराइयों से बचा जाए। ईश्वर स्वयं सदाचारियों की प्रशंसा करके बताता है कि अल्लाह से डरने वाले कौन हैं? सुनिए।

"ईश्वर से डरने वाले लोग वे हैं जो ईश्वर पर और पिछले दिन के जीवन पर और फ़रिश्तों और अल्लाह की किताबों पर और रसूलों पर ईमान लाएं और अल्लाह के प्रेम में ग़रीब, नातेदारों, यतीमों, फ़क़ीरों, मुसाफ़िरों और मांगने वालों को दें और ग़ुलाम आज़ाद कराने में खर्च करें। नमाज़ पढ़ें, ज़कात दें, वायदा पूरा करें और कष्टों और मुसीबतों और जंग के अवसर पर दृढ़ रहें। यही लोग ईमान के दावे में सच्चे हैं और अल्लाह से डरने वाले सदाचारी हैं।" (सूरह बकरा– 177)

परन्तु ...... अफ़सोस!

"जो लोग अवसर व उचित स्थान न देखें न आगे को पीछे से संबंध जोड़ने दें ऐसे नापाक बातिन वाले जाहिलों को निश्चय ही

कोई ज्ञान नहीं होता।" (भूमिका पृष्ठ – 52)

(55) "सूरह निसा, यह अल्लाह की सीमाएं हैं और जो कोई हुक्म माने अल्लाह और उसके रसूल का, दाखिल करेगा उसे जन्नतों में, चलती हैं नीचे उनके नहरें सदैव रहने वाली बीच उनके। और यह है मुराद पाना बड़ा और जो कोई अवज्ञा करे अल्लाह की और उसके रसूल की और सीमाओं को फलांग जाए, उसे दाखिल करेगा आग में सदैव रहने वाली बीच उसके और उसके लिए है यातना अपमानित करने वाली। (आयत– 12 –13)

आपत्ति

अल्लाह ने स्वयं ही मुहम्मद साहब को अपना साझी बना लिया है और स्वयं क़ुरआन ही में यह बात लिख दी है और देखो अल्लाह रसूल के साथ कैसा फंसता है कि जिसने जन्नत में रसूल का साझा कर लिया है। किसी एक बात में भी मुसलमानों का अल्लाह खुद मुख्तार नहीं तो ला शरीक कहना व्यर्थ है। लेकिन ऐसी बातें अल्लाह की बनाई हुई किताब में कदापि नहीं हो सकतीं।

आपत्ति का जवाब

कैसा पापी और अक़्ल का दुश्मन है वह व्यक्ति जो वाचक के विरुद्ध कलाम की मन्शा का अर्थ बताता है (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7) जी में तो आता है कि स्वामी जी की बातों पर अमल करें। कभी बिना पूछे या अन्याय से पूछने वाले को अर्थात जो धोखे से पूछता है उसे जवाब न दें उसके सामने बुद्धिमान व्यक्ति शिथिल वस्तु की तरह खामोश रहे।"नक़ल मनु स्मृति

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 350 समुल्लास 10 न0 3)

मगर अल्लाह का आदेश। "समझा दे ताकि कोई व्यक्ति अपने बुरे कर्मों के कारण विनष्ट न हो।" (अनआम –70) की दृष्टि से

पाठकों को न0 21, 53 की ओर ध्यान दिलाते हैं।

(56) "और कण बराबर भी अल्लाह जुल्म नहीं करता और यदि हो नेकी दुगना करेगा उसको।" (आयत – 38)

आपत्ति

यदि एक कण भर अल्लाह अन्याय नहीं करता तो अच्छाई का सवाब व गुनाह क्यों देता है? और मुसलमानों का पक्ष क्यों लेता है? निश्चय ही कर्मों का दुगना या पूरा फल न देने से अल्लाह अन्यायी ठहरता है।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी! आपने बड़ी ग़लती खायी। मुनाज़रा को समाज मन्दिर समझ गए कि जिस प्रकार अनाप शनाप समाज में बक देने पर कोई पूछ ताछ नहीं इसी तरह मैदाने जंग में भी होगी मगर यह कभी न सुना था कि।

संभल कर पांव रखना मयकदा में सरस्वती साहब
यहां पगड़ी उछलती है इसे मयख़ाना कहते हैं

किसी भले मज़दूर की निष्ठा की दृष्टि से निर्धारित मज़दूरी से अधिक देना किस न्याय के विरुद्ध है? विस्तृत जवाब वाक्य न0 22 में देखें।

नाम के मुसलमानों का कोई सम्मान नहीं बल्कि धर्मी का सम्मान है सुनो!

"मुसलमानो! नजात (मुक्ति) न तुम्हारी इच्छाओं पर है न किताब वालों की इच्छा पर कोई बुरा काम करेगा तो उसकी सज़ा पाएगा।" (सूरह निसा – 123)

"तुम में से बड़ा सम्मानित वह है जो अल्लाह से डरता हो।" (सूरह हुजरात – 13)

(57) "जब तेरे पास से बाहर निकलते हैं मश्वरा करते हैं सिवाए उस चीज़ के कि कहता है तू और अल्लाह लिखता है जो मश्वरा करते हैं और अल्लाह ने उल्टा किया उसे उस चीज की वजह से कि कमाया उन्होंने। क्या इरादा करते हो तुम यह कि राह पर लाओ जिसे गुमराह किया अल्लाह ने और जिसे गुमराह करे अल्लाह तो कदापि न पाएगा तू वास्ते उसकी राह। (आयत 79 – 87)

आपत्ति

यदि अल्लाह ऐसी बातों का रोज़नामचा रखता है तो वह सर्वज्ञाता नहीं है। यदि सर्व ज्ञाता है तो लिखने का क्या काम है और मुसलमान कहते हैं। शैतान ही सबको बहकाने के कारण फ़टकारा हुआ है तो जब अल्लाह ही मनुष्यों को गुमराह करता है तो फिर अल्लाह और शैतान में क्या फ़र्क़ रहा? हां इतना फ़र्क़ कह सकते हैं कि अल्लाह बड़ा शैतान और वह छोटा शैतान, क्योंकि मुसलमानों ही का कथन है कि जो बहकाता है वही शैतान है तो इस उसूल से अल्लाह को भी शैतान बना दिया।

आपत्ति का जवाब

जिस शब्द पर स्वामी जी को संदेह है वे शब्द ये हैं।

वल्लाहु यकतुबु मा युबय्यतून। (निसा 81)

जिसका शाब्दिक अनुवाद यही है जो पंडित जी ने नक़ल किया है मगर हम कई जगह बता आए हैं और पंडित जी के हस्ताक्षर भी कर आए हैं कि "जहां असली मायना मुश्किल हों वहां वास्तविक होते हैं।" अतः ख़ुदा का लिखना क्या मायना अर्थात वह उनको बदला देगा। बाकी शैतानी बातों का जवाब वाक्य न0 11 व न0 32 में दिया जा चुका है।

(58) "और न बन्द करें हाथों को अपने को तो पकड़ो उनको

और मार डालो जहां पाओ। और मुसलमान को मुसलमान का मारना वाजिब नहीं मगर धोखे में जो कोई मार डाले मुसलमान को तो आज़ाद करना है एक गर्दन मुसलमान की और इसका बदला सौंपी हुई तरफ़ लोगों उस के कि मगर यह कि दान कर देवें तो यदि होवे उस क़ौम से कि दुश्मन हैं वास्ते तुम्हारे और जो कोई मुसलमान को जान कर मार डाले। तो वह सदैव जहन्नम में रहेगा और क्रोध अल्लाह का उसके ऊपर और फटकार है।" (आयत – 89 –91)

आपत्ति

अब देखिए परले दर्जे के भेदभाव की बात कि जो मुसलमान न हो उसे जहां पाओ मार डालो और मुसलमानों को न मारो, भूल से भी मुसलमानों के मारने में जहन्नम और ग़ैरों के मारने से जन्नत मिलेगी। ऐसी शिक्षा कुएं में डालनी चाहिए। ऐसी किताब, ऐसे रसूल और ऐसे धर्म से सिवाय हानि के लाभ कुछ भी नहीं। इनका न होना अच्छा है ऐसे जाहिलाना धर्मों से बुद्धिमानों को अलग रह कर वेदों की शिक्षा एवं आदेशों को मान लेना चाहिए क्योंकि इनमें झूठ कण भर भी नहीं है।

तुम कहते हो कि जो मुसलमान को मारे उसे जहन्नम मिलेगी और दूसरे धर्म वाले कहते हैं कि जो मुसलमान को मारे उसे जन्नत मिलेगी। अब बताओ कि इन दोनों धर्मों में से किस को स्वीकारें और किसे छोड़ें। ऐसे जाहिलों के मनगढ़त धर्मों को छोड़कर वेदों के मत ही समस्त मनुष्यों के स्वीकारने योग्य है जिसमें आर्य मार्ग अर्थात भले लोगों के मार्ग पर चलने और बुरे लोगों के मार्ग से बचने की शिक्षा दी गयी है और वही सब से श्रेष्ठ है।

आपत्ति का जवाब

इस वाक्य में तो पंडित जी बड़े घबराए हुए मालूम होते हैं।

महाराज खैर (ठीक ठाक) तो है ऐसे क्यों घबराए। क्या सवेरे सवेरे किसी मुसलमान का मुंह देख लिया। विस्तृत जवाब न0 2 आदि अवसरों पर हम लिख आए हैं यहां केवल स्वामी जी के इस वाक्य की पुष्टि करते हैं कि ऐसी किताब, ऐसे ईश्वर और ऐसे धर्म से सिवाए हानि के लाभ कुछ भी नहीं। सुनिए! कुरआन भी आपकी पुष्टि करता है।

"हम (खुदा) कुरआन को लोगों के लिए शिफ़ा नाज़िल करते हैं और मोमिनों के लिए दयालुता मगर अन्यायियों को सिवाए हानि के कुछ भी नसीब नहीं होता। (सूरह बनी इसराईल–82)

समाजियो! आओ हम तुम्हे स्वामी जी की बेसमझी या झूठ बता दें। कुरआन मजीद के अनुवाद में वह शब्द देखो जिस पर हमने मार्क कर दिया और अपने स्वामी की आपत्ति में भी मार्क वाले शब्दों को देखिए न देखते हो न समझते हो तो सुनो! कुरआन में है "जान कर मारे" और स्वामी जी कहते हैं भूल कर भी मार दे" तो जहन्नम है। क्या अब भी इसमें कोई संदेह है? कि ज़िद्दी और पक्षपाती जो बुद्धि खो देते हैं वाचक के खिलाफ़ कलाम की मन्शा के अर्थ किया करते हैं। (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7)

(59) "और जो कोई करे बर खिलाफ़ रसूल के पीछे इसके कि ज़ाहिर होवे वास्ते उस के हिदायत और अनुसरण करे सिवाए राह मुसलमानों के ज़रूर हम उसे जहन्नम में दाखिल करेंगे।"

(आयत – 113)

आपत्ति

अब देखिए अल्लाह और रसूल के पक्षपात की बातें। मुहम्मद साहब आदि समझते थे कि यदि हम अल्लाह के नाम से ऐसी बातें न लिखेंगे तो अपना धर्म उन्नति न कर पाएगा और माल न मिलेगा

सुख वैभव नसीब न होगा। इससे स्पष्ट होता है कि वह अपना मतलब निकालने और दूसरों के काम बिगाड़ने में पूरे उस्ताद थे इसी वजह से कहा जा सकता है कि वे झूठ के मानने वाले और झूठ पर चलने वाले होंगे। भले सदाचारी विद्वान उनकी बातों को प्रमाणिक नहीं मान सकते।

आपत्ति का जवाब

"जो कोई दूसरे धर्म को जिसे करोड़ों आदमी मानते हों झूठ कहे उससे बड़ा झूठा कौन है?" (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 697 अध्याय 14 न0 73)

पंडित जी! कैसी पक्ष पातियों की सी बात है कि जो वेद को न माने वह नास्तिक (अधर्मी) है।" (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 247, समुल्लास 10 न0 1)

और सुनिए।

"जो कोई पूछे कि तुम्हारा अक़ीदा क्या है तो यही जवाब देना चाहिए कि हमारा अक़ीदा वेद है।" (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 272 समुल्लास 7 न0 81)

विस्तृत जवाब पहले नम्बरों में कई जगह आ चुका है।

(60) "जो अल्लाह के फ़रिश्तों किताबों, रसूलों और क़यामत के साथ कुफ़्र करे बेशक वह गुमराह है। बेशक जो लोग ईमान लाए फिर काफ़िर हुए फिर ईमान लाए फिर काफ़िर हुए फिर कुफ़्र में अधिक बढ़ गए कदापि अल्लाह उनको नहीं क्षमा करेगा। और न राह दिखाएगा।" (आयत 134 – 135)

आपत्ति

क्या अब भी ला शरीक रह सकता है? क्या ला शरीक कहते जाना और उसके साथ बहुत से शरीक भी मानते जाना हठ धर्मी नहीं! क्या तीन बार क्षमा करने के बाद अल्लाह क्षमा नहीं करता? और तीन बार कुफ़्र करे तो कुफ़्र बहुत बढ़ जाए।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी के बहुदेव वाद का विस्तृत जवाब न0 21, 53 और न0

85 आदि में देखिए। दूसरे हिस्से में भी आपने भूमिका पृ0 52 पर अमल नहीं किया।

"हर बात के लिए संदर्भ व अवसर को ठीक से पहचानना और आगे पीछे सोच विचार करना आवश्यक है।" (भूमिका– पृ0 52)

सुनिए इस आयत की टीका अल्लाह ने दूसरे स्थान पर स्वंय कर दी है ध्यान से सुनिए।

"कुफ़्र ही पर मर जाएगा तो दुनिया व आखिरत में उसके सारे कर्म नष्ट हुए।" (बक़रा ' 217)

अतः तीन और चार की संख्या तात्पर्य नहीं बल्कि अंजाम की दृष्टि से यद्यपि विषय साफ़ है मगर इसका इलाज हो कि पंडित जी के कथना नुसार ......

"नापाक बातिन वाले जाहिलों को निश्चय ही ज्ञान नहीं होता।" (भूमिका पृ0 52)

(61) "बेशक अल्लाह जमा करने वाला है कपटियों और काफ़िरों को जहन्नम में बेशक कपटी धोखा देने वाले हैं। अल्लाह को और वह धोखा देने वाला है उन को। ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो मुसलमानों के सिवा काफ़िरों को दोस्त मत्त बनाओ।" (आयत – 138–140)

आपत्ति

मुसलमानों के जन्नत में और दूसरे लोगों के जहन्नम में जाने का क्या सबूत है। वाह जी वाह। यदि खुदा कपटियों के धोखे में आता है और दूसरों को धोखा देता है तो ऐसा खुदा हम से दूर रहे। वह धोखे बाज़ों से जाकर मिले और धोखे बाज़ उसे मिलें क्योंकि जैसे को तैसा, तभी गुज़ारा होता है। जिनका खुदा धोखेबाज़ है उसके श्रद्धालु धोखेबाज़ क्यों न हों? क्या बदकार मुसलमान से

दोस्ती और ग़ैर धर्म के अच्छे लोगों से दुश्मनी करना किसी को वाजिब है?

आपत्ति का जवाब

मुसलमानों के जन्नती होने का वही सबूत है जो आपके इस वाक्य का सबूत है कि-- "जो कोई पूछे कि तुम्हारा अक़ीदा क्या है तो यही जवाब देना चाहिए कि हमारा अक़ीदा वेद है।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 272 समलास 7 न0 81)

और सुनिए एक बड़ा सबूत मुसलमानों के जन्नत में जाने का यह है कि मुसलमानों के धर्म पर कोई आपत्ति नहीं आती क्योंकि जो आपत्तियां आती थीं वे यही कुछ कायनात हैं जो आपने की हैं जिनकी आवभगत आर्यों ने देख ली है। विस्तृत सबूत देखना हो तो हमारा मुबाहेसा "इल्हामी किताब" और "तक़ाबुल सलासा" तौरेत इंजील और कुरआन का मुक़ाबला ग़ौर से पढ़ो। खुदा न तो किसी के धोखे में आता है और न किसी को धोखा देता है बल्कि असल यह है कि–

"केवल मंत्र (या आयत) सुनकर मात्र दलील से मंत्रों (और आयतों) के मायना बयान कर देना काफ़ी नहीं है बल्कि हमेशा अवसर व स्थान के हिसाब से आगे व पीछे के सबंध व सम्पर्क को देखकर मायना करने चाहिए।" (भूमिका पृ0 52)

अतः आयत का साफ़ मतलब है कि कपटी अपने ईमान को प्रकट करके अल्लाह के रसूल को धोखा देते हैं अल्लाह उनको इस धोखे की सज़ा देगा।"

पहले वाक्य में हमने खुदा के शब्द से खुदा का रसूल तात्पर्य लिया है इसे अरबी भाषा में हजफ़ मुज़ाफ़ कहते हैं इसके यह मायना हैं कि मिश्रण शब्द से ख्याति की वजह से एक हिस्से को

अलग कर देते हैं जैसे आर्य समाज की जगह समाज ही बोला जाता है मगर हां ऐसे इस्तेमाल के लिए कोई क़रीना आवश्यक होता है इसका अर्थ यह नहीं जैसे कुछ हठ धर्मियों[1] ने ग़लत समझे हैं कि मुज़ाफ़ इलैह से तात्पर्य मुज़ाफ़ है नहीं, बल्कि मुज़ाफ़ वहां हज़फ़ होता है। इसका दूसरा उदाहरण अरबी में लेना चाहो तो सुनो। "व जाहिदू फ़िल्लाहि" जिसका शाब्दिक अनुवाद है "अल्लाह में जिहाद करो" मगर मुज़ाफ़ है अर्थात (फ़ी सबीलिल्लाहि) "अल्लाह की राह में जिहाद करो। अतः ठीक इसी तरह इस आयत इन्नल मुनाफ़िकूना युख़ादिऊनल्लाहि (सूरह निसा 142) का यह मायना हैं कि कपटी अल्लाह के रसूल को धोखा देते हैं। इस मायना की बात यह है कि एक और स्थान पर अल्लाह ने इस धोखे का उल्लेख किया है तो ख़ास पैग़म्बर साहब को धोखा का शिकार बताया है सुनो।

"कुछ लोगों (कपटियों) की बातें दुनिया में भली मालूम हों और वे तेरी मुहब्बत और निष्ठा पर अल्लाह को गवाह बनाते हैं यद्यपि वे सख़्त दुश्मन हैं।" (सूरह बक़रा 204)

दूसरा क़रीना इस वजह का वह आयत है जहां पर अल्लाह ने इस धोखा के बारे में मुसलमानों का उल्लेख किया है और रसूल का उल्लेख नहीं किया बल्कि बजाए रसूल के स्वयं अपना नाम लिया है। सुनो।

"युख़ादिऊनल्लाह वल्लज़ीन आमनु" (बक़रा–9) अल्लाह को (अर्थात ख़ुदा के रसूल को) और ईमानदारों को धोखा देते हैं इसलिए कि जो मामला दूत से दूत की हैसियत से होता है वह हक़ीक़त में दूत भेजने वाले से नहीं होता है कौन नहीं जानता कि

1–पंडित लेखराम लेखक के झूठ की ओर इशारा है।

डिपटी कमिशनर से जो राज्य का साधारण अफ़सर है कोई सन्धि या विद्रोह करे वह ठीक राज्य और राज्य के मालिक से है चाहे इस सन्धि की या विद्रोह की उसे ख़बर भी न हो। यही मायना हैं इस आयत के जिस पर पक्षपातियों ने अपने पक्ष पात का सबूत दिया है कि मुहम्मद को आखिर कार ख़ुदा बनने का शौक़ हुआ था। सुनो वह यह है।

"वे लोग जो तुझ से (ऐ रसूल) बैअत करते हैं वे अल्लाह से (बैअत) करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है।"

(सूरह फतह – 10)

ख़ुदा के संबंध में धोखा का शब्द भी इसी प्रकार उल्लेखनीय है क्योंकि धोखा जो कमज़ोर बलवान से करता है उसकी संभावना अल्लाह की निसबत नही हो सकती। अल्लाह स्वयं फ़रमाता है। व हुवल क़ाहिरू फ़व क़ इबादिही (सूरह अनआम –18)

"वह अपने सब बन्दों पर छाया हुआ है।" अतः मालूम हुआ कि धोखा देना जो कमज़ोरी से होता है अल्लाह की निसबत सही नहीं अतः उसके मायना यही सही हैं कि अल्लाह उनको इनकी सज़ा देगा।

स्वामी जी! भूमिका पृ० 52 पर हमने अमल किया या तुमने अपने कहे हुए पर स्वयं ही अमल न किया। कहो जी! कौन धर्म है–?

मुसलमानों की दोस्ती और गैरों से दुश्मनी का जवाब न0 48 में देखिए।

(62) "ऐ लोगो! निस्संदेह आया तुम्हारे पास सन्देष्टा हक़ के साथ तुम्हारे पालनहार से, अतः ईमान लाओ अल्लाह पर जो उपास्य अकेला है।" (आयत 166–167)

आपत्ति

क्या जब सन्देष्टाओं पर ईमान लाना लिखा तो ईमान में सन्देष्टा

अल्लाह का साझी हुआ या नहीं। अल्लाह सीमित स्थान वाला है सर्व व्यापक नहीं तब ही तो उसके पास सन्देष्टा आते जाते हैं। ऐसा तो ख़ुदा नहीं हो सकता। कहीं सर्व व्यापक लिखते हैं कहीं सीमित स्थान वाला। इससे स्पष्ट होता है कि क़ुरआन एक व्यक्ति का बनाया हुआ नहीं है बल्कि बहुत से लोगों ने बनाया है।

आपत्ति का जवाब

बड़ा पापी है वह मनुष्य जो वाचक के कलाम की मन्शा के खिलाफ़ मायना निकाले। (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7)

विस्तृत जवाब के लिए न0 21, न0 53, न0 55, न0 122 आदि देख लीजिए।

(63) सूरह मायदा। "तुम पर हराम किया गया मुर्दार, रक्त सुअर का मांस, जिसपर अल्लाह के सिवा कुछ और पढ़ा जाए, गला घोंटे, लाठी मारे, ऊपर से गिर पड़े, सींग मारे और दरिंदे का खाया हुआ।" (आयत – 2)

आपत्ति

क्या इतनी ही चीज़ें हराम हैं? और बहुत से हैवान कीडे मकौड़े आदि मुसलमानों के लिए हलाल हैं। ये सारी बातें मनुष्य की गढ़ंत हैं ईश्वर की नहीं। इसलिए प्रमाणिक ही नहीं।

आपत्ति का जवाब

क्या ही उचित सवाल है पंडित जी! आप तो बताइए कि सिवाए मांस और अंडों जैसे स्वादिष्ठ आहार के आर्यों पर कुछ और चीज़ें भी हराम हैं? शेष न0 33 में देखिए।

(64) "और क़र्ज़ दो अल्लाह को अच्छा अलबत्ता मैं तुम्हारी बुराई दूर करूंगा और तुम्हें जन्नतों में दाखिल करूंगा।" (आयत – 11)

आपत्ति

वाह जी वाह, मुसलमानों के खुदा के घर में कुछ भी दौलत नहीं रही होगी। यदि होती तो क़र्ज़ क्यों मांगता? और उनको क्यों बहकाता। यह कह कर कि तुम्हारी बुराई दूर करके तुम को जन्नत में भेजूंगा। इस से स्पष्ट होता है कि अल्लाह के नाम से मुहम्मद साहब ने अपना मतलब निकाला है।

आपत्ति का जवाब

"जो लोग आगे पीछे संदर्भ एवं अवसर को न समझें ऐसे नापाक बातिन वाले जाहिलों को निश्चय ही ज्ञान नहीं होता।"

(भूमिका – पृ0 52)

विस्तृत जानकारी न0 39 में देख लीजिए।

(65) "बख़्शता है जिसे चाहता है और यातना देता है जिसे चाहता है और दिया तुम को कुछ न दिया किसी को।"

(आयत – 17 – 18)

आपत्ति

जिस प्रकार शैतान जिसे चाहता है गुनाहगार बनाता है वैसे ही मुसलमानों का खुदा भी शैतान का काम करता है? यदि ऐसा है तो फिर जन्नत और जहन्नम में अल्लाह ही जाए क्योंकि वह गुनाह व सवाब का कराने वाला है। आत्माएं दूसरे की मोहताज हैं जिस तरह कि सेना अपने सेनापति के अन्तर्गत रहती और उसके आदेश से किसी को मारती हैं तो इस हालत में भलाई एवं बुराई सेनापति को होती है सेना को नहीं।

आपत्ति का जवाब

अल्लाह की इच्छा व इरादा का जवाब न0 40 में दे आए हैं अलबत्ता इस वाक्य का कि वह (खुदा) "गुनाह व सवाब कराने वाला

है" जवाब सार में यहां प्रस्तुत करते हैं। स्वामी जी सुन लीजिए।

परमेश्वर आदेश देता है और उस आदेश से पहले आप भूमिका में लिखते हैं– कि

"उस ईश्वर के पथ प्रदर्शन दिखाए हुए धर्म को मानना हर मनुष्य पर समान अनिवार्य है और चूंकि उसकी मदद के बिना सच्चे धर्म का ज्ञान और पाबन्दी और पूर्ति व सफलता नहीं हो सकती इसलिए हर मनुष्य को ईश्वर से इस प्रकार मदद मांगनी चाहिए।'

(भूमिका पृ0 60)

इससे आगे यजुरवेद का मंत्र दुआ वाला प्रस्तुत है जो हमने न0 22 में दिया है। तो बताइए कि जब परमेश्वरी पथ प्रदर्शन पर अमल करना बिना उसकी मदद के नहीं हो सकता तो गुनाह व सवाब कराने वाला कौन हो? वही निराकार सचदानन्द सर्वशक्तिमान वहदहु ला इला ह इल्ला हू फिर भी हम यही कहेंगे कि आपने अल्लाह के इरादा के मायना जिससे यहां का शब्द यशा ऊ वर्त्तमान काल निकला है आप नहीं समझे। तनिक न0 40 फिर दोबारा ध्यान से पढ़िए।

(66) "और आज्ञा पालन करो अल्लाह का और कहा मानो रसूल का।" (आयत – 90)

आपत्ति

देखिए! यह बात ईश्वर के साझी होने की है फिर ईश्वर को ला शरीक मानना व्यर्थ है।

आपत्ति का जवाब

व्यर्थ की बातों का जवाब बार बार नहीं दिया जाता। न0 21, 53, 55 आदि देख लीजिए।

(67) "माफ़ किया अल्लाह ने उस चीज़ से जो कि गुज़रा और

जो कुछ फिर करेगा। तो बदला लेगा अल्लाह उससे।"

(आयत – 93)

आपत्ति

किए हुए गुनाहों का माफ़ करना मानो गुनाहों को कम करने का आदेश देकर बढ़ाना है। गुनाह माफ़ करने का उल्लेख जिस किताब में हो वह न तो अल्लाह का कलाम है और न किसी विद्वान की किताब बल्कि गुनाहों को बढ़ाने का सबब है। हां भविष्य में गुनाहों से बचने के लिए किसी से दुआ और स्वयं छोड़ने के लिए कोशिश व तौबा करना वाजिब है लेकिन यदि केवल तौबा ही करता जाए और छोड़े नहीं तब भी कुछ नहीं हो सकता।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी की तो आदत है कि एक ही बात की बे फ़ायदा तकरार करते हैं तौबा के बारे में विस्तृत जवाब न0 22 में देखें।

(68) सूरह अनआम " और उस आदमी से अधिक गुनाहगार कौन है जो अल्लाह पर आरोप लगाता है और कहता है कि मेरी तरफ़ वहय की गयी है लेकिन उसकी तरफ़ वहय नहीं की गयी और कहता है कि मैं भी उतार दूंगा जैसे अल्लाह उतारता है।"

(आयत – 98)

आपत्ति

इस बात से साबित होता है कि जब मुहम्मद साहब कहते थे कि मुझ पर अल्लाह की तरफ से वहय उतरती है तो किसी दूसरे ने भी मुहम्मद साहब की तरह लीला रची होगी कि मेरे पास भी आयतें उतरती हैं। मुझको भी पैग़म्बर मानो। उसको हटाने और अपना सम्मान बढ़ाने के लिए मुहम्मद साहब ने यह तदबीर की होगी।

आपत्ति का जवाब

निस्संदेह मुसैलमा कज़्ज़ाब (झूठे) ने यमामा में नुबुवत का दावा किया था और आप उस समय होते तो जैसी कुछ आपकी सत्य से दुश्मनी साबित है पूरी पूरी संभावना है कि आप मुसैलमा कज़्ज़ाब से बढ़कर नुबुवत के दावेदार होते लेकिन हम आपको उस समय भी यही दोस्ताना नसीहत करते कि आपकी यह कोशिश बेकार है।

मगर आयत का मतलब यह नहीं बल्कि आपके भाई बिरादर अरब के इन्कारी नबियों के सरदार भी झुठलाया करते थे और कहते थे कि इसको तो वहय पहुंचती नहीं। यूं ही अपने पास से गढ़ लेता है। इनके जवाब में यह आयत उतरी थी लेकिन चूंकि आप अरबी पाठ शाला में विद्यार्थी नहीं रहे इसलिए मन गढ़त बातें बनानी आती हैं क्यों न हो।

"नापाक बातिन वालों को ज्ञान कहां?" (भूमिका पृ0 52)

(69) सूरह आराफ़– "बेशक पैदा किया हमने तुमको फिर सूरतें बनायीं हमने तुम्हारी और कहा हमने वास्ते फ़रिश्तों के कि आदम को सज्दा करो। अतः उन्होंने सज्दा किया मगर इबलीस सज्दा करने वालों में से न हुआ। कहा जब मैंने तुझे हुक्म दिया फिर किसने रोका कि तूने सज्दा न किया। कहा मैं इससे बेहतर हूं। तूने मुझे आग से और इसे मिट्टी से पैदा किया। कहा बस उतर इसमें से। अतः नहीं लायक़ वास्ते तेरे यह घमंड करे तू बीच इसके। तो बेशक तू अपमानितों में से है। कहा ढील दे मुझको उस दिन तक कि क़ब्रों से उठाए जाएं। कहा ढील दिए गए हुओं में से है। कहा तो क़सम है उसकी कि गुमराह किया तूने मुझे अलबत्ता बैठूंगा मैं वास्ते इनके तेरे सीधे रास्ते पर और अधिकांश तू इनमें शुक्र करने वाला न पाएगा। और कहा इससे बुरे हाल से निकल भटकता हुआ अलबत्ता

जो कोई अनुसरण करेगा तेरा इनमें से अलबत्ता भर दूंगा जहन्नम को तुम सब से।" (आयत –9–15)

आपत्ति

ध्यान से खुदा और शैतान के झगड़े सुनिए। एक फ़रिश्ता जैसा कि चपरासी होता है होगा वह भी खुदा से न दबा और खुदा उसकी रूह को भी पाक न कर सका फिर ऐसे बाग़ी को जो सबको गुनाहगार बनाकर उज़्र (बहाना) करने वाला है खुदा ने छोड़ दिया। खुदा की यह सख़्त ग़लती है कि शैतान तो सबको बहकाने वाला और खुदा शैतान को बहकाने वाला होने से यह साबित होता है कि शैतान का शैतान खुदा है क्योंकि शैतान मुंह पर कहता है कि तूने मुझे गुमराह किया। इससे खुदा में पाकीज़गी भी नहीं पाई जाती और सारी बुराइयों के पैदा होने का सबब खुदा हुआ। ऐसा खुदा मुसलमानों ही का हो सकता है दूसरे सज्जन विद्वानों का नहीं और मुसलमानों का खुदा फ़रिश्तों से मनुष्य की भान्ति बात चीत करने से साकार अल्प बुद्धि, अन्यायी साबित होता है इसीलिए विद्वान इस्लाम धर्म को पसन्द नहीं करते।

आपत्ति का जवाब

"बड़ा पापी है वह मनुष्य जो वाचक की मन्शा के विरुद्ध मायना करे।" (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7)

अपराधी का हाकिम के सामने अपना मुक़दमा प्रस्तुत करने का नाम झगड़ा रखना स्वामी जी या उनके चेले पंडित लेख राम की समझ का नतीजा है।

स्वामी जी! अभी तो पिछले नम्बरों में आप तौबा कुबूल होने पर सख़्त नाराज़ हैं यहां कहते हैं कि "खुदा उसकी आत्मा को पाक न कर सका।" तौबा की स्वीकृति बिना पवित्रता के कैसी? क्या तौबा

कुबूल होकर गुनाहों की माफ़ी को मानते हो? यदि इस्लामी नियम पर सवाल है तब भी ग़लत क्योंकि इस्लामी नियमानुसार पाक होने के लिए तौबा और लज्जित होना शर्त है जो शैतान ने नहीं किया। तो आप ही बताएं कि वाचक की मन्शा के ख़िलाफ़ अनुवाद करना हठ धर्मियों का काम है या किसी और का?

बाक़ी शैतानी बातों का जवाब न0 32 में देख लें, हां यह भली कही कि मुसलमानों का खुदा फ़रिश्तों से मनुष्यों की भान्ति बात करने से साकार अल्प बुद्धि व अन्यायी साबित होता है।

स्वामी जी सुनिए! ईश्वर आदेश देता है।

"ऐ इन्सानों! जो व्यक्ति मानव परिधि में उच्चतम तेज व प्रताप रखता हो।" (यजुर वेद)

और सुनिए! ईश्वर पथप्रदर्शन करता है कि।

"ऐ आज्ञा पालकों! तुम्हारे अग्नि वाले हथियार।"

(ऋगवेद सत्यार्थ प्रकाश पृ0 181 समलास 6 न0 5, 6, 7)

स्वामी जी! यहां पर परमेश्वर इतनी ही बातें बनाने, सर्कुलर पारित करने से भी अल्पबुद्धि और अन्यायी साबित हुआ या नहीं?

प्रिय पाठकों! हम सिफ़ारिश करते हैं कि पंडित जी को ऐसे उचित सवाल करने में विवश समझए आखिर वह तो एक मनुष्य ही हैं।

ईश्वरीय कामों के बारे में कि वे किस तरह होते हैं हम न0 53 में बयान कर चुके हैं।

(70) "बेशक अल्लाह तुम्हारा पालनहार है जिसने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया छः दिन में फिर क़रार पकड़ा उसने ऊपर अर्श को पुकारा अपने पालनहार को विनम्रता से।"

(आयत – 50–51)

आपत्ति

भला जो छः दिन में दुनिया को बना दे अर्श पर तख्त पर आराम करे वह खुदा व सर्वशक्ति मान और सर्व व्यापक कभी हो सकता है? इन गुणों के होने से वह खुदा भी नहीं कहला सकता। क्या तुम्हारा खुदा बहरा है जो पुकारने से सुनता है? ये सारी बातें खुदा की ओर से नहीं हैं इसी से कुरआन खुदा का बनाया हुआ हो नहीं सकता। यदि छः दिन में जन्नत बनायी और सातवें दिन अर्श पर आराम किया तो थक भी गया होगा और अब सोता या जागता है? यदि जागता है तो अब कुछ काम करता है या निकम्मा बनकर सैर सपाटा और ऐशो आराम करता फिरता है।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी! महीने में खेती पकती है नौ महीने में बच्चा पेट में बनता फिरता है तो सर्व शक्ति मान कभी हो सकता है? कहिए इन गुणों के न होने से वह परमेश्वर भी कहला सकता है? ठीक इसी तरह अल्लाह के काम हैं। अफ़सोस कि आप आपत्ति करते हुए विश्व व्यवस्था पर सोच विचार नहीं करते।

इस्तवा अलल अर्शि (यूनुस–30) का शाब्दिक अनुवाद बेशक यही है जो आपने किया है लेकिन।

"केवल आयत सुनकर या मात्र दलील से आयतों के मायना बयान कर देना काफ़ी नहीं है बल्कि हमेशा पृष्ठ भूमि व संदर्भ के ठीक आगे और पीछे के विषय को देखकर मायना निकालना चाहिए। (भूमिका – पृ0 52)

और सुनिए।

"जहां मायना की संभावना न हो वहां अ वास्तविक मायना लिए जाएंगे।" (भूमिका पृ0 10)

तो अब सुनिए कुरआन बताता है।

"क्या वे लोग नहीं जानते कि जिस खुदा ने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया और उनके पैदा करने से थका भी नही।"

(सूरह अहकाफ़– 33)

और सुनिए अल्लाह कहता है–

"उस खुदा के जैसी कोई चीज नहीं वह सुनता और देखता है।

(सूरह शूरा -11)

और सुनिए अल्लाह की किताब बताती हैं।

" न उसे ऊंघ आती है न नींद। वह ज़मीन व आसमान की हिफ़ाजत से थकता नहीं और वह बहुत बुलन्द दर्जा और बड़ी महानता वाला है।" (सूरह बकरा – 55)

इन आयतों से साफ़ मालूम होता है कि अल्लाह आसमान व ज़मीन के पैदा करने से नहीं थका बल्कि आयत का टुकड़ा व लम यअया बिख़लकिहिन्न (अहक़ाफ़–33) से यहूदियों और ईसाइयों की किताबों के एक ग़लत वाक्य का सुधार मंजूर है क्योंकि कुरआन के बारे में अल्लाह ने मुहैमिना' नाम का गुण भी बताया है (अर्थात निगहबान या रक्षक देखो न0 5) वह टुकड़ा खुरूज–31 अध्याय की 17 में मौजूद है।

"और छः दिन में खुदा ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और सातवें दिन आराम किया और ताज़ा दम हुआ।"

तो अब इस आयत का मतलब सुनिए! खुदा ने छः दिन में आसमान व ज़मीन और जो कुछ इनमें है पैदा किए फिर इन पर उचित शासन करना आरंभ किया अर्थात इनकी देखरेख और विनाश से रक्षा करता है।

सुनो कुरआन बताता है।

"इस्तवा अलल अर्शि का मायना हमने "लोगों (प्राणियों) पर आदेश पारित किए हैं इसलिए कि जब कोई बादशाह किसी देश का शासन अपने हाथ में लेता है चाहे तख़्त पर बैठे या न बैठे तो अरबी इस अवसर पर कहा करते थे...... इस्तवा अलमुल्कु अलल अर्श अर्थात बादशाह तख़्त पर बैठा है।

(देखो कितावुल इशारा इलल ईजाज़ फ़ी बाअज़ अनवाउल मजाज़ पृ0 110)

और यदि कुरआनी आयत पर सोच विचार करे तब भी यही मायना स्पष्ट रूप से समझ में आते हैं जिस आयत का अनुवाद पंडित जी ने नक़ल किए हैं।

"बेशक तुम्हारा रब तो अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा कर दिया। फिर अर्श पर (अर्थात कायनात की बादशाही के तख़्त पर) स्वयं ही प्रदर्शित हुआ। वही ढांक देता है रात से दिन को जो लगातार एक एक दूसरे के आगे पीछे दौड़ते हुए आते रहते हैं और सूरज और चांद तारों को उसने अपने आदेश से काम में लगा रखा है। सचेत रहो कि पैदा करना और हुक्म चलाना केवल उसी का काम है बड़ी बरकत वाला अल्लाह है जो पालनहार है सारे जहानों का।" (सूरह आराफ –54)

यदि इस अनुवाद को ही ध्यान पूर्वक देखा जाए तो यही समझ में आता है कि अल्लाह तआला अपने शासन के बारे में बयान करता है अतएव आयत के समापन पर अला लहुल ख़ल्क़ वल अमरू (सुन रखो उसी की ख़ल्क़ है और उसी का हुक्म है) इन्हीं मायना की ओर इशारा करता है और एक अवसर पर भी अल्लाह ने इस्तवा अलल अर्श के बराबर ऐसे शब्द को रखा है जो हुकूमत के मायना में है अतएव इर्शाद है– " अल्लाह ऊपर से नीचे वालों का इन्तज़ाम करता है।" (सज्दा –5)

तो इन और पूर्व के हवालों से यह साफ़ समझ में आता है कि इन विवादित आयत के मायना जो हमने किए हैं सही हैं। हां यदि यह सन्देह हो कि ज़मीन व आसमान आदि के पैदा करने से पहले अल्लाह की हुकूमत न थी तो वाक्य न0 16 को देखिए।

अल्लाह बहरा नहीं बल्कि आप भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7 पर जमे हुए हैं। अल्लाह तो स्पष्ट फ़रमाता है।

"छुपकर पुकारो या ज़ोर से ख़ुदा तो सीनों के भेदों से भी परिचित है।" (सूरह मुल्क –13)

स्वामी जी! भूमिका पृ0 52 का मतलब केवल ग़ैरों के लिए है आपके लिए नहीं? अल्लाह के निकम्मा होने की बाबत एक तो आयत जो गुजर चुकी उसमें काफ़ी जवाब है दूसरी सूरह रहमान की आयत न0 29 कुल्ला यवमिन हुवा फ़ी शानिन0

"और उसकी यह शान है कि हर दिन काम में व्यस्त है।"

(रहमान – 29)

(71) "मत फ़साद करते फिरो ज़मीन पर।" (आयत – 77)

आपत्ति

यह बात तो अच्छी है लेकिन इस के विपरीत दूसरे स्थानों पर जिहाद करना और काफ़िरों को क़त्ल करना भी लिखा है। अब कहो क्या यह ज़िद व हठ धर्मी नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जब मुहम्मद साहब पराजित हुए होंगे तब उन्होंने यह तरीक़ा निकाला होगा और जब विजयी हुए होंगे तब झगड़ा फ़साद किया होगा। इसलिए इस ज़िद व हठ धर्मी के कारण दोनों बातें सही नहीं हैं।

आपत्ति का जवाब

"हठ धर्मी आदमी को कोर बातिन बना देती है।"

(भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7)

विस्तृत जवाब वाक्य न0 2 आदि में देखो।

(72) "अतः डाल दिया असा (लाठी) अपना अचानक और वह अजदहा था देखने में।"

आपत्ति

इसके लिखने से स्पष्ट होता है कि ऐसी झूठी बातों को मुहम्मद साहब भी मानते थे। यदि ऐसा है तो ये दोनों विद्वान नहीं थे जैसा कि आंख से देखने और कान से सुनने के अमल को कोई भी ख़िलाफ़ नहीं बता सकता वैसे ही लाठी का अजदहा नहीं हो सकता इसलिए यह शोबदा बाज़ों की बातें हैं।

आपत्ति का जवाब

चमत्कार को मानने वाले सारी दुनिया के लोग हैं सिवाए कुछ आर्यों के जिनकी गिनती उंगलियों पर गिनी जा सकती है अतः बताइए।

"जो कोई दूसरे धर्म को जिसे करोड़ों आदमी सच्चा जानते हों झूठा कहे और आप सच्चा बने उससे बढ़कर झूठा कौन है?"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 217, समुल्लास 14 न0 73)

विस्तृत देखो वाक्य न0 14, 23

(73) "अतः हमने उस पर वर्षा का तूफ़ान भेजा, टिड्डी, चिचड़े मेंढक और रक्त। अतः उनसे हमने बदला लिया। और उसे डुबो दिया दरिया में। और हमने बनी इसराईल को पार उतारा बेशक वह दीन झूठा है कि जिसमें हैं और उनका काम भी झूठा है।"

(आयत 119 125)

आपत्ति

देखिए! जैसा कोई पाखंडी किसी को डराए कि हम तुझ पर सांपों को मारने के वास्ते छोड़ेंगे। वैसी ही बात कि भला जो ऐसा

पक्षपाती है कि एक क़ौम में डुबोए और दूसरी को पार उतारे वह खुदा हठ धर्म क्यों नहीं? जो धर्म दूसरे धर्मों को कि जिनके हज़ारों करोड़ों आदमी अनुयायी हों झूठा बतला दे और अपने को सच्चा ज़ाहिर करे उससे बढ़कर झूठा धर्म कौन सा हो सकता है? क्योंकि किसी धर्म में सारे आदमी बुरे और भले नहीं हो सकते। किसी एक को डिग्री देना बड़ा भारी जाहिलों का ही धर्म है क्या तौरेत जुबूर का दीन जो कि उनका झूठा हो गया? या उनका कोई धर्म था कि जिसको झूठा कहा और यदि यह धर्म कोई और था तो कौन सा था बताओ? यदि उसका नाम कुरआन में मौजूद है।

आपत्ति का जवाब

इस वाक्य का पिछला हिस्सा पहले का काफ़ी जवाब है। पाठक तनिक इस वाक्य को ध्यान से पढ़ें। फिर समाजियो से इस वाक्य का ध्यान रखते हुए पंडित जी के लिए कोई उचित पद प्रस्तावित कराएं। हम भी इसी पर हस्ताक्षर कर देंगे।

समाजियो! बताओ हज़रत मूसा के चमत्कारों को मानने वाले करोड़ों हैं या कम हैं। यहूदी ईसाई और मुसलमान तो ख़ास इन चमत्कारों को मानने वाले हैं हिन्दू भी अपने बुजुर्गों के लिए इन तीनों क़ौमों के चमत्कारों को मानने में किसी से कम नहीं। क्योंकि स्वामी जी ने किसी तर्क पर बुनियाद नहीं रखी बल्कि केवल यही फ़रमाया कि जिस धर्म के करोड़ों श्रद्धालु हों। हां यह भली कही कि "जो ऐसा पक्षपाती है कि एक क़ौम को डुबो दे और दूसरी को पार उतार दे। वह खुदा अधर्मी क्यों नहीं?

पंडित जी! परमेश्वर की आज्ञा सुनो।

"ऐ मनुष्यो! तुम्हारे पास अग्नि हथियार और तीर व कमान आदि शस्त्र मेरी कृपा से शक्ति शाली और तुम्हें विजय प्राप्त हो।

चरित्रहीन दुश्मनों की पराजय और तुम्हारी विजय हो और तुम्हारा मुकाबिल पराजित हो और नीचा देखे। मैं बदकार ज़ालिमों को आशीर्वाद नही देता।" (ऋग वेद अष्टक– 1, अध्याय 3 वरग 18 मंत्र 2)

इस मंत्र में सारे मनुष्य तो तात्पर्य नहीं हो सकते बल्कि ख़ास आर्य तात्पर्य हैं क्योंकि समस्त मनुष्य तात्पर्य हों तो उनके दुश्मन कौन होंगे। इस मंत्र ने कई एक लेखों में फ़ैसला दिया है बड़ा प्रसिद्ध लेख आर्य समाज का प्राचीन वेद है अर्थात समाजी दावा करते हैं कि वेद प्रारंभिक दुनिया में ईश्वरीय संकेत द्वारा वजूद में आया था। इससे पहले दुनिया में आबादी न थी बल्कि उसके तत्व ही शुरू में पैदा हुए थे और उन्हीं पर वेद ईश्वरीय संकेतों द्वारा उतरे थे। यह मंत्र बता रहा है कि उसके बनते या आर्य समाज के कथनानुसार) या उतरने के समय मनुष्य विभिन्न सांस्क्रतिक हालत में थे ऐसे कि एक दूसरे से दुश्मनी व दोस्ती की भी नौबत पहुंच चुकी थी। इस मसले में पूरा एक मुस्तकिल रिसाला वेद है आप लोग उसे अवश्य पढ़ें।

स्वामी जी! क्या इस न्याय से भी ईश्वर अधर्मी नहीं होता तो किससे होगा। आर्यो का दुश्मन चाहे सच पर भी है। फिर भी उसे विनष्ट करने पर ईश्वर तत्पर है फिर यह भी एक तरफ़ा हुआ कि नहीं? ग़ाज़ी महमूद और मुहम्मद ग़ौरी के हालात पढ़ने वाले डी ए वी स्कूल और कालेज के छात्रों! बताओ हम सच कहते हैं या नहीं?

असल यह है कि पंडित जी को क़ुरआन शरीफ़ से नहीं बल्कि हक्क़ानी शिक्षा से ऐसी कुछ दुश्मनी मालूम होती है कि क़ुरआन शरीफ़ मुक़ाबले पर एक और एक दो कहने से भी जी चुराते हैं देखते नहीं कि यह अवज्ञाकारी, दुष्ट, पापी फ़िरऔनी का हाल है जिसने बन्दगी से चढ़कर ईश्वरत्व का दावा किया और जिस

अल्लाह के बन्दे (हज़रत मूसा) ने उसको बन्दा कहा और बन्दा कहलाने पर ज़ोर दिया उसको उस ज़ालिम ने यह कह कर ...... धमकाया।

"ऐ मूसा! यदि तू मेरे सिवा किसी और को ख़ुदा समझेगा तो मैं तुझे क़ैद कर दूंगा।" (सूरह शोअरा – 29)

इसी पाजी को सज़ा मिलने पर स्वामी दयानन्द आर्यो महा ऋषि ख़ुदा को अधर्मी कहते हैं क्यों न हो सत्य से दुश्मनी करने के यह मायना हैं।

जो निकले जहाज़ उनका बच कर भंवर से
तो तुम डाल दो नाव अन्दर भंवर के

स्वामी जी का न्याय और ईमानदारी स्पष्ट करने को हम इस बहस वाली आयत को पूरी नक़ल करते हैं ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि उस ख़ुदा के बन्दे को सत्य कितनी नफ़रत थी। वही मूर्ति पूजा है जिसकी जड़ उखाड़ने पर आर्य तुले बैठे हैं मगर क़ुरआन शरीफ़ में जब उस मूर्ति पूजा का विरोध आता है तो आप उसकी हिमायत पर खड़े हो जाते हैं। पूरी आयत यूं है।

"ध्यान से सुनो अल्लाह फ़रमाता है-- " हमने बनी इसराईल को दरिया से पार उतारा वे एक मूर्ति पूजक क़ौम पर से गुज़रे। उनको देख कर उन्होंने हज़रत मूसा से प्रार्थना की कि जैसे इनके उपास्य हैं हमें भी उपास्य बना दे। हज़रत मूसा ने कहा। तुम बड़े नादान हो यह नहीं समझते कि ये लोग जो कुछ कर रहे हैं सब का सब व्यर्थ है और जिस दीन पर ये हैं (मूर्ति पूजक) वह दीन झूठा है। क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और उपास्य बना दूं? यद्यपि उसने तुमको सारे जहान पर बुज़ुर्गी प्रदान की है। (आराफ़ –138 –140)

समाजियो सच कहना, अपने चौथे उसूल को याद करके कहना

कि इस नम्बर में स्वामी जी की नागाज़्गी मूर्ति पूजा की हिमायत में है या नहीं। क्यों न हो कुछ तो वैदिक मत का समर्थन और कुछ बिरादरी का प्राचीन लिहाज़, आखिर इतना भी न करें तो क्या बिल्कुल ही छोड़ दें। चोर चोरी से जाए हेरा फेरी से तो नहीं जाता।

(74) "तो अलबत्ता देख सकेगा तू मुझको। तो जब प्रकाश किया पालनहार ने उस पहाड़ की ओर। किया चूरा चूरा उसको और गिर पड़ा मूसा बेहोश।"

आपत्ति

जो देखने में आता है वह सर्वव्यापी नहीं हो सकता और यदि ऐसे चमत्कार करता फिरता था तो ईश्वर इस समय ऐसे चमत्कार किसी को क्यों नहीं दिखलाता। बिल्कुल झूठ होने से यह बात मानने योग्य नहीं।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी! यदि कोई बात समझ में न आए तो पूछने में क्या शान में कमी आ जाएगी? मुख्यरूप से ऐसी कि जिसके प्रकटन पर अन्त में लज्जित होना पड़े। वही बात है कि।

"हठ धर्मी धर्म की अंधियारियों में फंस कर बुद्धि को भ्रष्ट कर लेते हैं।" (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ० 7)

हम स्वामी जी और उनके चेलों के लिए नहीं बल्कि सामान्य पाठकों के न्याय के लिए इस बहस वाली आयत को पूरा का पूरा नक़ल करते हैं ताकि मालूम हो कि इस आयत से ईश्वर का देखना साबित होता है या न देख सकना।

"हज़रत मूसा जब हमारे निश्चित किए समय पहाड़ पर पहुंचे और उनसे बातें कीं तो वह कहने लगा। मेरे रब मुझे देखने की शक्ति प्रदान कर कि मैं तुझे देखूं...... कहा— तू मुझे कदापि न देख

सकेगा, हां पहाड़ की ओर देख। यदि वह अपने स्थान पर जमा रह जाए तो फिर तू मुझे देख लेगा। अतएव जब उसका रब पहाड़ पर प्रकट हुआ तो उसे चकना चूर कर दिया और मूसा बेहोश होकर गिर पड़ा। फिर जब होश में आया तो कहा महिमा है तेरी, मैं तेरे समक्ष तौबा करता हूं और सबसे पहला ईमान लाने वाला मैं हूं।"

(आराफ़— 143)

पाठक बताएं! इस आयत से क्या समझ में आता है। हज़रत मूसा की तौबा तक तो उल्लेख है लेकिन स्वामी जी अपनी कहते चले जाएं लेकिन आखिर क्या करें वे तो अपने कथन की पुष्टि कराने की कोशिश में हैं कि

"नापाक बातिन वाले जाहिलों को निश्चय ही ज्ञान नहीं होता।"

(भूमिका पृ० 52)

(75) "और याद कर अपने पालन हार को अपने दिल में विनम्रता और डर से और कम आवाज़ से सुबह और शाम को।"

(आयत — 189)

आपत्ति

कहीं तो क़ुरआन में लिखा है कि ऊंची आवाज़ से अपने पालनहार को पुकारो और कहीं लिखा है कि धीमी आवाज़ से अल्लाह की याद करो। अब कहिए कि कौन सी बात सच्ची और कौन सी झूठी है? एक दूसरे के परस्पर विरोधी बातें पागलों की बकवास की भान्ति होती हैं यदि कोई बात भूल से विरुद्ध निकल जाए तो कोई परेशानी की बात नहीं।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी! पागल तो एक तरह से विवश भी हैं लेकिन (आप के कथना नुसार) नापाक बातिन वाले जाहिल जिनको अवसर व

उचित स्थान की समझ न हो और वाचक की मन्शा के खिलाफ़ मायना निकाल कर समय बर्बाद करें पागलों से कहीं बढ़कर पागल होते हैं।"

सुनो कुरआन बताता है।

"तुम अपनी बात छिपाओ या उसे व्यक्त करो, वह तो सीनों तक में छिपी बातों तक को जानता है।" (मुल्क –13)

समाजियो! यदि कोई आयते कुरआनी इस विषय की बताओ कि "ऊंची आवाज़ से अपने पालन हार को पुकारो" तो निम्न विवरण हल करके हम से इनाम ले लो।

यदि बताने वाला मास पार्टी का सदस्य हो तो डी ए वी कालेज के लिए एक सौ रूपया चेहरा दार, और यदि घास पार्टी का महात्मा हो तो एक सौ रूपया लेखराम मेमोरियल फंड के लिए और एक सौ गुरुकुल के लिए सबसे पहले हम देंगे और कोई शर्त नहीं लगाएंगे। यह भी सुन लो कि यह इनाम पहले के इनाम के अलावा है।

दयानन्दियो! तीन चार सौ के इनाम के अलावा अपने गुरू का मान सम्मान रख लो वर्ना दुनिया क्या कहेगी। न0 70 में स्वामी जी को जिस आयत से ऊंचे पुकारने का संदेह हुआ है और ईश्वर को बहरा बना दिया है वह भी सुन लो वह यह है

"अपने पालनहार से दुआ मांगो विनम्रता से और छुपकर।"

(आराफ़ – 55)

बताओ यह आयत ज़ोर से पुकारने के लिए मना करती है या हुक्म देती है। असल में स्वामी जी भी मजबूर हैं। उर्दू में शाब्दिक अनुवाद किसी साहब ने अदवा का पुकारो कर दिया तो स्वामी जी को भला क्या पड़ी थी कि खुफ़यतुन के शब्द को भी देखते। फिर देखो चालाकी कि खुफ़िया के शब्द का अनुवाद ही छोड़ गए और

आजिज़ी (विनम्रता) से पर वाक्य समाप्त कर दिया। देखो न0 70, यद्यपि सारे अनुवादकों में खुफ़िया का अनुवाद छुपकर किया हुआ मौजूद है सच है।

"हठ धर्म वाचक की मन्शा के ख़िलाफ़ मायना किया करते हैं।"

(भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 –7)

और सुनिए– "आगे पीछे की न समझने वाले जाहिलों को निश्चय ही ज्ञान नहीं होता।" (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश – पृ0–52)

(76) सूरह अनफ़ाल – "सवाल करते हैं तुझ को लूटों से, कह लूटें वास्ते अल्लाह के और रसूल के– अतः डरो अल्लाह से।"

(आयत –1)

आपत्ति

हैरत है कि जो लूट मचाएं, डाकू का काम कराएं वे ख़ुदा, पैग़म्बर और ईमानदार कहलाएं। इसी के साथ अल्लाह का डर बताते और डाका मारते जाते हैं। फिर यह कहते शर्म नहीं आती कि हमारा धर्म अच्छा है। इससे बढ़कर और क्या बुरी बात हो सकती है कि पक्षपात को छोड़कर सच्चे वेदिक धर्म को मुसलमान स्वीकार नहीं करते (महाराजः बड़े पापी हैं)

आपत्ति का जवाब

इस न0 का विस्तृत जवाब हम न0 2 में दे आए हैं और वायदा भी कर आए थे कि आगे को इसी न0 2 के हवाले पर सन्तोष करेंगे। यहां स्वामी जी और उनके चेलों की ख़ातिर मनु जी का आदेश सत्यार्थ प्रकाश से सुनाते हैं। दिल लगा कर सुनो। मनु जी आदेश देते हैं।

"इस विधान को कभी न तोड़ें कि लड़ाई में जिस कर्मचारी या अफ़सर ने जो जो गाड़ी, घोड़ा, हाथी, छतर, दौलत, सामान, गाय

आदि जानवर और औरत (हे स्वामी जी ...... यह क्या?) और अन्य प्रकार का माल और घी व तेल आदि के कुप्पे विजय किए हों वही उसे लेवें। लेकिन सेना के आदमी विजय की हुई चीज़ों में से सोलहवां हिस्सा राजा को देवें।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 196, समलास 6 न0 32)

समाजियों! यह कहने के तुम हक़दार नहीं कि मनु जी का कलाम हम नहीं मानते इसलिए कि तुम्हारे ऋषि बल्कि महर्षि ने जब इसको विश्वसनीय और प्रमाणिक समझकर नक़ल किया है तो तुम्हारा यह हक़ समाप्त हो गया।

यही वह लूट है जिसका उल्लेख क़ुरआन में है न यह कि जिसे डाका कहा करते हैं क्योंकि जिस शब्द क़ुरआनी का यह अनुवाद है वह अनफ़ाल है और अनफ़ाल बहुवचन है नफल का। नफ़ल शब्द कोष में माले ग़नीमत को जो कि जंग में विजय पाने वाले के हाथ आता है उसे कहते हैं।

बदर की जंग की विजय के बाद जो इस्लाम में पहली विजय थी ग़नीमत के माल के बांटने के बारे में मुसलमानों में आपसी तकरार हुई। इस पर यह आयत उतरी कि ग़नीमत का माल तुम्हारी राय पर नहीं, बांटा जाएगा बल्कि जिस तरह अल्लाह और अल्लाह के बताने से उसका रसूल आदेश करेगा उसी तरह करना होगा और इस आदेश का विरोध करने में अल्लाह से डरते रहो। अतएव थोड़ा आगे वह हुक्म सुनाया जिसे स्वामी जी ने न0 79 में अधूरा नक़ल किया है वह इस प्रकार है सुनों

"समझ लो कि जो तुम्हें ग़नीमत मिले उसका पांचवा हिस्सा ऐसे बांटो कि पांचवा हिस्सा इस पांचवे हिस्से मे से अल्लाह के रसूल का (जो समय का इमाम हो) और बाकी रिश्तेदारों और यतीमों,

मिसकीनों और ग़रीब मुसाफ़िरों का है (अल्लाह का नाम केवल बरकत के लिए है वर्ना उसका कोई अलग हिस्सा नहीं)

(सूरह अनफ़ाल – 41)

पांचवा हिस्सा हक़दारों के लिए निकाल कर शेष सब जंगी सेना पर बांटा जाएगा। हां स्वामी जी आप ही बताइए कि इसके सिवा उस माल को बांटने की कोई अच्छी विधि भी है। मगर बताते हुए मनु जी का उपर्युक्त बयान याद रहे।

हां यह तो हम मानते हैं कि मुसलमान वास्तव में बड़े पापी हैं कि वेदिक धर्म को नहीं मानते ताकि नियोग आदि में उनको आसानी हो।

(77) "और काटे जड़ काफ़िरों की। मैं मदद दूंगा तुम को साथ हज़ार फ़रिश्तों के पीछे से आने वाले, अलबत्ता मैं काफ़िरों के दिलों में आतंक डाल दूंगा अतः गर्दनों के और मारो उनमें से हरेक को पोरी पर।" (आयत 7–12)

आपत्ति

वाह जी वाह! खुदा और पैग़म्बर कितने दयालू हैं जो लोग इस्लाम धर्म में नहीं हैं उन काफ़िरों की जड़ काटने उनकी गर्दन मारने और उनके जोड़ों को काटने का आदेश देता है और इस काम में उनका सहयोगी बनता है। क्या यह ख़ुदा रावन से कुछ कम है? यह सब धोखा[1] क़ुरआन के लेखक का है। अल्लाह का नहीं। यदि अल्लाह का हो तो ऐसा ख़ुदा हम से दूर रहे और हम उससे दूर रहें।

आपत्ति का जवाब

विस्तृत जवाब न0 2 आदि में मिलेगा। हां ख़ुदा से आपकी दूरी की

1– दयानन्दियों! परमेश्वर के नाम से कहना कि यही कलाम की मधुरता है जिसकी बाबत तुम्हारे स्वामी जी उपदेश मंजरी पृ0 20 पर वे नीनी कहते हैं या हाथी के दांत दो प्रकार के हैं।

हम बल्कि कुरआन पुष्टि करता है —— सुनो।

"बेशक काफ़िर उस दिन दूर पर्दे में रखे जाएंगे।"

(मुतफ़िफ़फ़ीन – 15)

(78) "अल्लाह मुसलमानों के साथ है। ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो पुकारना स्वीकार करो वास्ते अल्लाह के और वास्ते रसूल के। ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो तुम बे ईमानी न करो अल्लाह की और रसूल की और मत बेइमानी करो अमानतों अपने को और मकर करता था अल्लाह और भला मकर करने वालों का है।"

(आयत – 19 – 29)

आपत्ति

क्या अल्लाह मुसलमानों का हिमायती है? यदि ऐसा है तो अधर्म करता है। अल्लाह तो सारे प्राणियों का मालिक है। क्या अल्लाह पुकारे बिना नहीं सुन सकता? उसके साथ रसूल को साझी करना बहुत बुरा है। अल्लाह का कौन सा ख़ज़ाना भरा है जो चुराया जा सके। क्या रसूल की और अपनी अमानत की बेइमानी छोड़कर और सब की बेइमानी किया करें? इस प्रकार की शिक्षा जाहिल और अधर्मियों की हो सकती हैं। भला यदि ख़ुदा मकर करता और मक्कारों का साथी है तो फिर वह ख़ुदा मक्कार धोखे बाज़ और अधर्मी क्यों नहीं? इसलिए यह कुरआन ख़ुदा का बनाया हुआ नहीं है किसी मक्कार, धोखे बाज़ का बनाया हुआ होगा । नहीं तो ऐसी बेकार की बातें क्यों लिखी होती? मगर हमें क्या ज़रूरत है।

आपत्ति का जवाब

न0 12, 53, 75 और 50 में सब बातों का विस्तृत जवाब आ चुका है। स्वामी जी को तो न0 बढ़ाने का शौक़ चर्रा जाता है। हां यह भली कही कि अल्लाह का कौन सा ख़ज़ाना है। हम कई बार कह आए हैं

कि स्वामी जी यदि किसी मौलवी साहब के पास थोड़ा बहुत समय लगाकर कुरआन शरीफ़ सुन लेते तो ऐसे धक्के न खाते। स्वामी जी! कुरआन ख़ुदा की अमानत की टीका स्वयं करता है...... सुनो।

"हमने अपने आदेश आसमानों, ज़मीनों और पहाड़ों पर उतारे (अर्थात) उनके मुनासिब तौर उनको काम दिया) उन सब ने पालन किया मगर इन्सान ने इस अमानत में बेइमानी की। बेशक इन्सान बड़ा ही अन्यायी और जाहिल है।" (सूरह अहज़ाब – 72)

अल्लाह के आदेश ही अल्लाह की अमानत हैं अतः आयत का मतलब बिल्कुल साफ़ है कि शरअी आदेशों से सुस्ती, लापरवाही और उन्हें अनदेखा करना ठीक नहीं। ऐसा न करो। बताइए...... भूमिका पृ0 52 का चरितार्थ कौन है?

हां यह नई लाजिक है कि अपनी अमानत की बेइमानी छोड़कर और सब की बेइमानी किया करें? यह बिल्कुल इसी प्रकार की तक़रीर है जो किसी टेढ़े दिमाग़ वाले लड़के ने खड़े पानी के अन्दर पाख़ाना कर दिया दूसरे ने उसे टोका और कहा कि खड़े पानी के अन्दर पाख़ाना करने को मना किया गया है तूने यह क्या किया। वह बोला बोल करने से मना किया है पाखाना से तो मना नहीं वर्ना शब्द दिखाओ। ऐसी बे समझी की हम भी दाद देते हैं। स्वामी जी को मालूम नहीं कि मुसलमानों के धर्म में दूसरी क़ौमों के साथ दो तरह से मामला होता है। यदि वह शान्ति से हैं तो शान्ति से और यदि जंग की हालत में हैं तो जंग से। शान्ति से रहने वालों का शरीअत में वही हुक्म है जो आपस में मुसलमानों का है। जंग वालों का हुक्म वही है जो मनु जी का फ़रमान है सुनो।

"उस दुश्मन के देश को तकलीफ़ पहुंचाकर चारा, आहार, पानी और बेज़म को विनष्ट कर दो।" (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 211– समलास 6 न0 53)

लेख तो साफ़ है मगर इसका क्या इलाज है कि।

"नापाक बातिन वालों को निश्चय ही ज्ञान नहीं होता।"

(भूमिका पृ0 52)

(79) "और लड़ो उन से यहां तक कि न रहे फ़ितना अर्थात काफ़िरों का ज़ोर और सारा दीन अल्लाह के वास्ते हो जाए। और जानो तुम यह कि जो कुछ लूट लो किसी चीज़ से बेशक वास्ते अल्लाह के है पांचवा हिस्सा उसका और वास्ते रसूल के।"

(आयत – 38 – 40)

आपत्ति

ऐसे अन्याय से लड़ने वाला मुसलमानों के ख़ुदा के सिवाए शान्ति में हस्तक्षेप करने वाला दूसरा कौन होगा। अब देखिए यह कैसा धर्म है क्या अल्लाह और रसूल के नाम पर सारे जहान को लूटना लुटवाना तबाही व बर्बादी का काम नहीं है? और क्या खुदा भी लुटेरा नहीं है कि लूट का हिस्सेदार बनेगा? ऐसे विनाश कारियों का हिमायती बनने से खुदा अपनी खुदाई में बट्टा लगाता है। बड़ी हैरत की बात है कि एक ऐसी किताब ऐसा खुदा और ऐसा पैगम्बर जहां में ऐसे लड़ाई झगड़ा कराने और शान्ति व्यवस्था में अड़चन व बाधा बनकर लोगों को तकलीफ़ देने के लिए कहां से आ गए हैं। यदि ऐसे धर्म दुनिया में मौजूद न होते तो सारी दुनिया प्रसन्न व ख़ुश रहती (मज़े से ऐश होते और शराब कबाब उड़ाते)

आपत्ति का जवाब

जिहाद के बारे में विस्तृत जवाब न0 2 आदि में मौजूद है। गनीमत के बारे में न0 76 में लिख चुके हैं।

हां यह भली कही कि "ऐसे धर्म दुनिया में न चल रहे होते तो सारी दुनिया प्रसन्न व ख़ुश रहती" मगर क्या करें वेद भगवान ने भी

तो यही आदेश दिया कि।

"तुम दुश्मनों की सेना को पराजित करके उन्हें पछाड़ दो तुम्हारी सेना भारी और शक्ति शाली हो ताकि तुम्हारी विश्वव्यापी हुकूमत धरती पर स्थापित हो और तुम्हारा विरोधी पराजय का मुंह देखे और नीचा देखे।" (ऋग वेद अष्टक 1 अध्याय 3 वरग 13)

स्वामी जी! आयत तो स्वयं शान्ति को व्यक्त कर रही है देखिए किस स्पष्टीकरण से लिखा है और आपने भी बड़े जोश के साथ नक़ल किया है कि लड़ो इनसे यहां तक कि न रहे फ़ितना।" जिस से साफ़ मालूम होता है कि शान्ति स्थापित कराने के लिए लड़ना स्वीकार है। कहिए अक़ल बड़ी या भैंस? स्वामी जी आप की तरह बहुत से समाज सुधारकों ने यह शिक्षा दी है या उनके ज़िम्मे लगायी गयी कि

"जो कोई तेरे गाल पर तमांचा मारे दूसरा गाल भी उसकी ओर कर दे और यदि कोई चाहे कि तुझ पर नालिश करके तेरी क़बा ले। कुर्ते को भी उसे दे दे और जो कोई तुझे एक कोस बेगार में ले जाए तो उसके साथ दो कोस चला जा। जो कोई तुझसे कुछ मांगे उसे दे और तुझ से क़र्ज़ चाहे उससे मुंह मत मोड़।"

(इन्जील मत्ती 5 की 40)

मगर इन आदेश से सिवाए ज़बान की तरी के और भी कुछ हासिल? विश्वास न हो तो ईसाई क़ौमों का हाल देख लो जिन्होंने स्वयं ही ऐसे आदेश को रद्दी के सन्दूक़ में डाल कर साबित कर दिया कि–

"नाच न जाने आंगन टेढ़ा।"

क्यों न हो कुदरत के क़ानून का मुक़ाबला कोई आसान काम नहीं। दुश्मनों से बचाव करना मानव प्रकृति में है विस्तार से देखना

हो तो हमारी किताब तक़ाबुले सलासा तौरेत, इंजील व कुरआन का मुक़ाबला पढ़ो या ईश्वरीय किताब मुबाहेसा आर्या पढ़ो।

(80) "और काश कि देखे तू जिस समय कि निकालते हैं जान उन लोगों की कि काफ़िर हुए, फ़रिश्ते मारने मुंह उनके और पीठें उनकी और कहते हैं चखो तुम यातना जलने की। अतः विनष्ट किया हमने उनको साथ गुनाहों उन के और डुबोया हमने फ़िरऔन को। और तैयारी करो वास्ते उनके जो कुछ तुम कर सको।

(आयत – 48, 52, 58)

आपत्ति

क्यों जी आजकल तो रूस ने रूम की और इंगलैंड ने मिश्र की बड़ी बुरी गत बनायी है अब फ़रिश्ते कहां सो गए? पहले ख़ुदा अपने बन्दों के दुश्मनों को मारता डुबोता था। यदि यह बात सच्ची है तो आज कल भी ऐसा करे। चूंकि ऐसा नहीं करता इसलिए यह बात मानने के लायक़ नहीं। देखिए यह कैसा बुरा हुक्म है कि जो यथा संभव ग़ैर धर्म वालों के लिए कष्टदायक काम किया ऐसा आदेश विद्वान और धार्मिक दयावान का नहीं हो सकता फिर लिखते हैं कि ख़ुदा दयावान और न्याय करने वाला है ऐसी बातों से स्पष्ट है कि मुसलमानों के ख़ुदा से न्याय और दया आदि भले गुण दूर भागते हैं।

आपत्ति का जवाब

इसका जवाब न0 51 में विस्तार से दिया जा चुका है हां यह कह देना ज़रूरी है कि यह कोई नई बात नहीं है कि स्वामी जी ने इस आयत को बिल्कुल नहीं समझा। एक तो यह आयत काफ़िरों की भौतिक मौत के समय से संबंधित है जिसको स्वामी जी ने जिहाद से संबंधित बना दिया। दूसरे यह भी ग़लती है कि यथा संभव ग़ैर धर्म वालों के लिए कष्ट दायक काम किया करो।" बल्कि आयत का

मतलब साफ़ है पहले कुरआनी शब्दों को सुनो।

व आइददू लहुम मसत तअतुत मिन कुव्वतिवं व मिन रिबातिल ख़ैलि0 (अनफ़ाल – 60)

इसका पूरा अनुवाद और असल मतलब मनु जी के भाव में प्रस्तुत करता हूं –सुनिए

"राज्य की राजनीति को जानने वाला राजा ऐसा अच्छा प्रस्ताव अमल में लाए, किसी तरह उसके सहयोगी बे गाने लोग और दुश्मन अधिक शक्ति शाली न हो जाएं।" (सत्यार्थ प्रकाश – पृ0 207)

यही मतलब इस आयत का है कि दुश्मनों के मुक़ाबले के लिए सैनिक नियम और घुड़ दौड़ आदि कार्य सेना में चुस्ती व चालाकी पैदा करते हैं।

पंडित जी ने जिस शाब्दिक अनुवाद से आयत का अनुवाद नक़ल किया है उसमें भी यूं लिखा हुआ मौजूद है। "और तैयारी करो वास्ते उनके जो कुछ कर सको तुम शक्ति से और बांधने घोड़ों से।"

जिसका मतलब उर्दू मुहावरे में वही है जो हमने बताया।

(81) "ऐ नबी किफ़ायत तुझको अल्लाह और उनको जिन्होंने अनुसरण किया तेरा मुसलमानों में से, ऐ नबी प्रोत्साहित कर मुसलमानों को लड़ने पर। यदि हों तुम में से बीस सब्र करने वाले विजयी हो जाएं दो सौ पर। अतः खाओ उस चीज़ से कि ग़नीमत किया है तुमने हलाल पवित्र और डरो अल्लाह से। बेशक अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है।" (आयत – 62 – 67)

आपत्ति

भला यह कौन से न्याय, ज्ञानात्मक और धर्म की बात है जो अपना अनुसरण करे और चाहे अन्यायी ही क्यों न हो उसकी हिमायत करें और लाभ पहुंचाएं और जो जनता की शान्ति में ख़लल

डालकर जंग करे और कराए और लूट के माल को हलाल बता दे उसे क्षमा किया हुआ और मेहरबान नामों से पुकारा जाए। यह शिक्षा ईश्वर की तो क्या बल्कि किसी शरीफ़ आदमी की भी नहीं हो सकती। ऐसी ऐसी बातों से क़ुरआन ख़ुदा का कलाम कदापि नहीं हो सकता।

आपत्ति का जवाब

विस्तृत जवाब पहले कई बार लिखा जा चुका है मुख्य रूप से न0 2 व न0 76 में देखें। स्वामी जी! यह भी क़ुरआन शरीफ़ का और नबी करीम सल्ल0 का चमत्कार है कि आप जैसे योग्य विद्वान को क़ुरआन शरीफ़ पर आपत्ति करने की सूझी। विश्वास न हो तो क़ुरआन मजीद की आयत को ध्यान से सुनो।

"इस तरह हमने नबी के लिए जिन्नों और इन्सानों में गुमराह लोगों को दुश्मन बनाया है जो एक दूसरे को धोखा और फ़रेब की बातें सुनाते रहते हैं।" (सूरह अनआम – 112)

समाजियो! इस आयत को अच्छी तरह समझ कर हमारी दाद दो।

(82) सूरह तौबा– "सदैव रहेंगे बीच इसके, बेशक अल्लाह निकट उनके है सवाब बड़ा। ऐ लोगों! जो ईमान लाए हो मत पकड़ो बापों अपने को और भाइयों को अपने दोस्त। यदि दोस्त रखें कुफ़्र को ऊपर ईमान के। पर उतारी अल्लाह ने सन्तोष अपने ऊपर रसूल अपने के और ऊपर मुसलमानों के और उतारे लश्कर नहीं देखा तुमने और अज़ाब किया उन लोगों को कि काफ़िर हुए और यही सज़ा है काफ़िरों की। फिर फिराएगा अल्लाह पीछे उनके ऊपर और लड़ाई करो उन लोगों से जो ईमान नहीं लाते।"

(आयत 20 – 27)

आपत्ति

भला जो जन्नत वालों के निकट अल्लाह रहता है तो सर्वव्यापक किस तरह हो सकता है यदि सर्व व्यापक नहीं, दुनिया का बनाने वाला और आदिल (न्याय करने वाला) नहीं हो सकता और लोगों को अपने मां बाप भाई और दोस्त से अलग कराना केवल अन्याय की बात है। हां यदि वे बुरी शिक्षा दें तो न माननी चाहिए लेकिन उनकी सेवा सदैव करनी चाहिए। पहले ख़ुदा मुसलमानों पर मेहरबान था और उनकी मदद के लिए सेना उतारता था यदि यह बात सच होती तो अब ऐसा क्यों नहीं करता? और यदि पहले काफ़िरों को सज़ा देता था और फिर उनपर रहमत करता था तो अब कहां गया है? क्या ख़ुदा लड़ाई के बिना ईमान क़ायम नहीं कर सकता? ऐसे ख़ुदा को हमारी ओर से हमेशा तलांजली है। ख़ुदा क्या है। एक तमाशा करने वाला।

आपत्ति का जवाब

स्वामी का कहना बिल्कुल सच है और सोने से लिखने योग्य है कि आगे पीछे को न देखकर अटकल पच्चू मन गढ़त कलाम का अर्थ करने वाला नापाक बातिन वाले जाहिलों को निश्चय ही ज्ञान नहीं होता।" (भूमिका पृ0 – 52)

स्वामी जी को पहले आयत का सही अनुवाद बताते हैं आशा है कि अनुवाद सुनते ही आपको अपने सवालों का मूल्य व महत्त्व मालूम हो जाएगा आपने शाह रफ़ीउद्दीन साहब का शाब्दिक अनुवाद अपने सामने रखा है मगर अफ़सोस कि उसे भी नहीं समझा यद्यपि वह अनुवाद अरबी के कारण शाब्दिक अनुवाद होने और दोनों भाषाओं (अरबी और उर्दू) के मुहावरों के मिलाप के लिए लाभकारी नहीं। फिर भी चूंकि आपने इसी को अपने सामने रखा हुआ है

इसलिए बेहतर है कि उसी में से नक़ल करके समाजियों से आपकी समझ और ईमानदारी की प्रशंसा करा दें। तो समाजियो! सुनो असल आयत यह है।

"वास्ते उनके बीच उसके नेमत है पायेदार हमेशा रहेंगे बीच उसके सदैव बेशक अल्लाह के निकट उसका बड़ा सवाब।"

(सूरह – 21 – 22)

स्वामी जी इसमें क्या कमाल किया है एक तो "इसके शब्द" को शब्द "उनके से" से बदला। दूसरे उसके सारे को पहले कलाम से मिला दिया। तीसरे "सवाब बड़ा" का शब्द बेताल्लुक छोड़ दिया, मालूम नहीं कि यह ख़बर है या ख़बर देने वाला। चौथे आयत का शुरू का हिस्सा ही हज़्म। फिर बताइए मतलब क्यों न बिगड़े। सच है।

लुत्फ़ पर लुत्फ़ है इमला में मेरे यार के चार
हा हुत्ती से गदह लिखता है हव्वज़ से हिमार

आयत का मुहावरे वाला अनुवाद यह है। "अल्लाह के पास बड़ा सवाब है।" देखो अनुवाद शाह अब्दुल क़ादिर साहब)

समाजियो! अनुवादित कुरआन को देखो और स्वामी की मेहनत और ईमानदारी की प्रशंसा करो। मां बाप को छोड़ने के वह मायना है जिनपर आपने भी हस्ताक्षर किए है अर्थात उनकी बुरी शिक्षा को न मानना और शेष मामलों में उन से व्यवहार करना वाजिब है। सुनो!

कुरआन शरीफ़ बताता है।

"यदि मां बाप तुझे मुझ से (अर्थात अल्लाह से) शिर्क करने को कहें तो उनकी बात न मान और सांसारिक बातों में उनसे सुलूक करता रह)

स्वामी जी! बताइए (भूमिका पृ0 51) हाथी दांत हैं या कुछ और? काफ़िरों की बातों का जवाब न0 2, 51 आदि में देखें।

(83) "और हम प्रतीक्षा कर रहे हैं वास्ते तुम्हारे यह कि पहुंचा दे तुम को अल्लाह अज़ाब अपने पास से या हमारे हाथों से।"

(आयत – 49)

आपत्ति

क्या मुसलमान ही ईश्वर की पुलिस बन गए हैं कि वे अपने हाथ से या मुसलमानों के हाथ से ग़ैर धर्म वालों को गिरफ़तार करता है? क्या दूसरे करोड़ों आदमी ईश्वर को ना पसन्द हैं? और मुसलमानों के गुनाहगार भी पसन्द हैं? यदि ऐसा हाल है तो अंधेर नगरी चौपट राज का उदाहरण चरितार्थ होता है। हैरत है कि बुद्धिमान मुसलमान भी इस निराधार और अनुचित धर्म को मानते हैं।

आपत्ति का जवाब

विस्तृत जवाब न0 2 में आ चुका है। स्वामी जी! एक बात को वे मतलब बार बार कहते जाना पानी बिलोना होता है हैरत है बुद्धिमान आर्य ऐसी निराधार और अनुचित आपत्तियों को सुनकर भी स्वामी जी को अपना लीडर मानते हैं और नियोग जैसी ग़लत, ग़ैर अमानवीय और अवैध शिक्षा को सुन कर भी वेद वेद कहे जा रहे हैं और इस पर तनिक भी लज्जित नहीं होते। अफ़सोस ...... अफ़सोस?

(84) "वायदा किया है अल्लाह ने ईमान वालों को और ईमान वालियों से। जन्नतें, चलती हैं नीचे उनके से नहरें हमेशा रहने वाले बीच उसके और घर पाकीज़ा बीच जन्नतों के और रज़ामन्दी तरफ़ अल्लाह की से बहुत बड़ी है। यह वह है मुराद पाना। तो वे ठट्ठा करते हैं उनसे, ठट्ठा करता है अल्लाह उनसे।"

(आयत – 69 – 75)

आपत्ति

यह ईश्वर के नाम से औरत मर्द को अपने मतलब के लिए लालच देना है क्योंकि यदि ऐसा लालच न देते तो कोई मुहम्मद साहब के जाल में न फंसता। ऐसा है और धर्म वाले भी किया करते हैं। आदमी तो आपस में ठट्ठा मज़ाक़ ही किया करते हैं लेकिन ख़ुदा को किसी से ठट्ठा करना वाजिब है। यह कुरआन क्या है बड़ी खेल है।

आपत्ति का जवाब

न0 2 व न0 31 में कई एक जगह इसका जवाब मिल सकेगा। स्वामी जी सदैव भूमिका का पृ0 न0 10 भूल जाते हैं। "जहां मायना असंभावित हों वहां अवास्तविक उपमा होती है।"

अतः आयत के मायना साफ़ हैं कि ईश्वर उनको ठट्ठे की सज़ा देगा या अपमानित करेगा क्यों? जिस शब्द का यह ठट्ठा अनुवाद है वह उपहास है जिसके मायना शब्द कोष में तुच्छता के भी हैं और ठट्ठे में एक प्रकार की तुच्छता पायी जाती है अतः आयत के मायना साफ़ हैं कि अल्लाह उनको अपमानित करेगा। विस्तृत हाल के लिए न0 61 को देखें।

(85) "लेकिन रसूल और जो लोग ईमान लाए साथ इसके जिहाद किया और साथ मालों अपने के और अपनी जानों के और ये लोग वास्ते और नहीं के हैं। भलाइयां और मुहुर रखी अल्लाह ने ऊपर दिलों के उनके वे नहीं जानते।" (आयत – 84 – 89)

आपत्ति

अब देखिए स्वार्थ की बात कि वे ही अच्छे हैं कि जो मुहम्मद साहब पर ईमान लाए और जो नहीं लाए वे बुरे हैं। क्या यह बात पक्षपात और जिहालत से भरी हुई नहीं है? जब अल्लाह ने मुहुर

लगा दी तो उनका दोष गुनाह करने में कोई भी नहीं बल्कि ख़ुदा ही का दोष है क्योंकि उन बेचारों को भलाई करने से दिलों पर ठप्पा लगाकर रोक दिया। यह कितनी बड़ी बे इन्साफ़ी है।

आपत्ति का जवाब

न0 3, न0 6, न0 65 आदि को देख लें।

(86) "ले माल उनके से ख़ैरात कि पाक करे तो उनको ज़ाहिर और पवित्रता करे तो उनको साथ उसके अर्थात बातिन में। बेशक अल्लाह ने मोल ली हैं। मुसलमानों से जानें उनकी और माल उनके बदले उसके वास्ते उनके जन्नत है लड़ेंगे बीच राह अल्लाह के। तो मारेंगे और मारे जाएंगे।" (आयत – 99 – 107)

आपत्ति

वाह जी वाह! मुहम्मद साहब आपने तो कलिए गुसाइयों की समानता कर ली। क्योंकि जिनका माल लेना उन्हीं को पाक करना, तो गुसाइयों का काम है। वाह अल्लाह मियां आपने अच्छी सौदागरी चलायी कि मुसलमानों की पहचान ग़रीबों की जानें लेना ही लाभ समझ रखा है। और यतीमों को मरवाने और ज़ालिमों को जन्नत देने से मुसलमानों का ख़ुदा निर्दयी और अन्यायी होकर अपनी ख़ुदाई में बट्टा लगा बैठा है और अक़्ल मन्द शरीफ़ों के निकट नफ़रत योग्य हो गया है।

आपत्ति का जवाब

ओहो! ओहो! पंडित जी! आपने भी धार्मिक वादियां की समानता कर ली कि वाचक की मन्शा के विरुद्ध अर्थात मायना लेकर अक़्ल के पीछे लठ लिए फिरते हो। (भूमिका सत्यार्थ पृ0 7)

स्वामी जी! यह माल कहां ख़र्च होगा? जहां मनु जी आदेश देंगे। तनिक ध्यान से सुनो।

"बढ़ती हुई पूंजी का वेदों (कुरआन) की शिक्षा और धर्म के प्रचार, छात्र और उपदेशक वेद (कुरआन) और मोहताजो, यतीमों के लालन पालन में ख़र्च करे।"

(मनु – 99, सत्यार्थ पृ0 198, समलास 6 न0 33)

यदि विश्वास न हो तो कुरआन में देख लो। इस माल का इस्तेमाल क्या बताया है। पढ़ो।

सदके केवल फ़क़ीरों, मिसकीनों और जमा करने वालों और इस्लाम से मुहब्बत करने वालों के लिए हैं और गुलाम आज़ाद कराने के लिए हैं और कर्ज़दारों के लिए और सेना की तैयारी के लिए और मुसाफ़िरों के लिए यह ईश्वर का निर्धारित (किया हुआ) है (इसके खिलाफ़ न हो) और खुदा सब कुछ जानने वाला और तत्वदर्शी है।" (सूरह –तौबा – 60)

समाजियो! बताओ मनु जी के आदेश से ये खर्च आवश्यक और पूर्ण हैं या नहीं? स्वामी जी ने सोचा होगा कि यह माल ईश्वर के दूत मुहम्मद सल्ल0 अपने ख़र्च में लाते होंगे मगर उनको यह ख़बर नहीं कि अपनी ख़ास ज़ात के अलावा अपनी समस्त सन्तान, परिवार बल्कि चचाओं की सन्तान तक ने भी इस माल में से एक पैसा तक का लेना पसन्द नहीं किया। बल्कि सदैव उन्हीं लोगों को देते रहे जिनका ज़िक्र उपर्युक्त आयत में आया है। मगर।

"उचित स्थान व अवसर न देखकर केवल मन्त्र (या आयतों) का शाब्दिक अनुवाद सुनकर आपत्ति करने वाले जाहिलों को ज्ञान कहां। (भूमिका पृ0 52)

शेष हिस्से का जवाब न0 12 में देखिए।

(87) "ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! लड़ो लोगों से जो तुम्हारे पास हैं काफ़िरों में से और चाहिए पावें बीच तुम्हारे सख़्ती। क्या

नहीं देखते वे बलाओं में डाले जाते हैं। बीच हर साल के एक बार या दो बार। फिर नहीं तौबा करते और न वे नसीहत पकड़ते हैं।

(आयत –19 –122)

आपत्ति

देखिए एहसान करने वाले के साथ खुदा मुसलमानों को कैसी शिक्षा सिखाता है कि पड़ौसियों और गुलामों से लड़ाई करो और अवसर पाकर लड़ो या क़त्ल करो। ऐसी बातें मुसलमानों से बहुत फैली हैं। अर्थात इसी कुरआन की तहरीर से अब तो मुसलमान समझ कर कुरआन की इन बुराइयों को छोड़ दें तो बड़ा अच्छा है।

आपत्ति का जवाब

आयत का मतलब यह है कि यदि जिहाद की नौबत आ जाए और जो शर्ते जिहाद की हैं (जिनका थोड़ा बहुत ज़िक्र न0 2 में हो चुका है) वे पूरी हो जाएं तो निकट के दुश्मनों से जो देश की सीमा के पास हो पहले लड़ना चाहिए। यह नहीं कि उनको बग़ली घूंसा छोड़कर दूर इलाक़े वालों से लड़ने जाओ। इसी के अनुसार मनु जी का आदेश सुनो।

"जिस ओर लड़ाई हो रही हो उसी तरफ़ सेना का सामना करे लेकिन दूसरी तरफ़ पक्का इन्तज़ाम रखे वर्ना पीछे से या बग़ल में से दुश्मनों की घात का होना संभव है।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 210, समलास 6 न0 52)

समाजियो! ऐसी भयानक गलतियां देखकर स्वामी जी की सत्यार्थ प्रकाश को बन्द कर दो तो अच्छा है वर्ना पछताओगे मगर, काम न आएगा।

"लेख तो साफ़ है लेकिन नापाक बातिन जाहिलों का निश्चय ही

ज्ञान कहां? (भूमिका पृ0 52)

(88) सूरह यूनुस– "बेशक पालनहार तुम्हारा अल्लाह जिसने पैदा किया आसमानों को और ज़मीन को छः दिन के अन्दर फिर ठहरा ऊपर अर्श के तदबीर करता है काम की।" (आयत –3)

आपत्ति

आसमान अर्थात आकाश एक अमिश्रित अनादिकालिक वस्तु है। उसका जन्म लिखने से पता चला कि कुरआन का लेखक पदार्थ विज्ञान को भी नहीं जानता था। लेकिन ख़ुदा को दुनिया छः दिन तक बनानी पड़ती है? कुरआन में जब लिखा है कि हो जा और इतना कहने से दुनिया हो गयी तो फिर छः दिन लगना झूठ है। यदि वह सर्व व्यापक होता तो आसमान पर क्यों जा ठहरता और जब काम की तदबीर करता है तो मानो तुम्हारा ख़ुदा मनुष्य की भान्ति है क्योंकि यदि सर्वज्ञाता होता तो बैठा बैठा क्यों सोचता? इससे स्पष्ट होता है कि ख़ुदा को न जानने वाले वहशी लोगों ने यह किताब बनायी होगी।

आपत्ति का जवाब

कैसा मूर्ख है वह व्यक्ति जो शीशों का घर बनाकर दूसरों पर पत्थर बरसाए। समाजियो! परमेश्वर की आज्ञा सुनो।

"उस परमेश्वर के सोच विचार या सोचने की कुदरत से चांद पैदा हुआ और चकशू अर्थात कुदरत के भरपूर नूर से सूरज प्रकट हुआ और श्रोतर अर्थात आकाश सूरत कुदरत से आकाश (आसमान) पैदा हुआ।" (यजुरवेद अध्याय 21, मंत्र 12)

स्वामी का आदेश सुनो।

"परमात्मा ने पहले आकाश (आसमान) किया, उस आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से अनाज,

अनाज से वीरज, वीरज से मनुष्य पैदा किए" (उपदेश मन्जरी पृ0 59)

और सुनो–

"आकाश और परमात्मा का उधार आध्य संबंध अर्थात परमेश्वर के सहारे आकाश है।" (उपदेश मन्जरी)

तो हम स्वामी जी के वाक्यों को दोहराकर समाजियो से पूछते हैं।

"आकाश एक अमिश्रित अनादिकालिक वस्तु है उसका जन्म लिखने से पता चला कि वेद का लेखक और टीका कार (स्वामी जी स्वयं ही दोनों हैं) पदार्थ विज्ञान को भी नहीं जानता था।"

समाजियों! इसका कुछ जवाब दे सकते हो? (इससे अधिक स्पष्टी करण न0 129 में देखो।)

चूंकि आपने आसमान के इन्कार की कोई दलील नहीं बताई इसलिए हमारी ओर से फ़िलहाल इतना ही काफ़ी है कि यदि आपका कोई चेला दलील बता देगा तो हम बड़ी ख़ुशी के साथ सुनेंगे और उचित जवाब[1] देंगे। आपकी तरह केवल इतने पर सन्तोष नहीं करेंगे कि।

"जब वेद कहता है कि दूसरे देश वालों की मन गढ़त बातों को अक़्लमन्द लोग कभी नहीं मान सकते।" (सत्यप्रकाश पृ0 297)

समाजियो! दलील बतलाते हुए किसी प्रोफ़ैसर का कथन बिना दलील न लिख देना। याद रहे कि यह मुनाज़रे का मैदान है समाज मन्दिर नहीं।

संभल कर पांव रखना मयकदा में सरस्वती साहब
यहां पगड़ी उछलती है इसे मयख़ाना कहते हैं

1– अतएव तगलीब व जवाब तहज़ीब महाशय धर्म पाल में दिया गया है।

2– आज तक यह इनाम किसी समाजी ने वसूल नहीं किया।

ईश्वर के कामों में आपको सदैव संदेह होता है। क्या छः महीनों में खेत पकते हैं नौ महीनों मनुष्य (अर्थात औरत) और गाऊ माता बच्चा देती है खुदा को साल भर तक बच्चा बनाना पड़ता है (तौबा – तौबा) स्वामी जी कुरआन में यह कहीं नहीं लिखा कि "हो जा" कहने से दुनिया हो गयी। यदि कोई आपका चेला वह स्थान हमें बता दे तो हम उसे एक सौ रूपया इनाम देंगे। वह यूं है कि जब खुदा किसी चीज़ को पैदा करना चाहता है तो उसे केवल हो जा कहता है तो वह यूं हो जाती है। इस स्थान को छः दिन वाले स्थान से कोई मतभेद नहीं। दुनिया की विभिन्न हालतें अल्लाह ने पैदा की हैं। जब किसी हालत को यथा आवश्यकता और हिम्मत के तौर पर पैदा करना चाहा "हो जा" कहा तो वह हालत पैदा हो गयी।

आपने यदि बच्चे के जन्म पर सोच विचार किया होता तो आपको मालूम होता कि प्रत्यक्ष में तो बच्चे के जन्म में नौ महीने लग जाते हैं मगर हक़ीक़त में उसकी अन गिनत हालतें होती हैं कि जो हर क्षण परिवर्तित होती रहती हैं और हर क्षण खुदा अपनी कुदरत के कानून से "हो जा" कहता है और वह होती जाती हैं।

अतः दोनों का मतलब बिल्कुल एक सा है अन्तर केवल आपकी समझ या सोच का है तो उसे छोड़िए। इससे अधिक स्पष्टी करण किसी और स्थान पर मिलेगा।

अल्लाह की तदबीर करने का अर्थ हुक्म देना है वह तदबीर नहीं जो आगे के लाभ या हानि के बारें में होती हैं और कभी सही और कभी ग़लत भी हो जाती है क्योंकि ......

"जहां अर्थो में असंभावना हो वहां अवास्तविक होता है।"

(भूमिका –पृ0 10)

चूंकि अल्लाह के गुणों में कुरआन उसकी परोक्ष ज्ञाता भी बताता

है तो कोई कारण नहीं कि तदबीर के मायना सोच विचार के हों।

(89) "और पथ पदर्शन ओर दयालुता वास्ते मुसलमानों के।"

आपत्ति

क्या खुदा मुसलमानों ही का है दूसरों का नहीं? और क्या वह हिमायती है कि मुसलमानों पर ही दया करता है और दूसरों पर नहीं। यदि मुसलमानों से तात्पर्य ईमानदार हैं तो उनके लिए पथ प्रदर्शन की ज़रूरत ही नहीं और यदि मुसलमानों के सिवाए दूसरों को पथ प्रदार्शन नहीं करता तो खुदा का ज्ञान बे फ़ायदा है।

आपत्ति का जवाब

विस्तृत जवाब के लिए न0 5, 47 आदि नम्बरों को देखा जाए। यहां पर केवल स्वामी जी के आदेश पर सन्तोष किया जाता है। तो सुनो।

"उन चौदह समलासों को जो व्यक्ति पक्षपात छोड़कर न्याय की नज़र से देखेगा उसको आत्मा (मन) में सच्चे मायनों की रोशनी से सुख वैभव पैदा होगा और जो व्यक्ति ज़िद व पक्षपात से देखने के बाद सुनेगा उस पर किताब का मतलब ठीक ठीक स्पष्ट होना बड़ा कठिन है। (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 363, समलास 10 – 35)

जिस प्रकार आपकी किताब सब लोग देखते हैं। यहां तक कि मैं भी उस समय देख रहा हूं और निश्चय ही मुझे इससे बहुत कुछ लाभ भी हुआ है कि मैं कुरआन का अल्लाह की सच्ची किताब होना इसमें भी मानो लिखा हुआ पाता हूं लेकिन फिर भी मायना व अर्थों को समझ पाने में लोग भिन्न हैं जिस तरह आप के मन के अनुसार बहुत कम लोग नसीहत पाते हैं जिन का नाम आपने अपक्षपाती रखा हैं ऐसे ही लोगों के लिए कुरआन दयालुता है और ऐसे ही अपक्षपातियों को कुरआन मजीद के मुहावरे में मुसलमान कहते हैं।

विस्तृत जानकारी न0 5 में देखिए।

(90) सूरह हूद – "आज़माए तुम को कौन तुम में से बेहतर है अमल में और यदि कहे तो अलबत्ता उठाए जाओगे पीछे मौत के।"

(आयत –7)

आपत्ति

खुदा जब कर्मों की परीक्षा लेता है तो वह सर्वज्ञाता नहीं है और यदि वह मौत के बाद उठाता है तो क्या वह दौरा सामने रखता है और खुदा का मुर्दों को जीवित करना उसके नियम के विरुद्ध है अपना नियम बदलने से क्या वह अपने आपको बट्टा लगा सकता है?

आपत्ति का जवाब

इस न0 में भी वही आनन्द है जो पाठकों ने न0 82 में उठाया था कि।

लुत्फ़ पर लुत्फ़ है इमला में मेरे यार के यार
हा हुत्ती से गदहा लिखता है हव्वज़ से हिमार

देखिए यदि कहे लिखकर उसकी जज़ा (मात्रा) को हज़म कर गए बल्कि उसको पहले से मिला दिया जो उससे पूरी तरह अलग है। इसी से मालूम होता है कि स्वामी जी ने कुरआन में कहां तक सोच विचार से काम लिया होगा जिसके बारे में भूमिका पृ0 52 में ताकीद करते हैं।

पंडित मुसिर मशालची अक्रो टिच
औरों करे अब जादिला आप अंधेरे विच

क़यामत का उल्लेख न0 51 में आ चुका है। अल्लाह के आज़माने के मायना यह हैं कि इस बात को लोगों पर प्रकट कर दे क्योंकि आज़माइश जो ज्ञान की प्राप्ती के उद्देश्य में होती है ईश्वर की निसबत संभव नहीं। इसलिए कुरआन ने खुदा के संबंध में साफ़

बता दिया है।

"खुदा के निकट बराबर है कोई धीमे बोले या ऊंची आवाज़ में पुकारे और कोई रात की छुप कर चले या दिन में ज़ाहिर करेंगे सामने।" (सूरह राअद – 10)

और यह तो खुली बात है।

"जहां मायना असंभावित हों वहां अवास्तविक होता है।"

(भूमिका – पृ0 – 10)

अतः आपका सारा भरम खुल गया।

थे दो घड़ी से शैख़ जी शैख़ी बघारते
वह सारी उनकी शैख़ी झड़ी दो घड़ी के बाद

यह आज सुनो कि मुर्दों को ज़िन्दा करना ईश्वर के नियम के विरुद्ध है। स्वामी से कोई क्यों पूछने लगा था और वे भी क्यों बताने लगे जबकि समाज में चारों ओर चेले चाटों ने घेरा डाला हो। पूछे तो कौन पूछे।

शायद पंडित जी समझते हों, तो विनती है कि महाराज़! आज तक हमने दो हज़ार अरब साल गुज़रने के बावजूद प्रलय नहीं देखा और इसके बाद परमेश्वर, अग्नि, वायु आदि को नियम के खिलाफ़ जवान पैदा करके दुनिया की आबादी चलाएगा और आगे फिर दूध पीते बच्चे पैदा करेगा। स्वामी जी जिस तरह "प्रलय" का आना कई अरब साल के बाद आप मानते हैं या जिस तरह दुमदार सितारा (पुछड़ तारा) सालों बाद निकला करता है उसी तरह मुर्दों के ज़िन्दा होने का भी एक समय है जिसे क़ायदे के ख़िलाफ़ कहना आप जैसे विद्वानों से सुदूर है। बाक़ी न0 15 में देखें।

(91) "और कहा गया ऐ धरती निगल जा पानी अपना और ऐ आसमान बस कर, और पानी सूख गया। और ऐ क़ौम यह है ऊंटनी

अल्लाह की तुम्हारे लिए निशानी, बस इसे छोड़ दो कि अल्लाह की धरती के बीच खाती फिरे।" (आयत – 43 – 63)

आपत्ति

क्या बचपने की बात है धरती और आसमान कभी सुन सकते हैं? वाह जी वाह! खुदा की ऊंटनी है तो ऊंट भी होगा। फिर हाथी घोड़े गधे आदि भी होंगे और खुदा का ऊंटनी से खेत खिलाना क्या अच्छी बात है क्या ऊंटनी पर चढ़ता भी है? यदि ऐसी बातें हैं तो नवाबी की से घुसड़ पुसड़ खुदा के घर में भी है।

आपत्ति का जवाब

कैसी बचपने की बातें हैं– स्वामी जी! आयत के मायना यह हैं कि खुदा ने ज़मीन और आसमान को हुक्म दिया। रहा यह कि किस तरह दिया? जिस तरह अन्य आदेशों के बारे में है कि किस तरह दिए जाते हैं। ऊपर से पानी बरसना, नीचे से अंगूरों का पैदा होना क्या बिना खुदा के हुक्म से होता है? ठीक इसी तरह समझो और यदि अपने शौक़ व दिलचस्पी पर समझना चाहो तो सुनो।

पिछले जन्म के किए हुए पाप और पुन के अनुसार दंड या इनाम पाने वाला जीव पिछले शरीर को छोड़कर हवा, पानी, वनस्पति आदि आदि वस्तुओं में दाखिल होकर अपने पाप और पुन के अनुसार किसी योनि में पड़ता है।" (भूमिका – पृ0 – 131)

लो जिस प्रकार हवा आदि में जीव घुस जाता है उसी तरह धरती में घुस जाता होगा मगर न किसी मनुष्य का बल्कि इसी धरती का। आपने कुरआन नहीं पढ़ा जबकि कुरआन सारी दुनिया की चीज़ों को ईश्वर की सम्पत्ति बताता है सुनो।

लहु माफ़िस्समा वाति वमा फ़िल अर्ज़ि वमा बैनहुमा वमा तहत

स्सरा0

"जो कुछ आसमानों और ज़मीनों और इन दोनों के बीच में है और जो कुछ मिट्टी से नीचे है सब अल्लाह ही का है।"

(सूरह ताहा – 6)

तो ऊंटनी को अल्लाह की ऊंटनी सुनकर आप क्यों हैरत करते हैं। सुनिए! मैं आपको एक और अचरज की बात सुनाऊ, जिस पर अचरज करें तो वास्तव में ठीक होगा कि आप भी ईश्वर ही के हैं बल्कि आपकी पत्नी होती तो वह भी अल्लाह की होती। अतः जिस तरह और चीज़ें अल्लाह की हैं उसी तरह वह ऊंटनी भी अल्लाह की थी हां यह बात कि इस पर हैरत क्यों व्यक्त की तो इसका कारण यह है कि हज़रत सालेह अलैहि0 पैग़म्बर की दुआ से ईश्वर ने पैदा की थी इसीलिए वह नाक़तुल्लाह (अल्लाह की ऊंटनी) कहलायी।

(92) "और सदैव रहने वाले बीच इसके जब तक रहें आसमान और धरती और जो लोग कि भाग्यशाली किए गए हैं अतः बीच जन्नत के हैं। सदैव रहने वाले बीच उसके जब तक रहे आसमान और धरती।" (आयत – 106 – 107)

आपत्ति

जब जहन्नम और जन्नत में क़यामत के बाद सब लोग जाएंगे तो फिर आसमान और ज़मीन किस लिए स्थापित रहेंगे? और जब जहन्नम और जन्नत की स्थापना की अवधि आसमान और ज़मीन की स्थापना तक हुई तो जन्नत या जहन्नम में सदैव के लिए रहेंगे। यह बात झूठी हो गयी। ऐसी बातें जाहिलों की होती हैं। ईश्वर और विद्वानों की नहीं।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी हम से पूछ लेते कि जन्नत और जहन्नम कहां होंगे

तो हम उनको बता देते कि धरती पर। सुनो, कुरआन स्वयं बताता है।

"(जन्नती कहेंगे) सारी प्रशंसाएं अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हमें इस ज़मीन का मालिक बनाया कि जन्नत में हम जहां चाहें रहेंगे।" (सूरह जुमर – 74)

स्वामी जी! यही धरती यही आकाश थोड़े से परिवर्तन के साथ मौजूद होंगे। सुनो।

"जिस दिन (अर्थात क़यामत के दिन) ज़मीन व आसमान में परिवर्तन किया जाएगा और सब लोग एक ईश्वर के सामने निकलेंगे।" (सूरह इबराहीम – 48)

"सदैव के लिए" तब ग़लत होगा जब आप किसी आयत से आसमान व ज़मीन का अन्त होना, नष्ट हो जाना साबित करें वर्ना ये बच्चों की सी बातें छोड़ दें जिस तरह जन्नती जन्नत में रहेंगे उसी तरह आसमान व ज़मीन भी बचे रहेंगे।

(93) सूरह यूसुफ़ – "जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा कि ऐ मेरे बाप! मैंने एक सपने में देखा।" (आयत – 4)

आपत्ति

इस सूरह से बाप बेटे के बीच संवाद के रूप में क़िस्सा व कहानी मौजूद है इसलिए कुरआन खुदा का बनाया हुआ नहीं है किसी व्यक्ति ने आदमियों का इतिहास लिख दिया है।

आपत्ति का जवाब

"यह मुंह और मसूर की दाल" हमेशा से आर्य समाज को यही ख़्याल रहा है कि ईश्वरीय किताब में किसी ज़माना (अतीत) का वर्णन न होना चाहिए मगर अफ़सोस कि इस किताब में हमने कई अवसरों पर वेद के मंत्रों से साबित किया है कि वेद में भी अधूरे से

क़िस्से या क़िस्सों की ओर इशारे हैं। हमारा रिसाला हदूस वेद देखिए।

(94) सूरह राअद। " अल्लाह है वह व्यक्ति कि जिसने बुलन्द किया आसमानों को बिना स्तंभों के। देखते हो तुम उसको। फिर अर्श पर ठहरा और वशीभूत किया सूरज और चांद को। और वही है जिसने बिछाया ज़मीन को। उतारा है उसने आसमान से पानी-बस बहे नाले साथ अपने अंदाज के। अल्लाह खोल देता है आजीविका और तंग करता जिसके वास्ते चाहे।" (आयत– 2,3,15,22)

आपत्ति

मुसलमानों का खुदा भौतिक ज्ञान कुछ भी नहीं जानता यदि जानता होता तो आसमान को जिस में कि भार नहीं है स्तंभ लगाने का उल्लेख न करता। यदि ईश्वर किसी विशेष स्थान पर अर्थात अर्श पर रहता है तो वह सर्व शक्ति मान और सर्व व्यापक नहीं हो सकता और यदि ईश्वर बादलों का ज्ञान जानता तो "आसमान से पानी उतारा" इसके साथ यह क्यों लिखता कि ज़मीन से पानी उस पर चढ़ाया। इससे साबित हुआ कि कुरआन का लेखक बादलों के ज्ञान को भी नहीं जानता था और सद व बुरे कर्मों के बिना दुख व सुख को देता है तो वह तरफ़दार और अन्यायी और पूरी तरह जाहिल है।

आपत्ति का जवाब

"बड़ा ही पापी है वह व्यक्ति जो वाचक की मन्शा के ख़िलाफ़ कलाम के मायना करे।" (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश – पृ0 7)

अर्श का विस्तृत जवाब न0 70 में मिलेगा। आसमान के अस्तित्व का जवाब न0 7, 88 और 129 में दिया गया है अलबत्ता आसमान से वर्षा उतारने का विषय स्वामी जी को समझाना शेष है। यदि भूमिका

पृ0 52 पर अमल करते तो आज हमें यह समय और उनको यह अपमान न सहना पड़ता।

तो सुनो! अरबी में आसमान का मायना बुलन्दी और ऊपर की चीज़ के आते हैं इसलिए कभी तो यह नीला मालूम होता है और कभी बादल या जो कुछ हो सके क्योंकि।

"सदैव स्थान व अवसर की मुनासिबत से आगे पीछे के संबंध व सम्पर्क को देख कर मायना करना चाहिए।" (भूमिका – पृ0 52)

कुरआन शरीफ़ बारिश के उतरने का हाल स्वयं बताता है सुनो।

"क्या (देखने वाले) तू नहीं देखता कि अल्लाह बादलों को चलाता है फिर उनको जोड़ता है फिर एक तह लगाता है फिर तू बारिश को उससे निकलते देखता है और ऊपर से बड़े बड़े गुफ्फे उतारता है उनमें बड़ी ठंडक होती है फिर जिस पर चाहता है पहुंचाता है और जिससे चाहता है मुंह फेर लेता है। (सूरह नूर – 43)

इन आयतों का केवल अनुवाद सुनने से ही समझ में आ सकता है कि कुरआन ने जो कुछ बयान किया वह सही है और आसमान से तात्पर्य ऊंची चीज़ अर्थात बादल है। सद व बुरे कर्मों का जवाब कई नम्बरों में आ चुका है। जब तक आर्य समाज और समाज के संस्थापक आवा गमन को साबित न कर लें और हमारी आपत्तियां उस पर से न उठा लें। इस मसले को निराधार बनाने के पक्षधर नहीं। (देखो बहस तनासुख व इलहामी किताब लेखक खाकसार)

(95) "कि बेशक खुदा पथ भ्रष्ट करता है जिसे चाहता है और राह दिखाता है अपनी तरफ़ उस व्यक्ति को जो उसकी ओर पलटता है।" (आयत – 23)

आपत्ति

जब खुदा पथ भ्रष्ट करता है तो खुदा और शैतान में क्या फ़र्क़

हुआ? जबकि शैतान दूसरों को पथ भ्रष्ट करने से बुरा कहलाता है तो खुदा भी वैसा ही काम करने से बड़ा शैतान क्यों नहीं? और बहकाने के गुनाह के बदले उसे जहन्नम क्यों नहीं मिलना चाहिए।

आपत्ति का जवाब

न0 6, न0 11 में विस्तृत जवाब आ चुका है।

(96) "इसी तरह उतारा है हमने इस कुरआन को अरबी में और यदि अनुसरण करेगा तो इच्छाओं उनकी पीछे उस चीज़ के कि आए तेरे पास ज्ञान से। तो सिवाए उसके नहीं कि ऊपर तेरे पैग़ाम पहुंचाना है और ऊपर हमारे हिसाब लेना।" (आयत– 33–35)

आपत्ति

कुरआन किस ओर से उतरा? क्या खुदा ऊपर रहता है? यदि यह बात सच है तो वह सीमित स्थान में होने से खुदा ही नहीं हो सकता। क्यों कि खुदा सर्व व्यापक है। संदेश पहुंचाना हरकारे का काम है और हरकारे की आवश्यकता उसे होती है जो मनुष्य के जैसा सीमित स्थान हो और हिसाब लेना देना भी मनुष्य का काम है खुदा का नहीं क्योंकि वह सर्व व्यापक है। यह तहक़ीक़ होता है कि कुरआन किसी सीमित बुद्धि वाले आदमी का बनाया हुआ है।

आपत्ति का जवाब

कुरआन इस तरफ़ से उतरा है जिस तरफ़ से वेद उतरा है। समाजियो! सुनो स्वामी जी क्या कहते हैं।

"जिस तरह कि खुदा ने संस्क्रत में वेदों को अवतरित किया ऐसे ही कुरआन को उतारा।" (पृ0 673 – सत्यार्थ प्रकाश)

खुदा के सर्व व्यापक होने का उल्लेख न0 41 में आ चुका है हां यह भली कही कि।

"सन्देष्टा हरकारा है और हरकारे की आवश्यकता उसको होती

है जो सीमित स्थान में रहता हो।"

यह तो सच है कि सन्देष्टा हरकारा (सन्देश वाहक) होते हैं मगर किसके? सर्व शक्ति मान, निराकार, जगदीश्वर, एक अकेले ईश्वर के जिसका कोई साझी न हो, लेकिन दूसरा वाक्य ग़लत है वर्ना अग्नि वायु आदि वेदों को लाने वाली वस्तुओं की क्या ज़रूरत वर्ना साबित होगा कि परमेश्वर सीमित मकान वाला है।

समाजियो! तुम ही बताओ ठीक है? हिसाब लेने से तात्पर्य दंड या इनाम का देना है जिसके कारण परमेश्वर बहुत से दुष्टों को भिन्न भिन्न योनियों में भेजता है क्योंकि वे साधना (उपासना) नहीं करते यही ईश्वरीय हिसाब है।

(97) सूरह इबराहीम– "और क्या सूरज और चांद को सदैव फिरने वाले। बेशक इन्सान जुल्म करने वाला है और इन्कार करने वाला है।" (आयत – 26– 27)

आपत्ति

क्या चांद और सूरज सदैव घूमते हैं और ज़मीन नहीं घूमती। यदि ज़मीन न घूमे तो दिन रात कई बरसों का हो। यदि इन्सान वास्तव में जुल्म और इन्कार ही करने वाला है तो कुरआन द्वारा पथ प्रदर्शन देना व्यर्थ है क्योंकि जिनकी प्रकृति गुनाह करने की है वह फिर सवाब करने की कभी न हो सकेगी लेकिन संसार में अच्छे व बुरे प्रकार के आदमी मौजूद हैं इसलिए ऐसी बातें खुदा की बनायी हुई किताब की नहीं हो सकतीं।

आपत्ति का जवाब

अल्लाह रे ऐसे हुस्न पे ये बे नियाज़ियां
बन्दा नवाज़ आप किसी के खुदा नहीं

स्वामी जी न0 42 में स्वयं ही सूरज को अपनी परिधि में घूमता

हुआ मान आए हैं तो इसी तरह चांद भी घूमता है। यहां ज़मीन की हरकत और हरकत न करने का कुछ उल्लेख ही नहीं। इसके अलावा किसी दलील से ज़मीन की हरकत का सबूत भी दिया होता।

स्वामी जी! यदि अरबी लाजिक से अवगत होते तो हमें बड़ी आसानी थी कि उनसे इतना तो कह देते कि इन्सान को जिस शब्द में काफ़िर और ज़ालिम कहा गया है वे यह हैं।

इन्नल इन्साना लज़लूमुन कफ़फ़ारा0 बेशक इन्सान बड़ा ज़ालिम काफ़िर ना शुक्रा है।" (सूरह इबराहीम – 34)

ऐसे वाक्य को लाजिक विद्वान अंशिक कहते पूर्ण नहीं जिसके विस्तार से मायना यह है कि अंशिक तरीक़े से कुछ मानव जाति पर हुक्म है कि वह अपनी आदत में ऐसे होते हैं जैसे आप भी लिखते हैं।

"कभी बिन पूछे या अन्याय से पूछने वाले को अर्थात जो धोखे से पूछता हो उसको जवाब न दे उनके सामने अक़्ल मन्द आदमी शिथिल वस्तु की तरह ख़ामोश रहे अलबत्ता जो धोखे से खाली और सत्य की तलाश में हो उनको बिना पूछे उपदेश दे।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 350)

तो ऐसे लोगों के पक्ष में वेदों का ईश्वरीय संकेत होना ही व्यर्थ है। स्वामी जी! इस तरह तो कुरआन की आयत का मतलब है कि कुछ लोग अपनी बुरी हरकतों व बुरी संगतों से ऐसे हठ धर्म और पक्के बन जाते हैं कि वे सम्बोधित किए जाने योग्य भी नहीं समझे जाते। प्रकृति तो सब की समान ही है।

(98) सूरह हिज्र– "तो जब ठीक कर लूं मैं उसे और फूंक दूं बीच उसके अपनी रूह तो गिर पड़ो उसको सज्दा करने के वास्ते। कहा– ऐ मेरे पालनहार! इसके कारण पथ भ्रष्ट किया तूने मुझको

अलबत्ता ज़ीनत दूंगा मैं इन के बीच ज़मीन के और इनको गुमराह करूंगा।" (आयत – 27 – 37– 46)

आपत्ति

यदि खुदा ने अपनी रूह आदम साहब में डाली थी तो वह भी खुदा हुआ और यदि वह खुदा न था तो सजदा करने में अपना साझी क्यों किया? जब शैतान को पथ भ्रष्ट करने वाला खुदा ही है तो वह शैतान का भी शैतान बड़ा भाई उस्ताद क्यों नहीं क्योंकि तुम लोग बहकाने वाले को शैतान मानते हो तो खुदा ने शैतान को बहकाया और मुंह पर शैतान ने कहा कि मैं पथ भ्रष्ट कर दूंगा। फिर उसको सजा देकर क़ैद क्यों न किया और मार क्यों न डाला?

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी किसी चीज़ की दूसरी चीज की ओर वृद्धि कई तरह की होती है कभी आंशिक की कभी पूर्ण की और जैसे मेरा मुंह उसकी नाक आदि। कभी दास की स्वामी की ओर जैसे मेरी छड़ी मेरा मकान आदि। कभी वस्तु की उसके बनाने वाले की ओर जैसे लाडरस का चाकू आदि। कभी किसी तरह कभी किसी तरह। यहां पर क्योंकि आपने समझ लिया कि रूह की वृद्धि अल्लाह की ओर आंशिक और पूर्ण की तरह से है। लीजिए हम आपको बताते हैं कि यह वृद्धि भी दास की स्वामी की ओर है तो आयत के मायना साफ़ हैं कि– " मैं जब आदम में अपनी सृष्टि की रूह डालूं' हां इस सूरत में यह सवाल होगा कि जब सारी रूहें अल्लाह की सष्टि हैं तो फिर इस वृद्धि से क्या फ़ायदा।

असल में इस वृद्धि से फ़ायदा उस रूह की बुजुर्गी का बयान करना है जैसे बाप अपने आज्ञा पालक लड़के को अपनी तरफ़ निसबत करके कहा करता है कि यह मेरा बेटा है। यह बातें मुख्य

रूप से उस समय कुछ अधिक रोचक होती हैं जब हम भूमिका पृ0 10 को अपने समक्ष रखें कि जहां "मायना में असंभावना हो वहां अवास्तकिता होती है।"

असल बात तो यह है कि आदम अलैहि0 को अल्लाह ने ज़रा सी ग़लती पर वह सज़ा दी कि शायद दबाव, जिसका उल्लेख कुरआन में मौजूद है तो यदि आदम में अल्लाह की रूह होती जिससे आपका मतलब यह है कि आदम स्वयं खुदा होता तो यह सज़ा कौन देता। खुदा की शान तो यह है कि।

"खुदा से कोई सवाल नहीं कर सकता और वह सब को पूछेगा।" (सूरह अम्बिया – 23)

हां यह भली कही–"यदि वह खुदा न था तो सज्दा करने में शरीक क्यों किया?" स्वामी जी यहां भी भूमिका पृ0 10 और पृ0 52 को भूल गए। आदम को सज्दा ए इबादत न कराया गया था क्योंकि सज्दा ए इबादत खुदा के सिवा किसी के भी हक में जायज नहीं। सुनो।

"ऐ खुदा हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं।" (सूरह फातिहा – 4)

मुसलमानों का कलिमा (जो आज तक ईश्वर की कृपा से निशाने मुहम्मदी की तरह मुसलमानों के चेहरों पर चमक रहा है) दूसरे की उपासना की जड़ काट रहा है। सुनो और समझो!!

लाइला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

"खुदा के सिवा कोई उपास्य नहीं और मुहम्मद उसके रसूल हैं।"

अतः सज्दा से तात्पर्य सलाम व नियाज़ है जो सामान्यता मातहत अफ़सरों से किया करते हैं। यह ठीक उन्हीं के मायना में पूजा है जो

आपने लिखी है।

"बाप सच्चा उस्ताद और दर्वेश उन सब को पूजन करने की हिदायत है। इसी तरह मनु जी महाराज ने भी लिखा है कि स्त्री की पूजा करनी चाहिए।" (उपदेश मन्जरी पृ0 28)

अतः जिस तरह यहां पर आपने पूजा के मायना आवभगत के लिए हैं यदि यही शब्द परमेश्वर के बारे में आए तो वहां उपासना के लेते हैं। इसी तरह आयत में समझइए क्योंकि।

"हरेक स्थान का मतलब उचित स्थान व अवसर देखकर अनुवाद करना चाहिए।" (भूमिका पृ0 52)

शेष शैतानी बातों का जवाब न0 6, 11 आदि में देखें।

(99) और अलबत्ता हमने भेजे हैं हर उम्मत (समुदाय) के बीच सन्देष्टा। जब इरादा करते हैं हम उसको यह कहते हैं "हो" तो बस हो जाती है।" (आयत 33–36)

आपत्ति

यदि सारी क़ौमों के लिए सन्देष्टा भेजे हैं तो वे सब लोग जो कि रसूलों की राह पर चलते हैं वे काफ़िर क्यों हैं? क्या सिवाए तुम्हारे पैग़म्बर के और किसी पैग़म्बर का सम्मान नहीं। यह तो बिल्कुल पक्षपात की बात है। यदि सारे देशों में रसूल भेजे तो आर्य वरत में कौन भेजा? इसलिए यह बात मानने योग्य नहीं। जब ख़ुदा इरादा करता है और कहता है कि ऐ ज़मीन हो जा तो वह बेजान कैसे सुन सकती है? ईश्वर का मात्र हुक्म किस प्रकार दुनिया बना सकता है? और मुसलमान सिवाए ख़ुदा के दूसरी चीज़ नहीं मानते तो किसने सुना और कौन हो गया? यह सब अज्ञानता की बातें हैं ऐसी बातों को अनजान लोग मान लेते हैं।

आपत्ति का जवाब

और क़ौमों को काफ़िर (इन्कार करने वाली) कहने का यह कारण है कि वे दीने मुहम्मदी अर्थात क़ुरआन से जो मुहयमिन (रक्षक) होकर और सारे नबियों की शिक्षा का निचोड़ बताने आया है। इन्कारी हैं। शेष सब लोगों को अपने बुज़ुर्गों की शिक्षा को बिगाड़ बिगाड़ कर सत्यानास कर दिया। देखो तो हिन्दुओं ने क्या किया कि वेद की (आप ही के कथना नुसार) एकेश्वर वादी शिक्षा को कैसे मूर्ति पूजा से बदला फिर बजाए मान लेने के उल्टा आर्यो से लड़ने मरने पर तुले बैठे हैं बल्कि यदि उनका बयान सच हो तो दयानन्दियों को भागते हुए राह नहीं मिलती।

यही हाल ईसाइयों का है कि एक से तीन और तीन से एक तो आपने भी सुने होंगे। अतः इसी कारण दूसरी क़ौमें काफ़िर हैं और काफ़िर के शब्द से बुरा मानने की कोई वजह भी नहीं। (देखो न0 20) हिन्दुस्तान के नबियों का नाम क़ुरआन में नहीं आया केवल इतना ही है।

मिन्हुम मन क़ससना अलैक व मिन्हुम मन्लम नक़सुस अलैक0 " कुछ (रसूल) हमने तुझे बताए हैं और कुछ नहीं बताए।"

(सूरह मोमिन – 78)

अतः हम भी इतना ही जानते हैं कि – " हरेक उम्मत (क़ौम) में कोई न कोई अल्लाह की यातना से डराने वाला गुज़रा है।"

हिन्दुस्तान में भी कई एक रसूल आए हैं मगर नाम की हमें ख़बर नहीं। (देखो मक्तूबात इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़ सानी रह0)

अल्लाह के कुन (हो जा) कहने की बहस न0 27 में मौजूद है सिवाए ख़ुदा के दूसरी चीज़ न मानने का विस्तृत जवाब इसी न0 में देख लें।

(100) "और निर्धारित करते हैं अल्लाह के वास्ते बेटियां। पाकी है उसको और उसके वास्ते है जो कुछ कि चाहे। क़सम है अल्लाह की बेशक भेजे हमने पैग़म्बर।" (आयत – 52– 59)

आपत्ति

अल्लाह बेटियों से क्या करेगा? बेटियां तो किसी व्यक्ति को चाहिए। बेटे क्यों नहीं निर्धारित किए जाते? और बेटियां निर्धारित की जाती हैं। इसका क्या कारण है? बताइए। क़सम खाना झूठों का काम है न कि खुदा का। क्योंकि प्रायः दुनिया में ऐसा देखने में आता है कि जो झूठा होता है वही क़सम खाता है। सच्चे क्यों क़सम खाएं?

आपत्ति का जवाब

वाक्य न0 82 आदि में कहीं हम एक शेअर लिख आए हैं। यदि हमें यह भय न होता कि स्वामी जी के बार बार एक ही प्रकार के सवालों की तरह हमारा सोने से लिखने के योग्य शेअर भी बर्बाद हो जाएगा तो हम यहां भी उस शेअर को दोहराते। अतः हम पूर्व नम्बरों का हवाला देने ही पर सन्तोष करते हैं।

स्वामी जी ने पहले की तरह यहां भी अनुवाद में अपनी अक्ल मन्दी का प्रदर्शन किया है। इस वाक्य में कि "वास्ते उसके जो चाहे" बेजा परिवर्तन किया है। आयात के मूल शब्द ये हैं।

व लहुम मा यशत हूनO (सूरह नहल – 57)

शाह रफ़ीउद्दीन साहब जिनके अनुवाद पर पंडित जी ने आधार शिला रखी है इस तरह अनुवाद करते हैं।

यह है स्वामी जी की योग्यता और यह है उनकी बुद्धि मानी। सच ही कहा है।

बने क्योंकर कि है सब कार उल्टा
हम उल्टे बात उल्टी यार उल्टा

चेलों की चालाकी

स्वामी दयानन्द ने जो कुरआन के साथ बर्ताव किया है वह तो पाठक देखते आए हैं उनके प्रभाव से उनके चेलों ने जो किया उसका नमूना भी देखने योग्य है। जब उन्होंने हक़ प्रकाश में स्वामी जी की ऐसी घिनौनी ग़लतियां देखीं तो सत्यार्थ प्रकाश के उर्दू एडीशन (प्रथम) के बाद कहीं कहीं उसका सुधार भी किया। अतएव इस अनुवाद का सुधार इस तरह किया।

"निर्धारित करते हैं वास्ते अल्लाह के बेटियां पाकीज़गी है उसको और निर्धारित करते हैं वास्ते अपने देखना जो कुछ चाहें।

(सत्यार्थ प्रकाश उर्दू एडीशन 4 पृ0 599)

प्रिय पाठको! इस शिक्षित पार्टी की स्थिति का अनुमान लगाइए कि दूसरे धर्म की किताब को कैसा बिगाड़ते हैं और दुनिया को अंधा जानते हैं या सत्य में स्वयं अंधे हैं। सच है।

जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे।

रही आपत्ति तो उसका जवाब देने को मन नहीं करता है बल्कि पाठकों की वजह से मुहावरे वाला अनुवाद ही कर देना काफ़ी है। तो सुनो।

"ये लोग मक्का के मुश्रिक (फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियां ठहराते हैं सुबहानल्लाह। अल्लाह के लिए बेटियां और उनके लिए मन माने बेटे।

तो आप ही न्याय करें कि इस अनुवाद और मतलब पर स्वामी जी महाराज हम मुसलमानों से क्या सवाल करते हैं। स्वामी जी समझे कि मुसलमान खुदा के लिए बेटियां प्रस्तावित करते हैं मगर यह

ख़बर नहीं कि वे उन्हीं के भाई बिरादर मुश्रिकीने अरब थे जिनको इस आस्था पर आरोपित किया गया है।

पड़े पत्थर समझ ऐसी पे वे समझे तो क्या समझे।

क़सम के बारे में ख़ूब फ़लासफ़ी निकाली कि जो "झूठा" होता है वही क़सम खाता है। अदालतों में तो जज साहब गवाहों से अपने सन्तोष के लिए पहले क़सम दिलाते हैं और गवाहों को नियमानुसार शपथ भी उठानी पड़ती है। जिससे हाकिम को उनकी गवाही पर विश्वास होता है मगर स्वामी जी की जजी भी अलग है। हां यह सही है कि झूठे भी क़सम खाया करते हैं मगर यह नहीं कि क़सम का खाना झूठ की निशानी या दलील है बल्कि झूठे लोग झूठ को क़राम के लिबास में छुपाते हैं न कि क़सम खाकर झूठ का सबूत देते हैं।

समाजियोः यदि तुम्हें अदालत में गवाही देने का अवसर आ जाए तो जज के शपथ देने पर साफ़ कह देना कि हमारे स्वामी जी का आदेश है कि सच्चे लोग क़सम नहीं खाते। फिर देखना कि सत्यार्थ प्रकाश की पुस्तक भी कई दिन के लिए तुम से अलग रहती है कि नहीं।

स्वामी जी! आम मुहावरों में क़सम वही मायना देती है जो शोध करने के बाद देती है जो यजुर वेद अध्याय 12 मंत्र 68 में उल्लिखित है जिसके बारे में आपने भी भूमिका पृ0 99 पर लिखा है कि "शब्द बितहक़ीक़ (शोध करना) विश्वास दिलाना तो झूठों का काम है। प्रायः हमने देखा है कि झूठे आदमी विश्वास दिलाया करते हैं तो कहिए आप क्या जवाब देंगे? बहुत जल्द जवाब दिया जाए जो हमारे काम भी आए।

(101) "ये लोग वे हैं कि मुहुर रखी अल्लाह ने ऊपर दिलों के

उनके। उनकी आखों, कानों पर और ये लोग वही है जो बेख़बर और पूरा दिया जाएगा हर आत्मा को कि जो कुछ कि किया है और वह न जुल्म किए जाएंगे।" (आयत – 102–106)

आपत्ति

जब अल्लाह ही ने मुहुर लगा दी तो वे बेचारे निर्दोष ही मारे गए। क्योंकि उनको मोहताज बिल ग़ैर कर दिया यह कितना बड़ा दोष है और फिर कहते हैं कि जिसने जितना किया है उतना ही उसे दिया जाएगा कम व ज़्यादा नहीं। जब उन्होंने स्वयं अपने तौर पर गुनाह किए ही नहीं बल्कि अल्लाह के कहने से किए तो उनका क्या दोष है? उनको फ़ल न मिलना चाहिए उसका फल तो अल्लाह को मिलना चाहिए और यदि कर्म पूरे कर दिए जाते हैं तो माफ़ी किस बात की मांगी जाती है और यदि माफ़ी दी जाती है तो न्याय कहां रह सकता है। ऐसी अंधा धुंध कार्रवाई अल्लाह की कमी हो सकती है अलबत्ता वे अक़्ल छोकरों की हुआ करती है।

आपत्ति का जवाब

न0 6, 22, 65 में विस्तृत जवाब हो चुका है इसके अलावा यहां पर इसी आयत से पहले इसका जवाब स्वयं मौजूद है सुनो।

"उन्होंने दीन पर दुनिया को बरीयता दी है और इसलिए कि खुदा काफ़िरों को सौभाग्य भलाई का प्रदान नहीं करता। यही जिनके दिलों और कानों और आंखों पर अल्लाह ने मुहुर की हुई है और यही लोग ग़ाफ़िल हैं।" (सूरह नह्ल – 107 – 108)

कहिए स्वामी जी! लेख और विषय तो साफ़ है या नहीं? सत्यार्थ प्रकाश पृ0 541; समलास 12 न0 27 में बौद्धों की गुमराही का लेख देख व पढ़कर जवाब देना। विस्तार के लिए न0 6 को देख लें।

"नापाक बातिन वाले जाहिलों को निश्चय ही ज्ञान नहीं होता।"

(भूमिका पृ0 52)

(102) सूरह बनी इसराईलः "और बनाया हमने जहन्नम को काफ़िरों के लिए क़ैदख़ाना और हर आदमी को लगा दिया हमने, उसका कर्मपत्र उसकी गर्दन के बीच उसकी। और निकालेंगे हम वास्ते उसे क़यामत के दिन एक किताब कि देखेगा उसे खुली हुई और हमने बहुत विनष्ट किए ज़मानों से पीछे नूह के। (आयत –12 – 16)

आपत्ति

यदि काफ़िर वही हैं कि जो कुरआन पैग़म्बर और कुरआन के कहे हुए खुदा, सातवें आसमान और नमाज़ आदि को नहीं मानते और उन्हीं के वास्ते जहन्नम है। तो यह बात मात्र तरफ़दारी की है क्या कुरआन ही के मानने वाले सब अच्छे और बाक़ी बुरे कभी हो सकते हैं। यह तो लड़कपन की बात है कि हरेक की गर्दन में कर्मपत्र हो। हम तो किसी एक की गर्दन में नहीं देखते। यदि इससे तात्पर्य कर्मों का बदला देना है तो फिर मनुष्यों के दिलों, आंखों आदि पर मुहुर लगाना और गुनाहों का माफ़ करना क्या खेल की बातें हैं? क़यामत की रात को खुदा किताब निकालेगा तो अब वह किताब कहां है? क्या दुकानदारों के रोज़नामचों की भान्ति खुदा लिखता रहता है?

यहां पर सोच विचार करना चाहिए कि यदि पहला जन्म ही नहीं है तो आत्माओं के कर्म कहां से आ गए और कर्म पत्र कहां से बन सकेगा? और यदि बिना कर्म के लिखा गया तो खुदा ने उन पर जुल्म किया। सदाचार व दुराचार कर्मों के बिना उनको दुख व सुख क्यों दिया? यदि कहो कि अल्लाह की मर्ज़ी, तब भी उनसे जुल्म क्या अन्याय नहीं है क्या न्याय इसी को कहते हैं कि बिना अच्छे बुरे

कर्मों का लिहाज़ किए दुख सुख का देना? और क्या उस समय अल्लाह ही की किताब पढ़ेगा या कोई मीर मुन्शी सुना देगा। यदि खुदा ने ही लम्बी अवधि की पड़ी हुई आत्माओं को बिना दोष विनष्ट कर दिया तो वह ज़ालिम हो गया। जो ज़ालिम है वह खुदा नहीं हो सकता।

आपत्ति का जवाब

अल्लाह रे ऐसे हुस्न पे यह बे नियाज़ियां
बन्दा नवाज़ आप किसी के खुदा नहीं

क्या करें एक जगह नहीं, बीसों जगह एक ही सवाल को पेश किया जाता है। हां स्वामी जी महाराज! वही काफ़िर है जो कुरआन के इन्कारी हैं जैसे वही नास्तिक है जो वेद के इन्कारी हैं। (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 347, समलास 10 न0 8) या वही पथ भ्रष्ट हैं जो वेद का विरोध करते हैं (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 541)

अरबी का मुहावरा तो भला दूर की बात थी अफ़सोस कि पंडित जी उर्दू के मुहावरे से भी अनभिज्ञ हैं। समाजियो! यदि उर्दू से नफ़रत नहीं तो सुनो – "तेरे उपकार से मेरी गर्दन दबती है। जैसे यहां गर्दन से तात्पर्य स्वयं वाचक हो। इसी तरह कुरआनी आयत में उनुक़ (गर्दन) से तात्पर्य स्वयं गर्दन वाला है।अतः आयत के मायना साफ़ है कि खुदा फ़रमाता है कि हमने हरेक अपराधी के गुनाह उसी की गर्दन पर लादे हैं। यह नहीं कि कोई किसी का ज़मानती या परायश्चित हो सके जैसा ईसाइयों का विचार है।

सुनो

कुरआन अपनी टीका करता है जिस आयत को स्वामी जी ने नक़ल किया है उसके साथ यह भी है–

"जो कोई हिदायत पर आता है वह केवल अपने ही लिए आता है

और जो गुमराह होता है वह अपना ही कुछ खोता है। कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ न उठा सकेगा।" (सूरह बनी इसराईल–14)

कहिए स्वामी जी! आगे पीछे स्थान एवं उचित अवसर देखे बिना मायना करना किन लोगों का काम है? भूमिका पृ0 82 देखकर जवाब दें।

पुनर जन्म (आवागमन) का जवाब पहले कई बार आ चुका है। अफ़सोस आयत में साफ़ शब्द मौजूद हैं – "तू अपना कर्म पत्र स्वयं पढ़ ले तू ही हिसाब के लिए काफ़ी है।" (बनी इसराईल –14)

फिर भी स्वामी जी पूछते हैं कि खुदा पढ़ेगा या कोई मुन्शी सुना देगा। सच है।

"हठ धर्मी सदैव वाचक की मन्शा के खिलाफ़ मायना निकाला करते हैं।" (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7)

निर्दोष गुनाह का लिखना तो जुल्म है। कुरआन की शिक्षा से मालूम होता है कि जुल्म खुदा की आदत नहीं अलबत्ता वेदिक शिक्षा का मन्शा है कि ऐसा न हो कि सब बन्दे सदाचारी हो जाएं वर्ना परमेश्वर को फिर समय का सामना होगा।

(देखो ईश्वरीय किताब पृ0 15 – 16)

(103) "और दी हमने समूद को ऊंटनी दलील, और बहका जिसे बहका सके। जिस दिन बुलाएंगे हम सब को उनके पेशवाओं के साथ अतः जो कोई दिया गया कर्म पत्र उनके दाए हाथ में।"

(आयत 57 – 62 –68)

आपत्ति

वाह जी वाह! जितने आश्चर्य जनक निशान हैं। उनमें से एक ऊंटनी भी अल्लाह के होने में दलील का काम देती है। यदि खुदा ने शैतान को बहकाने का हुक्म दिया है तो खुदा ही शैतान का सरदार

और सारे गुनाह कराने वाला हुआ। ऐसे को खुदा कहना केवल कम समझ आदमियों की बातें हैं और यदि क़यामत के दिन न्याय के लिए रसूल और उसके अनुयायियों को खुदा बुलाएगा तो जब तक क़यामत न होगी तब तक क्या यूं ही अधर में लटके रहेंगे तो यह कि उनको यूं ही लटका कर तकलीफ़ न पहुंचायी जाए बल्कि तुरन्त उनको न्याय दिया जाए और यही एक न्याय धीश का उच्चतम कर्तव्य है।

यह तो पोपान बाई का न्याय हो गया। जैसे कोई न्यायधीश कहे कि जब तक पचास साल के चोर और साहूकार इकट्ठा न होंगे तब तक उनको इनाम या दंड नहीं दिया जाएगा। यह किस प्रकार का न्याय है कि एक व्यक्ति तो पचास साल तक अधर में लटका रहे और दूसरे का आज ही फ़ैसला हो जाए। यह न्याय का तरीका नहीं हो सकता। न्याय के लिए तो वेद और मनु स्मृति देखो जिसमें लिखा है कि क्षण भर की देरी भी नहीं होती और जीव अपने अपने कर्मों के अनुसार इनाम या दंड पाते रहते हैं और रसूलों को गवाही में रखने से अल्लाह के सर्वज्ञाता होने में फ़र्क़ आ जाएगा। भला ऐसी किताब खुदा की बनाई हुई और ऐसी किताब का पथ प्रदर्शन करने वाला खुदा कभी हो सकता है? कदापि नहीं।

आपत्ति का जवाबः

ओहो! ओहो! स्वामी जी ऊंटनी को क्या कम निशानी समझते हैं। सुनिए कुरआन बताता है।

"मुश्रिक (बहुदेव वादी) ऊंटनी की ओर नहीं देखते कि कैसे बनाया गया है।" (सूरह गाशियह)

विस्तृत बहस ऊंटनी की न0 91 में है। अफ़सोस स्वामी जी को इतनी भी ख़बर नहीं कि अम्र (आदेश का) कलिमा कई मायनों के

लिए इस्तेमाल होता है। कोई काम कराने के लिए जो याचक की मन मर्ज़ी और कमी झिड़क व ना पसन्दीदगी के लिए जैसे उच्च अधिकारी अपने मातहत को कहें। "हमारे सामने से चले जाओ।"

इसी तरह और भी कई एक मायना में यह अम्र का कलिमा इस्तेमाल होता है। पंडित जी ने इन दोनों मायनों में भेद नहीं महसूस किया और यह नहीं समझा कि यह कलिमा अम्र कुन (हो जा) के मायना में है। शैतान को खुदा का हुक्म देना इन मायना से है जिनसे उच्च अधिकारी तनिक नाराज़गी के स्वर में कहा करता है कि "जाओ झक मारो मेरे सामने से हट जाओ। इस कलाम के यह मायना समझने कि एक अधिकारी झक मारने का हुक्म देता है स्वामी जी जैसे विद्वानों का काम नहीं— सुनिए कुरआन स्वयं बताता है।

"कुछ संदेह नहीं कि अल्लाह न्याय और उपकार और रिश्ते दारों को देने का हुक्म करता है और अश्लील और नाजायज़ कामों और ज़ुल्म व अत्याचार से मना करता है।" (सूरह नहल – 90)

ख़ास शैतान के संबंध में यह हुक्म मौजूद है।

"ऐ शैतान तुझे और तेरी चाल पर चलने वालों को जहन्नम में डालूंगा।" (सूरह स्वाद – 85)

इसी आयत से आगे जिसे पंडित जी ने नक़ल किया है स्पष्ट रूप से बताया गया है— सुनो

"ऐ शैतान! निस्संदेह तू लोगों को वायदा सुना। बेशक शैतान के वायदे सरासर धोखे व फ़रेब के हैं।" (सूरह बनी इसराईल – 64)

स्वामी जी का कहना बिल्कुल सच है।

"आगे पीछे स्थान व उचित अवसर को न देखकर मायना निकालने वाले नापाक बातिन वाले जाहिलों को निश्चय ही ज्ञान

नही होता।" (भूमिका – पृ0 52)

क़यामत के बारे में न0 15 आदि में विस्तार से लिखा है हां यह खूब कही कि न्याय के लिए क्षण भर देरी नहीं होती।" स्वामी जी इस जून में यदि किसी अपराधी डाकू की आयु तीन चार सौ साल की हो जाए या इतनी न सही सौ साल की उम्र के तो अब भी बहुत से मौजूद हैं तो उनके बुरे कामों की सज़ा या इनाम तो दूसरे जन्म में ही मिलेगा। फिर आप क्यों कहते हैं कि क्षण भर की देरी नहीं होती। यह विचित्र बात है कि आंख किसी की तो आज फोड़ी और सज़ा सौ साल के बाद और वह भी ऐसे हाल और होश में कि अपराधी को ख़बर भी नहीं कि यह सज़ा किस अपराध के लिए है यद्यपि आप स्वयं ही लिखते हैं।

"सज़ा देने से उद्देश्य यह है कि लोग सज़ा पाकर ग़लती से बाज़ आने के दुख न पाएं।" (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 233)

लेकिन जब अपराधी को पता ही नहीं तो आगे वह ऐसे अपराध से किस प्रकार बच सकता है। (विस्तृत जानकारी के लिए रिसाला बहस तनासुख़ लेखक फ़क़ीर में देखिए)

रसूलों की गवाही भी अपराधियों को क़ायल करने के लिए होगी न कि खुदा को जतलाने के लिए क्योंकि खुदा परोक्षज्ञाता है। सुनो।

"खुदा छुपे और खुले सब को जानता है। बड़ी बुजुर्गी वाला बहुत ऊंचे दर्जे वाला।बराबर है कोई तुम में से ऊंचे बोले या चुपके और जो रात को छुपा हुआ और जो दिन में चल रहा हो उसे सब मालूम है।" (सूरह राअद – 9 – 10)

(104) सूरह कहफ़ – "ये लोग, इनके वास्ते बाग़ हैं हमेशा रहने के लिए। चलती है इनके नीचे नहरें। गहना पहनाए जाएंगे बीच उनके कंगन सोने के और लिबास पहनेंगे कपड़े सब्ज़ लाही के से।

और गाऊ तकिए किए हुए बीच उसके ऊपर तख़्तों के अच्छा है सवाब और अच्छी है जन्नत फ़ायदा उठाने में।"

(आयत – 30)

आपत्ति

वाह जी वाह! क्या कुरआन की जन्नत है जिसमें बाग़ ज़ेवर, कपड़े गद्दे तकिए आराम के वास्ते हैं। कोई अक़्ल मन्द यहां पर सोच विचार करे तो मालूम होगा कि यहां से वहां अर्थात मुसलमानों की जन्नत में ज़्यादती कुछ भी नहीं है सिवाए बे इन्साफ़ी के और वह है कि कर्म तो उनके सीमित हैं और फल उनके असीमित। यदि मीठा ही रोज़ खाया जाए तो थोड़े दिन में विष की तरह मालूम होने लगता है। जब वे सदैव सुख भोगेंगे तो उनके लिए सुख ही बड़ी मुश्किल से दुख हो जाएगा इसलिए महा कल्प तक मुक्ति सुख भोग कर दो बारा जन्म पाना ही सच्चा मसला है।

आपत्ति का जवाब

बेशक यही मुसलमानों की जन्नत है और यही इन्शा अल्लाह उनको मिलेगी और इसी से काफ़िर वंचित किए जाएंगे। विस्तृत जानकारी न0 15 आदि में देखें– हां यह भली कही कि सदैव सुख भोगेंगे तो उनके लिए सुख भी बड़ी मुश्किल से दुख हो जाएगा।

समाजियो! सारी उम्र आराम न किया करो, बल्कि कभी कभी बे आरामी और बे चैनी में भी जानकर पड़ा करो बल्कि बड़े घर की सैर भी किया करो वर्ना गुरू का झुठलाना तुम पर थोपा जाएगा जो हमें किसी तरह भी स्वीकार नहीं।

(105) "और ये बस्तियां कि तबाह किया हमने इनको जब ज़ुल्म किया उन्होंने और किया हमने वास्ते हलाक इनसे किए वायदे पर।" (आयत – 58)

आपत्ति

भला क्या सारी बस्ती के रहने वाले गुनाह गार हो सकते हैं? और पीछे वायदा करने से मालूम हुआ कि ख़ुदा सर्वज्ञाता नहीं है क्योंकि जब उनका ज़ुल्म देखा तो वायदा किया। क्या पहले नही जानता था। इन बातों से निर्दयी ही साबित हुआ।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी! आपके आगमन से पहले सारी व्यवस्था थी या नहीं या ग़ाज़ी महमूद ग़ज़नवी की सेना और सारे देश दुष्ट थे या नहीं? फिर ऐसा सवाल करना कि सारी बस्ती के लोग गुनाहगार हो सकते हैं? कैसा दावा है। इसके अलावा जो लोग उन बस्तियों में सदाचारी होते थे उनको बचाया जाता था। सूरह हूद में अम्बिया (नबियों) के विस्तृत क़िस्से आप पढ़े होते तो आपको मालूम होता कि जो लोग नबियों के अधीन होते उनको नबियों के साथ बचाया जाता था मगर चूंकि उनकी संख्या भी उतनी होती थी जितनी कि समाजियों के सनातन धर्मी हिन्दुओं के मुक़ाबले में ख़ास तौर से आपके जीवन में थी। इसलिए सामान्यता पूरी बसती के तबाह होने की बात बतायी गयी। यह तो एक सामान्य शिकायत है कि आप ने इस आयत के मायना नहीं समझे। मूल शब्द ये हैं। सुनो।

अर्थात पहले पहल लोगों को जिन्होंने उदंडता की हमने तबाह किया और उन मक्का के बहुदेव वादियों की तबाही का भी एक समय निर्धारित है पिछले वाक्य को स्वामी जी ने पहले लोगों से संबंधित समझा और यदि पहले लोगों से भी हो तो यह कैसे मालूम हुआ कि पीछे वायदा किया गया? क्या यह कलाम सही नहीं कि हमने इनको तबाह किया और इनकी तबाही का एक निर्धारित समय था इससे तो अल्लाह के सर्वज्ञाता होने की विशेषता मालूम होती है

न कुछ और मगर इसका क्या इलाज हो कि।

"हठ धर्मी धर्म के अंधेरों में बुद्धि को भ्रष्ट कर लेते हैं।"

(भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7)

(106) "और वह जो लड़का तो थे उसके मां बाप ईमान वाले अतः डरे हम यह कि गिरफ़तार करे उनको उद्दंडता और कुफ़र में। यहां तक कि जब पहुंचा जगह डूबने सूरज के। तो पाया उसे डूबता था बीच चश्मे कीचड़ के। कहां उन्होंने ऐ जुल करनैन बेशक याजूज माजूज फ़साद करने वाले हैं ज़मीन पर।" (आयत –79–84–91)

आपत्ति

भला यह खुदा की कितनी नादानी है। उसे यह संदेह हुआ कि कहीं यह लड़कों के मां बाप मुझ से विद्रोही न बना दिए जाएं। यह कदापि खुदा की बात नहीं और ला इल्मी की बात देखिए कि इस किताब का लेखक सूरज को एक झील में रात के समय डूबता हुआ समझता है और यह कि सुबह को फिर निकल आता है। सूरज तो ज़मीन से बहुत बड़ा है वह किसी नदी या झील या समुन्द्र में किस तरह डूब सकता है?

इससे यह मालूम हुआ कि कुरआन के लेखक को भूगोल शास्त्र या खगोल शास्त्र का भी ज्ञान नहीं आता था यदि आता तो ऐसी ज्ञान से परे की बातें न लिखता इस किताब के अनुयायी भी जाहिल हैं यदि ज्ञानी व विद्वान होते तो ऐसी झूठी बातों से भरी हुई किताब को क्यों मानते? और वह देखिए खुदा का न्याय स्वयं ही तो ज़मीन को बनाने वाला बादशाह और आदिल है और स्वयं ही याजूज और माजूज को ज़मीन पर फ़साद करने देता है यह उसकी खुदाई की शान के योग्य नहीं। ऐसी किताब को वहशी लोग ही मान सकते हैं विद्वान नहीं।

आपत्ति का जवाब

किसी पंडित जी ने एक आर्य समाजी से कहा– भाई साधना किया कर। समाजी बोला– साहब! आपने दावत की थी नमक ज़्यादा डाला था। पंडित जी बोले उसका इससे क्या संबंध? समाजी ने कहा बात से बात निकल आती है।

यही हाल हमारे पंडित जी स्वामी महर्षि जी का है बात से बात निकालना तो उनके बांए हाथ का खेल है। मगर अफ़सोस।

स्वामी जी ने यह कलाम खुदा का समझा यद्यपि हज़रत ख़िज़्र अलैहि0 का कलाम मन्कूल है। तो आप की सारी पोल खुल गयी। अतः हमारा न्याय देखिए कि हम आपके कलाम पर हां करते हैं कि यह कदापि खुदा की बात नहीं हो सकती।

समाजियो! हमारे न्याय की दाद दो और तुम भी ऐसे ही न्याय वाले बनो। स्वामी जी इस वाक्य से बड़े नाराज़ मालूम होते हैं महाराज सब ठीक तो है? इतना तो समझए कि जिस धर्म को करोड़ों आदमी मानते हैं उसे झूठा कहने वाला कौन है? (सत्य प्रकाश देखकर जवाब दीजिए) लीजिए साहब! हम आपको राज़ी कर लेते हैं नाराज़ होने की कोई बात नहीं है।

जिस शब्द का यहां अनुवाद "पाया' किया गया है वह कुरआन में व ज द का शब्द है। अरबी व्याकरण की छोटी छोटी किताबों में इस शब्द को अफ़आल कुलूब से लिखा है जिसके मायना यह हैं कि उस (सिकन्दर या जुल क़रनैन क्योंकि इस स्थान पर उसी का ज़िक्र है) ने जब वह समुन्द्र के किनारे पर पहुंचा तो अपने मन में सूरज को समन्द्र के पानी में डूबता समझा अर्थात उसके विचार में यूं आया कि सूरज उस पानी में डूबता है अतएव समुन्द्र के किनारे पर खड़े होने वाले आजकल भी ऐसा ही समझते हैं। इसकी

तसदीक़ ख़ुदा की ओर से कोई नहीं हुई कि हां वास्तव में सूरज समन्द्र में डूबता है।

समाजियो! आगे पीछे को बिना देखे कलाम के मायना करने वाले कौन होते हैं (भूमिका पृ0 52) को देख कर जवाब देना याजूज और माजूज के फ़साद को न रोकने का जवाब न0 11 में आ चुका है। हमारे इस जवाब पर आप उपदेश मंजरी पृ0 60 पर हस्ताक्षर कर चुके हैं वर्ना बताओ ग़ाज़ी महमूद ग़ज़नवी को आर्य वरत से ईश्वर ने क्यों न रोका?

(107) सूरह मरयम – "और याद करो बीच किताब के मरयम को जब जा पड़ी लोगों अपने मकान से पूर्व में। तो पकड़ा उनसे उधर पर्दा। तो भेजा हमने उसकी ओर अपनी रूह को। तो सूरत पकड़ी वास्ते उसके आदमी स्वस्थ की। कहने लगी बेशक मैं पनाह पकड़ती हूं साथ रहमान के तुझसे यदि है तू अल्लाह से डरने वाला। कहने लगा सिवाए इसके नहीं कि मैं भेजा हुआ हूं तेरे रब का ताकि प्रदान कर जाऊं तुझको एक पवित्र लड़का। कहा क्योंकर होगा मेरे लड़का जबकि नहीं हाथ लगाया मुझे किसी आदमी ने और न मैं बदकार हूं। तो गर्भवती हो गयी साथ उसके। अतः जा पड़ी साथ उसके मकान दूर में अर्थात जंगल में।" (आयत – 12–16–18)

आपत्ति

अक़्लमन्द सोच विचार करें कि यदि सब फ़रिश्ते ख़ुदा की रूह हैं तो वे ख़ुदा से अलग वजूद नहीं हो सकते और वह ज़ुल्म कि उस मरयम कुंवारी के लड़का होना जो किसी से संभोग करना नहीं चाहती थी लेकिन ख़ुदा के हुक्म से फ़रिश्ते ने उसे गर्भवति किया यह न्याय के ख़िलाफ़ है। यहां और भी शालीनता के विरुद्ध बहुत सी बातें लिखी हैं उनको लिखना उचित नहीं समझा।

आपत्ति का जवाब

फ़रिश्तों या किसी और चीज़ का अल्लाह की रूह होना न0 98 में विस्तार से आ चुका है। स्वामी जी यह ज़ुल्म कि सिद्दीक़ा मरयम के बारे में यह लिख मारा कि किसी से संभोग नहीं करना चाहती थी। ऐसा झूठ बोलना साधुओं का काम है? यह किस शब्द का अनुवाद है? कोई बात न्याय के विरुद्ध नहीं बल्कि ख़ुदा की क़ुदरत का प्रकटन है कि जिसने अग्नि वायु आदि को जवान जवान पैदा किया। वह बे बाप भी पैदा कर सकता है। अफ़सोस अपने बाक़ी अशलील को आप दबा गए वर्ना वह भी देख लेते। शायद न0 11 वाला तो नहीं ......?

ईसाइयो ! कहां हो?

(108) "क्या नहीं देखा तूने यह कि भेजा हमने शैतानों को ऊपर काफ़िरों के बहकाते हैं उनको बहकाने का। (आयत – 78)

आपत्ति

जब ख़ुदा ही शैतानों को बहकाने के लिए भेजता है तो बहक जाने वालों का कुछ दोष नहीं हो सकता और न उनको सज़ा हो सकती है और न शैतानों को क्योंकि यह ख़ुदा के हुक्म से सब कुछ होता है इसका फल ख़ुदा को मिलना चाहिए यदि सच्चा न्याय करने वाला है तो इसका फल अर्थात जहन्नम आप ही भोगे और यदि न्याय को छोड़ कर अन्याय करता है तो वह पक्षपाती हो गया और तरफ़दार (पक्षपाती) ही को गुनाहगार कहते हैं।

आपत्ति का जवाब

न0 6, 65 आदि में विस्तृत जवाब आ चुका है। स्वामी जी को तो न0 बढ़ाने की आदत है।

(109) सूरह ताहा – "और बेशक मैं (अल्लाह) बख़्शने वाला हूं

वास्ते उस व्यक्ति के कि तौबा की और ईमान लाया और अच्छे अमल किए फिर राह पायी। (आयत – 76)

आपत्ति

तौबा से गुनाह माफ़ होने के बारे में जो कुरआन में लिखी है वह सब गुनाहगार बनाने वाली है क्योंकि गुनाहगारों को उस गुनाह को करने का साहस मिलता है इसलिए यह किताब और उसका लेखक गुनाहगारों को गुनाह करने में साहस जुटाते हैं अतः यह किताब अल्लाह की किताब और इसमें बयान किया गया खुदा सच्चा खुदा नहीं हो सकता।

आपत्ति का जवाब

तौबा की बाबत न0 22 में विस्तृत उल्लेख है देख लें। स्वामी जी की तरह एक ही बात को बार बार लिख कर समझदारों की नज़र में लज्जित होना हम नहीं चाहते।

(110) सूरह अम्बिया – "और किए हमने बीच जमीन के पहाड़, ऐसा न हो कि हिल जाए। (आयत – 31)

आपत्ति

यदि कुरआन का लेखक धरती के घूमने आदि को जानता तो यह बात कभी न कहता कि पहाड़ों के रखने से ज़मीन नहीं हिलती। सन्देह हुआ कि यदि पहाड़ न रखता तो हिल जाती। पहाड़ रखने पर भी भूकम्प के समय क्यों हिल जाती है?

आपत्ति का जवाब

अलबत्ता यह वाक्य समाजियो की तवज्जोह के योग्य है यद्यपि हम पहले भी लिख आए हैं बल्कि सदैव लिखेंगे फिर भी इस अवसर पर तो यह लिखना बिल्कुल मुनासिब है।

स्वामी जी! आयत का मतलब है कि जमीन पानी की अधिकता के

कारण हिलती थी जैसे बे लोहा लगे जहाज़ या लकड़ी की बेड़ी पानी पर हिलती है अतः खुदा ने पहाड़ों को लोहे की बड़ी कीलों की तरह गाड़ दिया तो बेडोल हिलने से ठहर गयी।

इन मायना पर कुरआन से दलील सुनना चाहो तो सुनो--

"हम (खुदा) ने ज़मीन को रहने के लिए एक गहवारा की तरह बनाया और पहाड़ों को उसकी मीखें (बड़ी कीलें)" (नबा – 6–7)

तो यदि अंग्रेजी भौतिक विज्ञान के उसूल को मानकर (जिनके मानने के लिए हमें धर्म की रू से कोई रोक नहीं है यदि है तो ज्ञान विज्ञान के तरीके से कि दलील नहीं रखते) भी हम बात करें तो यह कह सकते हैं कि यह आयत इनकी पुष्टि करती है क्योंकि बेड़े की हरकत बिना लोहे के जिस प्रकार डांवा डोल होती है यदि पहाड़ न होते तो इस तरह ज़मीन की हरकत डांवा डोल होती। पहाड़ों के जमाने से एक मन्शा यह भी है कि ज़मीन की हरकत नियमित रूप से हो। अतः जिस हरकत का सबूत वर्तमान ज्ञान से होता है उसका तोड़ और इन्कार कुरआन ने नहीं किया है और जिसका तोड़ व इन्कार किया है वह इस भौतिक विज्ञान से साबित नहीं होता।

हमारे इस लम्बे बयान से भूकम्प का जवाब भी आ गया क्योंकि जिस हरकत का इन्तज़ाम पहाड़ों से कुरआन ने बताया है वह एक असाधारण डांवा डोल हरकत है जैसे पानी पर हल्की सी चीज़ सामान्यता हिला करती है और भूकम्प इस तरह से नहीं बल्कि ये तो किसी ख़ास समय में किसी अग्नि मिश्रित पदार्थों की गर्मी व तीव्रता से किसी विशेष अवसर पर हरकत होती है। इन दोनों में बहुत अन्तर है।

"मगर नापाक बातिन वाले जाहिलों को ज्ञान कहां।"

(भूमिका – पृ0 52)

(111) "और पथ प्रदर्शन किया उस औरत को कि रक्षा की उसने अपने सतीत्व की। तो फूंक दिया हमने बीच उसके अपनी रूह को।" (आयत – 80)

आपत्ति

ऐसी गन्दी व अशलील बातें खुदा की किताब में खुदा की तो क्या किसी शालीन व्यक्ति की भी नहीं हो सकती जबकि मनुष्य ऐसी बातों का लिखना अच्छा नहीं समझते तो खुदा के सामने किस तरह अच्छा हो सकता है? ऐसी बातों से कुरआन बदनाम हो गया है अगर इसमें अच्छी बातें होतीं तो इसकी बड़ी प्रशंसा होती जैसी कि वेदों की होती है।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी! ठीक ठाक तो हैं? कैसी गंदी व अशलीलता की बातें एक तो बतायी होती। क्या नियोग का उल्लेख आ गया? कहिए तो सही, हां अब समझे कि औरत का ज़िक्र आ गया।

स्वामी जी कहीं रूह फूंक देने को तो गन्दा व अशलील नहीं कहते? नहीं ...... ऐसा क्यों कहने लगे जब स्वयं ही इन बातों का ज़िक्र किया करते हैं और लोगों को उपदेश दिया करते हैं।

समाजियो सुनो!

"मासिक धर्म के प्रकट होने के पांचवे दिन से लेकर सोलहवें दिन तक जो संभोग का समय है इससे पहले के चार दिन छोड देने चाहिए। शेष जो बारह दिन रहे उनमें ग्यारहवीं और तेरहवीं रात को छोड़ कर शेष दस रातों में संभोग करना गर्भ के लिए अच्छा है। मासिक धर्म के शुरू होने के दिन से लेकर सोलहवीं रात के बाद संभोग नहीं करना चाहिए और जब तक कि दोबारा निर्धारित समय संभोग का जैसा कि बताया गया है न आए तब तक और गर्भ ठहर

जाने के बाद एक साल तक संभोग न करे।"

(सत्यार्थ प्रकाश अध्याय 2 न0 1)

और सुनिए–

जैसे ऐलानिया विवाह वैसे ही ऐलानिया नियोग। जिस प्रकार विवाह में भले लोगों की राय और दुल्हन की रजा मन्दी होती है वैसे ही नियोग में भी होनी चाहिए अर्थात जब औरत मर्द का नियोग (नियोग की परिभाषा न0 38 में देखें) होना हो। तब उसे अपने परिवार में मर्द व औरतों के सामने प्रकट करे कि हम दोनों नियोग, सन्तान पैदा करने के उद्देश्य से करते हैं। जब नियोग का उद्देश्य पूरा हो जाएगा तब हमारे संबंध टूट जाएंगे। यदि इसके विरुद्ध करेंगे तो पापी और जाति या राजा की सज़ा के भोगी होंगे। महीने में एक बार आदान (संभोग) (न जाने इस शब्द का अनुवाद संस्क्रत में क्यों किया गया) का काम करेंगे (तौबा तौबा ऐसी गन्दगी व अश्लीलता? स्वामी जी आप कहां हैं?) गर्भ के दौरान के एक साल बाद तक अलग रहेंगे।" (सत्यार्थ प्रकाश अध्याय 2, न0 123)

आर्य सज्जनो! तुम कहोगे स्वामी जी का क्या? वे तो एक ईश्वरीय संकेतों से वंचित व्यक्ति थे। ईश्वरीय ग्रंथों में ऐसा न होना चाहिए। तुम्हारा यह विचार हो तो सुनो तुम्हारे ईश्वरीय ग्रंथों में परमात्मा का कथन है।

"पुरूष का लिंग स्त्री की योनि में घुसने पर मुख्यता वीर्य छोड़ता है।" (यजुर वेद अध्याय – 19 मंत्र 76)

समाजियो बताओ! जब मनुष्य ऐसी बातों का लिखना अच्छा नहीं समझते तो खुदा क्यों समझने लगा। विश्वास न हो तो दोनों वाक्यों (क़ुरआन और वेद) किसी भले ब्रहमो आदि को सुनाकर देख लो।

(112) सूरह हज– "क्या नहीं देखा तूने यह कि अल्लाह को

सज्दा करते हैं वास्ते उसके जो कोई बीच आसमानों और ज़मीन के हैं। सूरज, चांद, तारे, पहाड़, पेड़ और जानवर पहनाए जाएंगे बीच उनके कंगन सोने से और मोती के और लिबास उनका रेशमी है और पाक रख मेरे को वास्ते परिक्रमा करने वालों के और खड़े रहने वालों के फिर चाहिए कि दूर करें मैल अपनी और पूरी करे अपनी नज़्रें और प्राचीन घर की परिक्रमा करें तो कह कि याद करें हम नाम अल्लाह का।" (आयत 17, 21, 24, 27, 32)

पाठको! अनुवाद का मतलब समझ में न आए तो स्वामी जी की आत्मा को सवाब पहुंचाएं जिन्होंने हेर फेर किया है)

आपत्ति

जो निर्जीव वस्तुएं हैं वे खुदा को जान ही नहीं सकतीं तो फिर उसकी उपासना किस तरह कर सकती हैं? इसलिए यह किताब अल्लाह का कलाम नहीं हो सकती। हां, किसी पथ भ्रष्ट की बनाई हुई मालूम देती है। वाह बड़ी अच्छी जन्नत है कि जहां सोने मोती के आभूषण और रेशमी लिबास पहनने को मिलते हैं। यह जन्नत तो यहां के राजाओं से कुछ बढ़कर नहीं है और जब खुदा का घर है तो वह उस घर में रहता भी होगा फिर मूर्ति पूजा क्यों न हुई और दूसरे मूर्ति पूजकों का खंडन व निंदा क्यों करते हो? जब खुदा नज़्र लेता है और अपने घर की परिक्रमा करने का आदेश देता है और जानवरों को मरवाकर खिला सकता है तो ये खुदा मन्दिर वाले भैरों व दुर्गा की भान्ति नहीं हुआ और कट्टर मूर्ति पूजा का कारण भी यही है। बुतों से मस्जिद बड़ा बुत है इसलिए खुदा और मुसलमान बड़े मूर्ति पूजक और पोरानी व जैनी छोटे मूर्ति पूजक हैं।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी की ज़बान भी हज्जाज की तलवार से कम नहीं। मगर

कैसा पापी है वह मनुष्य जो धर्म के अंधियारे में फंस कर वाचक की मन्शा के विरुद्ध मायना निकालता है (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7) स्वामी जी की यह आदत बड़ी बे ढब है कि विभिन्न स्थानों की आयतों को एक जगह जमा कर देते हैं जिससे उनका मूल उद्देश्य तो यह होता है कि कुरआन के बारे में अपने चेलों को गुमराह करें कि इसमें ऐसी ऐसी गड़बड़ है कि कुछ समझ में नहीं आता मगर यह नहीं जानते कि दिन में अंधे को नज़र न आने से दिन की ग़लती साबित नहीं होती।

स्वामी जी सुनिए! सजदा का मायना फ़रमां बरदारी और शिष्टाचार के हैं हां हर चीज़ का आज्ञापालन और शिष्टाचार अपनी अपनी हैसियत के अनुसार होती है अतः आयत का मायना साफ़ है कि– "ज़मीन व आसमान की सारी चीज़ें ईश्वर की आज्ञा पालक हैं जो जो काम उनके हवाले हैं वे उनको बड़े अच्छे तरीक़े से पूरा कर रही हैं। कुरआन से गवाही इन मायनों की सुननी हो तो सुनो।

"हरेक चीज़ ईश्वर की आज्ञा पालक हैं"

जन्नत का जवाब पहले कई बार आ चुका है यहां पर इतना ही काफ़ी है कि स्वामी जी राजाओं के घरबार सोने चांदी के पलंग आदि भी तो आवागमन के क़ायदे से सदकर्मों ही का नतीजा हैं (देखो सत्यार्थ प्रकाश पृ0 342) फिर आप ही बताइए कि मुसलमानों की जन्नत में यदि सब कुछ ऐसे ही सुख वैभव हों क्या आपकी जन्नत से कुछ कम हैं, हां एक बात ज्यादा है वह यह कि इस संसार का एक तो जीवन ही अस्थिर है दूसरे कोई भी हो ईश्वर के आदेशानुसार (नानक दुखिया सब) राजा क्या और प्रजा क्या अपने अपने हाल में सब दुखी हैं मगर जन्नत वाले अब सब बलाओं से निर्भय होकर (जीवन) गुज़ारेंगे। विश्वास न हो तो सुनो।

"उन जन्नतियों को किसी प्रकार का कष्ट न होगा न वे जन्नत से निकाले जाएंगे। (सूरह हिज्र 48)

स्वामी जी! ख़ुदा का घर किस शब्द का अनुवाद है? बैतुल अतीक़ बेशक है जिसका अनुवाद है प्राचीन घर अर्थात पुराने समय का बना हुआ। आपने स्वयं ही नक़ल किया है। साधु होकर ऐसी चालाकी तो उचित नहीं। कहीं आप वही साधु तो नहीं जो मलाई सहित पिया करते हैं?

नज़्र पर भी आपने अपनी दया दृष्टि से काम लिया है मतलब आयत का साफ़ है कि जो किसी ने नज़्र व नियाज़ आदि खैरात करने की मानी हो वह पूरी करे मगर आप इस पर बेईमानी से काम लें तो इस का क्या इलाज?

मूर्ति पूजा का जवाब न030 में आ चुका है। स्वामी जी! बेचारे हिन्दुओं से आपको इतना दुख क्यों है कि हम गुनाहगारों को उनसे उपमा देते हैं आखिर को वे भी तो आपके भाई हैं वैदिक मत वाले हैं।, बल्कि वेद, भगवान को आप से आधिक मानते हैं। आप न सही आपके बाप दादा तो आख़िर वही हैं शायद इसी औचित्य को सामने रखते हुए आपने सारी उम्र अपने बाप का नाम भी न बताया जिससे अकारण विरोधियों को दुर्भावना पैदा हुई। (देखो आत्म कथा स्वामी जी)

(113) सूरह मोमिनून– "बेशक क़यामत के दिन उठाए जाओगे। (आयत – 16)

आपत्ति

क्या क़यामत तक मुर्दे क़ब्रों में रहेंगे या किसी और जगह? यदि इनमें खड़े रहेंगे तो सड़े हुए बदबूदार शरीरों में रह कर सदाचारी लोग भी कष्ट उठाएंगे? यह न्याय नहीं बल्कि जुल्म है और दुर्गन्ध व गन्दगी अधिक फैलाकर बीमारी पैदा करने के अपराधी होंगे।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी आप से तो उचित सवाल उस बहुदेव वादी का था जिसने कहा था।

कौन मुर्दा और गली (सड़ी) हडि्डयों को ज़िन्दा करेगा? (सूरह यासीन – 78)

जिसका जवाब उसे उसी समय मिला था।

" (तो ऐ मुहम्मद) कह दे वही उनको ज़िन्दा करेगा जिसने उनको पहले बनाया था वह अपनी सारी स्रष्टि को भली प्रकार जानता है।" (सूरह यासीन – 79)

शरीरों का सड़ना तो जब हो कि वहां मौजूद भी हों। यूं कहिए कि चूरा चूरा हुए शरीरों को क्यों कर खुदा नया बना देगा। जिसका जवाब ऊपर की आयत में मौजूद है अतः मुर्दे अर्थात उनकी रूहें शरीरों से अलग होकर अपनी जगह आत्मलोक में रहती हैं। भाग्यवानों के लिए वही जगह है जहां पर मुक्ति पाने वालों का रहना आप भी मानते हैं अलबत्ता बदकारों के लिए इसी के मुक़ाबिल जगह है अतः कुछ समय नहीं।

(114) सूरह नूर– "उस दिन गवाही देंगे इस पर उनकी ज़बानें और हाथ उनके और पांव उनके साथ उस चीज़ के कि थे करते। अल्लाह नूर है आसमानों का और ज़मीन का। उस नूर की मिसाल ताक़ के है कि बीच उसके चराग़ हो और वह चराग़ बीच क़न्दील शीशे के है। वह क़न्दील शीशे का मानो वह तारा है चमकता रोशन किया जाता है। वह चराग़ मुबारक पेड़ ज़ैतून का सा कि न पूरब की ओर है न पश्चिम की ओर है निकट है तेल उसका कि रोशन हो जाए। यद्यपि न लगे उसको आग रोशन। उस पर रोशनी की राह दिखाता है अल्लाह अपनी ओर जिसे चाहता है।" (आयत – 34 – 35)

आपत्ति

हाथ पांव आदि बेजान होने से गवाही कदापि नहीं दे सकते। यह बात क़ानूने कुदरत के ख़िलाफ़ होने से झूठी है क्या ख़ुदा आग था बिजली जैसा कि चराग़ आदि से उसे उपमा दी गयी है यह मिसाल ख़ुदा पर चरितार्थ नहीं हो सकती हां किसी शक्ल वाली चीज़ों पर चरितार्थ हो सकती है।

आपत्ति का जवाब

कुदरत का क़ानून आपको बहुत सूझता है मगर यह तो बताइए कि कई अरब साल बाद प्रलय (क़यामत) का मानना किस क़ानून का नतीजा है। यदि कोई ऐसी बिना पर आपके प्रलय से इन्कारी हो कि क़ानूने कुदरत के ख़िलाफ़ है तो क्या जवाब हम पहले लिख आए हैं कि हरेक काम के लिए एक समय होता है वह इसमें प्रकट हो जाता है यद्यपि वह कई लाख बल्कि करोड़ साल बाद भी क्यों न हो। इसके अवकाश के दिनों में न होने से कुदरत के क़ानून के खिलाफ़ कह देना यह भी कुदरत के क़ानून के खिलाफ़ है जबकि क़यामत के चिन्ह और क़ानून ही अलग हैं जो आज तक किसी क़ानून के बारें में आए ही नहीं तो उनको खिलाफ़ क़ानून कुदरत कहना स्वामी जैसे विद्वानों ही का काम है।

आयत के दूसरे हिस्से का मतलब बिल्कुल वही है जो ऋग वेद मंडल 3, सोकत 2 में है सुनो – परमेश्वर आदेश करता है।

"मैं उच्चतर प्रतापी तेज रखने वाला सूर्य की भान्ति समस्त संसार को प्रकाश प्रदान करने वाला हूं।" (ऋग वेद)

अतः आयत का लेख वेद की गवाही के बाद पूरी तरह साफ़ है कि समस्त आसमान व ज़मीन की रोशनी एक मात्र ईश्वर ही से है फिर अपनी रोशनी अर्थात मुहब्बत का उदाहरण अल्लाह ने बताया

है कि दर्द रखने वालों के दिल में ईश्वर की मुहब्बत ऐसे चमकती है और सब चीज़ों पर छायी होती है जैसे क़न्दील की रोशनी जिसमें उच्च दर्जे का साफ़ सुथरा तेल पड़ा हो। यह समस्त अंधियारों पर छा जाती है। इन मायना में कुरआन की गवाही चाहते हो तो सुनो।

ईमान वालों को अल्लाह के साथ सब चीज़ों से बढ़कर मुहब्बत होती है।" (सूरह बकरा – 165)

यह बात याद रखनी चाहिए कि इश्वर को छोड़ कर चाहे कैसे ही उच्च दूसरे काम किए जाएं लेकिन उनसे जीव आत्मा कभी भी मुक्त नहीं होती। मुक्ति (नजात) का ज़रिया केवल एक ईश्वर की प्राप्ती ही है।" (उपदेश मंजरी पृ0 –58)

स्वामी जी सच है–

"आगे पीछे को बिना देखे कलाम का मायना करने वाले नापाक बातिन वाले जाहिलों को निश्चय ही ज्ञान नहीं होता।" (भूमिका – पृ0 52)

(115) "और अल्लाह पैदा किया हर जानवर को पानी से, अतः कुछ उनमें से वह है कि चलता ऊपर पेट के और जो कोई आज्ञा पालन करे अल्लाह का और रसूल का कि आज्ञा पालन करो रसूल का तुम ताकि तुम पर दया की जाए।" (आयत 45, 51, 53, 55)

आपत्ति

यह कौन सी फ़लासफ़ी है कि जिन जानवरों के शरीर में सारे तत्व पाए जाते हैं उनके बारे में कहना कि केवल पानी से पैदा हुए हैं यह मात्र अल्पज्ञान एंव अज्ञानता की बात है। जब अल्लाह के साथ रसूल का आज्ञा पालन करना ज़रूरी है तो क्या अल्लाह का साझी हुआ या नहीं। यदि ऐसा है तो अल्लाह को क्यों कुरआन में ला शरीक कहा और लिखा जाता है?"

आपत्ति का जवाब

कुरबान ऐसी समझ पर। स्वामी जी बला से कुरआन को आप किसी उस्ताद से पढ़ लेते। आप जैसे पाक बातिन वाले साधू से ऐसी आपत्ति सुनकर दिल दहल जाता है। यह शिकायत तो हम करते ही नहीं कि आप जान बूझ कर विभिन्न स्थानों की आयतें बिगाड़ तिगाड़ कर क्यों नक़ल करते हैं इसलिए कि आप की समझ बूझ आप को यही सिखाती है।

स्वामी जी! पानी से तात्पर्य इस जगह वीर्य है। सुनो– दूसरी आयत में कुरआन मजीद स्वयं बताता है।

(अल्लाह फ़रमाता है) "क्या हमने तुमको गन्दे पानी (वीर्य) से पैदा नहीं किया?" (सूरह मुर्सलात – 20)

अतः आयत के मायना साफ़ हैं कि कुल जानदारों की पैदाइश का सिलसिला अल्लाह ने वीर्य से रखा है बताइए सच है या ग़लत? यदि विश्वास न हो तो नियोग पर सोच विचार कीजिए कि स्त्री नियोग क्यों करती है? गर्भ क्यों होता है?

रसूल के अनुसरण का जवाब न0 21, 53, 55 आदि में हो चुका है। यह तो आपकी साधारण सी बात है।

(116) सूरह फुरक़ान– "और जिस दिन कि फट जाएगा आसमान साथ बदली के और उतारे जांएगे फ़रिश्ते। तू मत कहा मान काफ़िरों का और झगड़ा कर उनसे साथ उसके झगड़ा बड़ा, और बदल डालता है अल्लाह बुराइयों को उनकी भलाइयों से और जो कोई तौबा करे और अमल करे अच्छे। तो बेशक वह पलटता है अल्लाह की ओर। (आयत 23, 50, 68, 69)

आपत्ति

यह बात कभी ठीक नहीं हो सकती कि आसमान बादलों के साथ

फट जाए और यदि आसमान कोई ठोस वस्तु हो तो फट सकता है। मुसलमानों का कुरआन शान्ति में रोड़ा अटका कर दंगा फ़साद कराने वाला है। इसलिए धार्मिक विद्वान इसको नहीं मानते। यह अच्छा न्याय है कि गुनाह व सवाब का अदला बदला हो जाएगा। क्या यह तिल और उड़द हैं कि इनका अदला बदला हो सके। यदि तौबा करने से गुनाह छूटें और खुदा मिले तो कोई भी गुनाह करने से क्यों डरेगा? इसलिए यह सब बातें ज्ञान के विरुद्ध हैं।

आपत्ति का जवाब

इस आयत को भी आप किसी विद्वान से पूछ लेते तो यह आपको न सूझता। मतलब आयत का यह है कि क़यामत से पहले अर्थात प्रलय के समय सारी दुनिया समाप्त हो जाएगी तो उस समय ज़मीन व आसमान और बादल सब नष्ट विनष्ट हो जाएंगे। नासिफ़ा विद्वान आकाश को प्राचीन मानते थे उनका धर्म रद्द करने को अल्लाह ने फ़रमाया कि क़यामत से पहले आसमान बादलों सहित फट जाएंगे यह नहीं कि बादल उनको फाड़ेंगे बल्कि बादल भी उनके साथ ही फटेंगे। इन मायना की दलील कुरआन से सुननी चाहो तो सुनो।

"जिस दिन आसमान व ज़मीन में फेर बदल किया जाएगा और लोग सब के सब ज़बरदस्त अल्लाह के समक्ष आएंगे।"

(सूरह इब्राहीम – 48)

आसमान के ठोस होने की बहस न0 7, 88 व न0 129 में देखिए।

मुसलमानों के दंगा फ़साद से स्वामी जी बड़े डरते हैं फिर भी बार बार उनको फ़साद ही सूझता है। हमारी सज्जनता देखिए कि हमने न0 2 ही में आपके फ़साद का मुक़ाबला करके उनका नाम तक नहीं लिया। जिस प्रकार दवाएं कुछ गर्म और कुछ ठंडी हैं फिर उनमें भी विभिन्न दर्जे हैं कुछ गर्म ऐसी हैं कि उनके बाद ठंडी चीज़ों

के इस्तेमाल से उनकी गर्मी ख़त्म हो सकती है कुछ ऐसी गर्म भी हैं कि उनके बाद कितनी ही ठंडी दवाएं क्यों न पिएं उनकी गर्मी ख़त्म नहीं हो सकती।

जैसे विष, ठीक इसी तरह गुनाहों की मिसाल है कि साधारण दर्जे के गुनाह आला दर्जे की नेकियों से दूर हो जाते हैं मगर एक ऐसे बढ़कर अपराध भी हैं कि किसी नेकी से ख़ता नहीं होते जब तक उन से तौबा न हो जैसे शिर्क व कुफ़्र। इन मायना की दलील कुरआन से सुननी चाहो तो सुनो।

"बेशक नेकियां बुराइयों को दूर कर देती हैं नसीहत पाने वालों के लिए नसीहत है।" (सूरह हूद -- 114)

अतः आयत का मायना साफ़ है कि तौबा (जो ऊंचे दर्जे की अल्लाह से निष्ठा है) से गुनाह माफ़ होने के अलावा यदा कदा दर्जों के अनुसार निष्ठा ऐसी भी होती है कि बजाए गुनाह के तौबा करने वाला गुनाहगार नेकियों का बदला पाता है।

(विस्तृत जानकारी नं0 22 में देखें)

(117) सूरह शोअ़रा– " और वहय की हम ने मूसा की तरफ़ यह कि रात को ले चल मेरे बन्दो को। बेशक तुम पीछा किए जाओगे। अतः भेजे लोग फ़िरऔन ने बीच शहरों के जमा करने वाले और वह व्यक्ति कि जिसने पैदा किया मुझको अतः वही राह दिखाता है और जो खिलाता है मुझको और पिलाता है मुझको, और वह व्यक्ति कि उम्मीद रखता हूं मैं कि माफ़ करे मेरी ग़लती वास्ते दिन क़यामत के।"[1] (आयत -- 50,51,76,77,80)

1- प्रिय पाठको! यह स्वामी जी की योग्यता और ईमान दारी है कि विभिन्न स्थानों से शब्द लेकर गड़बड़ मचा देते हैं। देखिए यह विषय कहां से कहा मिलाया जैसे गधे के गोश्त में उड़द की दाल।

आपत्ति

जब अल्लाह ने मूसा की ओर वहय भेजी तो फिर दाऊद, ईसा और मुहम्मद साहब की ओर किताब क्यों भेजी? क्योंकि खुदा की बातें सदैव समान और बे ख़ता हुआ करती हैं और इसके बाद कुरआन तक किताबों का भेजना प्रकट करता है कि पहली किताब अधूरी और त्रुटियों से भरी थी यदि ये तीन किताबें सच्ची हैं तो कुरआन झूठा होगा। चारों किताबें जो कि परस्पर विरोधी हैं वे बिल्कुल सही नहीं हो सकती। यदि खुदा ने रूह पैदा की हैं तो वे मर भी जाएंगी अर्थात उनका कभी अन्त भी हो। जो खुदा ही मनुष्य और आत्माओं को खिलाता पिलाता है किसी को बीमारी न होनी चाहिए और सब को बराबर आहार मिलना चाहिए और कृपा व दया दृष्टि से एक को उत्तम और दूसरे को ख़राब जैसा कि बादशाह को उत्तम और ग़रीब को ख़राब मिलता है न मिलना चाहिए।

जब खुदा ही खिलाने पिलाने और परहेज़ कराने वाला है तो बीमारी न होनी चाहिए लेकिन मुसलमानों को भी बीमारियां लगती हैं। यदि खुदा ही बीमारी को दूर करके आराम देने वाला है तो मुसलमानों के शरीरों में बीमारी न होनी चाहिए। यदि होती है तो खुदा पूरा हकीम नहीं। यदि पूर्ण हकीम है तो फिर मुसलमानों के शरीरों में बीमारी क्यों रहती है? यदि वही मारता है और ज़िन्दा करता है तो फिर उसी खुदा के ज़िम्मे गुनाह सवाब होना चाहिए। यदि जन्म जन्मांतर के कर्मो के अनुसार न्याय करता है तो वह कुछ भी गुनाह का ज़िम्मेदार नहीं है यदि वह गुनाह माफ़ करता और न्याय क़यामत की रात को करता है तो खुदा गुनाह बढ़ाने वाला होने से गुनाहगार हो जाएगा। यदि माफ़ी नहीं देता तो कुरआन की यह बात झूठी होने से बच सकती है ?

आपत्ति का जवाब

इस न0 का जवाब देने को मन तो नहीं करता था क्योंकि इसका जवाब ये स्वयं ही है। स्वामी जी भी ऐसे सवालों के जवाब देने से बचते हैं क्योंकि ये फ़रमाते हैं।

"ऐसे लोगों (साइलों) के सामने अक़्ल मन्दों को बे वस्तु की तरह हो रहना चाहिए।" (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 350 अध्याय 10 न0 3)

मगर क्या करें हमारे समाजी दोस्त अपनी ज़बान से तक़ाज़ा कर रहे हैं जिनकी वजह से हमें स्वामी जी से बढ़कर नहीं तो कम भी नहीं। इसलिए मजबूरी हेतु उनको भाग एक (वहय अम्बिया) के बारे में विगत न0 5, 6 इसी किताब में विवाद "ईश्वरीय किताब" की ओर ध्यान दिलाते हैं।

"स्वामी जी रूहों का न मरना किसी आयते कुरआनी से साबित होता है? जो आपको यह सूझी। बेशक यदि ख़ुदा उनको तबाह और समाप्त करना चाहेगा तो कर देगा। ख़ुदा के खिलाने पिलाने के भी वही मायना हैं जिन मायना में आपने लिखा है।

"चूंकि उसकी मदद के बिना सच्चे धर्म का ज्ञान और उसकी पाबन्दी और पूर्णता नहीं हो सकती इसलिए हर मनुष्य को ईश्वर से इस तरह मदद मांगनी चाहिए।" (भूमिका पृ0 67)

स्वामी जी! अभी तो आप कहीं यह सुन पाते कि मुसलमान यह भी कहते हैं।

"पाक है वह ज़ात जिसके कुब्ज़ए कुदरत में सब चीज़ों की सत्ता है।" (सूरह यासीन -- 83)

तो न जाने आप पर क्या गुज़रती और आप क्या क्या उपाधियां व उपनाम मुसलमानों को देते।

प्रिय पाठको! यही वह मुहुर (ठप्पा) है जिसका उल्लेख ख़ुदा ने

अपने कलाम में किया है। इसका प्रभाव यही होता है कि आदमी सीधी बात भी टेढ़ी समझता है। यदि अधिक व्याख्या इसकी चाहो तो विगत न06, 42, में देख लें। सार यह है कि दुनिया के सब कामों की कुंजी उसी एक मात्र निराकार सर्व शक्तिमान के हाथ में है जिसे हम ला इला ह इल्ला हुवा कहते हैं और वही बेशक जीविका देता है वही बन्द कर देता है। स्वामी जी यदि जीवित होते 1897 में अकाल के कारण भारत वर्ष की जो दुर्गत हुई हम उनको दिखाते और पूछते।

"सारी वस्तुओं का अधिकार किसके हाथ में है और कौन है जो शरण देता है और उससे भागने वाले को शरण नहीं मिलती, यदि तुम्हें ज्ञान है तो जवाब दो। (सूरह मोमिनून -88)

यदि स्वामी जी अरब के बहुदेव वादियों की तरह

"अल्लाह ही का अख़्तियार है (सूरह मोमिनून 89) कहते तो हम भी उनकी सेवा में निवेदन करते– "फिर कहां को बहके जाते हो" (मोमिनून–89) यदि इस पर भी सन्तोष न हो तो वेद का आदेश सुनिए– परमेश्वर भक्तों को शिक्षा देता है।

"ऐ भगवान तू अपने बन्दों को मुंह मांगा सुख एवं सत्ता प्रदान करने वाला है हमें भी अपनी कृपा व दयालुता प्रदान कर।"

(अथर वेद कांड 6, अनुवादक, 10 वरग 68 मंत्र 11)

पाठको! स्वामी जी के इस सवाल से आप चकित न हों उनको ऐसी ही सूझा करती है। विश्वास न हो तो न0 53 देखें।

गुनाहों की माफ़ी का लेख न0 22 में देखो। आवागमन का तोड़ इसी किताब में कई एक स्थान पर पाओगे। इसके अलावा "मुबाहेसा इलहामी" किताब और "बहस आवागमन" देखो।

(118) "नहीं तू मगर आदमी) हमारी तरह। अतः ले आ कुछ

निशानी यदि है तू सच्चों में से। कहा यह ऊंटनी है वास्ते उसके पानी पीना है एक बार।" (आयत – 150 – 151)

आपत्ति

भला इस बात को कोई मान सकता है कि पत्थर से ऊंटनी निकले। वे लोग वहशी थे जिन्होंने इस बात को मान लिया और ऊंटनी का निशान देना केवल वहशी पन का काम है न कि अल्लाह का। यदि यह किताब ईश्वरीय कलाम होती तो ऐसी अनर्गल बातें इसमें न होतीं।

आपत्ति का जवाब

अल्लाह रे ऐसे हुस्न पे ये बे नियाज़ियां!

वाह रे सभ्य स्वामी जी को वहशी पने से बड़ी घबराहट होती है। स्वामी जी! आप तो इसी पुस्तक के पृ0 669 समलास 14 में लिख आए हैं। "मुसलमानों के धर्म के बारे में जो लिखा है वह केवल कुरआन की रू से लिखा गया है किसी और किताब के अक़ीदों की रू से नहीं।"

यहां किस शब्द से "ऊंटनी का पत्थर से निकलना समझे हैं? समाजियो तनिक बताओ तो हम एक सौ रूपया इनाम देंगे। ऐसे वहशी पने का सबब इसके सिवा और कुछ भी है? कि– " हठ धर्म मज़हब के अंधेरों में फंस कर बुद्धि को नष्ट कर लेते हैं।"

(भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7)

(119) सूरह नमलः "ऐ मूसा बात यह है कि बेशक मैं हूं अल्लाह प्रभुत्व शाली। और डाल दे लाठी अपनी जिस समय कि देखा उसे हिलता जुलता मानो कि वह सांप है। ऐ मूसा मत डर बेशक नहीं डरते निकट मेरे पैग़म्बर। अल्लाह नहीं कोई उपास्य मगर वह पालनहार ऊंचे अर्श का। यह कि उद्दंडता मत करो और ऊपर मेरे।

और चले आओ मेरे पास मुसलमान होकर।" (आयत 9, 10, 27, 32)

आपत्ति

और देखिए, अपने ही मुंह से आप अल्लाह बड़ा ज़बर दस्त बनता है। अपने मुंह अपनी प्रशंसा करना जब शरीफ़ आदमी का काम नहीं हो सकता तो ईश्वर का किस तरह हो सकता है? शोबदा बाज़ी की झलक दिखाकर जंगली आदमियों को क़ाबू करके आप ही जंगलियों का खुदा बन बैठा है। ऐसी बात अल्लाह की किताब में नहीं हो सकती। यदि वह अर्श पर अर्थात सातवें आसमान का मालिक है तो वह सीमित स्थान का मालिक होने से खुदा नहीं हो सकता। यदि उद्दंडता करना बुरा है तो खुदा और मुहम्मद साहब ने अपनी प्रशंसा व स्तुति से किताब क्यों भर दी। मुहम्मद ने बहुत से मनुष्यों का खून किया। क्या उससे उद्दंडता हुई या नहीं? यह कुरआन परस्पर विरोधी बातों से भरा हुआ है।

आपत्ति का जवाब

बला से कोई अदा उनकी बदनुमा हो जाए
किसी तरह से तो मिट जाए हौसला दिल का

कैसा मूर्ख है वह व्यक्ति जो अपना घर शीशे का बना कर दूसरों पर पत्थर बरसाए। समाजियों सुनो, परमेश्वर बन्दों को सिखाता है।

"मैं इस सुरक्षित बृहमांड, तेजस्वी एंव प्रतापी, शक्ति शाली और विजेता समस्त ब्रहमांड के राजा, सर्व शक्तिमान और सबको शक्ति प्रदान करने वाले परमेश्वर को जिसके आगे सारे बलवान एवं साहसी अपना सर झुकाते हैं और जो न्याय से सृष्टि की रक्षा करने वाला और सर्व शक्ति मान परमेश्वर है। हर जंग में विजय पाने के लिए आमंत्रित करता हूं और शरण लेता हूं।"

(यजुरवेद अध्याय 20, मंत्र 50)

समाजियो·····देखा? अपने ही मुंह से आप परमेश्वर ज़बरदस्त राजा बनता है अपने मुंह से अपनी प्रशंसा करना शरीफ़ आदमी का काम नहीं तो परमेश्वर का क्यों कर हो सकता है? कहो जी, कौन धर्म है? स्वामी जी को ख़बर नहीं कि अल्लाह जब बन्दों की हिदायत के लिए किताब भेजता है तो ज़रूरी है कि वह अपने गुणों का भी उल्लेख करे ताकि बन्दों को उसके गुण मालूम हो सकें। अतः आसमानी किताबों में जहां जहां अल्लाह के गुणों का ज़िक्र आता है उससे यही मुराद होती है कि बन्दे इन गुणों को आधार बनाकर खुश न हों न यह कहें कि खुदा शैख़ी बघारता है जिस तरह हमारे स्वामी जी महाराज समझे बैठे हैं। शौबदे का जवाब न0 14 व न0 22 में और अर्श का जवाब न0 70 में देखें। रक्त पात के लिए न0 2 देखो।

(120) "और देखेगा तू पहाड़ों को गुमान करता है तू उनको जमे हुए और वे चले जाते हैं गुज़रने वाले बादलों की भान्ति। कारीगरी अल्लाह की जिसने हुक्म किया हर चीज़ को बेशक वह ख़बरदार है साथ उस चीज़ के कि करते हो। (आयत – 88)

आपत्ति

बादलों की तरह पहाड़ों पर चलना कुरआन के लेखक के देश में होता होगा और किसी जगह नहीं। और खुदा की ख़बरदारी तो बाग़ी शैतान को न पकड़ने और सज़ा न देने से ही मालूम होती है जिसने एक बाग़ी को अब तक न पकड़ा। और न सज़ा दी। इससे अधिक बेख़बरी और क्या होगी।

आपत्ति का जवाब

अल्लाह रे ऐसे हुस्न पे ये बे नियाज़ियां
बन्दा नवाज़ आप किसी के खुदा नहीं

समाजियो! सुनो आयत का मतलब साफ़ है कि क़यामत से पहले

प्रलय (अन्त) के समय पहाड़ियां हरकत करते हुए फिरेंगी जैसे बादल बल्कि उनसे भी तेज़ और मनुष्य जो इसी धरती पर होंगे धरती की तेज़ी से हरकत करने की वजह से (जैसा कि आजकल अपनी जगह पर बैठे हुए हैं) उस समय भी पहाड़ों को अपनी जगह जमे हुए समझेंगे यहां तक कि सारे संसार की वस्तुएं बड़ी तेज़ी से विनष्ट हो जाएंगी। इन मायना में यदि कुरआन की दलील सुनना चाहो तो सुनो।

"तुझ से ऐ मुहम्मद क़यामत के इन्कारी पहाड़ों के बारे में पूछते हैं तो कह खुदा उनको ऐसे उड़ा देगा कि ज़मीन पर ऊंच नीच न देखोगे।" (सूरह ताहा – 105 –107)

स्वामी जी का नक़्ल किया हुआ अनुवाद एक तो थोड़ा शाब्दिक होने की वजह से अर्थपूर्ण भी नहीं दूसरे स्वामी जी ने इसे समझा भी नहीं।

सुनो हम तुमको एक अच्छा अनुवाद सुनाते हैं।

"तू समझता है पहाड़ों को जानता है वे जम रहे हैं और वे चलेंगे जैसे बदली।" (अनुवाद शाह अब्दुल कादिर देहलवी)

"मगर आगे पीछे और पृष्ठ भूमि उचित न देखकर मायना करने वाले जाहिलों को ज्ञान कहां।" (भूमिका पृ0 52)

शैतानी बातों का जवाब न0 11, 32, में देखें।

(121) सूरह क़सस– "अतः मुक्का मारा उसको मूसा ने तो समाप्त किया जीवन उसका। कहा – ऐ मेरे पालनहार! बेशक मैंने जुल्म किया अपनी जान पर तो माफ़ कर मुझे। तो माफ़ कर दिया उसको। बेशक वह माफ़ करने वाला कृपालु है और पालनहार तेरा पैदा करता है जो कुछ कि चाहता है और पसन्द करता है।"

(आयत – 14 – 16)

आपत्ति

मुसलमानों और ईसाइयों के पैग़म्बर और ख़ुदा की दया भावना का हाल देखिए। मूसा पैग़म्बर एक मनुष्य की हत्या करे और ख़ुदा माफ़ करे। क्या ये दोनों ज़ालिम हैं या नहीं? क्या ख़ुदा अपनी इच्छा से ही जैसा चाहता है वैसा करता है? क्या उसने अपनी इच्छा से ही एक को बादशाह और दूसरे को ग़रीब, एक को विद्वान और दूसरे को जाहिल पैदा किया है? यदि ऐसा है तो न कुरआन सच्चा और न ज़ालिम होने के सबब यह ख़ुदा सच्चा ख़ुदा हो सकता है।

आपत्ति का जवाब

आगे पीछे को न देखने वालो! तनिक ध्यान से सुनो। असल क़िस्सा यूं है कि हज़रत मूसा नबी होने से पहले जब मिस्त्र में फ़िरऔन की मातहती में थे एक दिन दोपहर के समय शहर में आए तो देखा कि दो आदमी (एक फ़िरऔन की क़ौम का और एक हज़रत मूसा की क़ौम बनी इसराईल का) आपस में लड़ रहे हैं। फ़िरऔनी चूंकि इसराईली पर ज़ुल्म कर रहा था इसराइली ने मूसा से विनती की और अपनी मदद को बुलाया।

हज़रत मूसा ने फ़िरऔनी का खुला ज़ुल्म देखकर एक मुक्का मारा तो संयोग से उसी मुक्का से उसका काम तमाम हो गया। हज़रत मूसा का उसे जान से मारने का इरादा न था बल्कि साधारण सी धूल धप्पा जिस का वह हर तरह से हक़दार था मगर दुर्भाग्य से उसका उसी मुक्के से काम तमाम हो गया (अर्थात वह मर गया) इस पर हज़रत मूसा को बड़ा दुख हुआ तो अल्लाह ने उनको माफ़ कर दिया। यद्यपि हज़रत मूसा का यह कोई गुनाह न था क्योंकि उसे मार डालने का न तो इरादा था और न ही किसी खतरनाक हथियार से मारा था फिर भी उन्होंने अपने उच्च पद को

देखते हुए उसे भी गुनाह समझा जिसके बारे में माफ़ी की ख़बर अल्लाह ने उनको दी। अब आप बताइए इस पर आप को क्या कहना है? यूं साफ़ क्यों नहीं कहते कि तौबा से हमें रंज है तो हम भी न0 22 का हवाला आपको सुनाएं।

समाजियो! यदि अपने स्वामी जी के कथन की पुष्टि में हो कि सदैव का सुख भी दुख हो जाता है न0 (104) तो कोई और दुख अल्लाह से मांग लो। उसके यहां किसी चीज़ की कमी नहीं। बेशक अल्लाह अपनी इच्छा से जिसे चाहे अमीर कर दे और जिसे चाहे ग़रीब कर दे। अन्याय तो तब है कि किसी का उस पर हक़ हो और वह न दे। जब कोई हक़ नहीं तो फिर जिस हालत में अपनी हिकमत के हिसाब से रखे उसी में न्याय और वही उसकी दया है।

स्वामी जी चूंकि सदैव पुनर जन्म (आवा गमन) का ज़िक्र छेड़ देते हैं जिसकी इसी किताब में हमारी ओर की विस्तृत बहस मिल सकती है परन्तु हम इस बार बार के ज़िक्र को टालते रहते हैं मगर यहां तो हमारी राल भी टपक जाती है कि हम भी स्वामी जी और उनके चेलों से इसके बारे में एक सवाल पूछें।

समाजियो! न0 16 में हम साबित कर आए हैं कि दुनिया को ख़ुदा ने एक विशेष समय में पैदा किया है जिससे पहले वह न थी (विस्तृत बहस न0 19 में देखो) तो बतओ आरंभ में ईश्वर ने सब लोगों को अमीर और शासक ही बनाया था या नहीं और सब को आदमी बनाया था या कुछ को जानवर भी? और यदि तुम्हारे उसूल की अधिक पाबन्दी करें तो यह भी पूछ सकते हैं कि सब को मर्द बनाया था या औरतें भी? क्योंकि औरत मर्द का फ़र्क़ भी कर्मों का नतीजा है तनिक सोच कर जवाब देना जल्दी न करना।

(122) सूरह अन्कबूत – "और हुक्म किया हमने मनुष्य को साथ

मां बाप के, भलाई करना और झगड़ा करें तुझ से दोनों शरीक लाएं तो साथ मेरे उस चीज़ को नहीं बास्त तेरे साथ उस को ज्ञान। तो मत कहा मान उन दोनों का तरफ़ मेरी[1] है और अलबत्ता बेशक भेजा हमने नूह को तरफ़ क़ौम उसकी कि पिस रहा बीच उसके हज़ार बरस मगर पचास बरस कम।" (आयत – 7– 13)

आपत्ति

मां बाप की सेवा करो तो अच्छा है यदि ख़ुदा के साथ साझी करने के लिए वे कहें तो उनका कहना न मानना यह भी ठीक है लेकिन यदि मां बाप झूठ बोलने आदि का हुक्म दें तो क्या मान लेना चाहिए? इसलिए यह बात आधी अच्छी आधी बुरी है। यदि नूह आदि पैग़म्बरों को ख़ुदा ही दुनिया में भेजता है तो और रूहों को कौन भेजता है। यदि सबको वही भेजता है तो सारे ही पैग़म्बर क्यों नहीं? और यदि पहले आदमियों की उम्र हज़ार साल की होती थी तो अब क्यों नहीं होती? इसलिए यह बात सही नहीं हैं।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी का कथन सोने से लिखने योग्य है कि–

अतः स्वामी जी सुनिए! हम आपको बताते हैं कि शिर्क भी मना किया है कि झूठ है इसी से एक बारीक इशारा इस बात की ओर है कि– "जो काम पैदा करने वाले ने मना किया हो उसमें प्राणियों का आज्ञापालन कदापि जायज़ नहीं।" (यह एक हदीस का भाव है सही जामेउल सग़ीर 2 –250)

यदि कुरआन शरीफ़ से सुनना चाहो तो सुनो–

1– समाजियो! अनुवादित कुरआन देखकर स्वामी की ईमानदारी और योग्यता की दाद दो, हम कुछ नहीं कहते क्योंकि हमारा कुछ हरज नहीं केवल इतना पूछते हैं "तरफ मेरी है" के क्या मायना हैं कुरआन शरीफ देखकर बताना कि आगे पीछे न देखने वाले कौन होते हैं।

"कोई क़ौम ईमानदार ख़ुदा के आदेशों से विरोध करने वालों के साथ मुहब्बत नहीं किया करती चाहे वह उनके बाप या बेटे या भाई ही हों।" (सूरह मुजादिला – 22)

भेजने के मायना आपने ग़लत समझे हैं। यहां भेजने के मायना इलहाम करने के हैं बेशक रसूलों के सिवा और रूहों को अल्लाह ने नहीं भेजा अर्थात ईश्वरीय संकेत नहीं किया।

आयु के बारे में तो अब भी कोई नियम निर्धारित नहीं। जब तक आप कोई सीमा निर्धारित न करें हम जवाब नहीं देंगे, हां परमेश्वर की आज्ञा भी सुनिए जो बन्दों को पथ प्रदर्शन करता है।

"ऐ जगदीशवर! आप की कृपा से हमारी आंखों और पुरान की तिगनी अर्थात तीन सौ साल की आयु हो (जिस पर आप (स्वामी जी) स्वयं ने यह दुमछल्ला लगाया है) इस मंत्र से एक और उपदेश हासिल होता है अर्थात इससे यह नतीजा निकलता है कि यदि ब्रहमचर्य आदि उत्तम क़ायदों की पाबन्दी की जाए तो मनुष्य की आयु सौ साल से तिगनी तक बढ़ सकती है।" (भूमिका पृ० 56)

तो हज़रत नूह ने इस आप की तिगनी को तिगनी करके हज़ार साल की उम्र पायी हो तो आपका इस पर सवाल क्या है। ब्रहमचर्य का तरीक़ा तो उनको आख़िर मालूम होगा बल्कि वेद के बताए हुए तरीक़े से अच्छा पंडित जी के चेलो! बताओ शीशों का मकान बनाकर पत्थर बरसाने वाले।

(123) सूरह रूम– "अल्लाह पहली बार करता है पैदाइश फिर दोबारा करेगा उसको फिर उसकी ओर फेरे जाओगे और जिस दिन घटित होगी क़यामत, नाउम्मीद होंगे, गुनाहगार, अतः जो लोग ईमान लाएं और काम अच्छे किए और वे बीच बाग़ के श्रृंगार किए जाएं और यदि भेज दें हम एक हवा तो देखें उसको खेती पीली हुई।

इस तरह ठप्पा लगाता है अल्लाह उनके दिलों पर कि नहीं जानते।" (आयत 10, 11, 14, 50, 58)

आपत्ति

यदि अल्लाह दोबारा पैदा करता है और तीसरी बार नहीं करता तो पैदा होने के पहले और दूसरी बार पैदा होने के बाद बेकार बैठा रहता होगा और एक दो बार पैदाइश करने के बाद उसकी कुदरत अर्थात शक्ति निकम्मी और ख़त्म हो जाती होगी और यदि न्याय के दिन गुनाहगार लोग ना उम्मीद होंगे तो अच्छी बात है मगर इस का मतलब कहीं यह तो नहीं है कि मुसलमानों के सिवा सब गुनाहगार समझ कर ना उम्मीद किए जाएंगे?

क्योंकि कुरआन में कई स्थानों पर गुनाहगारों से तात्पर्य ग़ैर धर्म वालों से लिया गया है। यदि बाग़ में रखना और सिंगार करना भी मुसलमानों की जन्नत है तो इस दुनिया की जैसी ही है और क्या वहां बाग़बानी और सुनार का काम करता है। यदि किसी को कम ज़ेवर मिलता होगा तो चोरी भी होती होगी और वह जन्नत में से निकाल कर चोरी करने वालों को जहन्नम में भी डालता होगा।

यदि ऐसा होगा तो यह बात कि सदैव जन्नत में रहेंगे झूठ हो जाएगी। यदि किसानों की खेती पर भी अल्लाह की नज़र है तो कृषि विज्ञान का अनुभव किए बिना खेती करना कैसे आ गया और यदि मान लिया जाए कि अल्लाह ने अपने ज्ञान से सारी बातें जान् ली हैं तो ऐसा डर दिखाने से वह अपना घमंड प्रकट करता है। यदि अल्लाह ने आत्माओं के दिलों पर ठप्पा लगाकर गुनाह कराया है तो उस गुनाह का जवाब देने वाला वही होगा आत्मा नहीं हो सकती जिस प्रकार कि विजय व पराजय का ज़िम्मेदार सेना पति होता है वैसा ही सब गुनाह अल्लाह को हासिल होंगे।

आपत्ति का जवाब

इस भोलेपन पर कुरबान! सच है उसे क्या छुपाना। एक बात तो यह कि इस न० की सारी बातों का जवाब पहले नम्बरों में आ चुका है। स्वामी जी को तो पानी बिलोने की आदत है। अल्लाह की बेकारी या बाकारी की बहस न० 16 में देख लें। बेशक अपराधी वही हैं जो खुदा के साथ किसी को साझी करे और जो उसके आदेशों को जो उसने अपने सच्चे नबियों द्वादा बन्दों के लिए भेजे हैं झुठलाए। इसका उल्लेख भी कई बार आ चुका है। स्वामी जी! कहीं वेदों का इन्कारी नास्तिक तो नहीं? सत्यार्थ प्रकाश पृ० 347 देख कर जवाब दें। जन्नत का जवाब 9, 246, 61 में आ चुका है सब कुछ खुदा की मेहरबानी से होगा मगर यह भी सुन रखिए।

"काफ़िरों पर जन्नत की नेमतें हराम हैं।" (सूरह आराफ़ – 50)

न कोई किसी का ज़ेवर चुराएगा न किसी को बुरा भला कहेगा बल्कि सब के सब प्रेम और मुहब्बत से रहेंगे। सुनो......

"भाइयों कि भान्ति एक दूसरे के सामने तख़्तों पर बैठे होंगे।" (सूरह हिज्र – 47)

स्वामी जी! परमेश्वर ने सृष्टि (संसार) के तत्वों को जमा करके मौजूदा सूरत में उत्पन्न तो इतना बड़ा काम बिना तजुरबा कैसे किया होगा? आपके इस सवाल का जवाब कुरआन ने इन शब्दों में दिया है।

"काफ़िर खुदा की शान के अनुसार उसकी क़द्र नहीं करते।" (सूरह अनआम – 91)

हाय ऐसी समझ पर पत्थर, जो इतना भी नहीं जानता। परमेश्वर के हाथ नहीं लेकिन अपनी ताक़त के हाथ से सबको बनाता और क़ाबू में रखता है। पांव नहीं लेकिन मुहीत होने के कारण सबसे

अधिक सजग और सर्तक है। आख नहीं लेकिन सब को ठीक ठीक देखता है कान नहीं फिर भी सबकी बातें सुनता है।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 244 अध्याय 7 न0 36)

ठप्पा लगाने का जवाब न0 6, न0 65 में आ चुका है।

(124) सूरह लुक़मान– "ये आयतें हैं किताब हिकमत वाले की। पैदा किया आसमानों को बिना खम्बों के देखते हो तुम उनको और डाले बीच ज़मीन के पहाड़। ऐसा न हो कि हिल जाएं। क्या न देखा तूने यह कि अल्लाह दाख़िल करता है रात को बीच दिन के और दाख़िल करता है दिन को बीच रात के। क्या न देखा तूने यह कि कश्तियां चलती हैं बीच दरिया के साथ नेमतों अल्लाह के ताकि दिखा दे तुमको अपनी निशानियों से। (आयत – 1, 9, 28, 30)

आपत्ति

वाह साहब वाह! हिकमत वाली किताब खूब है कि जिसमें बिल्कुल ज्ञान के विरुद्ध आकाश का जन्म और उसमें खम्बे लगाने और ज़मीन थामे रखने के लिए पहाड़ रखने का उल्लेख है। थोड़ा ज्ञान रखने वाला भी ऐसी तहरीर कदापि नहीं लिख सकता और न ऐसी बातें मान सकता है और हिकमत की बात देखिए कि जहां दिन है वहां रात नहीं, जहां रात है वहां दिन नहीं और उसको एक दूसरे में दाखिल करना लिखा है। यह तो बड़ी अज्ञानता की बात है। इसलिए यह कुरआन ज्ञान की किताब नहीं हो सकती। क्या यह ज्ञान एवं सूझ बूझ से परे की बात नहीं है। कश्ती को मनुष्य कलों व संयंत्रों से चलाते हैं या अल्लाह की दया दृष्टि से। यदि लोहे या पत्थर की कश्ती बिना समन्द्र में चलायी जाए तो अल्लाह का निशान डूब तो न जाएगा। यह किताब न किसी विद्वान और न खुदा की बनायी हुई हो सकती है।

आपत्ति का जवाब

महाराज! धन्य महाराज सच है।

"हठ धर्मी की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।" (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश पृ0 7)

आकाश की पैदाइश आदि का ज़िक्र न0 7, 88, 129 में और ज़मीन की हरकत का उल्लिखित 110 में है– पाठकों! स्वामी जी की ईमानदारी को देखिए ऐसी चालाकी कि कुरआन में तो "बिना खम्बों" के हो। अतएव हमने स्वामी जी के उल्लिखित अनुवाद को ही दिया है और स्वामी जी इस पर झूठ का खम्बा लगाते हैं इसके बावजूद भी वे साधु और योगी? और सन्यासी और स्वामी जी महाराज और क्या कुछ नहीं सच कहा है।

किए लाखों सितम इस प्यार में भी आपने हम पर
खुदा ना ख़्वासता गर खश्मगी होते तो क्या करते

दिन को रात में और रात को दिन में दाखिल करने के दो मायना हैं। एक तो यह कि दिन की रोशनी नहीं रहती और रात आ जाती है। इसी तरह रात का समय पूरा हो जाता है तो दिन की रोशनी हो जाती है दूसरे मायना यह कि कभी दिन छोटा और कभी रात छोटी।

हां कश्ती का सवाल खूब किया। समाजियो! परमेश्वर का आदेश सुनो।

"जिस देश में ज्ञान और धर्म की प्रगति और प्रसार होता है वह मेरा (परमेश्वर का) स्थान (प्यारा वतन) है मैं इस राज में सेना के घोड़ों और बैलों को शक्ति प्रदान करता हूं।"

(यजुर वेद अध्याय 20 – मन्त्र – 10)

बताओ इस समय सारी दुनिया में वेदिक मत और धर्म का पतन कैसा है। ऐसा कि स्वामी जी के कथना नुसार वेदों के एकेश्वरवाद को मूर्ति पूजकों ने मालियामेट कर दिया और कर रहे हैं। अब तो

परमेश्वर बे घर कहीं मारा मारा फिरता होगा क्यों न हो। वाह जी वाह घोड़े बैलों के मालिक बेचारे तो दाना पानी और घास कीमत से लेकर खिला दें जिनसे वे शक्ति पावें और परमेश्वर कहे कि मैं शक्ति देता हूं। क्या किसी विद्वान की बात है?

समाजियो! न्याय से कहना। ऐसा सवाल करना किसी ऐकेश्वर वादी का काम है या अधर्मी का? सच कहते हुए किसी की रिआयत न करना वर्ना तुम्हारा चौथा नियम कैन्सिल हो जाएगा।

(125) सूरह सज्दा – तदबीर करता है काम की आसमान से तरफ़ जमीन के। फिर चढ़ जाता है तरफ़ उसके बीच एक दिन के, कि थी मात्रा उसकी हज़ार बरस, इन बरसों से कि गिनते हो तुम। यह है जानने वाला छुपे का और खुले का प्रभुत्व शाली कृपालु फिर ठीक किया उसको और फूंकी बीच उसके अपनी रूह से कि कब्ज़ा करेगा तुमको मौत का फ़रिश्ता जो नियुक्त किया गया है साथ तुम्हारे और यदि चाहते हम। अलबत्ता देते हम रह एक रूह को जिहालत उसकी। लेकिन साबित हुई बात मेरी तरफ़ से यह कि अलबत्ता भर दूंगा मैं जहन्नम को जिन्नों और मनुष्यों से इकट्ठे।''

(आयत – 4, 5, 8, 10, 12)

आपत्ति

अब तो ठीक साबित हो गया कि मुसलमानों का ख़ुदा मनुष्यों की तरह सीमित जगह में रहने वाला है क्योंकि यदि सर्व व्यापी होता तो एक जगह से व्यवस्था करना और उतरना चढ़ना ये बातें न होतीं। यदि खुदा फ़रिश्ते को भेजता है तो स्वयं भी सीमित स्थान वाला हुआ। क्या आप आसमान पर टंगा बैठा है और फ़रिश्तों को दौड़ाता रहता है। यदि फ़रिश्ते रिश्वत लेकर कोई मामला बिगाड़ दें या किसी मुर्दा को छोड़ जाएं तो खुदा को क्या मालूम हो सकता है?

मालूम तो उसे हो जो सर्व ज्ञाता और सर्व व्यापी हो तो वह तो है ही नहीं। यदि होता तो फ़रिश्ते के भेजने और कई लोगों के कि विभिन्न रूप से परिक्षा लेने का क्या काम था।

फिर एक हज़ार साल का समय लगना और आने जाने की व्यवस्था से करना ये बातें बताती हैं कि वह सर्व शक्ति मान नहीं है। यदि मौत का फ़रिश्ता है तो उसे मारने वाला कौन सा हलाकू है? यदि वह सदैव से है तो जीवन के सर्व कालिक में अल्लाह के शरीक हो गया।एक फ़रिश्ता एक ही समय में जहन्नम भरने के लिए आत्माओं का पथ प्रदर्शन नहीं कर सकता और यदि उनको बिना गुनाह किए अपनी इच्छा से जहन्नम भर के उनको कष्ट देकर तमाशा देखता है तो खुदा गुनाहगार और निर्दयी होगा। ऐसी बातें जिस किताब में हों वह विद्वान है और न ही वह खुदा की बनायी हुई हो सकती हैं और जो दया और न्याय नहीं रखता वह कदापि खुदा नहीं हो सकता।

आपत्ति का जवाब

खुदा की तदबीर के मायना न0 88 में गुज़र चुके हैं। किसी वस्तु का खुदा की ओर चढ़ना उसके कुबूल होने से मुराद है। सुनो।

"खुदा की तरफ़ नेक बातें चढ़ती हैं'' अर्थात वह स्वीकार करता है फ़रिश्तों को आप नहीं जानते न देख सकते हैं जिस दिन देख लिया आपकी खैरियत नहीं। (सूरह फ़ततर – 10)

"इन्कारी लोग जिस दिन फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन उन की खैर न होगी (अर्थात अज़ाब का शिकार होंगे) (सूरह फ़ुरकान – 22)

वे ऐसे नहीं जो नफ़स के पुजारी होते हैं उनके नफ़स ही नहीं अतः वे किसी से रिश्वत नहीं ले सकते। आप चिंता न करें। उनकी तो यह विशेषता है।

"फ़रिश्ते अल्लाह की अपज्ञा किसी तरह नहीं करते।"

(सूरह तहरीम 6)

यदि मान लें किसी से रिश्वत लेकर किसी अपराधी पर अकारण दया कर भी दें तो अल्लाह तो परोक्ष की बातें जानता है अतः उसकी पकड़ से दोनों (वह अपराधी और फ़रिश्ता) नहीं छूट सकते। हां यह खूब कही कि खुदा को क्या मालूम हो सकता है मालूम तो उसे हो जो सर्व ज्ञाता है।

पाठको! स्वामी जी का "साधुपना" देखिए कि किसी झूठे से कम नहीं। वे झूठ बोलने से बिल्कुल नहीं डरते। हम उन्ही के प्रस्तुत किए गए अनुवाद को ले रहे हैं कि खुदा को सब कुछ मालूम है और स्थान तो जाने दो तनिक नज़र उठाकर इसी न0 के नक़ल किए गए अनुवाद पर नज़र डालें जिस तरह अल्लाह ने ज़ाहिरी सामान बारिश, वनस्पति आदि के असबाब बना रखे हैं उसी तरह बातिनी कामों अर्थात बन्दों के पथ प्रदर्शन आदि के बारे में बहुत से साधन जुटा रखे हैं। स्वामी जी पक्षपात और हठ धर्मी में आए हुए आलमी निज़ाम (व्यवस्था) पर सोच विचार नहीं करते। हजार साल के दिन के मायने स्वामी जी जीवित होते तो उनसे कड़ा प्रसाद लिए बिना हम न बताते मगर क्या करें, समाजी दोस्तों के लिए हमें बताना पड़ रहा है – तो सुनो।

हज़ार साल और पचास हज़ार साल से कोई विशेष दिन तात्पर्य नहीं क्योंकि क़यामत के दिन की तो कोई सीमा ही नहीं अ ब द न का शब्द क़ुरआन में मौजूद है जिसका मतलब होता है हमेशा हमेशा के लिए। न उस स्थानों में जहां पर यह शब्द आया है क़यामत का कोई उल्लेख है अलबत्ता उन स्थानों पर अल्लाह की क़ुदरत का बयान है अतः आयत का मायना साफ़ है कि अल्लाह इस लोक में

जो तदबीरें और आदेश लागू करता है उनका पालन और पूर्ति एक दिन में इतनी होती है जितनी किसी ज़बरदस्त बादशाह के आदेशों और तदबीरों की हज़ार साल में। हज़ार साल भी उपमा के तौर पर हैं इसलिए दूसरे स्थान पर पचास हज़ार साल आए हैं (देखो न0 146) क़ुरआन की दूसरी आयत स्वयं इन मायना की गवाही दे रही है– सुनो।

"तुम्हारे पालनहार का एक दिन तुम्हारे हिसाब से हज़ार साल के बराबर है।"

(सूरह हज – 42)

अर्थात उसके एक दिन के काम इतने हैं कि तुम सब प्राणी मिलकर हज़ार साल बल्कि पचास हज़ार साल तक भी करना चाहो तो न हो सकें अतः इस आयत के मायना और आयत "कुन" के मायना एक ही हैं। (देखो न0 27)

"दुनिया के मौजूद या प्राचीन रहने का नाम खुदा का दिन है। प्रलय की परिभाषा खुदा की रात है।"

(भूमिका पृ0 14)

अतः ईश्वरीय दिनों का भी इसी से अनुमान लगा लो। स्वामी जी! एटम और आत्मा तो प्राचीन होकर अल्लाह के साझी न हों और फ़रिश्ता अल्लाह की सृष्टि होकर मानो एक लम्बी अवधि तक ज़िन्दा रहें। वे क्यों कर अल्लाह का साझी हो जाए? (कहो जी कौन धर्म है?)

खुदा किसी को बिना अपराध जहन्नम में डालेगा। सुनो–

"खुदा एक कण बराबर भी लोगों पर ज़ुल्म नहीं करता।"

(सूरह यूनुस – 44)

(126) सूरह अहज़ाब– "कह कदापि न लाभ देगा तुम को भागना। यदि भागोगे तुम मौत से या क़त्ल से। ऐ बीबियों नबी की जो कोई आए तुम में से साथ अशलीलता के। उनको दो गुना

यातना दी जाएगी और है यह अल्लाह के लिए आसान।"

(आयत 16 –30)

आपत्ति

यह मुहम्मद साहब ने इस लिए लिखाया, कहा होगा कि जंग में कोई न भागे अपनी विजय हो और मरने से भी न डरें। भोग विलास के सामान बढ़ें। धर्म का प्रचार हो और यदि बीवी अशलीलता से न आए तो क्या पैग़म्बर साहब निर्लज्ज हो कर आएं। बीवियों पर अज़ाब हो और पैग़म्बर साहब पर अज़ाब न हो। यह किस घर का न्याय है?

आपत्ति का जवाब

पहले भाग का जवाब न0 2 में देखें जहां जिहाद की तहक़ीक़ हो चुकी है जिहाद से न भागने की शिक्षा मनु जी के शब्दों में सुनिए।

क्षत्रि मैदान छोड़ दें तो क्षत्री नहीं।" (मनु 7 का 98)

स्वामी जी! आपको गुरू ने यही शिक्षा दी थी कि जिस बात को न समझो उसपर आपत्ति कर देना?

कैसा पापी और निर्लज्ज है वह व्यक्ति जो ज़िद और नफ़सानी इच्छा से सवाल करे (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 350)

पैग़म्बर की बीवियों को इस लिए समझाया गया है कि उन्हें घमंड न हो कि जो चाहें करें हमारी कोई गिरफ़्त नहीं जैसा सामान्य रूप से राजकुमारियों को हुआ करता है इसमें रसूल का कोई उल्लेख नहीं। हां और कई एक स्थानों पर रसूल को भी गुनाह होने पर ऐसा ही धमकाया गया है। सुनो।

"यदि तू भी शिर्क करेगा तो तेरे सदकर्म सब अकारत हो जाएंगे और आख़िरत में हानि उठाएगा।" (सुरह ज़ुमर – 65)

कहिए आगे पीछे को न देखने वाले कौन होते हैं?

(127) "और अटकी रहो बीच घरों अपने के और आज्ञा पालन करो अल्लाह का और रसूल का, इनके सिवा किसी का नहीं। अतः जब अदा कर ली ज़ैद ने उससे ज़रूरत ब्याह दिया हमने तुझसे उसको कि न होवे ऊपर ईमान वालों के तंगी बीच बीबियों ले पालकों उनके, कि जब अदा कर लें उससे ज़रूरत और है हुक्म अल्लाह का किया गया नहीं है ऊपर नबी के कुछ तंगी बीच उस चीज़ के। नहीं है मुहम्मद साहब बाप किसी मर्द का और हलाल की औरत ईमान वाली जो बख़्श देवे बिना मेहर के अपनी जान नबी के वास्ते। ढील दे तू जिसको चाहे इसमें से और जगह दे अपनी तरफ़ जिसे चाहे। तो तेरे ऊपर गुनाह नहीं। ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो मत दाख़िल हो बीच घरों पैग़म्बर के।"

(आयत 32, 37, 38, 40, 50, 51, 53,)

आपत्ति

यह बड़े जुल्म की बात है कि औरत घर में कैदी की तरह रहे और आदमी खुले रहें। क्या औरतों का दिल साफ़ हुआ। साफ़ जगह में घूमना फिरना और दुनिया के असंख्य वस्तुओं को देखना न चाहता होगा? इसी लिए मुसलमानों के लड़के मुख्य रूप से आवारा और रंगीन स्वभाव व भोग विलास के शौक़ीन होते हैं। क्या अल्लाह और रसूल के आदेश एक दूसरे के अनुकूल हैं या प्रतिकूल? यदि अनुकूल हैं तो यह कहना कि दोनों का हुक्म मानो, बेकार की बात है। यदि प्रति कूल है तो एक का हुक्म सही और दूसरे का ग़लत होगा। इन दोनों में से एक ख़ुदा और दूसरा शैतान हो [1] जाएगा और एक का शरीक दूसरा बन जाएगा वाह कुरआन के ख़ुदा और पैग़म्बर आपने ऐसे कुरआन को जिसकी रू से दूसरे को हानि पहुंचा

1– समाजियो! उपदेश मंजरी जरा देखकर पंडित जी की इन बातों की जांच करो। हाथी के दांत दो प्रकार के हो हैं।

कर अपना मतलब निकाला जाए। इससे यह भी साबित होता है कि मुहम्मद साहब बड़े जिन्स परस्त थे यदि न होते तो ले पालक बेटे की पत्नी को अपनी पत्नी क्यों बनाते और तमाशा यह कि ऐसी बातों के करने वालों का खुदा भी हिमायती बन गया और अन्याय को भी न्याय ठहराया।

मनुष्यों में वहशी से वहशी मनुष्य भी बेटे की पत्नी को छोड़ देता है और यह कैसा घिनौना काम है कि नबी को वासना में कुछ भी रुकावट नहीं होती। यदि नबी किसी का बाप न था तो ज़ैद ले पालक बेटा किस का था? जब बेटे की पत्नी को भी घर में डालने से पैग़म्बर साहब न रुक सके तो औरों से क्यों कर बचे होंगे। ऐसी चालाकी भी बुरी बात करने वाले की बदनामी होने से रुक नहीं सकती। क्या यदि ग़ैर औरत भी नबी से खुश होकर ब्याह करना चाहे तब भी हलाल होगी? और यह तो बड़े गुनाह की बात है कि नबी जिस औरत को चाहे छोड़ दे और मुहम्मद साहब की औरतें पैग़म्बर साहब के दोषी होने पर भी उसे कभी न छोड़ सकें। यदि पैग़म्बर के घर में कोई दूसरा व्ययभिचार की नीयत से दाखिल हो तो वैसे ही पैग़म्बर साहब को भी किसी के घर में दाखिल न होना चाहिए। क्या नबी जिस किसी के घर में चाहे बिना संकोच दाख़िल हो सके और फिर भी सम्मानित बना रहे? भला कौन अक़्ल का अंधा होगा कि जो इस कुरआन को खुदा का बनाया हुआ और मुहम्मद साहब को पैग़म्बर और कुरआन के बताए हुए खुदा को सच्चा मान सके। बड़ी हैरत की बात है कि ऐसे तर्कहीन धर्म विरोधी धर्म को अरबों ने स्वीकार कर लिया।

आपत्ति का जवाब

औरतों को घरों में क़ैद रखने का कोई हुक्म इस्लामी शरीअत में

नहीं। आदेश केवल यह है कि ग़ैर महरमों से जिनसे निकाह जायज़ है अपने आपको छुपा दें कि वे देख कर मोहित न हों। या कम से कम उन्हें बुरा विचार पैदा न होता कि व्यभिचार यथा इच्छा बन्द रहे यद्यपि यह मतलब किसी पुष्टि का मोहताज नहीं फिर भी अपने समाजी दोस्तों के लिए स्वामी जी के कथन से इसकी पुष्टि करा देते हैं ताकि समाजियों को पंडित की चालाकी का एतेराफ़ हो कि जिस बात को स्वयं ही बड़े अतिश्योक्ति के साथ बयान करते हैं यदि वही हुक्म इस्लाम में देखें तो तुरन्त आपत्ति करने लग जाते हैं। सुनो! पंडित जी का कहना है।

"लड़कियों के मदरसे में सब औरतें और मर्दों के मदरसे में मर्द हों। औरतों के मदरसे में पांच साल का लड़का और मर्दाना पाठशाला में पांच साल की लड़की भी न जाने पाए।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 42 – समलास 3 न0 4)

और सुनिए।

"औरतों व मर्दों का मन्दिरों में मेल जोल होने से व्यभिचार, लड़ाई, बखेड़ा और बीमारियां आदि पैदा होती हैं।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 419)

कोई पंडित जी से पूछे इतना बचाव क्यों है कि पांच साल की लड़की और लड़के भी आपस में न मिले। इस उम्र में उनको होश ही क्या होगा? तो शायद (शायद क्या निश्चय ही) पंडित जी यही कहेंगे कि मर्द व औरत का उदाहरण सैड लीटज़ पाउडर[1] का होता है जो अलग अलग तो कुछ नहीं, मिलकर जोश पैदा करती हैं सच है।

1–एक दवा का नाम है जिसकी पुड़िया होती है अलग अलग बर्तन में घोल कर जब उनको मिलाते हैं तो एक जोश और उबाल सा होता है। डा0 हल्के से जुलाब में दिया करते हैं। हमारे शिक्षित पर्दे के विरोधी भी सोच विचार करें।

ये सब कहने की बातें हैं हम उनको छोड़ बैठे हैं
जब आंखें चार होती हैं मुहब्बत आ ही जाती है

और सुनिए! स्वामी जी और मनु जी क्या आदेश करते हैं।

"सारी इन्द्रियों को अपने बस में रखना। इन्द्रियों को बड़े क़ायदे से क़ाबू में करना चाहिए। इन्द्रियों का मिलन आपसी आकर्षक से होता है अतएव मनु जी ने फ़रमाया है इन्द्रियां इतनी ज़बरदस्त हैं कि मां, सास और लड़की आदि के साथ भी होशियारी से रहना चाहिए दूसरों का तो क्या कहना।" (उपदेश मंजरी पृ0 17)

स्वामी जी ने इस आयत पर ध्यान नहीं दिया।

"अज्ञानता के तरीक़े से बाहर न निकला करो जैसे पहले कुफ़्र की हालत में निकला करती थी।" (कुरआन)

स्वामी जी यदि ज़िन्दा होते तो हम उन्हें उन औरतों का हाल दिखाते जो ज़ेवर व लिबास से सजी धजी बाज़ारों में फिरती हैं और उनके घूमने से उस समय जवान से लेकर बूढ़े दुकानदारों पर मनु के कहने के अनुसार क्या हालत गुज़रती है उनकी ज़बान से वह दास्तान सुनवाते। समाजी यदि चाहें तो हम इन विवश व बेबस लोगों की ओर से संक्षिप्त शब्दों में उनका हाल प्रस्तुत कर देते हैं पाठक हमें क्षमा करें।

सुनो कोई इस वक़्त आह व बुका करता हुआ कहता है
हाय यह ज़ुल्फ़ सियाह डस गयी नागन बन के

कोई अपने दर्द की कहानी यूं बयान करता।

देखो उस चश्मे यार की शोख़ी
जब किसी पारसा से लड़ती है

कोई चिल्लाता हुआ यह कहता है।

हम हुए तुम हुए कि मीर हुए
उनकी ज़ुल्फ़ों के सब असीर हुए

यदि उनसे कहें भाइयो! अपनी निगाहें नीची रखो तो इसका वे बड़ा अच्छा जवाब देते हैं– सुनो वे कहते हैं।

कौन रखता है भला ऐसा जिगर देखें तो
यार हो सामने देखे न उधर देखें तो

और यदि उनको कुछ अधिक ही परेशान करते हैं तो वे भी बिगड़ जाते हैं और मुंह फट होकर कहने लग जाते हैं।

दीदार मय नुमाई व परहेज़ मय कुनी
बाज़ार ख़्वैश व आतिश मा तेज़ मयकुनी

सुबहानल्लाह! इन्हीं ख़राबियों को मिटाने को अल्लाह ने जो मानव प्रकृति से पूरी तरह अवगत है मानव प्रकृति को ध्यान में रखते हुए फ़रमाया है।

"औरतें अपना श्रंगार व चेहरे को न ज़ाहिर करें सिवाए इतने के कि जो किसी तरह छुप नहीं सकती (जैसे बुरक़ा) और बाज़ार में चलते समय कपड़ों से ऊपर एक भारी चादर लिया करें।"

(सूरह नूर –31)

अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों को मानने का यह मतलब है कि जो आदेश वहय द्वारा रसूल पर पहुंचे और रसूल हमें बता दे या अमल करके दिखा दे जैसे नमाज़ आदि तो उसका मानना फ़र्ज़ है और यदि कोई आदेश सांसारिक मामलों से संबंधित कहे तो उसे मानने या न मानने का हमें हक हासिल है जैसे अन्य मश्वरों का।

हुज़ूर सल्ल0 ने स्वयं फ़रमाया है– अन्तुम आलमु बिउमूरि दुन्या कुम। यदि यह संदेह हो कि रसूल अपने पास से कोई ऐसी बात कह

दे जो खुदा की बताई हुई के विरुद्ध हो तो आप भी सुनिए और उसका जवाब सोचिए कि जिन ऋषियों मुनियों पर वेद ईश्वरीय संकेत द्वारा उतरे थे जब वे स्वयं उनको न समझे थे अतएव आप स्वयं इस बात को कह चुके हैं।

"अग्नि वायु आदि ऋषियों ने ज्ञान ध्यान किए तो परमेश्वर ने उनको वेदों का मतलब बताया।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 269 समलास 7 न0 74)

"यदि ये ऋषि वेदों के लेखों में अपनी ओर से कुछ मिला देते तो आप क्या करते उसे भी मानते या नहीं और आप उस मिलाए हुए की तमीज़ (फ़र्क़) किस प्रकार करते? सुनो कुरआन तो सवाल का जवाब यह देता है।

"यदि हमारे रसूल हमारे (खुदा के) के ज़िम्मे कोई बात लगादे जिसका हमने उसे हुक्म न दिया हो तो तुरन्त हम उसे मार डालें।"

(सूरह हाक्क़ा – 44–46)

आप भी कोई वेद मन्त्र इस विषय का सुनाइए। पैग़म्बर के शरीक बनने का जवाब न0 21, 53, 55 में देखें।

ज़ैद का क़िस्सा जो इस आयत में उल्लिखित है ऐसा नहीं है कि किसी को मालूम न हो। ईसाइयों ने तो इसके बारे बहुत से पृष्ठ सियाह किए हैं अतः हम भी इसका बयान करते हुए दोनों क़ौमों (ईसाइयों और आर्यो) को जो हक़ीक़त में इस कला में गुरू व शिष्य हैं का ध्यान रखेंगे।

असल बात यह है ज़ैनब एक औरत हुज़ूर सल्ल0 की एक क़बीले में सगी संबंधी थी अच्छे नसब वाली, अत्यन्त सुन्दर। नबी सल्ल0 ने उसकी शादी ज़ैद बिन हारिसा रजि0 से करा दी थी जो किसी

ज़माने में ग़ुलाम था फिर नबी सल्ल0 ने ही उसे ख़रीद कर आज़ाद कर दिया था और अपने पास ही बेटे की तरह रखा यहां तक कि लोग उसे ज़ैद बिन मुहम्मद भी कहते थे अर्थात ज़ैद मुहम्मद का ले पालक बेटा है। सदाचारी था भला था पर सुन्दर न था।

इसी वजह से या किसी और वजह से जिसे पति पत्नी ही जानते हैं और दूसरे को इन बातों का पता भी नहीं हो सकता तो (पति पत्नी) दोनों में खट पट रहती थी आखिर ज़ैद उसे छोड़ने पर तैयार हो गया। चूंकि नबी सल्ल0 ने यह रिश्ता स्वयं ज़ोर देकर कराया था और मशहूर भी था कि ज़ैद हज़रत का ले पालक है इसलिए आपने उसे बहुत समझाया कि तू ज़ैनब को न छोड़ इस मामले में अल्लाह से डर, किसी शरीफ़ औरत को ज़रा सी बात पर नाराज़ होकर तलाक़ देकर बदनाम करना अच्छा नहीं।

आख़िर जब वह छोड़ने पर ही अड़ा रहा तो आपने ज़ैनब के इस घाव का इलाज इसके सिवा कुछ न सोचा कि उसे अपनी जीवन संगनी बना लिया जाए क्योंकि उस समय किसी मुसलमान औरत की इज़्ज़त इससे अधिक कुछ न थी कि वह रसूल की पत्नी हो मगर देश की रस्म थी कि ले पालक की पत्नी नस्ली बेटों की तरह समझी जाती थी लेकिन इस्लामी शरीअत में यह हुक्म इस तरह नहीं था। इस्लाम में सगे बेटों की पत्नी हराम थी ले पालक की नहीं। बल्कि ले पालक वारिस भी नहीं है क्योंकि नुत्फ़े (वीर्य) का संबंध इसमें नहीं है इसलिए नबी सल्ल0 दो तीन तरह की कशमकश का शिकार हो गए।

ज़ैनब का दिल रखना, उसके घावों पर मरहम रखना, देश की रस्म का ख़्याल, इस नाजायज़ रस्म को मौजूद रखने में अल्लाह का भय, इसलिए आपने जहां देश की अन्य रस्मों को त्याग दिया था

और स्थाई रिफ़ारमरों की तरह इसकी भी कोई परवाह न की और ज़ैद के ज़ैनब को छोड़ने के बाद उन्हें अपनी धर्म पत्नी बना लिया। इस बारे में स्वयं कुरआन पूरी घटना बयान करता है।

"जब तूने ऐ मुहम्मद उस व्यक्ति को जिस पर अल्लाह ने और तूने भी उपकार किए थे बहुत कहा: कि अपनी पत्नी को अपने पास रख और अल्लाह से डर। और तू अपने मन में (उसके निकाह करने के बारे में इच्छा को) छुपाता था जो खुदा को खोलना था और तू लोगों से डरता था यद्यपि अल्लाह से डरने का हक़ अधिक है। अतः जब ज़ैद (तेरे ले पालक) ने उसे छोड़ दिया तो हम (खुदा) ने तेरे साथ उसका निकाह कर दिया अर्थात अनुमति दी ताकि मुसलमानों को ले पालकों की पत्नियों से निकाह करने में जब वे उन्हें छोड़ दें, हरज न हो। और अल्लाह के काम किए हुए होते हैं।

इसके बाद हमारा हक़ बनता है कि हम अपने सम्बोधन करने वालों से कुछ पूछें।

ईसाइयों और दयानन्दियो! बाइबिल का कोई पाठ या वेद का कोई मन्त्र इसके मायना का दिखा सकते हो? जिसका मतलब यह हो कि ले पालक बेटे की पत्नी से निकाह करना मना है दिखाओ तो हम तुमको मुंह मांगा इनाम दें।

ईसाइयो! तुम्हें तो विशेष रूप से शर्म आनी चाहिए कि तुम रूमियों के 4 अध्यायों की 15 को भी नहीं देखते—सुनो—

"जहां शरीअत नहीं वहां अवज्ञा भी नहीं।"

जहां क़ानून नहीं वहां पकड़ और अपराध कैसा। या तो कोई आयत कुरआन की (तुम्हारी रिआयत से हम यह भी कहते हैं) बाइबिल की बताओ इस आरोप प्रत्यारोप को वापस लो। दयानन्दियो! अपने उस्ताद ईसाइयों की तरह हवा के पीछे न पड़ो।

कोई वेद मन्त्र ही इस विषय का बताओ वर्ना वेद की आज्ञा का पालन करने से शर्म करो।

यदि किसी दूसरे धर्म शास्त्र से बताओ तो पहले यह कह लो कि वेद इस बयान में विवश हैं वर्ना वेद को सारी सच्चाइयों की खदान और सारे ज्ञानों का ख़ज़ाना कहकर यह कहना मुश्किल है स्वामी जी यह भी पूछते हैं कि ज़ैद का बेटा किस का था। पंडित जी यदि जीते तो मिठाई लिए बिना ऐसे मुश्किल सवाल का जवाब हम कभी न बताते। अब दयानन्दियों के कारण हमें बताना पड़ रहा है— लो सुनो—

हारिसा का बेटा था अतएव जब क़ुरआन में ले पालकों के बारे में हुक्म आया कि— " तो ज़ैद बिन मुहम्मद की बजाए ज़ैद बिन हारिसा उसको कहा करते थे।" (अहज़ाब—5) निससंदेह जैसा औरों से पर्दा है वैसा ही नबी से है। आपने कोई आयत इस विषय की लिखी होती जिसका यह मतलब होता कि नबी से पर्दा नहीं तो हम जवाब देते।

पंडित जी ऐसी चालाकी से बढ़कर भी कोई बुरी बात हो सकती है कि आप बेटे और ले पालक में फ़र्क़ नहीं कर सकते और धोखा देने को कहते हैं कि— "जब बेटे की पत्नी को घर में डालने से पैग़म्बर साहब न रुक सके तो औरों से किस प्रकार बचे होंगे" योगी और साधू होकर ऐसी दुर्भावना और धोखा धड़ी? सच है—

पंडित अते मशालची दोनों इको टच
हौरां करन उजावला आप हंदेरे विच

समाजियो! स्वामी जी की खुश फ़हमी की दाद दो। लिखते हैं कि "ग़ैर औरत भी नबी से ख़ुश होकर शादी करना चाहे तो हलाल होगी।" पंडित जी चूंकि सारा जीवन ब्रहमचारी रहे हैं उन्हें इतना भी नहीं मालूम कि ग़ैर औरत ही से शादी होती है। शादी से पहले वह

अपनी औरत कैसे हो सकती है? पैग़म्बर साहब की औरतें भी पैग़म्बर साहब से ना खुशी पर इसी प्रकार खुलअ (तलाक़) करके अलग हो सकती हैं जिस प्रकार सामान्य मुसलमानों की। हां पैग़म्बर साहब को विशेष रूप से शादी वाली को स्वयं छोड़ने से कुरआन में मनाही आयी है। अतः आयत का मतलब यह है कि जिस पत्नी को सफ़र में साथ ले जाना चाहो या पीछे छोड़ने का ख़्याल हो तो यह भी कर सकते हो और बस।

पता नहीं पंडित जी ने यहां बहु पत्नी विवाह पर क्यों नहीं बहस की। ऐसा नर्म शिकार क्यों छोड़ दिया। सोच विचार करने के बाद यह समझ में आता है कि पंडित जी को मन ही मन में लज्जित होना पड़ा होगा कि बहु पत्नि विवाह तो वेद में भी मना नहीं। फिर मैं किस मुंह से मना करने का दावा करूं मुख्य रूप से ऐसे लोगों के लिए जो वेद का स्पष्ट मंत्र लिए बिना मेरी जान नहीं छोड़ेंगे।

समाजी मित्रो! कोई मंत्र बहु पत्नी विवाह के मना करने का हो तो दिखाओ। ऋग वेद मंत्र उल्लिखित भूमिका पृ0 134 काफ़ी नहीं। मात्र स्वामी जी की खींच तान है। ध्यान से देखो बहु पत्नी विवाह की फ़लसफ़याना शोध देखना हो तो तफ़सीर सनाई भाग 2 हाशिया न0 8 देखें। या हमारा रिसाला बहु पत्नि विवाह नियोग और तलाक़ देखो।

(128) "और नहीं उचित तुम्हारे वास्ते यह कि यातना अल्लाह के रसूल को वर्ना यह कि निकाह करो बीवियां उसकी को पीछे उसके कभी। तहक़ीक़ यह है कि नज़दीक अल्लाह के बड़ा गुनाह। बेशक जो लोग यातना देते हैं अल्लाह को और उसके रसूल को अल्लाह ने उनको फटकार लगायी है। और वे लोग यातना देते हैं मुसलमानों को और मुसलमान औरतों को बिना इसके कि बुरा

किया हो तो बेशक उठाया उन्होंने खुला बोहतान "फटकारे जाएं जहां पाए जाएं" पकड़े जाए और क़त्ल किए जाएं। खूब क़त्ल करना। ऐ हमारे पालनहार उनको दुगना अज़ाब और फटकार कर और फटकार बड़ी। (आयत 53, 57, 58, 62, 68)

आपत्ति

वाह क्या अल्लाह अपनी खुदाई को धर्म के साथ दिखला रहा है। रसूल को यातना देने से मना करना तो ठीक है लेकिन दूसरे को यातना देने से रसूल को भी रोकना उचित था तो क्यों नहीं रोका? क्या किसी को यातना देने से अल्लाह भी दुखी हो जाता है यदि ऐसा है तो वह खुदा ही नहीं हो सकता। क्या अल्लाह और रसूल का यातना देने की मनाही करने से यह भी साबित नहीं होता कि अल्लाह और रसूल जिसे चाहें यातना दें और लोग भी सिवाए उनके जिनको चाहे यातना दें जैसा मुसलमान मर्द व औरत को यातना देना बुरा है। वैसा ही ग़ैर धर्म वालों को भी यातना देना बहुत बुरा है जो उसे न माने तो उनको पक्षपाती समझो।

वाह रे शोर मचाने वाले खुदा और भी तुम से तो निर्दयी दुनिया में थोड़े बहुत होंगे जो यह लिखा है कि ग़ैर लोग जहां मिलें उनको पकड़ो और यदि ऐसा ही मुसलमानों के साथ ग़ैर धर्म वाले बर्ताव करें तो उनको यह बात बहुत बुरी लगेगी या नहीं? वाह कैसे ख़तरनाक पैग़म्बर हैं कि खुदा से दूसरों को दुगना दुख देने की दुआ मांगते हैं उनसे उनकी हिमायत, स्वार्थ और क्रूरता का सबूत मिलता हैं इसी वजह से अब तक भी मुसलमान लोगों में से बहुत से मूर्ख लोग ऐसा ही अमल करने से नहीं डरते। यह ठीक है कि शिक्षा के बिना मनुष्य जानवर के बराबर रहता है।

(सत्य वचन महाराज)

आपत्ति का जवाब

महाराज धन्य महाराज। एक व्यक्ति को किसी मौलवी साहब ने नमाज़ की ताकीद की तो बोला ख़ुदा फरमाता है।

"नमाज मत पढ़ो" (सूरह निसा – 43)

मौलवी साहब ने कहा– कम बख़्त! उसके आगे व अन्तुम सुकारा अर्थात नशे की हालत में भी तो है। वह व्यक्ति बोला सारे कुरआन पर तेरे बाप ने अमल किया है जो मैं करूं। मैं तो इसी एक टुकड़े पर अमल कर सकता हूं। यही हाल पंडित जी महाराज का है।

स्वामी जी! जिस प्रकार हम मुसलमान कुरआन के अर्न्तगत रिआया (जनता) हैं उसी प्रकार पैग़म्बर साहब भी इन आदेशों को मानने के पाबन्द थे नाम लेने की ज़रूरत नहीं।

किसी की यातना से अल्लाह अवश्य दुखी होता है मगर याद रहे कि– "जहां मायना असंभावित हो वहां उपमा अवास्तविक होती है।

(भूमिका पृ0 10)

अतः अल्लाह के दुखी होने के यह मायना हैं कि वह ऐसे कामों से नाराज़ होता है। बेशक ग़ैर धर्म वालों को भी यातना देना वैसा ही बुरा है जैसा मुसलमानों को। यदि ग़ैरों से जंग है तो उसके लिए भी सारे हालात उचित देखने होंगे जिसको विस्तार से न0 4 में देख लें। पता नहीं स्वामी जी की राल आपत्तियों पर ऐसी क्यों टपकती जाती थी कि कुरआन शरीफ़ की मौजूदा आयतों को भी नहीं देख सकते।

"हाय कैसा पापी है वह मनुष्य जो धर्म के अंधेरे में फंसकर बुद्धि भ्रष्ट कर दे।" (भूमिका सत्यार्थ पृ0 7)

हम समाजी भाइयों से दाद चाहने के लिए वह आयत पूरी की पूरी नक़ल करते हैं जिस पर पंडित जी ने आपत्ति खड़ी की थी कि–

"कैसे खतरनाक पैग़म्बर हैं कि ख़ुदा से दूसरों को दुगना दुख देने की दुआ मांगते हैं तो सुनो – यहां हम जो आयत प्रस्तुत कर रहे हैं इसमें उन लोगों का उल्लेख है जो अपनी हरकतों के कारण जहन्नम में डाले जाएंगे तो उस समय वे यह कहेंगे।

"ऐ हमारे पालनहार! हमने बुरी बातों में अपने सरदारों और मुखियाओं का अनुसरण किया तो उन्होंने हमें पथ भ्रष्ट कर दिया। ऐ हमारे स्वामी। तू उनको हम से दुगनी यातना दे और बड़ी भारी लानत और फटकार कर।" (सूरह अहज़ाब – 67– 68)

समाजियो! बताओ यह पैग़म्बर की दुआ है या शरीरों, झूठों और काफ़िरों की? कुरआन की यह आयत तनिक अधिक ध्यान से पढ़ो। दुख की बात है कि स्वामी जी आपत्ति करते हुए भूमिका पृ0 52 को हमेशा भूल जाते हैं।

समाजियो! यदि कुरआन शरीफ़ की आयत का वह मतलब हो जो स्वामी जी लिखते हैं तो हम तुम्हारे गुरुकुल (धार्मिक पाठशाला) और कालेज के लिए पांच सौ रूपया नक़द देंगे। मर्द मैदान बनो ऐसे दो स्थानों का सबूत ही दिखाओ। माना कि तुम्हें रूपयों का लालच नहीं मगर अपने गुरू की इज्ज़त तो चाहते हो वर्ना दुनिया क्या समझेगी और स्वामी जी परलोक में तुम्हें क्या कहेंगे?

(129) सूरह फातिर– "और अल्लाह वह व्यक्ति है कि भेजता है हवाओं को तो उठाती है बादलों को। अतः हांक लाते हैं हम उसको मुर्दा शहर की ओर। तो ज़िन्दा किया हमने साथ उसके ज़मीन को पीछे मौत उसकी के। इसी तरह क़ब्रों में से निकालता है जिसने उतारा हम को बीच घर रहने के अपनी कृपा से। नहीं लगती हमको बीच उस के मेहनत और नहीं हम को बीच उसके मेहनत और नहीं हम को बीच उसके मलीनता।" (आयत – 9 – 35)

आपत्ति

वाह क्या अनोखी फ़लासफ़ी खुदा की है। खुदा हवा को भेजता है वह बादलों को उठाती है और खुदा उससे मुर्दों को ज़िन्दा करता है। ये बातें खुदा की कदापि नहीं हो सकती क्योंकि खुदा का काम पूरा का पूरा रहता है न कम न ज़्यादा। जो घर का होगा वह बनावट के बिना नहीं हो सकता और जो बनावट का है वह सदैव नहीं रह सकता। जो शरीर रखता है वह बिना मेहनत कैसे दुखी रहता है और शरीर वाला बीमार हुए बिना कभी नहीं बचता। जब एक औरत से संभोग करना रोग का सबब है तो जो कई औरतों से संभोग करता है उसकी कितनी बुरी हालत होती होगी? इसलिए मुसलमानों का जन्नत में रहना हमेशा सुखदायी नहीं हो सकता।

आपत्ति का जवाब

बे इमानों, नास्तिकों, अधर्मियों और बहुदेव वादियों से जब कभी बात हुई और खुदा का सबूत ईश्वरीय कामों से पेश किया तो यही जवाब सुना– "वाह खुदा की अनोखी फ़लासफ़ी" मौलाना इसमाईल शहीद देहलवी रह0 से एक साहब नाराज़ थे सुना है उन्होंने प्रतीज्ञा कर ली थी कि जो बात इस्माईल कहेगा मैं उसका विरोध करूंगा। मौलाना शहीद को भी ख़बर मिली फ़रमाया–"उसे कहो इसमाईल मां से निकाह करना हराम बताता है इसके खिलाफ़ कर– "तो यही हाल स्वामी का है। कुरआन की सीधी सादी हकीमाना इबारत को भी अंधों की ख़ीर बनाना चाहते हैं। सच है–

जो निकले जहाज़ उनका बच कर भंवर से
तो तुम डाल दो नाव अन्दर भंवर के

पंडित जी! सुनिए परमेश्वर आदेश देता है–

"इस पुरुष (परमेश्वर) के मन अर्थात चार या सोंच विचार करने

वाली सामथर्य से चांद पैदा हुआ और चक्षू अर्थात प्रकाश से सूर्य प्रकट हुआ और श्रोत्तर अर्थात् अकाश सूरत कुदरत से आकाश पैदा हुआ और वायु अर्थात हवा सूरत कुदरत से हवा पुरान और तमाम इन्द्रियां पैदा हुई और मुख अर्थात तेज़ व प्रतापी कुदरत से आग पैदा हुई।" (यजुर वेद अध्याय 21 – मंत्र 12)

इस पर कोई बे मायनी हंसी उड़ा दे कि ......

"वाह परमेश्वर की अनोखी फ़लासफ़ी कि आकाश पैदा हुआ यद्यपि आकाश कोई ठोस वस्तु नहीं बल्कि एक ग़ैर मुरक्कब सर्वकालिक वस्तु है इसकी पैदाइश लिखने से पता चला कि वेद का लेखक भौतिकी विज्ञान को भी नहीं जानता था।"

(न0 88 में जरूर देखो और स्वामी जी को दाद दो)

अतः हम भी इसी जवाब पर हस्ताक्षर करते हैं और बस क्योंकि नैतिक वाक्य कि जाहिलों के सामने ख़ामोशी बेहतर" ऐसे ही अवसर के लिए है। हां इतना कहते हैं कि स्वामी जी का यह कथन कि "खुदा उससे मुर्दों को ज़िन्दा करता है।" आज मुर्दा मुराद नहीं है बल्कि शहर मुर्दा अर्थात सूखी ज़मीन मुराद है इसलिए कि जिस शब्द का यह अनुवाद है वह कुरआन शरीफ़ में बलदमीत है जिस के मायना सूखी ज़मीन के हैं।

बहिश्त के बारे में सवाल व जवाब कई बार हो चुके हैं जबकि हम इसी दुनिया में देखते हैं कि बहुत से आदमी एक ही तरह का आहार खाते हैं जिनमें से कुछ ठीक ठाक रहते हैं और कुछ उसी आहार से रोगी होकर मर भी जाते हैं तो जिस जगह यह क़ानून ही न होगा कि कोई आहार किसी शरीर के लिए हानिकारक हो सके। वहां पर यह आपत्ति करना कि "शरीर वाला बीमार हुए बिना कदापि नहीं रह सकता।" बिल्कुल इसी की तरह जो गर्मियों में शिमला या कश्मीर

वालो की हालत सुनकर कि वे गर्म कपड़े पहनते हैं सवाल करे कि गर्मियों में पंखे के बिना किस तरह गुज़ार सकता है और गर्म कपड़े किस तरह पहन सकता है? अतः शिमला और कश्मीर का क़िस्सा ग़लत है।

जो कई औरतों से संभोग की ताक़त न रखता होगा उसे कई औरतें न मिलेंगी बल्कि यदि किसी को एक औरत से भी (जैसे कि आप) तकलीफ़ पहुंचेगी तो एक भी न मिलेगी। मतलब यह है जो चीज़ कष्ट पहुंचाने वाली यहां हो सकती है वहां न होगी बस। समाजी भाइयो! सुनते हो! स्वामी जी क्या फ़रमाते हैं कि एक औरत से भी संभोग करना बीमारी का कारण है। यदि हमारी राय ग़लत न हो तो स्वामी जी चाहते हैं कि तुम लोग स्त्रियों को छोड़ छाड़ कर पंडित जी महाराज की तरह लंगोट बांध लो। न्याय से कहना अपने चौथे उसूल को याद करके बताना कि नेचर की शिक्षा यही है।

(130) सूरह यासीन– क़सम है क़ुरआन मोहकम की बेशक तू अलबत्ता भेजे गए वालों में से है। ऊपर सीधी के उतारा है प्रभुत्व शाली ख़ुदा ने" (आयत 1–4)

आपत्ति

अब देखिए यदि यह कुरआन ख़ुदा का बनाया हुआ होता तो वह इसकी क़सम क्यों खाता। यदि नबी ख़ुदा का भेजा हुआ होता तो ले पालक बेटे की पत्नी पर मोहित क्यों होता? यह कहने ही की बात है कि कुरआन के मानने वाले सीधी राह पर हैं क्योंकि सीधी राह वही होती है कि जिसमें सच मानना, सच बोलना, सच करना, पक्षपात छोड़कर न्याय धर्म का अनुसरण करना आदि हों और इनके ख़िलाफ़ काम करने छोड़ दिए जांए तो न क़ुरआन में, न मुसलमानों में और न उनके ख़ुदा में ऐसी सदाचारी आदतें व विशेषताएं हैं।

यदि पैग़म्बर मुहम्मद साहब सब पर विजयी होते तो सबसे अधिक विद्वान और अच्छे चाल चलन क्यों न होते? इसलिए जिस प्रकार मेवे बेचने वाला अपने बेरों को खट्टा नहीं बताते वैसे ही यह बात समझनी चाहिए।

आपत्ति का जवाब

क़सम का मामला न0 100 में आ चुका है। यह अजीब बात कही कि कुरआन ख़ुदा का बनाया हुआ होता तो वह इसकी क़सम क्यों खाता। जिसका मतलब यह है कि ख़ुदा यदि बन्दों को समझाने के लिए बन्दों के मुहावरा में बात करे और क़सम खाए तो किसी ऐसी चीज़ की खाए जो उसकी बनाई हुई न हो। भली बात कही। ले पालक बेटे की पत्नी का जवाब न0 127 में आ चुका है।

पंडित जी ने सीधी राह की प्रशंसा की जो सारे धर्मो में पायी जा सकती है। स्वामी जी! कौन धर्म दुनिया में है जो सच को स्वीकारने और झूठ को छोड़ने का उसूल न रखता हो। यह तो दीवानों की बड़ के बराबर है कि कुरआन में न उनके ख़ुदा में ऐसी सदाचारी आदतें हैं, हां यह ख़ूब कही कि- "यदि पैग़म्बर साहब सब पर विजयी होते तो सबसे अधिक विद्वान और ठीक ठाक चाल चलन क्यों न होते? इस सवाल का जवाब तो हम पीछे देंगे। पहले समाजियो से यह पूछते हैं कि किस कुरआनी इबारत पर यह सवाल किया गया है। ओहो हम तो भूल गए उल्लिखित अनुवाद में ग़ालिब का शब्द है जिस पर उसताद ग़ालिब का एक शेअर भी याद आया जो बाद में थोड़े संशोधन से हक़ीक़त में स्वामी जी के ऊपर फ़िट आ गया। तनिक ध्यान से सुनो–

ग़ालिब बुरा न मान जो पंडित बुरा कहे
ऐसा भी कोई है कि यह अच्छा कहें जिसे

समाजियो! न्याय से बताओ अपने चौथे उसूल[1] को जो सोने से लिखने के योग्य है याद करके बताओ कि क़ुरआन के अनुवाद में ग़ालिब किस की विशेषता है ख़ुदा की या पैग़म्बर की? फिर यह मसला जल्द ही तय हो जाएगा कि पैग़म्बर साहब कैसे विद्वान थे कि उनके ईश्वरीय संकेत का अनुवाद वह भी उर्दू फिर उर्दू से नागरी किया हुआ भी आप लोगों के स्वामी महर्षि की समझ में नहीं आया। धर्म से कहो कि क्या ज्ञान है। सुनो! क़ुरआन ने इस घटना की पहले से ख़बर दी हुई है।

"जो बात और कहावत तेरे सामने आपत्ति के रूप में पेश करेंगे हम उसके बारे में सच्ची और बेहतर टीका तुझे सुना देंगे।"

(सूरह फ़ुरक़ान–33)

समाजियो! अब भी पैग़म्बर साहब के ज्ञान एवं सूझ बूझ को मानते हो या नहीं। अच्छे चाल चलन के बारे में यह हाल है कि आप जैसे दुश्मन को भी ईसाइयों की कासा लेसी के सारी उम्र की घटनाओं में ज़ैनब के निकाह की एक घटना मिली जिसका जवाब हम न0 127 में दे चुके हैं।

(131) "और फूंका जाएगा बीच उनके तो अचानक वे क़ब्रों में से अपने स्वामी की ओर दौड़ेंगे और गवाही देंगे पांव उनके इस कारण कि कमाते थे सिवाए उसके नहीं कि हुक्म उसका जब चाहे पैदा करना किसी चीज़ का यह कहता है उसके कि "हो" तो हो जाती है।" (आयत 50, 63,80)

आपत्ति

सुनिए ऊट पटांग बातें क्या पांव कभी गवाही दे सकते हैं? ख़ुदा

1– आर्यों का चौथा उसूल है कि सच को स्वीकार करने और झूठ को छोड़ने को सदैव तैयार रहना चाहिए (केवल हाथी के दांत)

के सिवाए उस समय कौन था कि जिसका हुक्म दिया और किसने सुना और कौन बन गया? यदि कोई चीज़ न थी तो यह बात झूठी है और यदि थी तो वह बात कि ख़ुदा के सिवाए ख़ुदा के कुछ न था और ख़ुदा ने सब कुछ बना दिया झूठी होगी।"

आपत्ति का जवाब

देखा पागलाना बड़। एक ही बात को बार बार कहे जाते हैं। हाथ पांव की गवाही का जवाब न0 13 में और ख़ुदा का हुक्म किसने सुना इसकी जांच न0 27 में हो चुकी है।

(132) सूरह साफ़्फ़ात– "फिराया जाएगा उस पर उनका प्याला मीठी शराब का। सफ़ेद आनन्द देने वाली। पीने वालों के वास्ते उनके निकट बैठी होंगी नीची नज़र रखने वालियां, सुन्दर आंखों वालियां, मानो कि वे मोती हैं छुपाए हुए तो क्या हम नहीं मरेंगे और बेशक लूत अलैहि0 पैग़म्बरों में था। जिस समय हमने नजात दी उसको और उसके और एक पीछे रहने वालों में से थी। फिर विनष्ट किया हमने औरों को।"

(आयत 44, 45, 48, 57, 131, 132, 133, 134)

(प्रिय पाठकों अनुवाद का मतलब समझ में न आए तो पंडित जी की आत्मा को सवाब पहुंचाओ जो इधर उधर की आयतें बे मौक़ा जमा करके गड़बड़ी मचाते हैं)

आपत्ति

क्यों जी यहां तो मुसलमान लोग शराब को बुरा बताते हैं लेकिन उनकी जन्नत में तो शराब की नदियां बहती हैं? इतना अच्छा है कि यहां तो किसी तरह से शराब नोशी छुड़ाई लेकिन यहां के बदले वहां उनकी जन्नत में बड़ी ख़राबी है। औरतों के मारे वहां किसी का दिल बस में नहीं रहता होगा, बड़ी बड़ी बीमारियां भी होती होंगी।

यदि वहां के आदमी शरीर वाले होंगे तो अवश्य मरेंगे और यदि शरीर वाले न होंगे तो भोग विलास ही न कर सकेंगे।

फिर उनको जन्नत में ले जाना बे फ़ायदा है। यदि लूत को पैग़म्बर मानते हो तो बाइबिल में लिखा है कि उससे उसकी लड़कियों ने संभोग करके दो लड़के पैदा किए। इस बात को भी मानते हो कि नहीं? मगर मानते हो तो ऐसे पैग़म्बरों का मानना बेकार है और यदि ऐसे और ऐसे के साथियों की खुदा नजात देता है तो वह खुदा भी ऐसा ही है क्योंकि बुढ़िया की कहानी कहने वाला और भेद भाव से दूसरों को विनष्ट करने वाला खुदा कभी नहीं हो सकता। ऐसा खुदा मुसलमानों ही के घर रह सकता है और किसी जगह नहीं।

आपत्ति का जवाब

स्वामी का फ़रमान कैसा सत्य है।

"हर कलाम के आगे पीछे उचित अवसर व स्थान देखकर मायना निकालना चाहिए।" (भूमिका पृ0 52)

ऐसा यह भी सोने से लिखने के योग्य है— "हठ धर्म धर्म के अंधेरों में फंस कर अक़्ल को नष्ट कर लेते हैं और वाचक की मन्शा के विरुद्ध कलाम का मायना निकालते हैं।" (भूमिका सत्यार्थ पृ0 7)

तो यदि उपर्युक्त उल्लिखित उसूल सही हैं तो सुनिए इस आयत के साथ ही क़ुरआन शरीफ़ ने इस शराब के बारे में स्वयं ही बता दिया है।

"जन्नत की शराब में न तो मस्ती अर्थात नशा होगा न उसके पीने वाले बेहोश होंगे।" (सूरह साफ़्फ़ात – 47)

अरबी में हर पीने की चीज़ को शराब कहते हैं। शर्बत का शब्द इसी से निकला है। और समर अंगूर के निचोड़ को कहते हैं तो जब

जन्नत की समर में न नशा हुआ और न मस्ती तो फिर होगा क्या? जो इसी के साथ बताया—

सफ़ेद मज़ा देने वाली पीने वालों के लिए" (सूरह साफ़्फ़ात –46)

यह अनुवाद पंडित जी न नक़ल किए हैं तो जन्नत की शराब को दुनिया का मीठा और स्वादिष्ठ दूध समझना चाहिए। न0 140 में स्वामी जी का अनुवाद भी देखा जा सकता है।

समाजियो! कहो क्या आपत्ति है। अफ़सोस है कि इस क़ुरआन को समझने के दावे पर और इससे बढ़कर दुख है पंडित जी के मूर्ख चेलों पर जो अपने स्वामी की बदनामी दूर करने की बजाए स्वयं उनके कलाम को नक़ल करके मक्खी पर मक्खी मार दिया करते हैं। जन्नत की बहस कई बार हो चुकी है। न0 9 देखो। बाइबिल के बारे में न0 5 देखो। हज़रत लूत अलैहि0 निस्संदेह अल्लाह के नबी थे मगर बाइबिल में जो कुछ उनके बारे में लिखा है सही नहीं है। इसका जवाब ईसाइयों से पूछो हम से नहीं। जैसे पुरानों के ज़िम्मेदार आर्य नहीं वैसे ही बाइबिल के ज़िम्मेदार मुसलमान नहीं।

(133) सूरह साद— "जन्नतें हैं हमेशा रहने की। खोले होंगे वास्ते उनके दरवाज़े उनके तकिए किए हुए होंगे बीच उनके मंगवा देंगे बीच उनके मेवे बहुत और पीने की चीज़ें और उनके निकट होंगी बन्द रखने वालियां नज़र को और उनकी हम उम्र। तो सारे फ़रिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस ने घमंड किया और वह काफ़िरों में से था। कहा— ऐ इब्लीस! किस चीज़ ने तुझे इस सज्दे के करने से मना किया। मैंने इस चीज़ को बनाया दोनों हाथों से। तूने घमंड किया या तू था ऊंची शान वालों में से कहा कि मैं बेहतर हूं इससे। इसे पैदा किया तूने मिट्टी से और मुझको आग से पैदा किया। कहा: बस निकल इन आसमानों से। बेशक तू ठुकराया गया

है और बेशक तेरे ऊपर अन्तिम दिन तक मेरी फटकार है।

कहा– ऐ मेरे पालनहार! मुझे ढील दे उस दिन तक कि उठाए जाएंगे मुर्दे। कहा– तो बेशक तुझे ढील दी गयी उस समय तक। कहा ...... तो क़सम है तेरी इज़्ज़त की मैं गुमराह करूंगा इनको इकट्ठे।" (आयात – 49 से 51, 71 से 78)

आपत्ति

यदि वहां जैसा कि कुरआन में बाग बगीचे नहरें, मकान आदि लिखे हैं वैसे ही हैं तो वे न हमेशा से थे और न हमेशा रह सकते हैं क्योंकि जो चीजें मिलाप से पैदा होती हैं वे संग्रह बनने से पहले न थीं और नष्ट होने के बाद भी न रहेंगी। जब वे जन्नत में न रहेंगी तो उसमें रहने वाले सदैव किस प्रकार रह सकते हैं क्योंकि लिखा है कि गद्दे, तकिए मेवे और पीने की वस्तुएं वहां मिलेंगी। इससे यह साबित होता है कि जिस समय मुसलमानों का धर्म चला उस समय अरब का देश अधिक धनी न था इसी लिए मुहम्मद साहब ने तकिया आदि की कहानी सुनाकर ग़रीबों को अपने धर्म में फंसा लिया और जहां औरतें हैं वहां सदैव आराम कहां?

वे औरतें वहां कहां से आयी हैं? क्या जन्नत की रहने वाली हैं यदि आयी हैं तो जाएंगी और यदि वहीं की हैं तो क़यामत के पहले क्या करती होंगी? क्या निकम्मी अपनी उम्र गुजार रही होंगी? अब देखिए ख़ुदा का तेज कि जिसका हुक्म और सब फ़रिश्तों ने तो माना और आदम को सज्दा किया लेकिन शैतान ने न माना। इसका कारण पूछा और कहा मैंने इसको दोनों हाथों से बनाया है तू घमंड मत कर।

इससे साबित होता है कि कुरआन का ख़ुदा जो हाथ वाला आदमी था अतः वह सर्व व्यापी और सर्व शक्तिमान ख़ुदा कदापि

नहीं और शैतान ने सच कहा कि मैं आदम से श्रेष्ठ हूं। यह सुनकर ख़ुदा ने गुस्सा क्यों किया? क्या आसमान ही में ख़ुदा का घर है? ज़मीन पर नहीं। यदि नहीं, तो काबा को पहले ख़ुदा का घर क्यों लिखा। भला ख़ुदा अपने साम्राज्य से शैतान को कैसे निकाल सकता है? क्या हर जगह ख़ुदा की नहीं?

इससे तो स्पष्ट होता है कि कुरआन का ख़ुदा जन्नत का ही मालिक है। ख़ुदा ने शैतान को लानत की और क़ैद कर लिया और शैतान ने कहा – ऐ मेरे पालनहार! मुझे क़यामत तक छोड़ दे। ख़ुदा ने ख़ुशामद से क़यामत के दिन तक छोड़ दिया। जब शैतान छूटा तो ख़ुदा से कहता है– कि मैं अब ख़ूब बहकाऊंगा और उत्पात मचाऊंगा। तब ख़ुदा ने कहा– कि जिन को तू बहकाएगा मैं उनको जहन्नम में डाल दूंगा और तुझे भी। सज्जन भाई लोग सोच विचार करें कि शैतान को बहकाने वाला ख़ुदा है या वह आप से आप गुमराह हुआ। यदि ख़ुदा ने बहकाया तो वह शैतान का भी शैतान ठहरा। यदि शैतान स्वयं गुमराह हुआ और मनुष्य भी स्वयं गुमराह हो सकते हैं शैतान की ज़रूरत नहीं और इस बाग़ी शैतान को खुला छोड़ देने से भी अधर्म करने वाला और शैतान का साथी साबित होता है। यदि ख़ुदा स्वयं चोरी करने की प्रेरणा दे और फिर स्वयं ही सज़ा दे तो ऐसी सूरत में उससे बढ़कर ज़ालिम कौन हो सकता है?

आपत्ति का जवाब

जन्नत की बहस न0 9 में दी जा चुकी है। शैतानी बातों का जवाब न0 111 व न0 122 में देख लें।

ख़ुदा के हाथों के वही मायना हैं जो यजुरवेद की इबारत उल्लिखित जवाब न0 129 में ख़ुदा के मुख के मायना है? अर्थात कुदरत कामिला– क्योंकि–

"जहां मायना में असंभावना हो वहां उपमा होती है।"

(भूमिका पृ0 10)

बैतुल्लाह या खुदा के घर का जवाब पहले हो चुका है कि "बैत" और "अल्लाह" में संज्ञा सर्वनाम है अर्थात बैत इबादतुल्लाह। अर्थ हुआ अल्लाह की उपासना का घर। बाक़ी बातें व्यर्थ की हैं जिनका जवाब पहले देख लें।

(134) सूरह जुमर– "अल्लाह बख़्शता है गुनाह बेशक वही है बख़्शने वाला कृपालु और ज़मीन सारी मुट्ठी में है उसके। क़यामत के दिन, और आसमान लिपटे हुए हैं बीच दाएं हाथ उसके और ज़मीन चमक जाएगी पालनहार के प्रकाश के साथ। और कर्म पत्र रखे जाएंगे और पैग़म्बरों और गवाहों को लाया जाएगा और फ़ैसला किया जाएगा।" (आयत – 53, 67, 69)

आपत्ति

यदि सब गुनाहों को बख़्शता है तो समझो कि सारी दुनिया को गुनाह गार बनाता है और ज़ालिम है क्योंकि एक बदमाश पर दया और माफ़ी की बात की जाए तो वह अधिक उत्पात मचाएगा और बहुत शरीफ़ों को कष्ट पहुंचाएगा। यदि थोड़ा भी गुनाह माफ़ किया जाए तो गुनाह ही गुनाह दुनिया में फैल जाएं। क्या खुदा आग की भान्ति प्रकाश वाला है? कर्म पत्र कहां जमा रहते हैं? और उनको कौन लिखता है? यदि पैग़म्बरों और फ़रिश्तों के भरोसे खुदा न्याय करता है तो वह न तो सर्व ज्ञाता और समर्थ रखने वाला है। यदि वह जुल्म नहीं करता न्याय ही करता है तो कर्मों के अनुसार करता होगा। वे कर्म अगले पिछले और मौजूदा जन्मों के ही हो सकते हैं तो फिर माफ़ किया। दिलों पर ठप्पा लगाना, पथ प्रदर्शन न दिखाना, शैतान द्वारा बहकाना आदि ये सारी बातें उसके न्याय से

परे हैं।

आपत्ति का जवाब

खुदा किनको क्षमा करता है न0 22 व न0 32 में देखो। कर्म पत्र वहां रहते हैं जहां आत्माओं को मुक्ति के बाद रहने की आप भी अनुमति देते हैं। फ़रिश्ते लिखते हैं और हिसाब के समय बन्दों को दिखाया जाता है और क़यामत के दिन दिखाया जाएगा। न0 102 देखो। सारी बातों के जवाब पहले आ चुके हैं। न0 5, 6, 11, 15, 32 आदि में देखो।

अल्लाह के नूर (प्रकाश) का जवाब न0 114 में देखो। पंडित जी को तो पानी बिलोने की आदत है मगर हमें क्या ज़रूरत है कि समय नष्ट करें।

(135) सूरह मोमिन– " उतारना किताब अल्लाह का प्रभुत्व शाली और जानने वाले की ओर से। क्षमा करने वाला गुनाह और तौबा को स्वीकार करने वाला।" (आयत– 2,2)

आपत्ति

यह बात इसलिए है कि सादा स्वभाव वाले अल्लाह के नाम से इस किताब को स्वीकार कर लें कि जिसमें थोड़ी सच्चाई के अलावा शेष सब झूठ भरा है और वह सच्चाई भी झूठ के साथ मिलकर ख़राब हो जाती है। इसलिए कुरआन का खुदा और उसको मानने वाले गुनाह बढ़ाने वाले और गुनाह करने व कराने वाले हैं क्योंकि गुनाह को क्षमा कर देना भारी अधर्म है। इसी कारण मुसलमान लोग गुनाह और फ़साद करने से कम डरते हैं।

(सत्य वचन महाराज)

आपत्ति का जवाब

कैसा पापी है वह मनुष्य जिसका अपना घर शीशों का हो और

दूसरों पर पत्थर बरसाए। सुनो! ईश्वर आदेश देता है -

"मैं ब्रह्म अर्थात वेद को प्रकट करने वाला हूं।"

(मन्त्र ऋग्वेद उल्लिखित सत्यार्थ प्रकाश पृ0 321, समलास 7 न0 9)

समाजियों, ठीक है? कि "ब्रहम" का नाम इसलिए लिया कि सादा स्वभाव मनुष्य परमेश्वर के नाम से जल्द मान लेंगे। गुनाह माफ़ करने का समलास न0 22 आदि में हो चुका है।

(136) सूरह हामीम सजदा -- तो निर्धारित किया उनको सात आसमान दो दिन के अन्दर और डाल दिया हर आसमान के बीच उस का काम। यहां तक कि जब जाएंगे उसके पास गवाही देंगे उस पर उनके काम उनकी आखें, उनके चमड़े, इस कारण कि वे सब कर्म करते थे और कहेंगे चमड़े से कि तुम ने क्यों गवाही दी हमारे विरुद्ध? कहेंगे वे कि अल्लाह ने हम को बुलाया जिसने बुलाया हर चीज़ को, अलबत्ता ज़िन्दा करने वाला है मुर्दों को।"

(आयत 11, 19, 20, 38)

आपत्ति

वाह जी वाह मुसलमानो! तुम्हारा खुदा जिसे तुम सर्व शक्तिमान मानते हो वह सात आसमानों को दो दिन में बना सका और जो सर्वशक्तिमान है वह तो क्षण भर में सब को बना सकता है भला कान, आंख और चमड़े को खुदा ने बेजान बनाया है। वे गवाही किस तरह दे सकेंगे? यदि गवाही दिलाएगा तो उसने पहले बेजान क्यों बनाए। यदि कोई कहे कि उस समय शक्ति प्रदान करेगा तो क्या खुदा अपना क़ानून तोड़ेगा? एक इससे भी बढ़कर झूठ बात यह है कि जब आत्माओं पर गवाही दी तो वे आत्माएं अपने अपने चमड़े से पूछने लगीं कि तूने हमारे ऊपर गवाही क्यों दी? जैसे कोई कहे कि अक़ीमा के बेटे का मुंह मैंने देखा। यदि बेटा है तो अक़ीमा क्यों कर

हुई यदि अक़ीमा है तो उसके यहां बेटा होना ही असंभव है। इस तरह की यह बात भी झूठ बात है। यदि वह मुर्दों को जिन्दा करता है तो पहले मारा ही क्यों। क्या आप भी मुर्दा हो सकता है या नहीं? यदि नहीं हो सकता तो मरना बुरा क्यों समझता है? और क़यामत की रात तक मुर्दा आत्माएं किस मुसलमान के घर में रहेंगी और उनको खुदा ने निर्दोष क्यों टाल रखा है? तुरन्त न्याय क्यों नहीं किया? ऐसी ऐसी बातों से खुदा की खुदाई में बट्टा लगता है।

आपत्ति का जवाब

वाह जी समाजियो! तुम्हारा स्वामी महार्षि ईश्वरीय किताबों के मुहावरों से ऐसा अनजान है जैसा कोई दयानन्दी बड़े गोश्त के भाव से। आसमानों की पैदाइश का बयान न0 88 में देखो अलबत्ता क़ानून के विरुद्ध बातों का जवाब न0 129 आदि में है।

हां यह भली कही कि मुर्दों को ज़िन्दा करता है तो मारता ही क्यों है? यह ऐसा सवाल है कि जी में आता था कि अपने समाजी दोस्तों को खुश करने के लिए इसका जवाब न दें ताकि वे यह न समझें कि मानो हमारे गुरू के कुल सवाल यद्यपि विद्या से खाली हैं मगर यह सवाल तो अवश्य अच्छा है जो जवाब नहीं दिया। इस लिए संक्षिप्त सी निवेदन किए देते हैं कि मुर्दों को ज़िन्दा इसलिए करेगा कि उनको कर्मों का पूरा पूरा बदला दे।

सुनो! कुरआन बताता है-- "ताकि हर जीव को पूरा पूरा बदला मिले।" (सूरह ताहा -- 15) अलबत्ता यह बड़ा ही जटिल और कठिन सवाल है कि खुदा आप भी मुर्दा हो सकता है न0 137 देखिए। शेष आपत्तियों के जवाब कई बार दिए जा चुके हैं।

(137) सूरह शूरा -- "उसके वास्ते है कुन्जियां आसमानों की और ज़मीन की। जिसकी चाहता है उसकी आजीविका खोलता है

और जिसकी चाहे तंग कर देता है और जो कुछ चाहे देता है जिसको चाहे बेटियां और जिसे चाहे बेटे देता है या मिला देता है उनको बेटे और बेटियां और कर देता है जिसे चाहे बांझ। और नहीं है ताक़त किसी व्यक्ति को कि बात करे उससे अल्लाह मगर जी में डालने के तौर पर या पर्दे के पीछे से या फ़रिश्ता भेजे संदेश लाने वाला।" (आयत 11, 47, 48, 49)

आपत्ति

खुदा के पास कुन्जियों का ख़ज़ाना भरा हुआ होगा? क्योंकि सारी जगहों के ताले खोलने पड़ते होंगे। यह लड़कपन की बात है कि जिसे चाहता है उसकी बिना सद कर्म या दुष्कर्म के आजीविका खोल या तंग कर देता है। यदि ऐसा है तो वह अन्यायी है और देखिए क़ुरआन के लेखक की चालाकी कि जिससे औरतें भी मोहित होकर फंसें। यदि जो कुछ चाहता है पैदा करता है तो दूसरे खुदा को भी पैदा कर सकता है या नहीं?

यदि नहीं कर सकता तो सामर्थ्य शक्ति यहां क्या अटक गयी? भला आदमियों को तो जिसे चाहे खुदा बेटे बेटियां देता है लेकिन मुर्ग़ मछली, सुअर आदि जिनके बहुत से बेटे बेटियां होते हैं उनको कौन देता है? और मर्द औरत के संभोग किए बिना क्यों नहीं देता। किसी को अपनी इच्छा से बांझ रख कर दुख क्यों देता है? वाह क्या खुदा जलाल वाला है कि उसके सामने कोई भी बात नहीं कर सकता। लेकिन उसने पहले कहा है कि पर्दा डाल कर बात कर सकता है और फ़रिश्ते खुदा से बात कर सकते हैं या पैग़म्बर? यदि ऐसी बात है तो फ़रिश्ते और पैग़म्बर खूब अपना मतलब निकालते होंगे। यदि कोई कहे कि खुदा सर्वज्ञाता और सर्व व्यापी है तो पर्दा डालकर बात करना या डाक की भान्ति ख़बर मांगाकर जानना

बेकार ठहरता है और यदि ऐसा है तो वह खुदा ही नहीं बल्कि कोई चालाक आदमी होगा इसलिए यह क़ुरआन खुदा का बनाया हुआ कदापि नहीं हो सकता।

आपत्ति का जवाब

समाजियो! अभी तक स्वामी के नास्तिक (अधर्मी) होने में कुछ संदेह है? फिर क्या कारण है कि अल्लाह की ज़ात और विशेषता के बारे में उनको वही संदेह होते हैं जो उन बेइमानों (नास्तिकों) को हुआ करते हैं। इस न0 का जवाब हम कभी भी न देते क्योंकि कोई एकेश्वर वादी ऐसे सवाल नहीं किया करता मगर यह सोचकर कि शायद हमारा ही विचार सही हो (अल्लाह करे कि सही ही हो) कि पंडित जी नास्तिक हैं।

कुन्जियां खुदा के कब्ज़े में होने से वही तात्पर्य है जो ऋग वेद में परमेश्वर का आदेश है– सुनो।

"हम उस परमेश्वर को जो समस्त संसार का बनाने वाला इस कायनात का स्वामी बुद्धि को उज्जवल व रोशन करने वाला है अपनी रक्षा के लिए आमंत्रित करते हैं।"

(ऋग वेद अष्टक 1, अध्याय 6, वरग 15 मन्त्र 5)

अतः इस आयत का मायना यह हैं कि वह अल्लाह सारी कायनात का मालिक है क्योंकि अरब का बल्कि सारे देशों का मुहावरा है कि फ़लां के हाथ में फ़लां की कुंजी है अर्थात वह इसपर ऐसा अधिकार रखता है जैसा मालिक को होता है।

चूंकि आवागमन असत्य है (देखो न0 121) इस लिए जो कुछ खुदा देता है मात्र अपनी कृपा और दया से देता है और जो चीज़ जिसको नहीं देता उसकी हिक्मत का तक़ाज़ा है यही है कि वह सर्वबुद्धि है। हां यह भली कही कि "जो कुछ चाहता है पैदा करता है तो दूसरे खुदा को भी पैदा कर सकता है।" ठीक इसी तरह किसी

बेसमझ मूर्ख ने पंडित जी पर सवाल किया था उसका क्रोध हम मुसलमानों पर निकालते हैं। हम स्वामी जी के इस सवाल के जवाब में उस सवाल व जवाब को नक़ल कर देना ही काफ़ी समझते हैं। सुनो।

सवाल

हम तो ऐसा मानते हैं कि ईश्वर जो चाहे वह करे क्योंकि उसके ऊपर कोई दूसरा नहीं है।

जवाब

"वह क्या चाहता है यदि कहो कि वह सब कुछ चाहता है और सब कुछ कर सकता है तो हम तुम से पूछते हैं कि क्या परमेश्वर अपने आपको मार सकता है। बहुत से ऐसे ईश्वर बना सकता है स्वयं अज्ञानी हो सकता है चोरी व्यभिचार आदि पाप के काम कर सकता है और दुखी भी हो सकता है? ये काम यदि ईश्वर के गुण और आदत के विरुद्ध हैं तो तुम्हारा यह कथन कि वह सब कुछ कर सकता है कभी सही नहीं हो सकता।

इस स्थिति में शब्द "सर्व शक्तिमान के मायना जो हमने बयान किए वही ठीक है (वे यह हैं) ईश्वर अपने काम में अर्थात जन्म, लालन पालन और अन्त आदि करने और सारे प्राणियों को पुन पाप के बारे में, विधान को सुचारू रूप से चलाने में किसी की कण भर भी मदद नहीं लेता अर्थात अपनी अपार कुदरत व शक्ति से अपनी इस कयानात की व्यवस्था को चला रहा है।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 235, समलास 7, न0 12)

. पंडित जी ने तो इस बयान को मात्र कहकर छोड़ दिया कि ये काम उसकी विशेषताओं के विरुद्ध है इसलिए नहीं कर सकता जिस पर किसी वद मंत्र का हवाला भी नहीं दिया बल्कि मन गढ़त

बात बनायी है मगर हम इसे स्पष्टीकरण से कुरआनी आयतों के हवालों से साबित करते हैं।

असल बात यह है कि अल्लाह सारी वस्तुओं का कर्ता है सब में प्रभावी है। किसी चीज़ से वह प्रभावित नहीं होता अर्थात किसी वस्तु का प्रभाव कुबूल करना उसकी विशेषता में नहीं। यह उसूल हमें कुरआन की उस आयत से मिलता है जो हज़रत इबराहीम अलै0 की तहकीक़ व जांच के बारे में है कि उन्होंने सितारे, चांद, सूरज आदि को डूबते हुए देखकर यह कहा था।

"मैं डूबने वालों से मुहब्बत नहीं करता" (सूरह अनआम– 76)

अर्थात उनको ईश्वर बनाने के लिए पसन्द नहीं करता। इस आयत में कुरआन शरीफ़ ने हमें इस उसूल तक पहुंचाया है कि जो चीज़ दूसरे से प्रभाव कुबूल कर लें या दूसरे से प्रभावित हो जाए वह ईश्वरत्व होने के योग्य नहीं। अतः जितनी इस मूर्ख प्रश्न कर्ता के जवाब में स्वामी जी ने खुदा की शान को खिलाफ़ बातें प्रस्तुत की हैं या कुरआनी आयतों पर सवाल किए हैं सबका जवाब यही है कि ये काम सब के सब ऐसे हैं कि इनसे अल्लाह का दूसरे से प्रभावित होना साबित नहीं होता।

प्रिय पाठकों! पंडित जी के इस लठमार सवाल से हमें एक हिकायत याद, आयी है जिससे आप लोगों की दिलचस्पी होगी। एक पंडित जी शायद हमारे स्वामी जी के चेले थे किसी राजा के पास लम्बे समय से नौकर थे। अपने घर जाने का बहुत दिनों तक अवसर न मिला। आखिर उनकी पत्नी ने एक प्रस्ताव उनको बुलाने का सोच कर पत्र में लिखा कि बड़े अफ़सोस की बात है महाराज की स्त्री रांड हो गयी। जिस तरह हो सके शीघ्र घर का प्रबन्ध कीजिए। पंडित जी तो यह पढ़कर ऐसे हैरान हुए कि सर के बाल

नोचते हुए डेरे पर आए। बड़े दुखी सर नीचे डाले हुए बैठे हैं सज्जन प्रार्थना कर रहे हैं महाराज! सब ठीक तो है? पंडित जी बड़े क्रोधित हो कर बोले ...... हां साहब जिस पर गुज़रती है वही जानता है तुम्हें क्या? आखिर महाराज कुछ कहिए तो सही बात क्या है? पंडित जी ने कहा– बड़े दुख की बात है आज घर से आदमी समाचार लाया कि महारानी (पंडित जी की पत्नी) रांड हो गयी। दोस्तों ने बड़े ज़ोर का ठहाका लगाया कि महाराज! आपके जीते जी वह कैसे रांड हुई? इतने पर पंडित जी को भी होश आया तो बोले......

तुम भी कहते हो सच ऐ भाई
यह घर से आया है मोतबर नाई

यही हाल हमारे स्वामी दयानन्द जी का है। फ़रमाते हैं– दूसरे खुदा को पैदा कर सकता है? और यह नहीं जानते कि ज़िस खुदा को पैदा करेगा वह तो नवीन होगा और ईश्वरत्व के लिए तो प्राचीन होना ज़रूरी है। प्राणी कभी पैदा करने वाले के दर्जे पर पहुंच सकते हैं? असल पूछो तो पंडित जी भी विवश हैं। कुरआन तो पढ़ा नहीं कि ऐसे बारीक मसलों की जानकारी होती।

समाजियो! सुनो! कुरआन बहुदेव वादियों का तोड़ करते हुए कहता है– "तुम्हारे बनावटी उपास्य कुछ भी नहीं बना सकते बल्कि वे स्वयं बने हुए हैं।" (सूरह नहल – 20)

जिससे इस नतीजे पर पहुंचाना मन्जूर है जिसका हमने ज़िक्र किया कि प्राणी कभी खुदा नहीं हो सकते क्योंकि हर जीव नवीन है और अल्लाह प्राचीन है। स्वामी की तरह लठमार सवाल करने की हमें भी गुंजाइश है। यदि यह काम जिनका उल्लेख स्वामी जी ने सवाल करने वाले के जवाब में किया है जिनको हमने नक़ल किया है परमेश्वर नहीं कर सकता तो सर्व शक्तिमान कुदरत क्या यहां पर

अटक गयी? किसी वेद मंत्र से जवाब दें।

हां मुर्ग मछली का भला बयान किया। शायद खाने को मन करता होगा वर्ना अवसर तो कोई न था जिसका जवाब सार में यह है कि आयत में आदमियों का उल्लेख ही नहीं।

समाजियो! न्याय से कहना कि हम यह कहने का हक़ रखते हैं या नहीं?

हां इस बात जवाब आप ही दें कि मर्द व औरत के मिलाप के बिना क्यों नहीं देता? समाजियो! बुरा न मानना, बताओ यह किस आस्तिक का सवाल है? ठीक यही सवाल आर्यन डिबेटिंग क्लब अमृतसर में खुदा की हस्ती पर बहस करते हुए एक नास्तिक ने किया था कि यदि खुदा है तो क्या उसकी कृपा है कि औरत इस तकलीफ़ से बच्चा जनती है कि अल अमान। बिना ऐसे मिलाप के क्यों पैदा नहीं होता। जिसका जवाब मैंने दिया था कि पूरी वजह तो इसकी वही जानता है मगर हमें यूं समझ में आता है कि यदि बिना मिलाप के बच्चा पैदा होता तो उसके लालन पालन की ज़िम्मेदारी कौन लेता क्योंकि उससे किसी को ख़ास मुहब्बत ही न होती। मेरे इस जवाब को प्रधान समाज ने बहुत पसन्द किया था मगर उस समय मुझे मालूम न था न प्रधान जी जानते होंगे कि सवाल असल में स्वामी जी ही का पैदा किया हुआ है वर्ना प्रधान भी शायद उस नास्तिक ही की पुष्टि करते। पंडित जी को इतनी भी ख़बर नहीं कि मैं उस समय इस्लाम पर आपत्ति करने बैठा हूं। ऐसा तो न करूं कि मुझ पर भी वही सवाल आ जाए अतः बेहतर है कि समाजी ही इसका जवाब दें। हम उस पर हस्ताक्षर कर देंगे।

बांझ आदि के रखने के बारे में जवाब स्वयं इसी आयत में साथ साथ बता दिया है मगर पंडित जी को क्या मतलब था कि वे इसे

नक़ल करते। तो सुनो।

"बेशक अल्लाह बड़ा ज्ञान वाला बड़ी कुदरत वाला है।"

(सूरह नहल – 70)

आवागमन को झुठलाने के बाद उससे अच्छा जवाब हो तो हमारे भी उस पर हस्ताक्षर करा लो। बेशक पैगम्बर अपना मतलब निकालते हैं। क्या मायना? अर्थात अल्लाह उनकी निष्ठा और दिल की सफ़ाई की वजह से उनकी दुआओं को कुबूल करता है। यह कुछ इन्हीं की विशेषता नहीं जो कोई इसका हो रहे वह सबकी सुनता और उचित सवाल भी पूरा करता है। सुनो अल्लाह फ़रमाता है–

"मैं दुआ मांगने वालों की दुआ कुबूल करता हूं जब वे मुझे पुकारें।" (सूरह बक़रा – 186)

खुदा का सर्व व्यापी होना आपके मायना में हमें तसलीम नहीं। देखो (न0 41)

(138) सूरह जुख़रुफ़– "और जब आया ईसा खुली दलीलों के साथ।" (आयत – 59)

आपत्ति

यदि ईसा भी खुदा का भेजा हुआ है तो उसकी शिक्षा के विपरीत खुदा ने कुरआन क्यों बनाया? और कुरआन के विपरीत इंजील है इसलिए ये किताबें अल्लाह की बनाई हुई नहीं हैं।

आपत्ति का जवाब

न0 5 में जवाब देखो।

(139) सूरह दुख़ान– "पकड़ो उसको और घसीटो उसको बीचो बीच जहन्नम के। इसी तरह रहेंगे और ब्याह देंगे हम उनको साथ अच्छी आंखों वाली हूरों के।" (आयत – 43–50)

आपत्ति

वाह क्या न्याय करने वाला खुदा होकर मनुष्यों को पकड़वाता और घिसटवाता है जब मुसलमानों का खुदा ही ऐसा है तो उसके उपासक मुसलमान यतीम, कमजोरों को पकड़ेंगे। घसीटेंगे तो इसमें क्या अचरज है? और वह सांसारिक लोगों की तरह शादी भी कराता है अर्थात मुसलमान तो उनका प्रोहित अर्थात क़ाज़ी निकाह कराने वाला है।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी! बुरा न मानिए। आर्य समाज के सदस्य बुरे कर्म करें तो कुत्ते, सुअर, बन्दर की जून में उनको डलवाकर दर बदर कौन फिराता है और मुर्दार कुत्ते या गऊ माता मरी हुई को चोहड़ के हाथों कौन घिसटवाता है। वही जिसने यह सज़ा उन कमबख़्तों, बदकारों, असमाजिक तत्वों के लिए निर्धारित की है अतः आगे अपनी तुक बन्दी मिला लें कि आर्यो का परमेश्वर ऐसा है।

पंडित जी आपको मालूम नहीं कि दुनिया में भी ये नेमतें (निकाह आदि) अल्लाह ही की प्रदान की हुई हैं। सुनो! परमेश्वर आदेश देता है–

"मैं सब के सुख व आराम प्राणियों के लिए तरह तरह के आहारों को बांटता हूं सबका लालन पालन करता हूं।"

(ऋग वेद मंडल, 10 सोकत 48 मन्त्र 1)

(140) सूरह मुहम्मद– "तो जब मुलाक़ात करो तुम उन लोगों से कि काफ़िर हुए अतः मारो गर्दनें उनकी यहां तक कि चूर कर दो उनको, पकड़ कर क़ैद करना। और बहुत बस्तियां थीं कि वे सख़्त थी ताक़त में बसती तेरी से, जिसने निकाल दिया तुझको विनष्ट किया हमने उनको। अतः न हुआ कोई मदद देने वाला वास्ते उन के

विशेषता उस जन्नत की कि वायदे किए गए हैं। अल्लाह का डर रखने वाले नहरों के बीच हैं। पानी नहरें हैं दूध की, न बदला गया स्वाद उसका। और नहरें हैं शराब की मज़ा देने वाली, वास्ते पीने वालों के और नहरें हैं शहद की और वास्ते उनके है बीच उसके हर तरह के मेवे और उनके पालनहार की तरफ़ से उनके लिए माफ़ी।"

(आयत – 4,14,16)

आपत्ति

इसलिए यह कुरआन खुदा और मुसलमानों को शोर मचाने, सबको कष्ट देने और अपना मतलब निकालने वाले ज़ालिम हैं जैसा यहां लिखा है वैसा ही यदि दूसरा कोई ग़ैर धर्म वाला मुसलमानों पर करे तो मुसलमानों को वैसा ही दुख जैसा औरों को देते हैं होगा या नहीं? और खुदा का भेद भाव देखिए कि जिन्होंने मुहम्मद साहब को निकाल दिया उनको खुदा ने हलाक कर डाला। भला जिस में पाक पानी, दूध, शराब और शहद की नहरें हैं वह दुनिया से ज्याद क्या हो सकता है? और दूध की नहरें कभी हो सकती हैं? क्योंकि वे थोड़े ही समय में बिगड़ जाता है इन बातों के कारण अक़्ल मन्द लोग कुरआन के धर्म को नहीं मानते।

आपत्ति का जवाब

कैसा मूर्ख है जो शीशों का घर बनाकर दूसरों पर पत्थर बरसाता है। सारे सवाल का जवाब न0 2 आदि में देख लें। दूध के ख़राब होने के बारे में न0 129 में देखो। हां इतना कह देना कोई बेजा नहीं जबकि यह शिकायत कोई नई नहीं है कि पंडित जी ने इस आयत का उर्दू अनुवाद भी नहीं समझा वर्ना पंडित जी यह सवाल न करते कि......

"खुदा की तरफ़दारी देखिए कि जिन्होंने मुहम्मद साहब को

निकाल दिया उनको खुदा ने हलाक कर डाला।

इसलिए कि जिस वाक्य पर आपत्ति की है वह उस बसती के बारे में नहीं है जिसने पैग़म्बरे इस्लाम को निकाला था बल्कि वह पहली बस्तियों के बारे में है– सुनो – वे शब्द ये हैं–

"यह बस्ती (मक्का) जिसने तुमको घर से निकाल कर छोड़ा कितनी बस्तियां इससे भी बल बूते में बढ़ी चढ़ी थीं कि हमने उनको विनष्ट कर डाला और कोई भी उनकी मदद को खड़ा न हुआ।"

(सूरह मुहम्मद – 13)

अर्थात यह भी कोई बड़ी बात नहीं कि जो बस्ती खुदा के रसूल का अपमान करके उसे निकाल दे वह हलाक किए जाने योग्य ही है। मगर यहां तो यह मतलब नहीं है। क्या जिस पापी ने स्वामी जी को ज़हर देकर मारा वह सज़ा न पाएगा।

(141) सूरह वाक़िआ– "जिस समय हिलायी जाएगी धरती हिलायी जाने को और उड़ाए जाएंगे पहाड़ उड़ाने जाने को, तो हो जाएंगे भुन्गों की तरह बिखरे हुए। तो साहब दायीं के। क्या है साहब दायीं ओर वाले क्या हैं दायीं ओर वाले और बायीं ओर वाले क्या हैं बायीं ओर वाले के। ऊपर पलंग सोने के तारों से बुने हुए। तकिया किए हुए ऊपर उनके आमने सामने और फिरेंगे ऊपर उनके लड़के हमेशा रहने वाले आबखोरों के साथ और आफ़तावों के प्यालों के शराब साफ़ से। नहीं सर दिखाए जाएंगे और न बेजा बोलेंगे और मेवे इस प्रकार के कि पसन्द करें और मांस जानवरों और परिन्दों का इस तरह का कि चाहेंगे और वास्ते उनके औरतें हैं गोरी बड़ी आंखों वालियों मोतियों की तरह छुपाए हुए और ऊंचे बिछौने। बेशक पैदा किया हम ने औरतों उनकी को पैदा किया। तो क्या है हम ने उनको बाकरा पति वालियां। एक जैसी उम्र की वास्ते दायीं

ओर वालों के अतः उसके पेटों को भरने वाले हो। तो कसम खाता हूं मैं साथ तारों के गिरने के।" (आयत 4,6,8,9,15 से 23,34,37,53,75)

आपत्ति

अब देखिए कुरआन के लेखक की कारसाज़ी, भला ज़मीन तो हिलती रहती है। उस समय भी हिलती रहेगी। इससे यह साबित होता है कि कुरआन का लेखक ज़मीन को ठहरा हुआ जानता था। भला पहाड़ों को परिन्दों की तरह उड़ाने की क्या मिसाल। यदि भुन्ने हो जाएंगे तो फिर भी बारीक शरीर वाले रहेंगे। तो फिर उनका दूसरा जन्म क्यों नहीं? वाह जी! यदि खुदा ठोस शरीर वाला न होता तो उसके दाएं और बायी ओर क्यों कर खड़े हो सकते हैं? जब वहां पलंग सोने की तारों से बुने हुए हैं तो बढ़ई, सुनार भी वहां रहते होंगे और खटमल काटते होंगे और उनको रात को भी नहीं सोने देते होंगे। क्या वह तकिया लगाकर जन्नत में बैठे रहते हैं या कुछ काम भी करते हैं? यदि बैठे ही रहते होंगे तो उनका खाना हज़म न होने की वजह से बीमार होकर जल्द ही मर भी जाते होंगे और यदि काम किया करते होंगे तो जैसी मेहनत मज़दूरी यहां करते वैसे ही वहां मेहनत करके गुज़र बसर करते होंगे।

फिर यहां से वहां जन्नत में ज़्यादा क्या है? कुछ भी नहीं। यदि वहां लड़के हमेशा रहते हैं तो बड़ा भारी शहर आबाद होगा और पेशाब पाखाना की बदबू की वजह से बीमारियां भी बहुत सी होती होंगी, क्योंकि जब मेवे खाएंगे, गिलासों में पानी पिएंगे और प्यालों से शराब पिएंगे तो क्या उनका सर न दुखेगा और क्या कोई आलतू फ़ालतू न बोलेगा?

मेवे और जानवरों और परिंदों का गोश्त भी पेट भरकर खाएंगे।

तब तो नाना प्रकार की बीमारियां होंगी और जब वहां परिन्दे और जानवर होंगे तो बड़ा रक्त पात भी होता होगा और हड्डियां इधर उधर बिखरी पड़ी होंगी और क़साबों की दुकानें भी होंगी। वाह क्या कहना। उनकी जन्नत की प्रशंसा कि वह अरब देश से बढ़ कर नज़र आती है और यदि शराब व कबाब पी खाकर मस्त होते तो हूर व ग़िलमान भी वहां अवश्य रहने चाहिए नहीं तो ऐसा नशा करने वालों में गर्मी चढ़ जाने से पागल हो जाने का ख़तरा हो जाएगा। बहुत से मर्द व औरतों के बैठने सोने के लिए जरूरी बिछौने बड़े बड़े चाहिए। जब खुदा कुंवारी औरतों को जन्नत में पैदा करता है तब तो कुंवारे लड़कों को भी पैदा करता है भला बाकरा औरतों का विवाह तो यहां से उम्मीदवार होकर गए हैं उनके साथ खुदा ने लिखा।

लेकिन सदैव रहने वाले लड़कों का किसी भी बाकरा औरत के साथ विवाह होना न लिखा तो क्या वे भी उन्हीं उम्मीदवारों के साथ बाकरा औरतों की तरह दिए जाएंगे। इसका कायदा कुछ भी न लिखा। खुदा से यह इतनी बड़ी भूल क्यों हो गयी। यदि एक जैसी उम्र वाली सुहागन औरतें पतियों को पाकर जन्नत में रहती हैं तो ठीक नहीं है क्योंकि औरतों से मर्दों की उम्र दुगनी या ढ़ाई गुना चाहिए। यह तो मुसलमानों की जन्नत की कहानी है और जहन्नम वाले थूहर के पेड़ों को खाकर पेट भरेंगे तो कांटों वाले पेड़ भी जहन्नम में होंगे और कांटे भी लगे होंगे और गर्म पानी का पीना आदि जहन्नम में पाएंगे।

क़सम खाना प्रायः झूठ बोलने जैसा काम है। सच्चों का नहीं। यदि खुदा भी क़सम खाता है तो वह भी झूठ से पीछा नहीं छुड़ा सकता।

आपत्ति का जवाब

भोले स्वामी जी जिस बात को आदमी न समझे उसका इलाज यह है कि किसी विद्वान से पूछ ले न कि मन गढ़त सवाल करके विद्वानों में अपमानित हो। धरती के हिलने का जवाब न0 110 आदि में हो चुका है। पंडित जी! दायां हाथ लोगों का तात्पर्य है न कि खुदा का। सुनो। कुरआन स्वयं बता रहा है–

"जिसको अपने दाएं हाथ में पर्चा मिलेगा वह दोस्तों से कहेगा आओ मेरा पर्चा पढ़ो।" (सूरह हाक्क्ह – 19)

हैरत है यही अनुवाद स्वामी जी स्वयं न0 145 में नक़ल कर चुके हैं। पाठक इस न0 में लिखी इबारत देख सकते हैं।

कहिए आगे पीछे न देखने वाले कौन होते हैं? हां भली कही कि सुनार और खटमल आदि भी होंगे। हां अवश्य होंगे लेकिन काफ़िरों ही से यदि यह काम खुदा ले ले तो कोई हरज की बात नहीं। उन्हीं को बेकार में फंसाए या खुदा मात्र अपनी कुदरत से सब सामान सुख सम्पदा का उपलब्ध कर दे– सुनो–

"परमेश्वर के हाथ नहीं लेकिन अपनी ताक़त के हाथ से सबको बनाता और क़ाबू में रखता है।" (सत्यार्थ पृ0 244 अध्याय 7)

जन्नत में जन्नती सुख वैभव और मनोरंज के अलावा अल्लाह की याद में भी समय बिताएंगे। हां मुझे याद आया कि जीव (आत्मा) मुक्ति पाकर परमेश्वर के अन्दर जो चला जाता है जैसा कि आप लिखते हैं।

"ब्रहम (खुदा) हर जगह भरपूर है उसमें मुक्त जीव बे रोक टोक विज्ञान और आनन्द के साथ फिरता है।" (सत्यार्थ पृ0 312 अध्याय 7 न0 15)

खुदा के अन्दर जाता है खुदा कोई कोठा है या तालाब है?

जाकर वहां बेकार बैठा होगा तो उसका भी जी उक्ता जाता होगा। क्या भला सवाल है कि पंडित जी जन्नत को बड़ा शहर समझते हैं। स्वामी जी! सुनिए हम आपको उसकी लम्बाई चौड़ाई बताते हैं लेकिन दो मेंढकों की बात चीत से हमें ख़तरा है। एक कुंए में दरिया का मेंढक आ पड़ा तो कुंए के मेंढक ने उससे पूछा कि दरिया कितना बड़ा होता है। वह बोला बहुत बड़ा होता है। कुंए के मेंढक ने एक डुबकी लगाकर आधा कुंआ तैर का पूछा इतना? वह बोला इससे भी ज्यादा आखिर कुंए के मेंढक ने सारा पाट पूरा कर दिया और पूछा कि इतना? उसने कहा– तू मूर्ख है दरिया कहीं इतना सा होता है? कुंए का मेंढक बोलाः तू झूठ बोलता है इससे बढ़कर पानी तो सारी दुनिया में न होगा। तो यदि स्वामी जी हम पर आपत्ति न करें तो हम उनको बताते हैं– सुनो –

"जन्नत की चौड़ाई तमाम आसमानों और मौजूदा ज़मीनों जितनी होगी।" (सूरह इमरान – 133)

खटमल और पेशाब पाख़ाना का भी जवाब यह है कि वे वहां होंगे ही नहीं क्योंकि वहां का क़ानून ही और है। न0 129 देखो। नशा का जवाब न0 132 में देखो मतलब यह है कि सब कुछ कुरआन ने बताया है। आपने किसी तर्क से इस पर आपत्ति नहीं की। पूर्व नम्बरों में विस्तृत जवाब देखा। बेकार की बकवास करने वाला जवाब का हक़दार नहीं होता। (सत्यार्थ पृ0 350)

जन्नत का विषय कई बार आ चुका है पिछले नम्बरों को देख लिया जाए।

(142) सूरह सफ़फ़– " बेशक अल्लाह दोस्त रखता है उन लोगों को कि लड़ते हैं बीच राह उसके।" (आयत – 4)

आपत्ति

वाह ठीक है ऐसी ही निकम्मी बातों की हिदायत करके बेचारे अरब देश के लोगों को सब से लड़ाकर दुश्मन बनाया फिर आपस में कष्ट पहुंचाया और धर्म का झंडा ऊंचा करके लड़ाई फैलाई। ऐसे को कोई बुद्धिमान खुदा कभी नहीं मान सकता जो क़ौम में दंगा फ़साद बढ़ा दे। वही सब के लिए कष्टदायक होता है।

आपत्ति का जवाब

न0 2 व न0 31 देखो। सच पूछो तो आप से ज्यादा किसने दंगा फ़साद मचाया। अकारण ना समझी में वेदों को नष्ट किया। भला वेदों पर तो कोई हक़ का सिफ़ारिशी होगा। कुरआन और बाइबिल से यूं मुंह आने लगे।

(143) सूरह तहरीम– "ऐ नबी क्यों हराम करता है उस वस्तु को कि तेरे वास्ते जो खुदा ने हलाल की। तू अपनी पत्नियों की रज़ा मन्दी चाहता है और अल्लाह माफ़ करने वाला कृपालू है।

संरक्षक है पालनहार उस का यदि तलाक़ दे तुम को तो बदल दे उन पत्नियों से जो तौबा करने वालियां, उपासना करने वालियां, रोज़ा रखने वालियां, पति को देखने वालियां और पति को न देखने वालियां।" (आयत 1–5)

आपत्ति

ध्यान से सोच विचार करना चाहिए कि खुदा क्या हुआ। मुहम्मद साहब के घर का अन्दर व बाहर की व्यवस्था करने वाला नौकर ठहरा। पहली आयत पर दो कहानियां हैं एक तो यह कि मुहम्मद साहब को शहद का शर्बत पसन्द था और उनकी कई पत्नियां थीं उनमें से एक के घर पीने लगे तो यह बात दूसरी पत्नियों को अप्रिय लगी। उसके कहने सुनने के बाद मुहम्मद साहब क़सम खाकर गए

कि हम न पिएंगे। दूसरी यह कि उनकी कई पत्नियों में से एक का नम्बर था। उसके यहां रात को गए तो वह वहां न थी अपने बाप के यहां गयी थी। मुहम्मद साहब ने एक लौंडी अर्थात कनीज़ को बुलाकर पाक किया। जब पत्नी को इसकी ख़बर मिली तो नाराज़ हो गयी। तब मुहम्मद साहब ने क़सम खायी कि मैं ऐसा न करूंगा और पत्नी से कह दिया कि तुम किसी से यह बात मत कहो। पत्नी ने मान लिया कि न कहूंगी।

फिर उन्होंने दूसरी पत्नी से जाकर कहा। इस पर यह आयत अल्लाह ने उतारी कि जिस चीज़ को हमने तेरे ऊपर हलाल किया उसे तू हराम क्यों करता है। बुद्धिमान लोग सोचें कि भला कहीं खुदा भी किसी के घर का फ़ैसला कराता फिरता है? और मुहम्मद साहब का चरित्र इन बातों से स्पष्ट ही है क्योंकि जो कई औरतों को रखे वह खुदा का भक्त या सन्देष्टा कैसे हो सकता है और जो एक औरत की तरफ़दारी से डर कर दूसरी का सम्मान करे तो वह तरफ़दार होकर पापी क्यों न होगा और जो कई औरतों से भी सन्तुष्टि न पाकर कनीज़ों के साथ फंसे उसके निकट लज्जा व भय और धर्म कैसे फटक सकता है।

किसी ने कहा है कि जो ज़ानी (व्यभिचारी) हैं उनको पाप से डर या लज्जा नहीं आती। इनका खुदा भी मुहम्मद साहब की पत्नियों और पैग़म्बर के झगड़े का फ़ैसला करने में मानो सरपंच बना है। अब समझदार लोग सोच विचार करें कि यह कुरआन किसी विद्वान का बनाया हुआ है या खुदा का या किसी जाहिल का या किसी स्वार्थी का? और दूसरी आयत से मालूम होता है कि मुहम्मद साहब से उसकी कोई पत्नी नाराज़ हो गयी होगी। उस पर अल्लाह ने यह आयत उतार कर उसे धमकाया होगा कि यदि तू गड़बड़ करेगी और

मुहम्मद साहब तुझे तलाक़ दे देंगे तो उनको उनका खुदा तुझ से अच्छी पत्नियां देगा कि जो पति से न मिली हों। जिस आदमी को थोड़ी सी भी अक़्ल है वह सोच विचार कर सकता है कि ये अल्लाह के काम हैं या अपना मतलब पूरा करने के वास्ते अल्लाह की ओर से मुहम्मद साहब कह देते थे। जो लोग अल्लाह की तरफ़ ध्यान लगाते हैं उनको हम तो क्या सारे बुद्धिमान लोग यही कहेंगे कि खुदा क्या ठहरा मानो मुहम्मद साहब के लिए पत्नियां लाने वाला कोई नाई ठहरा।

आपत्ति का जवाब

घरेलू मामलों की बातें बताने से ख़ुदा नौकर ठहरता है तो परमेश्वर का आदेश सुनो–

"ऐ विवाहित मर्द औरतों! तो दोनों रात कहां ठहरे थे और दिन तुमने कहां बसर किया था तुमने खाना आदि कहां खाया था? तुम्हारा वतन कहां है जिस प्रकार विधवा औरत अपने देवर (दूसरे पति) के साथ रात गुज़ारती है या जिस प्रकार विवाहित मर्द अपनी विवाहित औरत के साथ सन्तान के लिए रात में मिलाप करता है इसी तरह कहां रात गुज़ारे थे?" (ऋगवेद अषटक 7, अध्याय, वरग मन्त्र 2)

और सुनो–

"ऐ विधवा औरत तू अपने असली पति के मरने पर किसी ऐसे मर्द नियोग के तौर पर हासिल करके सुख भोग जिसकी ब्याहता औरत मर गयी हो और इस प्रकार सन्तान प्राप्त कर।"

(ऋग वेद मंडल– 10 सौकत, 18, मन्त्र –8)

और सुनिए–

"ऐ देवर (दूसरे पति) की सेवा करने वाली औरत और ब्याहे हुए पति की आज्ञापालक पत्नी तू नेक गुणों वाली हो, तू घर के कारोबार

में अच्छे उसूल पर अमल कर और अपने पाले हुए जानवरों की रक्षा कर और अच्छे कार्य और गुण व ज्ञान एवं प्रशिक्षण हासिल करके शक्ति शाली सन्तान पैदा कर और सदैव सन्तान में सतर्क रह। ऐ नियोग द्वारा दूसरे की इच्छा करने वाली तू सदैव सुख देने वाली हो घर में हवन आदि की आग का इस्तेमाल और घर के काम काज व कारोबार को दिल लगा कर बड़ी सावधानी के साथ कर।"

(अथर वेद कांड 14, अनुवादक – 2 मन्त्र – 18)

स्पेशल ड्यूटी के बारे में भी वेद की बात सुनो

"ऐ मनुष्यों! जिस प्रकार ज़बान से स्वाद हासिल किया जाता है उसी तरह पढ़ी लिखी औरत को चाहिए कि वह अपने पति के सुन्दर अंगों के साथ अपने अंगों को मिलाए और एक सुखमय स्थिति में होकर सर के साथ सर और मुंह के साथ मुंह को पाक करे। इसी तरह दोनों पति पत्नी मिलाप किया करें। जिस मर्द का लिंग सही और पूर्ण होता है जो बड़े वेग से यह क्रिया (संभोग) करने वाला हो उसे चाहिए कि वह यह सब कुछ ऐसे तरीक़े से करे जिस से न केवल राहत व आराम हासिल हो बल्कि सन्तान पैदा करने का भी कारण हो।" (यजुरवेद अध्याय 19, मंत्र 88)

समाजी मित्रों! यह वेद है या कोक शास्त्र? तो क्या इसी तरह, नहीं नहीं...... तौबा तौबा ऐसे असभ्य नहीं– बल्कि अत्यन्त निर्लज्जता और सभ्यता से गिरे हुए अन्दाज़ से इस आयत में खुदा ने पैग़म्बर साहब की पत्नियों को निर्देश दिए हैं।

असल बात यह है कि पैग़म्बर साहब को किसी बीवी ने शहद पीने पर कहा कि आपके मुंह मुबारक से गंध आती है। अतएव पंडित जी ने इसे नक़ल किया है और यही रिवायत बहुत सही है इस पर आपने शहद का पीना छोड़ दिया और क़सम खा ली कि आगे कभी

न पियूंगा। मगर चूंकि नबी का काम अपने अनुयायियों और लोगों के लिए दलील और तरीका होता है इसलिए ख़तरा था कि आपके बाद के तमाम लोग इसी प्रकार हलाल चीज़ों को हराम कर लेंगे तो मानो यह एक धार्मिक समस्या बन जाती। इस लिए खुदा ने यह आदेश उतारा जिसका मतलब यह है कि पत्नियों की खुशी यहां तक न चाहो कि हलाल चीज़ को हराम समझने लगो। हरेक चीज़ की एक हद है ऐसा न करो बल्कि अपनी क़सम का परायश्चित देकर पहले की तरह हलाल चीज को खाओ।

हां! यदि आप को यह आपत्ति सूझे कि पत्नियों की खुशी पैग़म्बर साहब को ऐसी क्यों ज़रूरी हुई कि यहां तक नौबत पहुंची तो सुनो–

"जिस परिवार में औरत से पति और पति से औरत अच्छी तरह खुश रहते हैं उसी परिवार में पूरी तरह खुश नसीबी शालीनता के साथ ठहरा करती है। जहां लड़ाई झगड़ा होता है वहां बदबख़्ती और ग़रीबी डेरा जमाती है।" (सत्यार्थ प्रकाश पृ0 123, अध्याय 4 न0 46)

शेष पाक पत्नियों के बारे में सवाल का जवाब न0 127 में देखो।

अफ़सोस कि पंडित जी को काफ़ी तलाश के बाद भी पैग़म्बर साहब की पवित्र जीवनी में एक भी घटना ऐसी न मिली जिसे बुद्धिमानों के सामने प्रस्तुत कर सकते। हमें भी स्वामी जी की इस विफ़लता पर दुख है अतः हम उनके और उनकी समाज के दुख दर्द में बराबर के साथी हैं और उनसे हमदर्दी रखते हैं। "केवल यही एक घटना मिलती है कि आप अधिक पत्नियां रखते थे? तो इसका संक्षिप्त जवाब यह है कि आप भी मनुष्य थे और नेचरल नियम के पाबन्द थे। कुदरत के क़ानून ने मर्द औरत की इच्छा दी है। पंडित जी की तरह सदैव ब्रहम्चारी रह कर कुदरत के क़ानून के ख़िलाफ़ नहीं करते थे। इसके बारे में विस्तृत बहस रिसाला "मुक़द्दस रसूल"

में देखिए।

(144) "ऐ नबी झगड़ा कर काफ़िरों और कपटियों से और सख़्ती कर ऊपर उनके।" (आयत–9)

आपत्ति

देखिए मुसलमानों के खुदा की कारसाज़ी। दूसरे धर्म वालों से लड़ने के लिए पैग़म्बर और मुसलमानों को भड़काता है। इसी वजह से मुसलमान लोग दंगा करने में तैयार रहते हैं। परमात्मा मुसलमानों पर दया दृष्टि रखे जिससे ये लोग दंगा फ़साद छोड़ कर सबके साथ मिल जुल कर रहें।

आपत्ति का जवाब

न0 2, न0 31 आदि देखो। हमारी भी दुआ है कि अल्लाह समाजियों को हिदायत करे कि वे अपने गुरु की तरह दूसरे धर्म वालों को सामान्यता और हिन्दुओं को विशेष रूप से बुरा भला कहकर देश में उत्पात न मचाएं।

नोट

पहले तो ज़बानी फ़सादात करते थे 1923–24 ई0 में तो आर्यों ने हाथों से भी दंगा फ़साद किए। देश में हर तरफ़ उनके दंगा फ़साद की आग भड़क रही है जिसके लिए सबसे बड़ी गवाही हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध सदाचारी नेता महात्मा गांधी की है जो इस पुस्तक के अन्त में मौजूद है।

(145) सूरह हाक़्क़ा– "फट जाएगा आसमान तो वह उस दिन सुस्त होगा और आठ फ़रिश्ते होंगे तेरे रब का अर्श उठाए ऊपर किनारों से। उस दिन सामने लाए जाओगे तुम न छुपी रहेगी तुम में से कोई बात छुपी हुई। अतः जो कोई दिया गया कर्म पत्र दाहिने हाथ उसके तो कहेगा पढ़ो अपना कर्मपत्र अपना और जिसे दिया

गया कर्म पत्र उसका बीच बाएं हाथ में उसके तो कहेगा काश न दिया गया होता कर्म पत्र मेरा।" (आयत– 14–17–23)

आपत्ति

वाह क्या फ़लासफ़ी है क्या न्याय की बात है। भला आकाश भी कभी फट सकता है? क्या वह कपड़े की तरह है जो फट जाएगा? यदि आकाशीय मंडल तारों आदि को आसमान कहते हैं तो यह बात ज्ञान के विपरीत है। अब कुरआन के खुदा के ठोस होने में कोई संदेह नहीं रहा क्योंकि अर्श पर बैठना आठ कहारों से उठवाना बिना किसी ठोस वस्तु के कभी हो नहीं सकता और सामने या पीछे भी आना जाना ठोस वस्तु के होते ही संभव हो सकता है। जब वह ठोस आकार है तो सीमित स्थान वाला होने से सर्वज्ञान और सर्व शक्तिमान नहीं हो सकता और सब आत्माओं से कर्मों की बात कभी नहीं जान सकता। हैरत की बात है कि शरीफ़ लोगों के दाएं हाथ कर्म पत्र देना पढ़वाना, जन्नत में भेजना और बुरे लोगों के बाएं हाथ में कर्म पत्र का देना, जहन्नम में भेजना और कर्म पत्र पढ़कर न्याय करना भला यह काम होश मन्दी का हो सकता है? कदापि नहीं? यह सब कार्रवाई लड़कपन की है।

आपत्ति का जवाब

आसमान का जवाब न0 7 व न0 88 व न0 129 में आ चुका है। अर्श उठाना एक सांकेतिक उपमा है ईश्वर की महानता एवं प्रताप को व्यक्त करना है न यह कि वह अर्श पर यूं बैठा होगा जैसे कोई राजा पालकी में बैठा होता है और पालकी कहारों ने उठायी होती है बल्कि आयत का मतलब केवल इतना है कि शासन और ईश्वर के तेज का वह हाल होगा कि किसी से बोल न सकेगा न ही मदद ले सकेगा। अतएव उससे आगे शब्दों में बताया है जिनको आप ने भी

नक़ल किया है उस दिन सब अल्लाह के दरबार में उपस्थित होंगे। कोई उनकी करतूत अच्छी व बुरी छुपी न रहेगी और मारे भय के सब चकित होंगे। सुनो कुरआन शरीफ़ बताता है–

"सारी आवाज़ें नीची हो जाएगी।" (सूरह ताहा–108)

मगर अफ़सोस कि इन उसूलों से आप सदैव अपना ही फ़ायदा लिया करते हैं दूसरों का नहीं कि जहां वेद अल्लाह के अंगों को बता दे कहां तो आप उसी उसूल से उसे सही ठहरा जाएं और जहां कुरआन या कोई और किताब इस प्रकार की सांकेतिक उपमा द्वारा बोले चाहे वहां लथ्य भी कई प्रकार के हों वहां पर सारा साधुपना गंगा में डुबो कर नंगे हो बैठें और आएं बाएं शाएं बग़लें झांकना शुरू कर दें। समाजियों! सुनो–

दाएं बाएं हाथ में कर्म पत्र मिलने पर आपत्ति नहीं की गयी केवल मामूली से उपहास से काम लिया गया इसलिए सत्यार्थ अध्याय 10 न0 3 पृ0 350 भी देख डालो।

हमारी ओर से जवाब खामोशी है हां इतना अवश्य बताते हैं कि कर्म पत्र लोगों की तसल्ली के लिए होंगे। अल्लाह को उनकी ज़रूरत नहीं। सुनो! कुरआन स्वयं बताता है–

"लोगो! अपना कर्म पत्र पढ़ लो। तुम स्वयं ही हिसाब करने को काफ़ी हो।" (सूरह इसरा – 14)

(146) सूरह मआरिज– "चढ़ते हैं फ़रिश्ते और आत्मा उसकी तरफ़। उस दिन के बीच वह यातना होगी कि उसकी मात्रा पचास हज़ार साल की है जिस दिन निकलेंगे क़ब्रों में से दौड़ते हुए मानो कि वे बुतों के मकानों की ओर दौड़ते हैं।" (आयत 40–42)

आपत्ति

यदि पचास हजार साल के दिन का अन्दाजा है तो पचास हज़ार

बरस की रात क्यों नहीं। यदि इतनी बड़ी रात नहीं है तो इतना बड़ा दिन कभी नहीं हो सकता। क्या पचास हज़ार बरस तक अल्लाह फ़रिशते और कर्म पत्र वाले खड़े या बैठे या जागते ही होंगे। यदि ऐसा है तो बीमार होकर मर भी जाएंगे। क्या क़ब्रों से निकल कर अल्लाह की कचहरी की ओर दौड़ेंगे। उनके पास समन क़ब्रों में क्योंकर पहुंचेंगे? और उन बेचारों को जो अच्छे या बुरे आचरण वाले हैं उतनी अवधि तक क़ब्रों में क्यों रखा? और आजकल अल्लाह की कचहरी बन्द होगी और अल्लाह और फ़रिशते निकम्मे बैठे होंगे? या कुछ काम करते होंगे। अपने अपने मकानों में बैठे होंगे इधर उधर घूमते सोते नाच तमाशा देखते और सुख वैभव करते होंगे। ऐसा अंधेर किसी राज्य में न होगा। ऐसी ऐसी बातों को सिवाए बर्बर लोगों के दूसरा कौन मानेगा?

आपत्ति का जवाब

जी तो चाहता था कि पंडित जी की आज्ञा उल्लिखित सत्यार्थ प्रकाश पृ0 350, अध्याय 10 पर अमल करें मगर अपने पाठकों के लिए न0 125 का हवाला देते हैं।

हां यह बात प्रकट करने योग्य है कि स्वामी जी का नक़ल किया गया अनुवाद यद्यपि अनुवादित कुरआन में है मगर थोड़े से सुधार व स्पष्टीकरण की ज़रूरत है और शब्द "थी" ठीक नहीं "है" सही है। अनुवादक साहब ने भी ग़लती नहीं की क्योंकि "थी" जिस शब्द का अनुवाद है वह "कान" है कान का मायना कभी तो मुरादिफ़ (अर्थात विक़ल्प) "बुवद (होना)" के होते हैं। इस समय इसका मायना "है" का होता है जैसे कानल्लाहु अलैहिमा (अल्लाह ज्ञान वाला है) इसी तरह न0 125 में भी "थी" सही नहीं "है" सही है।

अतएव शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी ने फ़ारसी अनुवाद में

"दस्त" और शाह अब्दुल कादिर साहब ने उर्दू अनुवाद में "है" लिखा है। स्वामी जी को और हमें तो ज़रूरी है कि उचित स्थान व अवसर और आगे पीछे को देखकर मायना किया करें। वर्ना ...... भूमिका पृ0 52 वाला फ़तवा जड़ा जाएगा अतः आयत का अनुवाद यह है–

"फ़रिशते और आत्मा अर्थात जिबरील अल्लाह की तरफ़ चढ़ते हैं एक दिन में जिसका अन्दाज़ा पचास हज़ार साल का है।"

व्याख्या न0 125 में देखो

(147) सूरह नूह– " और बेशक पैदा किया तुम को तरह तरह से क्या नहीं देखा तुमने क्यों कर पैदा किया अल्लाह ने सात आसमानों को ऊपर तले और क्या चांद को बीच उसके रोशन किया और सूरज को चराग़।" (आयत 4, 15, 16)

आपत्ति

यदि आत्माओं को अल्लाह ने पैदा किया तो वे सर्व कालिक अन्तहीन नहीं हो सकती? फिर जन्नत में सदैव कैसे रह सकेंगी? जो चीज़ पैदा होती है वह अवश्य समाप्त हो जाने वाली है। आसमान को ऊपर नीचे क्योंकर बना सकता है? क्योंकि वह बे शक्ल और हर जगह मौजूद है। यदि दूसरी चीज़ का नाम आसमान रखते हो तो भी उसका नाम आसमान रखना बेकार है यदि ऊपर तले आसमान को बनाया है तो इस सब के बीच में चांद सूरज कभी नहीं रह सकते। यदि बीच में रखा जाए तो एक ऊपर और एक नीचे की चीज़ ही रोशन रहे। दूसरे से लेकर बाक़ी सब में अंधेरा रहना चाहिए। ऐसा नहीं मालूम होता इस लिए यह बात बिल्कुल झूठी है।

आपत्ति का जवाब

निस्सन्देह आसमान एक ठोस चीज़ है। शरीर होने का बयान न0

7 व न0 88 व न0 129 आदि में देखो। नीचे ऊपर इस तरह हैं जिस तरह बिल्लौर (शीशे) पर बिल्लौर (शीशा) रखा जाए। हां यह भला कहा कि यदि चांद सूरज बीच में रखे जाएं तो ऊपर अंधेरा होगा। क्या ही भली लाजिक है। भला पंडित जी! यदि हम आसमानों को बिल्लौर के तख्तों की तरह स्वच्छ चमकीले शरीर मानें और उन सब से ऊपर चांद सूरज को गड़ा हुआ समझें तो क्या ख़राबी? बताइए चौथे उसूल को याद रखकर बताइए। लीजिए हम यह भी नहीं कहते बल्कि हम यूनान के हुकमा (बुद्धिजीवियों) का धर्म लेते हैं जिसके लिए लेने की हमें कोई विशेष ज़रूरत नहीं कि चांद पहले आसमान पर है और सूरज चौथे आसमान पर है मगर चूंकि दोनों गोले या गेंद की तरह हैं जिसका रुख़ किसी विशेष ओर नहीं होता। अतएव पंडित जी न0 152 में मानते हैं कि सूरज गोल ग्रह है इसलिए ऊपर भी रोशनी है और नीचे भी।

समाजियो! यदि आज़माना चाहो तो कपड़े का एक गोला बनाओ और लोहे के हुक में बांधकर छत से लटकाओ और उस पर तेल डालकर आग लगा दो और सत्यार्थ प्रकाश को हाथ में लिए रहो। जब उसके जलने से चारों ओर ऊपर नीचे तमाम रोशनी हो तो जो कुछ उस समय हाथ में लिए हो। इसमें झोंक दो और हमें इस माजरा का एक सूचना या कार्ड लिखो।

बेशक आत्माएं खुदा की पैमाइश हैं यदि वह चाहे तो फना कर सकता है लेकिन खुदा यदि किसी प्राणी को सदैव के लिए रखना चाहे तो उसे कोई रोक नहीं सकता। सृष्टि का आरंभ हुआ तो अवश्य है क्योंकि इसका गुण पैदा करना ही उसके लिए जाना पहचाना है मगर फ़ना ज़रूरी नहीं। हां समाप्त होने योग्य बेशक है। यदि कर्त्ता चाहे तो फ़ना कर दे। शायद आपको यह मालूम नहीं कि

मुसलमान अल्लाह को सृष्टि के लिए केवल अल्लाह ही सब कुछ है या जैसे चराग़ रोशनी के लिए। सुनो कुरआन इस बारीक मसले की ओर इशारा करता है तनिक ध्यान से सुनो! ईंट की नहीं बल्कि पत्थर की ऐनक लगाकर पढ़ो।

"बेशक खुदा आसमानों और ज़मीनों को विनष्ट होने से थामे हुए है यदि समाप्त होने लगें तो उसके (अल्लाह के) सिवा इन्हें कोई बचा नहीं सकता।" (सूरह फातिर – 41)

इसे इस तरह समझए कि जैसे कपड़े को तैयार होने के बाद दर्ज़ी की ज़रूरत नहीं होती या बन्दूक़ की गोली को चला देने के बाद बन्दूक़ची की ज़रूरत नहीं होती यहां तक कि यदि गोली चलाने के तुरन्त बाद बन्दूक़ची मर जाएं तो भी गोली की हरकत में कोई ख़राबी नहीं आती। इसी तरह रूहों को या जिन चीज़ों को खुदा समाप्त नहीं करना चाहेगा उनका समाप्त होना ज़रूरी नहीं बल्कि मौजूद रहना ज़रूरी है।

(148) सूरह जिन्न– " और मस्जिदें अल्लाह के वास्ते हैं तो मत पुकारो अल्लाह के साथ किसी को।" (आयत–18)

आपत्ति

यदि यह बात सच है तो मुसलमान लोग– "ला इला ह इल्लल्लाह मुहम्मदर्रसूलुल्लाह" इस कलिमा में खुदा के साथ मुहम्मद साहब को क्यों पुकारते हैं? यह बात तो कुरआन के खिलाफ़ है और जो ख़िलाफ़ नहीं करते तो इस बात को झूठ ठहराते हैं। जब मस्जिदें खुदा का घर हैं तो मुसलमान बड़े मूर्ति पूजक हुए क्योंकि जैसे पुराने जैनी छोटे सी मूर्ति को खुदा का घर मानते हैं मूर्ति पूजक ठहरते हैं तो ये लोग क्यों नहीं?

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी को शिर्क से नफ़रत है हिन्दू का बेटा होकर ऐसी नफ़रत थोड़ा ग़नीमत है। पंडित जी को इतनी भी ख़बर नहीं कि पुकारने और पुष्टि करने में अन्तर होता है। स्वामी जी पुकारना ऐसा होता है जैसे आप के भाई हिन्दू कहा करते हैं। ऐ डंडोत देवता! ऐ राम चन्द्र जी महाराज! समाजी पापियों को नष्ट करो जो हमारे अवतारों को पानी पी पी कर कोसते हैं। और पुष्टि इसे कहते हैं जैसे आर्य समाजी आपके बारे में कहते हैं कि स्वामी जी महाराज बड़े विद्वान हैं ऐसे हैं वैसे हैं। समाजियो! इन दोनों में अन्तर है या नहीं? अपने चौथे उसूल को याद करो और बताओ कि ला इलाह के साथ मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का मिलाप दूसरी तरह से है जिसे आपके गुरुजी महर्षि पहली तरह का समझते हैं अतः तुम उनकी प्रशंसा करो। शेष जवाब न0 21, व न0 53 व 55 में देखें।

हां यह बात भी समाजियों से मालूम करनी है कि मस्जिदों को ख़ुदा का घर कहना किस आयत का अनुवाद है। पंडित जी के उल्लिखित अनुवाद पर सोच विचार करो कहीं मस्जिदों को बैतुल्लाह लिखा हो तो हमें दिखा दो। हम मुसलमान मस्जिदों को बैतुल्लाह कहते हैं मगर आप तो कुरआन पर आपत्ति कर रहे हैं हम पर नहीं जैसा कि भूमिका में अध्याय 14 में लिख आए हैं। लीजिए हम आपको बताते हैं कि बैत और अल्लाह के बीच क्या फ़र्क़ है देखो न0 61।

(149) सूरह क़यामतः "इकट्ठा किया जाएगा सूरज और चांद।"

(आयत–8)

आपत्ति

भला सूरज और चांद कभी इकट्ठा हो सकते हैं? देखो यह

कितनी भारी बे अक़्ली की बात है और सूरज चांद को इकट्ठा करने में क्या तर्क है? ऐसी ऐसी असंभव बातें ख़ुदा की बनायी हुई कभी नहीं हो सकती है सिवाए जाहिलों के और किसी विद्वान की भी नहीं हो सकती।

आपत्ति का जवाब

स्वामी जी बे दलील बात कहने के तो इतने शौक़ीन हैं कि मा शा अल्लाह हम पहले भी लिख चुके हैं कि पंडित जी यह मुनाज़रा का मैदान है आपका समाज मन्दिर नहीं कि जो मन में आया कह दिया।

संभल कर पांव रखना मयकदा में सरस्वती साहब
यहां पगड़ी उछलती है इसे मयख़ाना कहते हैं

समाजियो! पंडित जी से दलील रह गयी तो तुम ही बता दो कि चांद सूरज के जमा न होने की क्या दलील है? चांद और सूरज के जमा करने से तात्पर्य यह है कि उनको बे नूर करके हरकत से रोक दिया जाएगा क्योंकि जन्नत में सूरज चांद की ज़रूरत न होगी। सुनो कुरआन बताता है।

"जन्नत में न तो सूरज देखेंगे और न उसके न होने से सर्दी पाएंगे।" (सूरह दहर – 13)

(150) सूरह दहर– "और फिरेंगे ऊपर उनके लड़के सदैव रहने वाले जिस समय देखेगा तू उनको सोचेगा तू उनको मोती बिखरे हुए। और पहनाए जाएंगे कंगन चांदी के और पिलाएगा उनको पालनहार उनका पवित्र शराब।" (आयत– 19-21)

आपत्ति

क्यों जी मोती के रंग वाले लड़के किस लिए वहां रखे जाएंगे। जवान लोग उनकी सेवा या औरतें उनकी सन्तुष्टि नहीं कर

सकतीं? क्या हैरत की बात है कि जो यह सब से घृणित कार्य लड़कों के साथ बदमाशी का करना है उसका आधार यही कुरआन की आयत हो और जन्नत में आक़ा और गुलाम होने से आका को आराम और नौकर को मेहनत होने से दुख। यह तरफ़दारी क्यों पायी जाती है? और जब खुदा ही शराब पिलाएगा तो वह भी सेवक के जैसा ठहरेगा फिर खुदा की महानता कैसे रह सकेगी? और वहां जन्नत में मर्द व औरत के संभोग करने से गर्भ होने से लड़के और बाले भी होते हैं तो वे आत्माएं कहां से आयीं? और बिना खुदा की उपासना के जन्नत में कैसे पैदा हुईं? यदि पैदा हुईं तो उनको बिना ईमान लाने और खुदा की उपासना करने से क्यों कर मुफ़्त मिलेगा? कुछ बेचारों को ईमान लाने से और कुछ को बिना धर्म किए सुख मिल जाए इससे बढ़कर अन्याय क्या होगा?

आपत्ति का जवाब

सच है– बर्तन में जो होता है वही टपकता है।" यह अरबी कहावत है। आज मालूम हुआ कि स्वामी जी ब्रहमचर्य में कैसे गुज़ारा करते थे। समाजियो! कहो जी यह कौन धर्म है? पंडित जी! ये बच्चे स्वयं उन्हीं जन्नतियों की नाबालिग़ सन्तानें होंगी। अतएव दूसरी आयत में ग़िलमान का शब्द है अर्थात उन्हीं के बच्चे उनके पास फिरेंगे। इस पर आप कहेंगे कि जन्नत में वे अमल क्यों जाएंगे तो सुनिए! जन्नत उन लोगों के लिए है जो कुफ़्र व शिर्क की हालत में न मरें। सुनो–

बेचारे ना बालिग़ बच्चों को तो इसका पता भी नहीं कि कुफ़्र व शिर्क क्या होता है इसलिए वे जन्नत में जाने से रोके नहीं जाएंगे यदि किसी काफ़िर बल्कि किसी समाजी की सन्तान ना बालिग़ भी क्यों न हो, यह वेदिक मत नहीं है कि चार साल के मुसलमान बच्चे

के हाथ से भी न खाया जाए।

खुदा के शराब पिलाने के यह मायना हैं कि अल्लाह के हुक्म से पिएंगे, दुख की बात है कि आप इस बात से परिचित नहीं कि वाक्य में कब कौन सी बात किस प्रकार कही जाती है। बेशक मर्द व औरत यदि चाहेंगे तो उनके दिल बहलाने को खुदा सन्तान भी प्रदान करेगा। हदीस शरीफ़ में यह बात पायी जाती है और कुरआन में यूं है– सुनो–

"उन जन्नतियों को जो चाहेंगे मिलेगा।" (सूरह –जुमर– 34)

(151) सूरह नबा– "अच्छे कर्म का बदला दिया जाए और प्याले भरे हुए हैं। उस दिन खड़ी होंगी आत्माएं और फ़रिशते पांक्ति बद्ध होकर।" (आयत – 25, 32, 36)

आपत्ति

यदि कर्मो के अनुसार फल दिया जाता तो सदैव जन्नत में रहने वाली हूरें, फ़रिश्तों और मोती की तरह लड़कों को किस कर्म के बदले सदैव के लिए जन्नत मिली? जब प्याले भर भर कर शराब पियोगे तो मस्त होकर क्यों न लड़ेंगे। यहां आत्मा एक फ़रिश्ते का नाम है जो सारे फ़रिश्तों से बड़ा है क्या अल्लाह आत्मा या फ़रिशतों को पंक्ति बद्ध खड़ा करके पलटन बांधेगा? क्या पलटन से सारी आत्माओं को सज़ा दिलाएगा? और खुदा उस समय खड़ा होगा या बैठा होगा? यदि क़यामत तक खुदा अपनी पलटनें जमा करके शैतान को पकड़ ले तो उसकी हुकूमत को कोई भय व डर न रहे क्या इसका नाम खुदाई है?

आपत्ति का जवाब

न0 150 में हम बता आए हैं कि जन्नत उन लोगों के लिए है जो शिर्क और कुफ़्र से बचे होंगे तो फ़रिश्तों और आत्माओं को उसी के

बदले में कि उन्होंने शिर्क कुफ्र नहीं किया था जन्नत मिलेगी।

सफ़फ़ बांधकर इसलिए होंगे कि जिस काफ़िर को जहन्नम में डालने के बारे में हुक्म हो तुरन्त माना जाए। शैतान को तो पकड़ लेता मगर धार्मिक मामलों में अल्लाह किसी पर ज़बर दस्ती नहीं किया करता इसके अलावा चूंकि सत्यार्थ प्रकाश के बनने से शैतान बेकार है इसलिए उसका पकड़ना कुछ फ़ायदे वाली बात न रही। शेष जवाब न0 32 में देखो।

(152) सूरह तकवीर– "जिस समय कि सूरज लपेटा जाए और जिस समय की तारे गदले हो जाएं और जिस समय कि पहाड़ चलाए जाएं और जिस समय कि आसमान की खाल उतारी जाए।"

(आयत 2,3,11)

आपत्ति

यह बड़ी नादानी की बात है कि गोल सूरज का ग्रह लपेटा जाएगा और तारे गदले किस तरह हो सकेंगे और पहाड़ बे जान होने से कैसे चलेंगे और आसमान को क्या जानवर समझा कि उसकी खाल निकाली जाएगी। यह बड़ी नादानी और जंगली पन की बात है।

आपत्ति का जवाब

सूरज के लपेटे जाने का यह मतलब है कि उसको प्रकाश हीन कर दिया जाएगा और जब वह प्रकाश हीन हो गया तो सितारे जो उसी से लाभान्वित हैं आप से आप गदले हो जाएंगे। आसमान की खाल उतारने का यह मतलब है कि फटकर सुर्ख हो जाएगा। सुनो कुरआन बताता है।

"आसमान फट कर सुर्ख रंग गुलाब की तरह हो जाएगा।"

(सूरह रहमान– 37)

(153) सूरह इन्फ़ितार– "जिस समय कि आसमान फट जाए और जिस समय कि तारे झड़ जाएं और जिस समय कि दरिया चीरे जाएं और जिस समय कि क़ब्र ज़िन्दा करके उठायी जाएं।"

(आयत 1–4)

आपत्ति

वाह जी कुरआन के लेखक फ़लासफ़र! आकाश को क्यों कर कोई फाड़ सकेगा और तारों को क्यों कर झाड़ सकेगा और दरिया क्या लकड़ी है जो चीर डालेगा और क़ब्रें क्या मुर्दे हैं जो ज़िन्दा कर सकेगा? ये सारी बातें लड़कों की तरह हैं।

आपत्ति का जवाब

आसमान चूंकि ठोस है (देखो न0 7, न0 88, न0 129) इसलिए उसका फटना संभव है। तारों के झड़ने से वही मुराद है कि सारी ज़मीन पर पानी हो जाएगा अतएव आजकल के फ़लासफ़र भी इस बात के क़ायल हैं कि ज़मीन सुकड़ती जाती है और समन्द्र किनारों से बढ़ता चला आता है। ये तीनों घटनाएं तो उस समय की हैं जो क़यामत का पहला दौर है जिसको "फ़ना" या प्रलय कहते हैं चौथी घटना अर्थात क़ब्रों वालों का उठना उस समय की घटना है जिसको महशर अर्थात असल क़यामत कहते हैं।

पंडित जी! क़ब्रों के उठने से तात्पर्य है क़ब्र वालों का उठना। क्योंकि "यदि कोई कहे कि मचान बोलते हैं तो यहां पर यह तात्पर्य समझा जाएगा कि मचान पर बैठे हुए मनुष्य बोलते हैं।"

(भूमिका पृ0 10)

समाजियो! यही स्वामी जी की समझ और ईमानदारी है? कि व्याकरण संबंधी बातें भी नहीं समझते बल्कि अपनी पुस्तक की भूमिका भी भूल जाते हैं।

(154) सूरह बुरुज "क़सम है आसमान बुरुजों वाले की, बल्कि वह कुरआन है बुजुर्ग बीच लोहे महफ़ूज़ के।" (आयत –21)

आपत्ति

कुरआन के लेखक ने भूगोल शास्त्र और खगोल विज्ञान कुछ भी नहीं पढ़ा था नहीं तो आसमान को क़िले की तरह बुर्जो वाला क्यों कहता? यदि हमल आदि बुर्जों को बुर्ज कहता है तो और बुर्ज क्यों नहीं है? इसलिए ये बुर्ज नहीं है बल्कि सब गृह लोक के तारे हैं। क्या कुरआन खुदा के पास है? यदि यह कुरआन उसका लिखा हुआ है तब तो खुदा भी ज्ञान एवं तर्क से अनभिज्ञ होगा।

आपत्ति का जवाब

कुरबान जाइए ऐसी समझ पर स्वामी जी! बुरुज से सितारों की मन्ज़िलें हैं सुनिए कुरआन स्वयं बताता है।

"चांद के लिए हम (खुदा) ने मन्ज़िलें बनायी हैं उन्हीं में फिरता फिरता पतली शाख की तरह हो जाता है।"

(सूरह यासीन– 34)

क्या चांद और अन्य सितारों की मन्ज़िलें यही हैं? हां हम यह नहीं समझे कि पंडित जी क्या कहते हैं कि "यदि हमल आदि बुरुजों को बुर्ज कहता है तो और बुर्ज क्यों नहीं।" कोई समाजी दोस्त इसका मतलब हमें समझा दे तो हम आभारी होंगे और एक प्रति इसी किताब की उनको भेंट करेंगे। हमें तो (अनादर के लिए क्षमा करें) दीवाने की बड़ मालूम होती है।

हां स्वामी जी कुरआन अल्लाह के पास से है और उसके पास है सुनो! परमेश्वर का आदेश है–

"जिस उच्च व महान और निराकार कभी न समाप्त होने वाले और आकाश की भान्ति सर्वव्यापी परमेश्वर में त्रृग आदि चारों वेद

स्थापित हैं उसे ब्रहम जानना चाहिए।"

(त्रृग वेद मंडल 1 सोंकत 164 मंत्र 39)

इसी तरह क़ुरआन को हम मानते हैं ज्ञानात्मक तरीक़े से समझना चाहो तो सुनो! कुरआन मजीद अल्लाह का कलाम जो सदैव से है अल्लाह का है जैसे आपकी निसबत कहते हैं।

(155) सूरह तारिक़ "बेशक वे मकर करते हैं एक मकर, और मैं भी मकर करता हूं एक मकर। (आयत 15–16)

आपत्ति

मकर कहते हैं ठगपने को। क्या खुदा भी ठग है? और क्या चोरी का जवाब चोरी और झूठ का जवाब झूठ है? क्यों कोई चोर किसी आदमी के घर में चोरी करे तो भले आदमी को भी चाहिए कि उसके घर में जाकर चोरी करे? वाह! वाह। कुरआन के लेखक।

आपत्ति का जवाब

ब्रहमन होकर गाय के मांस का भाव पूछे। वही उदाहरण पंडित जी का हिन्दू ज़ादे पढ़े न लिखे नाम मुहम्मद फ़ाज़िल (अरबी) से परिचित नहीं और (कुरआन) के तोड़ का ठेका।

(तकज़ीब भाग। पृ0 86)

(156) सूरह फ़ज्र– "और आएगा पालनहार तेरा, और फ़रिश्ते पंक्ति बांध कर और लाए जाएंगे उस दिन जहन्नम। (आयत 21–22)

आपत्ति

कहो जी जैसे कोतवाल व सेनापति अपनी सेना को लेकर पंक्ति बनाकर फिरा करते हैं वैसा ही उनका खुदा करता है? क्या जहन्नम को घर की तरह समझा है कि जिसको उठाकर जहां चाहे वहां ले जाएं यदि जहन्नम इतना छोटा है तो असंख्य कैदी इसमें कैसे समा सकेंगे?

आपत्ति का जवाब

भले आदमी का काम है कि जिस कलाम को न समझे वह पूछ ले क्योंकि बहुत से कलाम ऐसे भी होते हैं कि उनका ज़ाहिरी अनुवाद सुनकर मायना समझ लेने काफ़ी नहीं होते। (भूमिका पृ0 52)

तो आयत के मायना हैं कि खुदा के हुक्म पहुंचते ही तमाम फ़रिश्ते पंक्ति बांधे हुए खड़े हो जाएंगे कि जो हुक्म हो उसका पालन किया जाए और जहन्नम को भी अच्छी तरह तपाया जाएगा।

अर्थात इसका मतलब साफ़ है मगर--

"नापाक बातिन वाले जाहिलों को ज्ञान कहां" (भूमिका पृ0 52)

(157) सूरह शम्सः "अतः कहा था वास्ते उनके पैग़म्बर खुदा ने रक्षा करो ऊंटनी खुदा की और पानी पिलाना उसको। अतः उनके पालनहार ने उनपर विनाशकारी मार उन पर डाली।"

(आयत --13-14)

आपत्ति

क्या खुदा भी ऊंटनी पर चढ़कर सैर करता है? नहीं तो किस लिए रखी है? और बिना क़यामत के अपना वचन तोड़ा। उनपर आफ़त क्यों डाली? यदि डाली तो उनको सज़ा दी फिर क़यामत की रात में न्याय का करना और उस रात का होना झूठ समझा जाएगा। इस ऊंटनी की बात से यह अनुमान होता है कि अरब देश में ऊंट ऊंटनी के सिवाए दूसरी सवारी कम होती है। इससे साबित होता है अरब देश के रहने वाले ने यह कुरआन बनाया है।

(सत्य वचन महाराज)

आपत्ति का जवाब

ऊंटनी का जवाब न0 91 में हो चुका है। अल्लाह का यह भी

क़ायदा है कि कभी कभी बदकारों को दुनिया में भी सज़ा दिया करता है और आख़िरत में भी देता है और देगा। जैसा कि आर्य वरत के हिन्दुओं को ग़ाज़ी महमूद ग़ज़नवी के हाथ से दुनिया में पराजय दिलायी और परलोक में भी कुछ बनाएगा। अतएव आपने भी इस विषय को सत्यार्थ प्रकाश पृ0 298 अध्याय 8 में अदा किया है।

(158) सूरह अलक़ "यूं यदि न बाज़ रहेगा अलबत्ता घसीटेंगे हम उसको पेशानी के साथ कि वह पेशानी झूठी और दोषी है। हम बुलाएंगे फ़रिश्तों को जहन्नम के। (आयत 13,14,16)

आपत्ति

इस अपमानित चपरासियों के घसीटने के काम से भी खुदा न बचा। भला पेशानी भी कभी झूठी और दोषी हो सकती है? आत्मा के सिवाय यह कभी खुदा हो सकता है कि जो जेल ख़ाना के दारोग़ा को बुलाए?

आपत्ति का जवाब

हाय कैसा पापी है वह मनुष्य जो वाचक की मन्शा के ख़िलाफ़ कलाम में मायना करता है और धर्म के अंधेरों में फंस कर बुद्धि भ्रष्ट कर लेता है। (भूमिका सत्यार्थ पृ0 7)

पंडित जी को खुदाई कामों में सदैव संदेह रहता है यही समझते हैं कि खुदा स्वयं ही आकर अपने हाथ से करता है अतएव पूर्व नम्बरों में पाठक यही सुनते आए हैं। यदि और प्रमाण इस बात का लेना हो तो न0 53 में मुख्य रूप से समलास न0 13 की जो इबारत हम ने नक़ल की है उसे देखें। अफ़सोस स्वामी जी को ख़बर नहीं कि--

"परमेश्वर के हाथ नहीं लेकिन अपनी शक्ति के हाथ से सबको बनाता और क़ाबू में रखता है पांव नहीं। बल्कि सर्व व्यापक होने के

कारण सब से अधिक तीव्र गति वाला है।"

(सत्यार्थ प्रकाश पृ0 144, समलास7 न0 36)

अतः स्वामी जी और उनके चेले चांटे स्वयं ही बताएंगे कि यदि किसी कार्य को अपनी ओर निसबत करे तो उसके मायना यह होते हैं कि वह अपने हाथ से करता है।

सुनो वेद बताता है।

"इस जगत के बनने से पहले परमेशवर इस पैदा हुए जगत का एक न्याय करने वाला स्वामी या रक्षक था। उसने धरती से लेकर आकाश तक सारी कायनात को बनाया और वही इसे स्थापित रखता है।" (ऋग वेद अषटक 8, अध्याय 7 वरग 3, मंत्र–1)

कौन ऐसा पाजी नास्तिक है जो इस पवित्र कलाम उल्लिखित वेद पर आपत्ति करे कि परमेश्वर इस अपमानित रचना के काम और बोझ बरदारी से भी न बचा।

स्वामी जी महाराज! पेशानी से तात्पर्य साहिबे पेशानी है क्योंकि "यदि सच्चा कहे कि मचान बोलते हैं तो यहां तात्पर्य समझा जाए गए कि मचान में बैठे हुए आदमी बोलते हैं।" (भूमिका पृ0 10)

जहन्नम का दारोग़ा इन्हीं 33 देवताओं में से एक होगा जिनका उल्लेख न0 21 आदि में हो चुका है। यदि किसी फ़रिशते से ख़ुदा का काम लेना ईश्वरत्व की शान के विरुद्ध है तो 33 देवताओं से कर्तव्यों का पालन कराना जायज़ है। (देखो आगे का न0 159)

(159) सूरह क़द्र– " बेशक उतारा हमने क़ुरआन बीच रात क़द्र के और क्या जाने तू क्या है रात क़द्र की। उतरते हैं फ़रिशते और पाक आत्माएं पाक बीच उस पालनहार के आदेश के साथ हर काम के लिए। (आयत –1,2,4)

आपत्ति

"यदि एक ही रात में क़ुरआन उतारा तो यह बात कि फ़लां समय में उतरा कैसे ठीक हो सकती है? और रात अंधेरी होती है उसके बारे में क्या पूछना है। हम लिख आए हैं कि ऊपर नीचे कुछ भी नहीं हो सकता और यहां लिखते हैं कि फ़रिश्ते और आत्माएं ख़ुदा के आदेश से दुनिया का प्रबन्ध चलाने के लिए आते हैं। इससे साफ़ हो गया कि ख़ुदा भी मनुष्य की तरह सीमित स्थान वाला है। अब तक मालूम होता था कि ख़ुदा फ़रिशते और पैग़म्बर तीन की कहानी है अब एक रूहुल क़ुदुस चौथी निकल पड़ी।

अब न जाने यह चौथी रूहुल क़ुदूस क्या है? यह तो ईसाइयों के धर्म अर्थात बाप बेटा और रूहुल क़ुदस तीन के मानने के अलावा चौथी वस्तु निकल आयी। यदि कहो कि हम तीनों को ख़ुदा नहीं मानते। ऐसा ही सही। लेकिन जब रूहुल क़ुदुस पृथक है तो ख़ुदा के फ़रिशते और पैग़म्बर को रूहुल क़ुदुस कहना सही है या नहीं। यदि यह भी पाक रूह हैं तो फिर किसी विशेष वजूद को पवित्र आत्मा क्यों कहते हो? और ख़ुदा घोड़े आदि जानवरों और रात दिन और क़ुरआन आदि की क़समें खाता है। क़समें खाना शरीफ़ लोगों का काम नहीं।

आपत्ति का जवाब

पंडित जी फ़रिशतों से बड़े घबराते हैं क्यों न घबराएं–

"काफ़िर जिस दिन फ़रिशतों को देखेंगे उनकी ख़ैर न होगी।"

(सूरह फ़ुरक़ान – 22)

समाजियो! वेद फ़रमाता है–

"तैंतीस देवता उस परमात्मा के विभाजित किए हुए कर्तव्यों को

पूरा कर रहे हैं या उसकी कुदरत के आंशिक द्योतक हैं।"

(अथर वेद कांड 10, पाठक 23, अनुवादक 4 मंत्र 47)

क्या कोई है? जो इस पवित्र कलाम पर आपत्ति करे कि ईसाइयों के तो तीन थे वेद ने ये तैंतीस और परमेश्वर को मिला कर चौंतीस कहां से बना दिए हैं?

समाजियो! जो काम इन देवताओं से परमेश्वर लेता है वही फ़रिश्तों से खुदा लेता है। कुरआन का शब्द समान है उसके दो मायना हैं जैसे आपने भी भूमिका पृ0 129 पर एक शब्द की दो परिभाषाएं लिखी हैं। इस तरह कुरआन किताबों के संग्रह को भी कहते हैं जो एक ख़ास किताब है और इसके हर अंश को भी कहते हैं। अफ़सोस आपसे तो प्रोफ़ैसर सेल अनुवादक कुरआन ने ही अच्छा समझा। क्या आपने किसी मुसलमान से भी नहीं सुना था कि आज मैंने कुरआन पढ़ा। आज तूने कुरआन नहीं पढ़ा। अर्थात जितना मैं रोज़ पढ़ा करता हूं उतना आज पढ़ा है यह नहीं कि सारा कुरआन ख़त्म किया।

यदि सोच विचार करें तो यह परिभाषा कोई ख़ास कुरआन ही से नहीं। क्या हवन में वेद नहीं पढ़ा जाता? क्या हवन से आते हुए कभी आपने नहीं सुना कि आज पंडित जी ने हवन में वेद पढ़ा और क्या सारा पढ़ा? नहीं बल्कि एक भाग पढ़ा। तो सारा कुरआन तो धीरे धीरे उतरता रहा है। क़द्र की रात में भी थोड़ा उतारा है अर्थात उसकी प्रशंसा अल्लाह ने कुरआन में बयान की कि वह रात बड़ी महानता व श्रेष्ठता वाली है। उस एक रात की उपासना हज़ार रात की उपासना से श्रेष्ठ है।

मेरे निकट यह मायना सही हैं क्योंकि हदीसों में सैंकड़ों जगह यह बात मिलती है। हदीस के रावी कहा करते हैं। हाज़िहिल आयत

नज्ज़लत फ़ी अबी बकर, नज्जलत फ़ी उमर अर्थात, यह आयत अबु बकर पर उतरी यह उमर पर उतरी है इसका मतलब यह है कि उनकी शान में उतरी है अतः अब किसी प्रकार का विवाद न रहा चाहे कुरआन किसी समय उतरा हो जब इसमें किसी ख़ास समय की श्रेष्ठता या प्रशंसा हो तो कह सकते हैं। यह सब न समझना केवल स्वामी जी की समझ का नतीजा है।

क़सम का जवाब न0 100 में देखो—

अल्लाह का शुक्र है कि स्वामी जी की आपत्तियों के जवाबों से तो हम निबटे। एक आपत्ति वायदा के अनुसार हम अपनी ओर से करके पंडित जी के न0 159 को पूरे न0 160 कर देतें हैं ताकि हमारे समाजी दोस्त हम से खिंचे खिंचे न हों तो इस उपकार को याद करके नाराज़गी को दूर कर लें तो सुनो—

(160) "कह दो अल्लाह एक है और बे नियाज़ है नहीं जना उसने और न जना गया और नहीं उसकी कोई बराबरी करने वाला।" (सूरह इख़लास)

आपत्ति

देखो जी देखो, कुरआन कहता है कि अल्लाह ने न जना और न जना गया यद्यपि करोड़ों ईसाई कहते हैं कि ईसा मसीह खुदा का बेटा है। मरयम ने उसको जना है भला जो धर्म दूसरे धर्मों को कि जिनके हज़ारों करोड़ों आदमी श्रद्धालू हों झूठा बताए और अपने को सच्चा बताए उससे बढ़कर झूठा और धर्म कौन सा हो सकता है? (देखो न0 73)

आपत्ति का जवाब

समाजियो! हमारी उदारता देखो कि हमने तुम्हारे स्वामी जी की

कमी को पूरा कर दिया और फिर दूसरा उपकार यह मानो कि ऐसे कठिन सवाल का जवाब भी नहीं दिया ताकि तुमको हमारे उपकार मानने में कोई संकोच न हो। तो उपकार के बदले हमारी एक बात मानो तो तुम्हारा शुक्रिया इसी में अदा हो जाएगा।

वह यह है – कि तुम अपने चौथे उसूल पर अमल करो यदि भूल गए तो लो हम ही तुम्हें बताए देते हैं–

"सच के स्वीकार करने और झूठ के छोड़ने में सदैव तैयार रहना चाहिए।"

अन्त में स्वामी जी ने कुरआन शरीफ़ के बारे में अपनी राय व्यक्त की है अच्छा है कि इसको नक़ल करके पाठकों से वाह वाह चाहें और आपत्ति का जवाब देने वाला भी आपत्ति करने वाले के बारे में अपना बयान प्रस्तुत करे।

कुरआन के बारे में स्वामी जी की राय

अब इस कुरआन के बारे में लेख लिख कर बुद्धिमानों के सामने प्रस्तुत करता हूं कि यह किताब कैसी है? मुझ से पूछो तो यह किताब न तो उस ईश्वर की बनायी हुई है और ज्ञान विज्ञान की हो सकती है। यह तो बहुत थोड़ी सी कमियां प्रस्तुत की हैं इसलिए कि लोग धोखे में पड़ कर अपनी उम्र बेकार में बर्बाद करें।

जो कुछ हमें थोड़ी सी सच्चाई नज़र आयी वह वेद आदि ज्ञानात्मक किताबों के अनुसार होने से मुझको स्वीकार है वैसे और भी धर्म के ज़िद और पक्षपात से मुक्त विद्वानों और बुद्धिमानों को स्वीकार है इसके सिवा जो कुछ इसमें है वह सब अज्ञान की बातें हैं अंधविश्वास है और मनुष्य की आत्मा को जानवरों की तरह मानने,

शान्ति भंग करके दंगा फ़साद कराने मनुष्यों के बीच असहमति फैलाने, आपसी कष्ट एवं तकलीफ़ को बढ़ाने वाले विषयों पर आधारित है और पुनर्व्यक्त दोष [1] का तो मानो यह ख़ज़ाना है। परमेश्वर सारे मनुष्यों पर दया करे कि सब के सब आपसी प्रेम सहमति और एक दूसरे के सुख की प्रगति करने के इच्छुक हों, जैसे मैं अपना या दूसरे धर्मों की ख़राबी, तरफ़दारी छोड़कर कह देता हूं इसी तरह यदि सारे बुद्धिमान लोग करें तो क्या मुश्किल है कि आपस की असहमति छोड़ कर सहमत होकर खुशी से लोग लेखक की मन्शा के अनुसार सोच समझ कर लाभ उठाएं यदि कहीं ग़लती भूल चूक से हो गयी हो तो उसको सही कर लें।

(सत्यार्थ अध्याय 14 पृ0 738)

आपत्ति कर्त्ता के बारे में जवाब देने वाले की राय

यह आपत्ति कर्त्ता हुक़्क़ा पीने वाला, शोध के अयोग्य, बड़ा पक्षपाती ज्ञान विज्ञान एवं विद्या से कोरा, अन्दर से नास्तिक दिखावे को आर्य दूसरे धर्मों पर बेजा हमले करने वाला, ज़बान का तेज़, देखने में साधू खुफ़िया कुछ और, इधर उधर की मिलाकर मूर्खों और बेवकूफ़ों को फांसने वाला। सब से बढ़कर यह कि वेदों को बदनाम और उनमें हेरफेर करने वाला।

कुरआन, इंजील, तौरात और अन्य ईश्वरीय किताबों की परिभाषाओं और अर्थों से अनभिज्ञ। इस दावा पर एक तो यही किताब गवाह है इसके अलावा इसके हामियों और विरोधियों की गवाही। इसके हामियों बल्कि अनुयायियों की गवाही बड़ी ही विचारणीय है यद्यपि इसमें इनका नाम नहीं मगर चूंकि उसूली तौर

1– अर्थात एक बात को कई कई बार दोहराना। मगर पंडित जी ऐसे नहीं कि एक सवाल को दोबारा पेश करें पाठक ध्यान से देखें।

पर वह सब लोगों में शामिल है इसलिए गवाही कामिल का हुक्म रखती है।

पंडित लेख राम लेखक "तकज़ीब" जिसकी निष्ठा एवं ईमानदारी स्वामी जी के पक्ष में किसी से छुपी नहीं लिखता है–

पढ़े[1] न लिखे नाम मुहम्मद फ़ाज़िल अरबी क ख से भी परिचित नहीं कोरा जाहिल और कुरआन के अध्ययन का ठेका, आंखे चमगादड़ की और सूरज से लड़ाई झगड़ा।

(तकज़ीब भाग 1 पृ0 86)

पंडित जी के विरोधियों का बयान है पहले तो हम अतिश्योक्ति समझा करते थे मगर अफ़सोस तजुरबे ने इसकी पुष्टि करा दी।

पहला गवाह

आचरण में दयानन्द के बराबर शायद ही कोई हुआ हो। एक सिरे से आपने सब पर गालियों की वर्षा की है चेले चांटे भी इसी रास्ते पर लग गए हैं। कोई कैसा ही पाजी बदमाश आवारा क्यों न हो आर्य में दाखिल हुआ और फ़रिश्ता बना। बूढ़े से बुढ़े से ऋषि की तरह हिन्दू पंडित को गाली देने में भी इन लोगों को शर्म नहीं आती।

(रिसाला सनातन धर्म गज़ट लाहौर अगस्त 1897)

दूसरा गवाह

मुसलमानों में खुदा न करे यदि ऐसा सम्प्रदाय हो जो कुरआन को सर पर लिए फिरे और कहे कि नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात सब के सब बेकार हैं बल्कि इनके करने कराने वाले सब के सब जाहिल

1– इस वाक्य में हमने केवल दो शब्दों में हेर फेर किया है संस्कृत की बजाए अरबी और वेद की बजाए कुरआन लिखा है। लेखक तकज़ीब ने बुरहान के सम्पादक के बारे में लिखा है कि संस्कृत से तो परिचित नहीं और वेदों पर आलोचना करते हैं। आगे बराबर हमने हेर फेर किया है उसूली तौर पर चूंकि सही है इसलिए यह बयान आपत्ति कर्ता के बारे में शहादत ठहराया जा सकता है पाठक न्याय के साथ हमारी सराहना करें।

हैं और स्वार्थी हैं और इस दावे पर कुरआनी आयतों को अपने कर्मों की तरह सियाह करे तो उस समय हमारे मुसलमान भाई और अन्य धर्मों वाले (आर्यों के कारण) हिन्दुओं की बेबस हालत महसूस करेंगे।

(अखबार आम लाहौर प्रकाशन 4 मार्च 1897 ई0)

तीसरा गवाह

हिन्दुस्तान के राजनीतिक एक मात्र नेता सूफ़ीवाद के मानने वाले दुबले पतले सादगी के नमूने महात्मा गांधी अपने अखबार "यंग इन्डिया में लिखते हैं–

"मेरे दिल में दयानन्द सरस्वती के लिए भारी सम्मान है मैं सोचा करता हूं कि उन्होंने हिन्दू धर्म की भारी सेवा की है। उनकी बहादुरी में सन्देह नहीं लेकिन उन्होंने अपने धर्म को तंग बना दिया है मैंने आर्य समाजियों की सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ा है जब मैं यर्दवा जेल में आराम कर रहा था। मेरे दोस्तों ने इसकी तीन कापियां मेरे पास भेजी थीं। मैंने इतने बड़े रिफ़ार्मर की लिखी इससे अधिक निराशाजनक किताब कोई नहीं पढ़ी। स्वामी दयानन्द ने सत्य और केवल सत्य पर खड़े होने का दावा किया है लेकिन उन्होंने न जानते हुए जैन धर्म, इस्लाम धर्म और ईसाई धर्म और स्वयं हिन्दू धर्म को ग़लत रूप से प्रस्तुत किया है। जिस व्यक्ति को इन धर्मो का थोड़ा सा भी ज्ञान है वह आसानी से इन ग़लतियों को मालूम कर सकता है जिनमें इस उच्च रिफ़ार्मर को डाला गया है। उन्होंने इस धरती पर अत्यन्त उत्तम और स्वतंत्र धर्मों में से एक को तंग बनाने की चेष्टा की है यद्यपि मूर्ति पूजा के विरुद्ध थे लेकिन वे बड़ी बारीकी के साथ मूर्ति पूजा का बोल बाला करने में सफल हुए क्योंकि उन्होंने वेदों के शब्दों की मूर्ति बना दी है और वेदों में हरेक ज्ञान को विज्ञान से साबित करने की चेष्टा की है। मेरी राय में आर्य समाज सत्यार्थ

प्रकाश की शिक्षाओं की विशेषता के कारण प्रगति नहीं कर रहा है बल्कि अपने संस्थापक के उच्च आचरण के कारण कर रहा है आप जहां कहीं भी आर्य समाजियों को पाएंगे वहां ही जीवन की सरगर्मी मौजूद होगी। तंग और लड़ाई की आदत के कारण वे या तो धर्मों के लोगों से लड़ते रहते हैं और यदि ऐसा न कर सकें तो एक दूसरे से लड़ते झगड़ते रहते हैं।

(अख़बार प्रताप 4जून 1924, अख़बार यंग इंडिया अहमदाबाद 29 मई 1920)

निष्पक्ष और भले लोगों के लिए यही गवाही काफ़ी है

समाजी सज्जनों से प्रार्थना

यद्यपि ज़माना में ऐसे उत्साही और तेज़ स्वभाव या अनुभवी भी हैं जिन के अनुभव ने उनको यहां तक पहुंचाया है कि उन्होंने अपना उसूल ही यह निर्धारित कर रखा है और इसी उसूल की लोगों को भी हिदायत किया करते हैं–

मगर ख़ुदा की सच्ची किताब क़ुरआन शरीफ़ उसूली तौर पर ऐसे उत्साही उसूलों से निराली और न्याय पर आधारित है। अतएव इर्शाद है–

"मुनाज़रा में सबसे अच्छे (बेहतर) उसूलों को सामने रखा करो।" (सूरह नहल– 125)

इसीलिए हमने स्वामी जी के जवाब में इस उत्साही उसूल को तर्क करके यथासंभव अल्लाह की किताब के पाक उसूलों को सामने रखा है लेकिन एक मनुष्य के नाते कहीं यदि कोई शब्द निकल गया हो जिससे हमारे समाजी दोस्तों को दुख हो तो वह

पंडित जी की किताब में इस तरह का शब्द तलाश करेंगे तो आशा है कि इससे कई दर्जा वज़नी उनको मिल जाएगा। मिलने के बाद हमें माफ़ी का एक कार्ड लिखें क्योंकि जो आदत स्वामी जी से साधू व योगी होने के बावजूद होने से न छूटी वह किसी क़दर हम गुनहगारों में आ जाए तो आप ही बताएं कि हम कहां तक विवश हैं।

हां यदि भरम हो कि स्वामी जी ने जो कुछ दूसरी क़ौमों के बुज़ुर्ग बल्कि संयुक्त ईश्वर को बुरा भला कहा है वह इन लोगों के लाखों से नतीजे के तौर पर बताया है तो सुनो– यदि हम यह मान भी लें कि वह नतीजा वास्तव में सही है और स्वामी जी की ग़लत फ़हमी को इसमें कुछ दख़ल नहीं फिर भी पंडित जी को यह तरीक़ा शोभा नहीं देता था क्योंकि उनका स्वयं कहना है–

"हर समय मनुष्य को चाहिए कि वह मृद भाषा को काम में लाए, किसी अंधे को "ऐ अंधे' कहकर पुकारना सच तो अवश्य है लेकिन कठोर स्वर के कारण अधर्म है।"

(उपदेश मंजरी पृ0 20)

समाजी दोस्तो! क्या यह हाथी के दांत हैं जो दिखाने में और हैं खाने में और? क्या तुम्हारे सातवें उसूल का यही मतलब है जो स्वामी जी ने कर दिखाया?

"क्यों ऐसी बातें कहते हो जो स्वयं नहीं करते।"

(सूरह सफ़्फ़–2)

इसके अलावा हमारी मजबूरी एवं विवशता की एक और सही वजह है कि हमारा बचाव है और पंडित जी का हमला अर्थात इस तरीक़ा को पंडित जी ने ही आरंभ किया और बहुत बुरी तरह हुई। इस पर भी हमारे समाजी दोस्त बुरा मनाएं तो अपने आर्य मुसाफ़िर के कथन पर जो सोने से लिखने योग्य है। अच्छी तरह सोच विचार

करें। सुनो–

हिफ़ाज़त[1] अपने बचाव में क़ानूनी व धार्मिक तौर पर जायज़ है जबकि यहां इस हिफ़ाज़त या बचाव के नाम पर हमारी ओर से खंडन में किताबें लिखी गयी हैं– तो–

ज़रा इन्साफ़ से देखो निकाला किसने यह शर पहले

(हुज्जतुल इस्लाम पृ0 11 दूसरा एडीशन)

अबुल वफ़ा सनाउल्लाह
मौलवी फ़ाज़िल अमृतसर

1– पंडित लेख राम ब जवाब मौलवी शैख़ उबैदुल्लाह मरहूम लिखता है।

यह पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' के केवल 14वें सम्मुल्लास का उत्तर है, इस लिए और अधिक जानकारी के लिए, एक हिन्दू भाई जो पूरी आशा है कि मुसलमान हो चुका होगा की पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश: समीक्षा की समीक्षा'' के नवीन आलेख उनके ब्लाग पर पढ़ें

satishchandgupta.blogspot.com